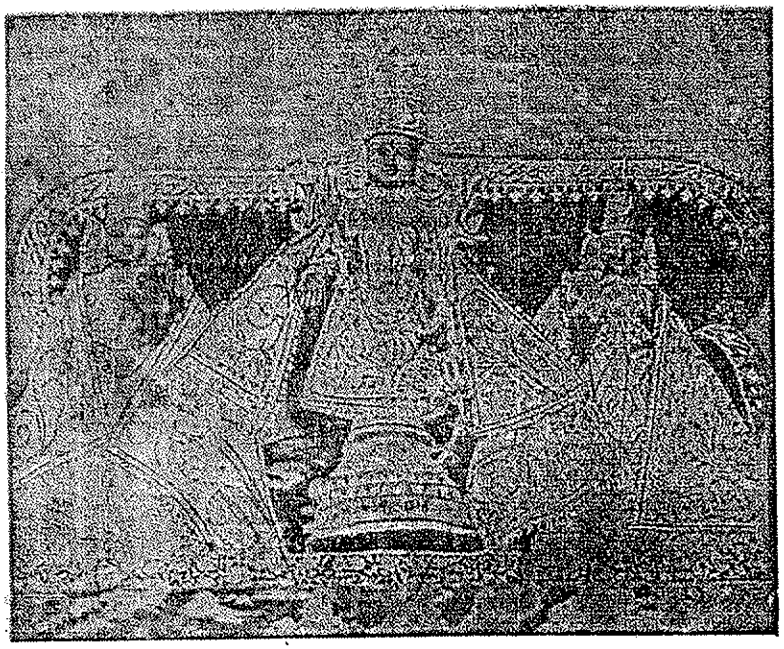


-श्री रं

पिता त्वं माता त्व
त्वमेव त्वां मित्रं
त्वदीयस्त्वद्भृत्यस
प्रपन्नश्चैवं सत्य

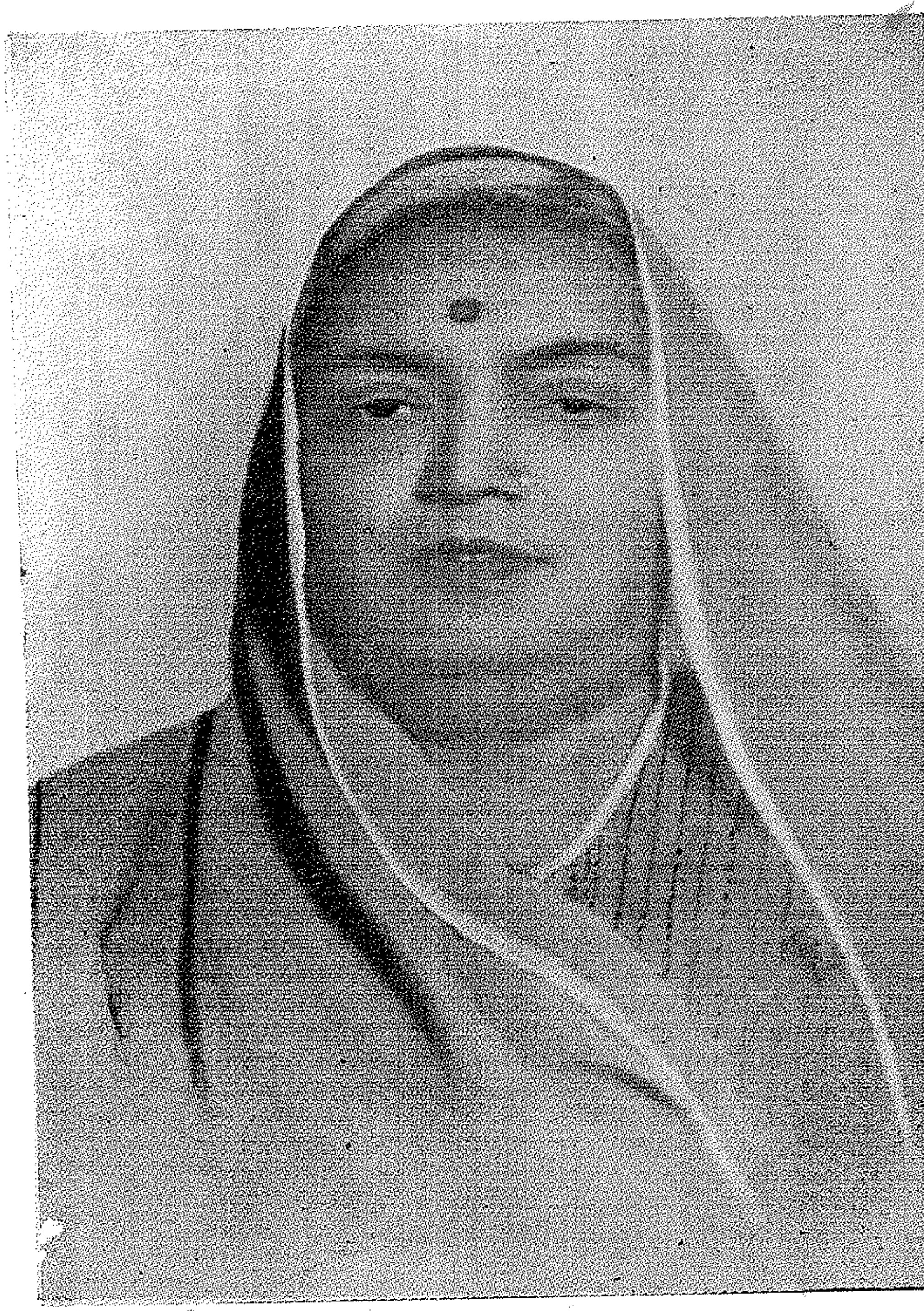
आचार्य
क
श्री रंगनाथ

मेरे आराध्य देव
पुत्र, प्यारे सुहृद्, मित्र,
परिचारक, आपको ही
अतः आप पर ही मेरा
कुछ अर्पित है।

भिवानी इ



श्रीमंत सेठ हरिचरण जी हलवासिया



सौभाग्यवती—

श्री शान्ती देवी जी हलवासिया

श्रीमान्.................................

....

....

समर्पक.................................

ता०..................१९५ ।

पूर्ण आशा ही नहीं, विश्वास है कि:—
आप अपनी जन्मभूमि के समूचे
इतिहास का क्रमशः अवलोकन
कर, मेरे परिश्रम को सफल
बनाने के साथ ही साथ
'भिवानी' सम्बन्धि
ज्ञान के पूर्ण
ज्ञाता होंगे।

—०—

"तिलक"

मुद्रक—
श्री स्वामी मुरलीधरजी आचार्य 'तिलक'
श्री रंगनाथ प्रेस भिवानी ।

स्मरण रहे ।

भगवान की असीम कृपा, आप जैसे प्रेमी महानुभावों के सहयोग से भिवानी इतिहास के अतीत व वर्तमान खण्ड आपने पढ़े ।

अब "भावी खण्ड" जिसमें आपके चिरंजीव सुयोग्य और प्यारे सुपत्रों के जीवन सम्बन्धिविवरण एवं सुन्दर चित्रों से सुसज्जित तृतीय खण्ड का प्रकाशन प्रारम्भ हो गया है ।

कृपया बहुत शीघ्र जीवन परिचय तथा फोटू भेजिये जिससे इतिहास में उचित स्थान प्राप्त हो सके ।

निवेदकः—
बलदेव शर्म्मा आचार्य
श्री रंगनाथ प्रेस,
भिवानी [पंजाब]

नोटः—जो युवक इस योजना को स्वयं पूर्ण करने का अधिकारी हो वह अपने पूज्य श्री माता पिता एवं अन्य सम्बन्धि जनों की आज्ञा प्राप्त कर शीघ्र ही अपने चित्र मय विवरण भेजें ।

विषय सूची

राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक संस्थाएं

भिवानी इतिहास

मन्दिरों का संक्षिप्त परिचय

भिवानी के कतिपय महोत्सव

धर्मार्थट्रस्ट—

परिवार—परिचय

राजपूत—परिचय

भिवानी इतिहास

वैश्य—समाज

भिवानी इतिहास

भिवानी इतिहास

भिवानी का पुरुषार्थी वर्ग

विविध महानुभाव

———

भूमिका:—

श्रीमतेरामानुजायनमः ।

कृपा कोरते, मूक बोलते,
पंगु डोलते हैं अभिराम ।
पूर्ण काम विश्राम जगत के,
'माधव' 'श्री घनश्याम' प्रणाम ॥

मान्यवर पाठकगण !

वर्तमान को उज्ज्वल और भविष्य को आदर्श निर्माण करना गौरवमय अतीत के इतिहास का साध्य है। अतः श्री-रंगनाथ महा प्रभु की असीम कृपा से वन्दनीय स्वर्गस्थ हमारे उन पूर्वजों के आशीर्वाद से भिवानी की अतीत महाविभूतियों के इतिहास का 'अतीत खण्ड' प्रकाशित होकर शिक्षित सभ्य समाज द्वारा अपनाया जाकर सफलता प्राप्त कर चुका है। अस्तु, इतिहास में वह शक्ति है जिसके द्वारा जाति के जीवनमें प्राण का संचार होता है। जिस राष्ट्र, जाति, वर्ण व कुल का इतिहास नहीं उसका स्थायी जीवन कैसा, परन्तु इतिहास ऐसा होना चाहिये जिससे प्रेरणा और सुमार्ग दिखाई पड़े। इन्हीं सब उद्देश्यों को लेकर सर्व प्रथम सन् १९३० में एक भिवानी कैलेण्डर नाम से २०—३० साइज आर्ट पेपर बहुत सुन्दर तथा आर्त त्राण परायण भगवान लीलापुरुषोत्तम श्री-श्यामसुन्दर का सुमनोहर चित्र बीच में और आसपास में भिवानी नगर के स्वर्गस्थ महापुरुष तथा कार्यकर्ता साधुसन्त विद्वान, दानी, नेता, धनी मानी आदि सभ्यसमाज के लग-

भग हाफटोन ब्लाकों से चित्रित व सुसज्जित होकर प्रकाशित हुआ था। वह कैलेन्डर देश विदेशों तक भिवानी की कीर्तिका डिण्डम (घोषणा) करता हुआ पहुंचा और आज भी वहां के भव्य भवनों में सुशोभित होकर अपनी अमर याद करवाये हुए है। द्वितीय श्री रामायण डायरी (भिवानी—डायरी) के नाम से सन् १९४१ में श्री रंगनाथ प्रेस द्वारा प्रकाशित हुई, जिसमें प्रातः स्मरणीय गोसांई जी महाराज द्वारा निर्मित श्री तुलसी कृत रामायण की शिक्षा और भक्तिपथ की अनेकों चौपाइयां उद्धृत की गई थी और भिवानी निवासियों के विषय में भी कुछ लेख थे जो बहुत उपयुक्त सिद्ध हुए। तृतीय—भिवानी इतिहास का अतीत खण्ड जो सम्वत् २००७ में श्री रंगनाथ प्रेस तुल्लापट्टी ७० नं० कलकत्ता से मुद्रित हुआ इस महान् ग्रन्थ में लगभग ५०० पृष्ठ सैकड़ों चित्र हैं जिसमें धार्मिक स्थान सार्वजनिक संस्थाएं और सभी वर्गों के महानुभावों के जीवन विवरण मय चित्रों से अंकित मनोहर जिल्द सहित दर्शनीय ग्रन्थ बना और अत्युपादय सिद्ध हुआ आज वह भारतवर्ष के कोने २ में ही नहीं बल्कि विदेशों तक पहुँचा और वहां के पुस्तकालयों में विराजमान है, आज हमारी मातृभूमि का नाम अमर करता है; जिसे पढ कर पक्षपात रहित व्यक्ति हृदय से प्रशंसा करता हैं और अपने पूर्वजों के इतिहास को पढ़कर अपने को स्वयं गौरवशाली सौभाग्यशाली समझता है। आज भिवानी इतिहास अतीत खण्ड में जिनका गौरव वृतान्त हैं वे यद्यपि हमारी आंखों के सामने नहीं दिवङ्गगत होचुके हैं परन्तु इस इतिहास के प्रभाव से वे प्रत्यक्षायमाण से

जान पड़ते हैं। इस अतीत खण्ड में भिवानी का विवरण सविस्तार और सावधान तया विश्वास प्राप्त व्यक्तियों द्वारा संगृहीत करवाकर दिग्दर्शित किया गया है, विशेष क्या इस पुस्तक को जो व्यक्ति एक बार अध्ययन कर मनन करता है उसको प्रतीत होगा कि भिवानी नगर समस्त देश देशान्तरों में प्रसिद्ध एवं अग्रसर क्यों है। यहां के निवासियों ने अपनी जन्म भूमि की किन २ प्रकारों से सेवा कर इसके नाम को विख्यात और चिरस्थाई किया हैयह सब अतीत खण्ड में यथा साध्य संगृहीत है, यदि आपने अभी तक यह ग्रन्थ नहीं पढा है तो अवश्य पढें, आपके पास न पहुंचा हो तो प्राप्त करें।

अब चतुर्थ भूमिका में आप भिवानी इतिहास "वर्तमान खण्ड" देख कर अत्यन्त प्रफुल्लित होउठेंगे क्यों कि इसमें आप अपनी मातृभूमि भिवानी का यश, वैभव, सौन्दर्य और कार्य प्रणाली, माता के सपूतों द्वारा कीगई माताकी अनेक प्रकार की महती सेवाओं का सप्रमाण सचरित्र गौरव मय जीवन इतिहास आपके हाथ में हैं इसे पढिये और अन्यों से पढाइये एवं साथही हर्ष मनाइये कि हमारी जननी अपने सुपुत्रों द्वारा देश विदेशों तक में किस प्रकार प्रतिष्ठा सम्पन्न प्रतिभा सम्पन्न बनी हुई है। जन्मभूमिका सम्मान करनेवाले सुपुत्र सदा प्रसन्न चेता समृद्धिशाली एवं यशस्वी बनकर दीर्घायु होते हैं संसार उनकी मान प्रतिष्ठा करता है। माता अपने सत पुत्रकी प्रशंसा उसका यश उसकी समृद्धि देखकर हृदय से आशीर्वाद देती हुई उसका मंगलानुशासन करती है। इसे प्रसन्न अपना आशीर्वाद देती है जिससे उसका जीवन उच्चतम आदर्शमय होकर

प्रतिष्ठा प्राप्त करता रहे। माता के सुपुत्र देश देशान्तरों तक स्वदेश, स्वजन्मभूमि की प्रशंसा का सर्वतोमुखी प्रसार करते हुए सर्वत्र गौरव को प्राप्तकर विश्वभर में अपने और अपनी माता के नामके अमरत्व का डंका बजा देते हैं।

जिस माता के कुपुत्र उत्पन्न होजाते हैं वे स्वयं निन्दनीय होकर देश तथा मातृ भूमि और जातिकुल को कलंकित कर अप यश का भार अपने सिरपर लादकर अपने आपको और अपने पूर्वजों को भी समूल नष्ठ कर देते हैं। अतः ऐसे कुपुत्रों के अभाव का साधन देश में इतिहास भी है अतः इन सभी बातों को लेकर यह वर्तमान खण्ड किन्हीं अंशों में पथ प्रदर्शक हो सकने का अधिकारी है और हम से जैसा बन सका है बहुत श्रद्धा, सत्य, और उदारता को लेकर लिखा गया है। इस पर भी त्रुटियों का अवशेष रहजाना मानवका स्वभाव है पर उदार-मना पाठक त्रुटियों का विशेष ध्यान न करते हुए गुणों को ही अपनायेंगे। इसी साहस और बल पर यह सब कुछ हुआ है। और भविष्य में भी होता रहेगा। इतिहास के तृतीयखण्ड का भी प्रकाशन होगा जिसका नाम भावी खण्ड चिरंजीवी खण्ड यानी वर्तमान खण्ड का द्वितीय भाग, आपके प्राणप्रिय सुपुत्रों के कीर्तिमय जीवन की आशाओं का द्योतक होगा। जिसमें श्रीमानों के उत्तराधिकारी तथा लालनीय उन सुपुत्रों के गौरव गीतग्रन्थित होंगे जिनसे आपकी आशामय आत्माओंको सर्वतः सुखमयी शान्ति प्राप्त होगी।

आज जिस प्रकार प्रभु की कृपा और पूर्वजों के पुण्य प्रताप तथा आप जैसे सुयोग्य प्रेमियों के सहयोग से पिछले शुभसंकल्प पूरे हुए हैं इसी प्रकार से यह चिरंजीवी खण्ड भी

पूर्ण होगा, यही मेरी भावनामयी शुभकामना हैं जिसे सर्व शक्तिमान सर्व गुणसम्पन्न श्री हरि अवश्यस्वीकार करेंगे।

मेरे पूज्यवर एवं इष्टमित्र, बन्धुबान्धव, प्रेमी हितैषी यदि इस अपने ग्रन्थ को अपना ही समझकर अपनायेंगे तो मुझे भारी सन्तोष और हर्ष होगा। सज्जन अपनोंके वैभव को देख कर अति प्रसन्न होते हैं।

क्या कोई लेजाएगा संग प्राणी मरजानेके बाद।
नाम ही बकी रहेगा काम करजाने के बाद॥

भवदीय—

स्वामी मुरलीधराचार्य 'तिलक'

श्री मन्दिर श्रीबिहारी जी महाराज　　अध्यक्ष:—
निर्जला इकादशी २००६　　भिवानी इतिहास समिति

शहर के सभ्य व सम्मानित व्यक्ति जो मेरे पर प्रेम एवं दयाभाव रखनेवाले ईष्ट मित्रों ने अपनी उदारता पूर्वक शुभकामनायें प्रकट की हैं, धायवाद ?

"तिलक"

शुभ कामनाएं—

देशभक्त—श्री पं० नेकीराम जी शर्मा

भिवानी के विषय में श्री मुरलीधराचार्य तिलक ने दो खण्डों में भिवानी इतिहास नाम से ग्रन्थ लिख कर अपनो योग्यता एवं शहर भिवानी के प्रति अपनी श्रद्धा व प्रेम परिचय दिया है। इतिहास के लिये शुभ कामना—आचार्यजी को मेरा शुभाशीर्वाद।

नेकीराम शर्मा

श्री मेलाराम जी वैश्य

पं० मुरलीधर जी आचार्य को मैं बहुत समय से जानता हूं। उच्चतम विचार सुन्दर भाव और कार्य सम्पन्न करने की इनमें शक्ति और उत्साह है। फलस्वरूप दो खण्डों में भिवानी का इतिहास लिख कर इन्होंने अपनी योग्यता व जन्म भूमि के प्रति श्रद्धा और भिवानी निवासियों के प्रति प्रेम प्रदर्शित किया है। यह इनकी किसी भी अंश में सेवा है जो स्तुत्य है। मेरी हार्दिक शुभकामना इतिहास के प्रति है।

मेलाराम वैश्य

रायबहादुर श्री पं० श्रीदत्त जी शर्मा

मुझे बड़ी खुशी है कि पं० मुरलीधराचार्य अपने दूसरे उद्देश्य की पूर्ति में भी आज सफल हैं। दो खण्डोंमें भिवानी का विवरण इतिहास लिख कर इन्हें अपनी योग्यता एवं जन्म भूमि के प्रति श्रद्धा ईष्ट मित्रों के प्रति सम्मान व प्रेममयी उदार भावना प्रकट कर महानता का परिचय दिया है। भिवानी निवासियों को वास्तव में यह अमर कृति भविष्य के लिये बड़ी उपादेय सिद्ध होगी, और मैं तो सदा से ही इनका हार्दिकता से शुभ चिन्तक एवं सहयोगी रहा हूँ और सदैव रहूँगा मेरा अन्तः करण से शुभाशीर्वाद।

श्रीदत्त शर्मा

रायसाहेब श्री राधाकृष्ण जी आलमाल

मैं बहुत वर्षों से स्वामीजी से भली प्रकार परिचित हूं। इनके जीवन से दूसरों का हित भी होता है। भिवानी का इतिहास जो दो जिल्दों में इनके द्वारा लिखा गया है उत्तम और आवश्यकताओं को किसी भी समय पूर्ण करने में अच्छा साबित होगा। शिक्षित होने के नाते इन्होंने अपने कर्तव्य का पालन किया है। मेरी तो हर समय स्वामीजी के प्रति श्रद्धा परस्पर प्रेम का विशुद्ध व्यवहार रहा है और रहेगा।

राधाकृष्ण आलमाल,

श्री स्वामी जयरामदास जी आयुर्वेदाचार्य

मेरे मित्र पं० मुरलीधरजी आचार्य द्वारा भिवानी के दो खण्ड प्रकाशित हुए। मुझे महान प्रसन्नता है। स्वामीजी का

कि "मुझे चैन तब मिलेगा जब मैं अपने नगर निवासियों का जीवन चरित्र पुस्तक रूप में छपा उनके सुन्दर गुणों को प्रकट कर उनकी कुछ सेवा कर सकूं। वर्षों प्रयत्न के बाद सं० २००७ कलकत्ता नगरी में भिवानी इतिहास का अतीत खण्ड नाम से प्रकाशन किया गया। जिसमें उन महा विभूतियों का परिचय है जिनका नाम धीरे धीरे जनता के हृदय से विसर्जन होता जा रहा था और जिनके त्याग शूरता तथा वीरता की कहानी आज भी भिवानी के रजकणों से मूक भाषा में निकल रही है। वह महापुरुष यद्यपि आज संसार में नहीं है किन्तु उन्हें कोई भूला भी नहीं सकता जब तक भिवानी इतिहास में उनके सुमनोहर गुण अंकितव सुभोशित हैं।

आज वर्तमान खण्ड प्रकाशित कर उस अतीत खण्ड नामक अधूरे ग्रन्थ को ही पूर्ण नहीं किया गया बल्कि भिवानी निवास एकता की शृंखला में बंधनें के साथ २ यह महान नगर भी अमर होगया, क्योंकि आज भिवानी के अधिकांश व्यक्ति बाहर दिशावरों में व्यापार हेतु जाकर एक तरह से वहीं के निवासी बन गए हैं। किन्तु आज भी वह अपनी भिवानी नगरी को भूले नहीं हैं अपने को भिवानी वाला" कहना और भिवानी के हर कार्य में योगदान देना यहां के सुख दुख को अपना समझना अपनी भाषा को बोलना ही अपना कर्तव्य समझते हैं हो सकता है आगे आनेवाली सन्तान

सम्भवतः अपने को भिवानी वाला न कह कर उसी नगर का निवासी कहें और भिवानी के साथ जो उनके पूर्वजों का मातृ सम्बन्ध रहा है उसे भूल जाएं इन्ही सब बातों को समझ यह वर्तमान खण्ड उन व्यक्तियों के लिये लिखा गया है जिससे कि वह अपने को भिवानी का निवासी मान कर इस नगर के दुःख सुख के सदा साथी बने रहें।

आज व्यापार के कारण यहां के निवासी दूर २ व्यापारिक क्षेत्रोंमें जाकर एक दूसरे को कुछ भूल से भी गए हैं इसलिये उन सभी महानुभावों का परिचय एक दूसरे के प्राप्त हों एक दूसरे के व्यापार से परस्पर एक दूसरे के कुटुम्ब से वह जानकारी कर सकें। इन्ही सब भावनाओं को लेकर यह एक ऐसी प्रेम—माला इतिहास द्वारा प्रस्तुत की गई है ताकि हम दूर रहने पर भी परस्पर में एक दूसरे को न भूलें और हमारा नागरिक सम्बन्ध जिसे हम जन्मभूमि सम्बन्ध भी कहसक्ते हैं सदा अटल और बनारहे। यही हमारा भिवानी इतिहास लिखने का मुख्य उद्देश है।

इस कार्य के लिये जिस समय भी पिताजी की आज्ञा हुई उसे शिरोधार्य कर जैसा मेरे से बन सका सभ्य महानुभावों के समक्ष यह कृति उपस्थित है।

अब मैं अपनी त्रुटियों की तरफ आप महानुभावों का ध्यान आकर्षित कर यह स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि इस भिवानी इतिहास से विशेष सम्बन्ध भिवानी वालों का ही है। इसी लिये इसमें भिवानी की भाषा को ही विशेष स्थान दिया गया है क्योंकि इस इतिहास को पढ़ना और समझना भिवानी वालों के लिये ही विशेष कर है। इस लिये इस में यह नगर

जीवन कर्मठ और उद्योगी परिश्रमी और स्नेही जीवन है। समय समय पर श्री रंगनाथ प्रेस द्वारा समयोचित प्रकाशन होता रहता है। यह सभ्य और शिक्षित समाज के लिये उपादेय संग्रहीत साहित्य हैं। मैं तो अपने मित्र की हर प्रकार से शुभ चिन्तना करता रहता हूँ। इन्हें और भी जन्म भूमि की सेवा करने का अवसर प्राप्त हो। यही मेरी मानसिक भावना और इनसे आशा भी है।

स्वामी जयरामदास

श्री रामकुमार जी हलवासिया

पूज्य स्वामीजी ने वर्तमान खण्ड का भी प्रकाशन कर दिया हर्ष की बात है जिस समय अतीत का सम्पादन इनके द्वारा हुआ था उस कठिन समय को देखते हुए बहुत कम आशा थी कि वर्तमान भी निकलेगा। स्वामी जी अपने विचारों के पक्के एवं दृढ़ संकल्पी महानुभाव हैं। अब तृतीय खण्ड का जो इनकी पवित्र आत्मा ने संकल्प किया है। अवश्य यह सफल होगा। मेरी तो स्वामीजी के प्रति अटूट श्रद्धा व प्रेममयी सर्व प्रकार की शुभ भावना व कामना है।

—रामकुमार हलवासिया

श्री रामचन्द्र जी वैद

भिवानीके विषयमें स्वामी मुरलीधराचार्यजी ने दो खण्डों में इतिहास लिखा है बहुत खोज एवं महान परिश्रम का कार्य जो इनके द्वारा सम्पन्न हुआ, मेरी हार्दिक शुभकामना स्वामी जी के प्रति है।

रामचन्द्र वैद्य

❀ श्री हरिशरणम् ❀

क्षमा—याचना

भगवान की असीम कृपा पूर्वजों का पुण्य प्रताप तथा आप जैसे महानुभावों के सहयोग से किन्हीं अंशों में यह सफलता जो आज प्राप्त है—प्रभु का धन्यवाद।

पूज्य श्री पिताजी की कई बर्षो से यह इच्छा थी कि अपनी जन्म भूमि भिवानी नगर का एक विशाल इतिहास लिखा जाए ताकि हमारी यह जन्म भूमि जिसकी धूली में लेट कर खेल कूद कर हम बडे हुए हैं उसकी सेवा का जो हम पर ऋण है उसका कुछ अंश इस नगरी की स्थाई कीर्ति बना कर उतार सके। यह भावना पिताजी के विशाल हृदय में वर्षों से गूंज रही थी या यूं समझिये कि इस नगर में उत्पन्न हुई महान् आत्माएं जिन्होंने इस नगर की सेवा हित अपना बलिदान दिया है एक एक पैसा जोड़ धन संचय कर गरीबों को दान दे महान दानी कहलाए हैं और जो उनके वंशज मूल कर्तव्य से दूर हो रहे थे उन्हीं के मार्ग प्रदर्शनार्थ उन आत्माओं ने पिताजी से ही अपनी वह अक्षुण्य सेवा लेनी चाही जिसके लिये पिताजी बार २ उतावले हो कर कहते

की भाषा को देना ही मित्रों की राय से जरूरी समझ भिवानी की भाषा ही दी गई है हमारा ऐसा करने से इस इतिहास में साहित्यिक दोष का आजाना जरूरी है कारण की प्रान्त २ की भाषा अलग २ होती है। इसमें हरियाणा की भाषा सिंह भाषा है। इसमें भी भिवानी की भाषा तो अपना अलग ही स्थान रखती है इस लिये पुज्य विद्वान जन और साहित्य समाज तथा इतिहासकार महानुभावों की दृष्टि में यह साहित्यिक दोष न समझा जाए।

अस्तु, अब मैं अपने उन सहयोगियों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रगट करता हूँ जिन्होंने मुझे इसमें पूर्ण सहयोग देकर अपना कृतज्ञ बनाया है मैं उनके उपकारों का हृदय से आभारी हूँ।

मैं जहां कहीं भी किसी व्यक्ति विशेष के पास इस आशय को लेकर गया, उनसे मुझे बड़ा सन्तोष और पूर्ण उत्साह प्राप्त हुआ। शहर में शहर से बाहर व्यापारिक केन्द्रों में जहां कहीं भी हमारे नगरवासी रहते हैं और सम्मान पूर्वक अपना तथा अपनी जन्मभूमि का गौरव बढ़ाए हुए हैं उन्होंने मेरा बड़ा सत्कार एवं प्रेम भाव के साथ २ अपना पूर्ण सहयोग दिया। अतः मैं हृदय से उन सभी प्रेमी महानुभावों का कृतज्ञ हूँ। और उनकेउपकारों का अंतःकरण से आभारी हूं।

आपका—

बलदेव शर्मा आचार्य

सम्पादक—दैनिक श्री रंगनाथ,

भिवानी।

श्री घनश्यामदास जी जालाण

मेरे पूज्य स्व० पिताजी से श्री स्वामी जी का बहुत घनिष्ट प्रेम था। तभी से मैं आचार्यजी के स्वभाव से पूर्ण परिचित हूं। इनके द्वारा समय २ पर जनोपयोगी हिन्दी साहित्य का प्रकाशन होता रहा है। भिवानी का अतीत और बर्तमान खण्ड लिख कर तो इन्होंने अपना प्रेम व योग्यता का परिचय दिया है। मैं तो सदैव से ही स्वामी जी का तथा इनके द्वारा किये गये सद्कार्यों का सहयोगी रहा हूँ। मेरी स्वामी मुरलीधरजी आचार्य में पूर्ण श्रद्धा व प्रेम है।

—घनश्यामदास जालान

डा० तुलसीदास जी डा० नारायणदासजी

श्री स्वामीजी को, जब से हम लोग अपने वतन को छोड़ कर भिवानी आये हैं तभी से हम इन्हें जानते हैं। स्वामीजी बड़े मिलनसार निस्वार्थ सच्चे प्रेमी हैं। हमारे हर समय के सुख दुःख के साथी रहे हैं और हैं। इनके पवित्र दिल में सेवा तथा परोपकार की भावना है। इनकी बाबत हमें यही सुना है कि प्रथम समय से ही इनका जीवन सार्वजनिक जीवन रहा है। इनके विशाल हृदय में दया है जो मानवधर्म का पहला लक्ष्य है। हमारी स्वामीजी के लिये हर समय शुभ भावना है।

डा०तुलसीदास महतानी

डा० नारायणदास M C·

श्री हरचन्दराय जी चिड़ीपाल

आप महान उत्साही परोपकारी उदार स्वभाव के सच्चे हितैषी व मेरे प्रेमी हैं। वर्तमान के प्रकाशन तक जो आपने अपनी उदारता एवं मेरे कार्य के प्रति सन्तोष रखते हुए अपने नियम व प्रेम को निभाया है। इसके लिये मैं आपका हृदय से आभारी हूँ।

श्री हनुमानप्रसाद जी मोडा

आपके उदार एवं विशाल हृदय में दूसरों के प्रति स्थान है। शहर के हर शुभ कार्य में आपके परिवार का किसी न किसी प्रकार से सहयोग व हाथ रहता है। उसी परम्परानुसार आप भी अपने स्वरूप को महान और गौरवशाली बनाये हुए हैं। शहर का यह भी एक चिरस्मरणीय कार्य समझ कर इसे अपना कर आपने महान व्यक्तित्व का परिचय दिया है।

ला० मंगतराय जी जैन

जैन सम्प्रदायचार्य अणुव्रति संघ के संस्थापक विश्व वद्य आचार्य श्री १००८ श्री तुलसी गणी जी महाराज के चरण-सेवक तथा मेरे परम स्नेही श्री मंगतराय जी जैन जिन द्वारा इस ग्रन्थ के प्रकाशन कार्य में समय २ पर सम्मान पूर्वक सहयोग प्राप्त हुआ है उसके लिए मेरे हृदय में जैन जी के प्रति महान स्थान है, धन्यवाद के पात्र हैं।

श्री धन्सीराम जी रेखान

आप मेरे सदा के साथी सच्चे शुभचिन्तक हैं। भिवानी इतिहास वर्तमान खण्ड की रूप रेखा आपके देहली के क्लोथ मार्केट वाले कमरेमें बनती रहती थी। वह आपका विशुद्ध प्रेम सेवा सुश्रूशा के कारण ही इतिहास का बहुत कुछ अंग आपके सम्पर्क से बना है। वह समय मेरे याद है। धन्यवाद।

श्री बजरंगलाल शर्मा आयुर्वेदाचार्य

आप शिवनारायण औषधालय मालीवाडा के अध्यक्ष है आपके द्वारा इतिहास प्रकाशन संयोजन तथा विचार विमर्श समय २ पर होता रहा है आपके औषधालय में हर प्रकार का साधनवर्तमानकेलिये पूरा २ सहयोग रहा है आपउदार विचारों के समझदार कुल परम्परा के परीक्षक शुद्ध व्यवहार के प्रिय चिरंजीवी हैं।

श्री दुलीचन्द जी जैन

आप स्व० बदरीदास जी जैन के सुयोग्य सुपुत्र हैं आप हिन्दी साहित्य के जानकार तथा प्रेमी है। भिवानी इतिहास वर्तमान खण्ड में आप का उदारता पूर्वक सहयोग जो समय २ पर आपके मित्र श्री रामस्वरूप जी द्वारा प्राप्त होता रहा है उदारता और प्रेम को निभाना ही हितैषिता है इसके लिये आपदोनों धैर्यवान उदारस्वभावके सच्चे प्रेमी महानुभावों का मैं आभारी हूँ।

श्री भागीरथमल बुवानीवाला

आप बड़े उत्साही और अपने बड़ों में पूर्ण श्रद्धा रखने वाले आज्ञाकारी सौम्य स्वभाव के विचारशील होनहार नवयुवक हैं। इतिहास के प्रकाशन में आपका सहयोग मेरे लिये चिरस्मरणीय है।

डा ० श्री पुरुषोत्तमदत जी गिरधर

आप भारत प्रसिद्ध डाक्टर होने के नाते भिवानी शहर के प्रति अपनी पूर्ण कृतज्ञता रखते हैं । आपने वर्तमान खण्ड जिसका प्रकाशन लगभग १ साल के जारी रहा है इस बीच में बड़ो धैर्यता और सन्तोष के साथ जो उदारभाव रक्खे है वह मुझे स्मरण है मैं तो आपकी उदारमयी भावना को इस ग्रन्थ के प्रति पूर्ण सहायता व सहयोग मानता हूं और हृदय से डा० महोदय का शुक्रिया करता हुं।

श्री पुरुषोतमदास जी हलवासिया

आप भिवानी नगरी के प्रति बहुत स्नेह रखते हैं समय समय पर प्रत्यक्ष अप्रत्यक्षता में आपकी तरफ से कोई न कोई सार्वजनिक कार्य व सेवा होती रहतीहै आपके अधिकारमेंआपके पूज्य वंशधरों द्वारा लाखों का एक महान ट्रस्ट है जिससे आपके उद्योग एवं परामर्श से शहर में लाखों रुपया सार्वजनिक कार्यों में लगता है। यह भी भिवानी के निवासियों द्वारा किये जाने वालों की एक स्मृतिमय इतिहास है जिसके लिये आपने किसी भी रूप में इस में अपनी उदारता व समय पर सहयोग देकर सम्पन्न करवाने में जो सभ्यता का परिचय दिया है मेरा अन्तःकरण से शुभाशीर्वाद है।

भिवानी वर्तमान खण्ड पर जिन २ महापुरुषों ने उदारता पूर्वक अपनी अमूल्य सम्मति प्रदान की है। मैं उनका धन्यवाद हृदय से करता हूँ।

"तिलक"

श्री महन्तजी महाराज

आचार्य श्री दामोदरजी महाराज महन्त श्री सवा मन सालगराम वृदाबन तथा हनुमान मन्दिर इन्दारा कुवां देहली जो एक सच्चे सन्त और महन्त भगवतभागवत सेवा परायणहै। हमारे शुभचिन्तक व बन्दनीय महात्मा हैं। इन्होंने भी अपनी सम्मति प्रदान की है।

"स्वामीजी का प्रयत्न और अपनी जन्म भूमि के प्रति प्रेम व श्रद्धा प्रशंसनीय हैं। जब यह वैष्णव जगत का इतिहास लिखेंगे तब मैं इन्हें अपना आशीर्वाद विशुद्ध रूप से दूंगा"

श्री रामरिछपाल झुंझूनू वाले

आप कलकत्ते की धार्मिक जनता एवं व्यापारिक वर्ग में एक प्रतिभा शाली कार्य कुशल महानुभाव हैं। आपने "अग्रवाल स्मृति भवन का कलकत्ते में निर्माण करवा कर अपने लोकोपयोगी जीवन को महान व अमर बना दिया है।

आपका जीवन आदर्शमय जीवन है। आपने भी कुछ प्रेम भरे शब्दों में अपनी उदारता प्रगट की है।

"स्वामीजी का जीवन सार्वजनिक सेवा का जीवन है। कलकते में जब निरन्तर आपका निवास था। तब बहुत से सार्वजनिक कार्यों में हमें इनका बहुत सहयोग प्राप्त होता था।

आज भी कोई न कोई सेवा आपके द्वारा बनती रहती है जो हर्ष की बात है"

श्री मुरलीधरजी बजाज

आप भारत प्रसिद्ध धर्म रत्न स्व० श्री खेमराजजी श्री कृष्णदासजी अध्यक्ष श्री वैंक्टेश्वर छापाखाना बम्बई जिसके द्वारा धर्मग्रन्थों का वह प्रकाशन हुआ है जो आज हिन्दू हिन्दी भाषा भाषी आपके प्रतिभाशाली परिवार के कृतज्ञ हैं। उन्हीं महान विभूतियों के आप पौत्र तथा हमारे परम प्रिय स्नेही परम भागवत श्री वैष्णव रत्न वैकुण्ठवासी श्रीनिवासजी बजाज के सुयोग्य सुपुत्र है बड़े ही प्रभावशाली उदारमना सौम्य व विनम्र स्वभाव के यशशाली भाग्यशाली प्रिय सज्जन हैं। आपने भी अपनी अमूल्य सम्मति प्रदान कर प्रेम परिचय दिया है।

"श्री पूज्य स्वामीजी हमारे परिवारसे बहुत स्नेह व अपना हो परिवार समझते हैं। यह हमारे लिये सौभाग्य की बात है। हमारे पूर्वजों के प्रति इनका प्रेम व पवित्र हृदय में श्रद्धा मेरे प्रति शुभाशीर्वाद यह सब कुछ इनकी उदारता सौजन्यता और श्री सम्प्रदाय का सम्बध हो आचार्य जी की महानता प्रकट कर रहा है। हमारा तो सभो परिवार स्वामीजी में अपनी निष्ठा प्रेम रखता है"

स्वामी ज्ञान योगानन्द जी महाराज

आपने अपना जीवन महानतम व साधु जीवन बना रक्खा है। आपने कलकत्ते में हुए पिछले उपद्रवों का कितनी बुद्धिमता व अपनी बाहुबल शक्ति से नियंत्रण किया था उसे

कलकत्ता वासी अबाल वृद्ध आपके गुणों का उपकार आज तक नहीं भूले हैं। अब भी समय २ पर जनता जनार्दन की बड़ी २ सेवायें श्रीमान्‌जी के तत्वावधान में आपके ही द्वारा सम्पन्न होती रहती हैं। आपने भी प्रेम के नाते कुछ लिखने की कृपा की है।

"मेरे चिरपरिचित व परम स्नेही स्वामीजी ने अपनी जन्म भूमि के प्रति अपनी श्रद्धा स्वरूप दो खण्डों में इतिहास लिख कर भिवानी निवासियों के प्रति जो सम्मानता व योग्यता का परिचय दिया मेरे को बहुत सन्तोष और महान हर्ष प्राप्त हुआ है"

श्री केदारनाथ बहुवाला

आप केदारनाथ बिश्वेश्वरलाल फर्म के मालिक हैं साहित्य व बृजधाम के आप प्रेमी सज्जन उदार स्वभाव के व्यक्ति हैं। आपने भी कुछ लिखा है "श्री पूज्य स्वामी जी हमारे पुराने स्नेहियों में तथा सहयोगियों में से हैं। और सदैव मेरे शुभ-चिन्तक रहे हैं। मैं तो इनका हृदय से आभारी हूँ"

श्री बिश्वेश्वर लाल जी चिड़ीपाल

आप स्वर्गीय श्री मुकन्दलालजी चिड़ीपाल के जेष्ठ पुत्र हैं जो बड़े उच्च बिचारों के व्यापार कुशल समझदार व्यक्ति हैं। आपने अपनी योग्यता एवं परिश्रम तथा बुद्धिमता के कारण अपनी फर्म को सर्व प्रकार प्रतिष्ठा सम्पन्न बनाया है। आपने भी इतिहास पर अपनी राय प्रकट की है।

"श्री स्वामी मुरलीधरजी आचार्य ने भिवानी इतिहासनाम से दो जिल्दों में अच्छा संग्रह कर ग्रन्थ प्रकाशित किये। मुझे महान खुशी हुई जो हमारी जन्म भूमि के प्रति इनकी महान

श्रद्धा व निष्ठा है मेरी हार्दिक सहानुभूति इतिहास के प्रति है"

ठा० चिरंजीतसिंह एडवोकेट

आप शहर के सभ्य महानुभाव कार्य कर्ता सुयोग्य व्यक्ति हैं। और मेरे जीवन के हर एक कार्य में सहयोगी चि० बलदेव के सदृश सदा साथ में कार्य करने वाले सच्चेशुभचिन्तक हैं।

"मैं तो स्वामीजी में अपनी सद्भावना व आन्तरिक श्रद्धा भाव सदा से ही रखता हूँ। स्वामीजी के हर सफल कार्य में अपनी सफलता समझता हूँ"

श्री सेवकरामजी निगम

आप निगम फाइन आर्ट कम्पनी के सुयोग्य, उदार विचारों के प्रोप्राईटर हैं। जिसमें ब्लाक आदि बहुत सुन्दर व उचित रेटों पर तैयार किये जाते हैं। आप बड़े विनम्र एवं सौम्य स्वभाव के कार्य कुशल महानुभाव हैं। वर्तमान खण्ड को जो आपने ब्लाकों से रंग कर सुसज्जित किया है यह एक आपके जीवन का मेरे प्रति पूर्ण प्रेम व भावना है।

"मैं तो इतना योग्य नहीं हूँ जितना पूज्य स्वामीजी ने अपने हृदय में स्थान दिया है। मैं समयाभाव के कारण अपना वास्तविक सेवा स्वामीजी की न कर सका। इसका मुझे ख्याल है। मैं तृतीय खण्ड में अपनी सेवावों से स्वामीजी के उपकारों से उऋण होने की चेष्टा करूंगा"

श्री रामस्वरूप जी बुवानीवाला

आप शहर के एक सार्वजनिक कार्य कर्ता एवं महान उत्साही समझदार व्यक्ति हैं इतिहास के समय आपका हर प्रकार का सहयोग प्राप्त होता रहा है।

स्वामीजी हमारे गुरु परिवार में मेरे सच्चे स्नेही आदरणीय हैं। मैं जैसा भी हूं आपका हूं।

॥ श्रीमते रामानुजाय नमः ॥

भिवानी का पूर्व रूप और वर्तमान परिचय

विक्रमीसंवत १४२२ में इस भिवनी नगर की स्थापना श्री ठा० नीमसिंह जी ने कूंट उमरावत नामक गांव से आकर चैत्र कृष्णा ५ शुक्रवार के दिन भानी नामक स्त्री के साथ की थी। यह ठाकुर नीमसिंह जी तंवर वंशी जाट्टू गौत्रीय राजपूत थे। इस इलाके में जितने भी राजपूतों के गांव हैं, वह सभी जाट्टूसिंह की सन्तान है और इन्हीं के वंशजों द्वारा यहां १४४४ खेड़े आबाद किये हुए हैं, उपरोक्त श्री जाट्टूसिंह जी नीमसिंह के बाबा तथा भारत प्रसिद्ध गूगासिंह के (जिनकी भाद्रपद् कृष्णा ६ के दिन समस्त भारत में गूगानवमी मनाई जाती है)। मौसा लगते थे।

नीमसिंह जी अपने पिता सरसा निवासी श्री साढ़सिंह जी से नाराज होकर उमरावत आगये थे, राजपूती गुणों के कारण उमरावत के जाटों पर यह स्वभाव से ही हुकुमत करने लगे, फलस्वरूप जाट इनसे चिढ़ने लगे और नीमसिंह को गांव से

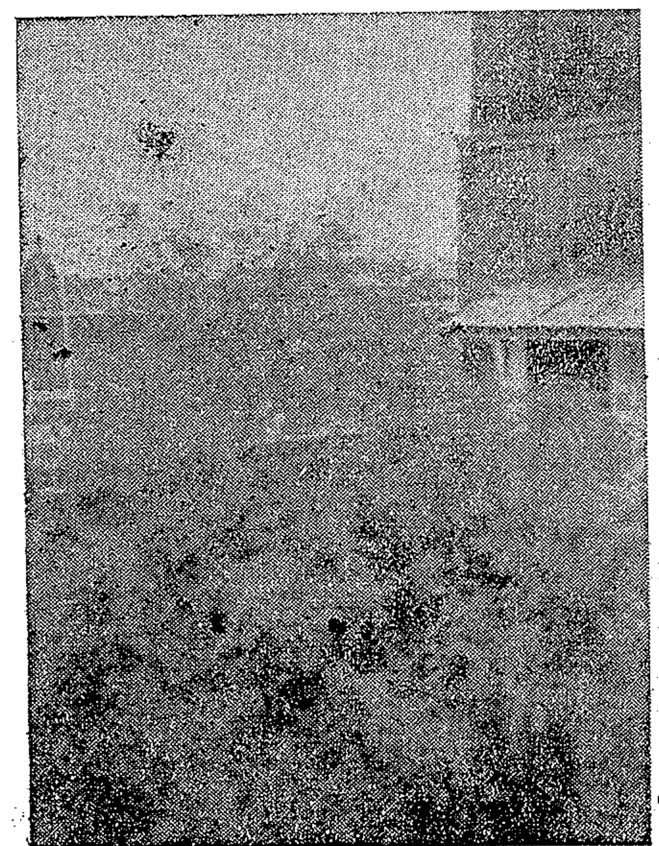
निकालने के लिये भीतर ही भीतर षड़यन्त्र रचने लगे लेकिन नीमसिंह की दिलावरी शूरता तथा सदाचारादि गुणों पर मुग्ध होनेवाली "भानी" नामक एक वीर जाटनी ने इस षड़यन्त्र का भण्डा फोड़कर दिया फलस्वरूप जाटों से लड़ाई हुई और अन्त में जाटों ने नमना पड़ा किन्तु साथ ही नीमसिंह ने भी उमरावत गांव को छोड़ना पड़ा।

जिस स्त्री के कारण इनकी रक्षा हुई उस भानी नामक स्त्री के नाम पर ही यह "भिवानी" (भानीगांव) बसाया गया। बुवानी निवासी श्री पं० किशोरीलाल जी को जो कौशिक गौत्रीय लाटा ब्राह्मण थे और तंवर राजपूतों के पुरोहित माने जाते थे उन्हें बुवानी से यहां बुलवाकर अपना पुरोहित बना, भिवानीनगर की नींव डाली, भानी नामक जाटनी के पुत्र का नाम "भित्ता" था, जिसके नाम पर 'भित्ताथल' गांव बसाया गया श्रीनीमसिंहजी जहां रहते थे उस गांव का नाम "निमड़" पड़ा जो वर्तमान शहर से कुछ फासले पर अब भी आवाद है।

पहले यहां पर पानी की बहुत भारी कमी थी और पुराने जमाने में यह एक खास बात थी कि जहां पर विशेष तौर पर जल आदि की सुविधा होती थी बस्ती वहीं बसाई जाती थी।

एक बार का जिकर है कि एक भैंसा पानी पीकर उनके पास से गुजर रहा था, उसे देखकर उन्होंने सोचा कि यह कहां से पानी पीकर आरहा है, तलाश करना चाहिये, काफी परिश्रम करने पर वर्तमान "डोभी तालाव" का पता लगाया गया, जिसमें

भैंसा पानी पिया करता था। जल का ठहराव होने से यह स्थान उन्हें अत्याधिक पसन्द आया, पृथ्वी का निचाव एवं प्राकृतिक सुन्दरता के कारण यदि इसे झील कहदिया जाए तो कोई अत्युक्ति न होगी, साधन पूर्ण स्थान देखकर उन्होंने यहीं नगर निर्माण करने का संकल्प किया।



वर्तमान में आज जिस बिचला बाजार में गेड़ के ऊपर जो "विद्युत गृह" (इलैक्ट्रिक हाऊस) बना हुआ है उसी के पीछे जांडी का वृक्ष है सबसे पहले नीमसिंह जी ने यहीं पर भिवानी नगर की नींव डाली थी।

प्राचीन स्मृति चिन्ह स्वरूप आज भी यह जांडी वृक्ष उपस्थित है जिसे नगर की आधार शिला के नाम से पुकारा जा सकता हैं।

भिवानी के रहने वाले समस्त राजपूत श्री नीमसिंह की सन्तान है। राजपूतों की यहां जितनी भी चौपालें हैं उन सभी में यहां के राजपूत नीम का वृक्ष लगाते हैं, और उसे बहुत श्रद्धा की दृष्टि से देखते हैं इनकी श्रद्धा का उदाहरण—उस नीम का एक भी पत्र टहनी न तो यह स्वयं ही तोड़ते हैं और न हीं किसी दूसरे को तोड़ने देते हैं।

नीमसिंह जी के एक पुत्र श्री ठा० वाच्छुसिंह हुए इनके के दो पुत्र लोहड़सिंह और जोनपालसिंह हुए, लोहड़सिंह के नाम पर बसा हुआ लोहड़ बाजार है, और जोनपाल सिंह के चार पुत्र हुए हालुसिंह, वीरसिंह, नरसिंह, जयतसिंह, बड़े पुत्र हालु के नाम पर हालू बाजार अन्य तीनों के नाम पर क्रमशः वीरम नाम पर वीरवान पाना, नरसिंह के नाम पर नरसान पाना, तथा जयतसिंह के नाम पर जितूवाला तालाब, बसाया गया।

इसी प्रकार जोनपाल के वंश में आसुसिंह और मानुसिंह भी हुए, क्रमशः इनके नाम पर भी पाना असियान और पाना मानाण हालु बाजार में बसे हुवे हैं।

इसी प्रकार लौहड़सिंह जी के पांच पुत्र हुए छाजुसिंह उन्दासिंह, बलवीरसिंह, झामसिंह, मुन्डुसिंह, इनमें तीन जो बड़े हैं वह निःसन्तान रहे झामसिंह के दो पुत्र

हुवे, मन्डुसिंह अपने पिता लोहड़सिंह के साथ मुसलमान बनगए लोहड़ बाजार में अब झामसिंह की सन्तान निवास करती है।

झामसिंह के दो पुत्र हुवे मोवासिंह और मेवासिंह, न्हीं के नाम पर लौहड़ में दो पाने मोघाण, और मेघाण आवाद हैं। उपरोक्त दोनों पानों में चार चार उप पाने बने हुवे हैं।

मेघाण में—राजान, काथान, पृथान, दासाण।
मोघाण में—सोलान, भणसी, टाइयां खौखरान।

यह पाने इनकी सन्तानों के नामों पर बसे हुवे हैं, वैसे लोहड़में प्रधान दो पाने हैं चार इनकी शाखाए हैं इस तरह आठ पाने लोहड़ बाजार में और आठ ही हालु बाजार में बसे हुए है। हालू में वीरवानपाना, नरसानपाना, असियान पाना और माणानपाना है। माणान में चार शाखाए हैं। लखवाण, हिन्दवाण, भीखाण और एक कीताण।

इस तरह भिवानी में १६ पाने पांच बाजार तथा बारह दरवाजे हैं, हालु लौहड़को ठीक बीचों बीच बाटती हुई बिचला बाजार में से होती हुई बिचला बाजार सड़क चली गई है इस सड़क के दाहिनी ओर बसनेवाले हालु बाजार में कहलाते हैं और बाईं ओर बसने वाले लोहड़ बाजार में समझे जाते हैं यही सड़क बापोड़ा गांव तक चली गई है बाहर खेतों एवं जमीनों का बटवारा भी इसी सड़क से होता हैं।

उस समय की यह भिवानीनगरी आज बहुत बड़ा शहर

बन चुका है और समूचे पंजाब में अमृतसर के बाद भिवानी का ही नाम सब से बड़ा है। प्रारम्भ काल में यह नगरी बिचला बाजार स्थित गेड़ और उसके आस पास रूपो चम्पों की गली, तक ही बसी हुई थी, और बिचला बाज़ार का जो इस समय चोपटा है यहां शहर प्रवेश का द्वार था पूर्व में हीरापुरी के पास नगर प्रवेश द्वार, कच्चा मिट्टी का बना हुआ था। जहां इस समय वैश्य औषधालय बना हुआ है उस समय यहां नगर का स्मशान स्थान था, इस प्रकार करीब हजार पन्द्रह सौ की संख्या में यहां मनुष्य निवास करते थे, और एक छोटे से गांव के सदृश यह भिवानी नगरी थी उस समय कौन कह सकता था कि यह भी कोई विशाल शहर होगा और समस्त पंजाब में धनियों और दानियों तथा शूरवीरों के रहने का सुन्दर सुविशाल नगर बन सकेगा। धीरे धीरे इस नगर की अभिवृद्धि होने लगी यह दिन प्रतिदिन तरक्की करता गया, इस नगर का व्यापार भी धीरे धीरे इतना उन्नति पर पहुंच गया कि एक दिन यह समस्त राजस्थान के व्यापार का सिंह द्वार समझा जाने लगा अरब से सीधे ऊंट माल के भर कर भिवानी आते और यहां से नमक मसाले मेवा सिन्दूक वर्तन मिठाई तथा मकान बनाने का सभी सामान राजस्थान में जाता, राजस्थानी व्यापार का यह शहर प्रधान केन्द्र था, और यहां के निवासी समूचे भारतवर्ष में धीरे धीरे अपने व्यापारिक मार्ग खोलने लगे।

किन्तु जबसे बीकानेर, लुहारुरेलवे लाइन निकली है तभीसे

यहां व्यापार मन्दा हो गया है, आज यहां नाम मात्र का मामूली व्यापार रह गया है। जन संख्या पहले की अपेक्षा काफी वृद्धि कर गई है सन् १९३१ में ४४ हजार जन संख्या थी १९४७ में ६० हजार जनसंख्या पहुंच चुकी थी किन्तु अब १९५३ की रिपोर्ट के अनुसार यहां ५२१८३ जन-संख्या है आज भिवानी शहर का क्षेत्रफल २ मुरब्बामील है।

इस शहर का प्रबन्ध करने के लिये १७ मैम्बर होते हैं जो म्युनिस्पिल मैम्बर कहलाते हैं।



❀ भिवानी तहसील का भूगोलिक विवरण ❀

भिवानी शहर भारत की राजधानी देहली से पश्चिम को ओर ७५ मील के फासले पर आबाद है, देहली से भिवानी रेल द्वारा १०२ माइल पड़ती है, किन्तु मोटर द्वारा केवल ७५ ही माइल मार्ग है।

यह शहर हिसार जिले का प्रमुख एवं सब से बड़ा शहर है। भिवानी से हिसार ४० माइल के फैसले पर है, और यहीं पर जिलाधीश (डिप्टी कमिश्नर) रहते हैं, उन्हीं के आधीन भिवानी नगर है। यह नगर उत्तर (नोर्दन) रेलवे स्टेशन पर आबाद है, यहां से एक सड़क रोहतक होती हुई देहली जाती है, और एकसड़क हांसी होती हुई हिसार जाती है तथा एक सड़क तोशाम की ओर जाती है। अन्य कई एक कच्ची सड़कें लुहारू, जीन्द आदि की ओर भी जातीं हैं।

भिवानी नगर के एक ओर दक्षिणमें पेप्सू राज्य लगता है दूसरी ओर रियासत बीकानेर (राजस्थान) लुहारू के इलाके से लगता है। लुहारू से आगे भिवानी तहसील से शेखावाटी का इलाका आरम्भ हो जाता है।

भिवानी के पूर्वी हिस्से को छोड़कर बाकी का हिस्सा रेतीला एवं मरु इलाका है, यह बतला देना जरूरी है कि भिवानी का अधिक भाग रेतीला होने पर भी अत्यधिक

उपजाऊ है। थोड़ी ही वर्षा में यहां अनाज के अम्बार लग जाते हैं। यहां की जमीन अत्यधिक शक्तिशाली है। भिवानी के आस पास कुओं का जल खारा है जो कि खेती उपजाने में असमर्थ है, और न हीं यहांनहर का कोई विशेषप्रबन्ध है,जलाभाव के कारण ही यह इलाका हर समय काल की गोदी में खेलता रहता है। यहां खेती का आधार वर्षा है, जिस साल यहां वर्षा नहीं होती उस साल यहां की परिस्थिति दयनीय तथा हजारों पशुओं की मत्यु हो जाती है। यहां के निवासी दूसरे स्थानों के शरणार्थी बन जाते हैं। जब कभी वर्षा होती है तब गए हुवे मानव वापिस आ जाते हैं अधिक संख्या में वह देशान्तरों में ही अपना कारो-बार आरम्भ कर देते हैं। इसी लिये भिवानी के व्यक्ति हिन्दुस्तान के प्रत्येक नगर में व्यापार करते हुवे पाए जाते हैं। यहां पानी की गहराई करीबन कूओं में ७०-७५ हाथ तक पाई जाती है इस इलाके के अनेकों गांवों में मीठे पानी के कूवे नहीं होने के कारण दूर दूर से ऊंटों, तथा बैल गाड़ियों में पानी भर कर लाया जाता है, या वर्षा के समय कुन्डों तालाबों के अन्दर पानी एकत्रित करके काम निकाला जाता है। यहां का जलवायु (मौसम) गरमी में गरम शर्दी में शीतल रहता है। हां स्वास्थ्य के लिये यहां का जलवायु विशेष सराहनीय है। पानी की कमी यहां सदा खटकती रहती है जिसकी वजह से भिवानी में बाग बगीचे अधिक संख्या में

होते हुवे भी फल व शाक सब्जी तो दूर रही बल्कि हरियाली भी मुश्किल से ठहरती है। उपज विभाग के अनुसन्धान करने वालों ने यहां की भूमि की अत्यन्त सराहना करते हुवे घोषणा की है कि अगर इस स्थान को नहर अथवा कूओं द्वारा पर्याप्त मात्र में पानी मिल जाय तो समस्त पंजाब की अन्न पूर्ति केवल यह इलाका ही कर सकता है। इस लिए इलाके में नहर का आना आवश्यक है। बिना नहर के इस इलाके का जीवन सदीं कहत के मुख में है।

भिवानी का संक्षिप्त परिचय

तहसील भिवानी की आबादी २ लाख ५ हजार ६३१ है ार तहसील में कुल लुहारू सहित २०५ गांव हैं। इलाके सबसे अधिक आबादी जाटों की है दूसरे दरजे में राजपूतों की ादी मानी जाती है। यह सभी लोग अधिकतर खेती बाड़ी का र्य करते हैं। यहां लोगों का खान व पहरान मोटा एवं सादा है।

अधिकतर इस इलाके में बाजरा, चना, जुवार, आदि २ धिक उपजता है किन्तु जौ, सरसों, गेहूँ और तिल, गुवार वगैरा बोए जाते हैं। इस इलाके की ककड़ी मतीरा बहुत प्रसिद्ध एवं ादु होते हैं और वर्षा होने पर काफी संख्या में उपजते हैं।

शहर भिवानीमें अधिकतर आबादी वैश्यों और ब्राह्मणों की ानी जाती है। इस इलाके में पुरुषार्थी करीब २४ हजारकी संख्या में वास करते हैं। और भिवानी खास में इस समय करीब १५ हजार रुषार्थी रहते हैं।

वैसे इस नगर में सभी धर्मावलम्बी और सभी जाति के यक्ति परस्पर सद्भावना के साथ निवास करते हैं किन्तु अधिकतर हां के निवासी सनातन धर्मावलम्बी ही माने जाते हैं।

यहां के व्यक्तियों में धार्मिकता के भाव अधिक होने से

यहां बहुत से धार्मिक स्थान बने हुए हैं और अनेकों धर्मकार्यों धर्मार्थ ट्रस्टों, व सभाओं व व्यक्तिगत तौरपर संचालन हो रहा जिससे समस्त इलाके को हर तरह का फायदा पहुंचता है। यहां व्यक्तियों की प्रकृति अत्यन्त सात्विक और अभक्ष्य वस्तुओं से रहने वाली है। घृत दूध ही यहां का प्रमुख आहार है।

शहर के चारों तरफ एक पक्की सहरपना (दीवार) बनी है जो कि अनेकों जगहों से अब टूट चुकी है। लोगों ने आने जा के जगह २ रास्ते बना लिए हैं। शहर रक्षा के लिये इस चार दिवा का बनना बहुत ही जरूरी है।

शहर के चारों तरफ १२ दरवाजे हैं जिनके नाम—बापोड़ा दरवाजा, हांसी दरवाजा, तिगड़ाना दरवाजा, महम दरवाज रोहतक दरवाजा, कामा दरवाजा, बेरी दरवाजा, हनुमान दरवाज पतराम दरवाजा, हलवास दरवाजा, दीनोद दरवाजा, देवसर दरवाज हैं। यहां पांच बाजार प्रसिद्ध हैं, लोहड़ बजार, बिचला बाजार हालू बाजार, नया बाजार, जैन बाजार। बाकी १६ मोहल्ले हैं जिनका पूर्ण विवरण पीछे दिया जा चुका है। भिवानी शहर में वैसे तो अनेकों तालाब और तलैया हैं किन्तु प्रमुख तालाब जिन्हें सरोवर भी कहा जा सकता है १६ के लगभग हैं। डोभी तालाब, मूलचन्द जी का तालाब, नीमवाला तालाब, मल्लु वाला तालाब, भोजराज तालाब त्रिवेनी तीर्थ, नूनसर तालाब, बड़विरय तालाब, बिल्लुवाना तालाब,

सुनारों वाला तालाब, हनुमान सरोवर, जीतूवाला तालाब डाबर वाला तालाब, लठिया वाला तालाब, जोगीवाला तालाब, नीमड़ी वाला तथा दाऊ वाला तालाब हैं। इस प्रकार बहुत सी डिग्गियां बगीचों में स्नान करने के लिए भी बनी हुई हैं जिनमें बहुत से व्यक्ति स्नान करते हैं। यहां पर एक बहुत विशाल बावड़ी भी बनी हुई है जो कि इस समय खण्डहर होने के कारण बेकार पड़ी हुई है जो किसी समय में लाखों रुपयों की लागत से बनवाई गई थी।

भिवानी में ३४ प्रमुख बाग बगीचे हैं। छोटी मोटी बगीचियों के मिलाने से तो संख्या ४०-४५ तक पहुंच जाती है। शहर में यह इतने बागबगीचे तो इस हालत में हैं जबकि पीने के लिए पानी भी अच्छी तरह नहीं मिल रहा है। यदि बड़ी नहर का प्रबन्ध हो जाए और पर्याप्त पानी बगीचों को मिलने लगे तो जिले भर को सब्जी सप्लाई हो सके इतनी सब्जी तैयार हो सकती है। पानी के अभाव में इन बगीचों में हरियाली नाम मात्र ही है। इस समय एक विशाल पार्क सेठ किरोड़ीमल जी द्वारा भी बनवा दिया गया है। संस्कृत पढने के लिए भिवानी में ४ पाठशाला और भोजन के लिए इस समय कुछ क्षेत्र तथा धर्मार्थ आयुर्वेदिक चिकित्सा के लिए ६ धर्मार्थ औषधालय, ५ बड़े सुविशाल हस्पताल हैं। जिनमें

आंखों का हस्पताल तो भारत प्रसिद्ध ही नहीं अपितु विदेशों में भी ख्याति प्राप्त कर चुका है। प्रारम्भिक शिक्षा के लिए १६ प्राईमरी स्कूल और ४ हाई स्कूल तथा ४ कालेज भिवानी में विद्यमान हैं, वैश्यकालेज, टी. आई. टी. कालेज, सनातन धर्म आयुर्वेदिक कालेज, सनतन धर्म संस्कृत कालेज आदि २।

विनोद के लिए दो सिनेमा गृह तथा कई एक संगीतालय हैं। पशुओं का हस्पताल भी यहां काफी सेवा कर रहा है।

दो मील पंजाब में अति प्रसिद्ध माने जाते हैं जिनमें एक का नाम टी. आई. टी. दूसरे का पंजाब क्लोथ मिल है। इन दोनों मिलों में करीब ८४ हजार गज कपड़ा प्रतिदिन तैयार होता है। और दोनों मिलों में करीब ४ हजार मजदूर काम करते हैं।

भिवानी से कुछ पत्र निकलते हैं जिनमें "श्री रंगनाथ पत्र" ही विशेष ख्याति प्राप्त और इस इलाके का प्रमुख पत्र है। बाकी साप्ताहिक एवं मासिक पत्रिकाए हैं।

यहां करड़े का व्यापार प्रमुख है परन्तु इस इलाके के प्रमुख उद्योग मून्ज के मुड्ढे, रस्सियें कालानमक, मिश्री, टोकनी आदि २ हैं।

शहर के प्रबन्ध के लिए पुलिस स्टेशन एवं तीन गार्दें हैं तथा तहसील के प्रबन्ध के लिए सदर पुलिस स्टेशन मौजूद है। इस इलाके के सरकारी प्रबन्ध को चलाने के लिए श्री रेजिडेन्ट मजिस्ट्रेट, श्री तहसीलदार, एवं नायब तहसीलदार आदि २ विशेष अधिकारी हैं।

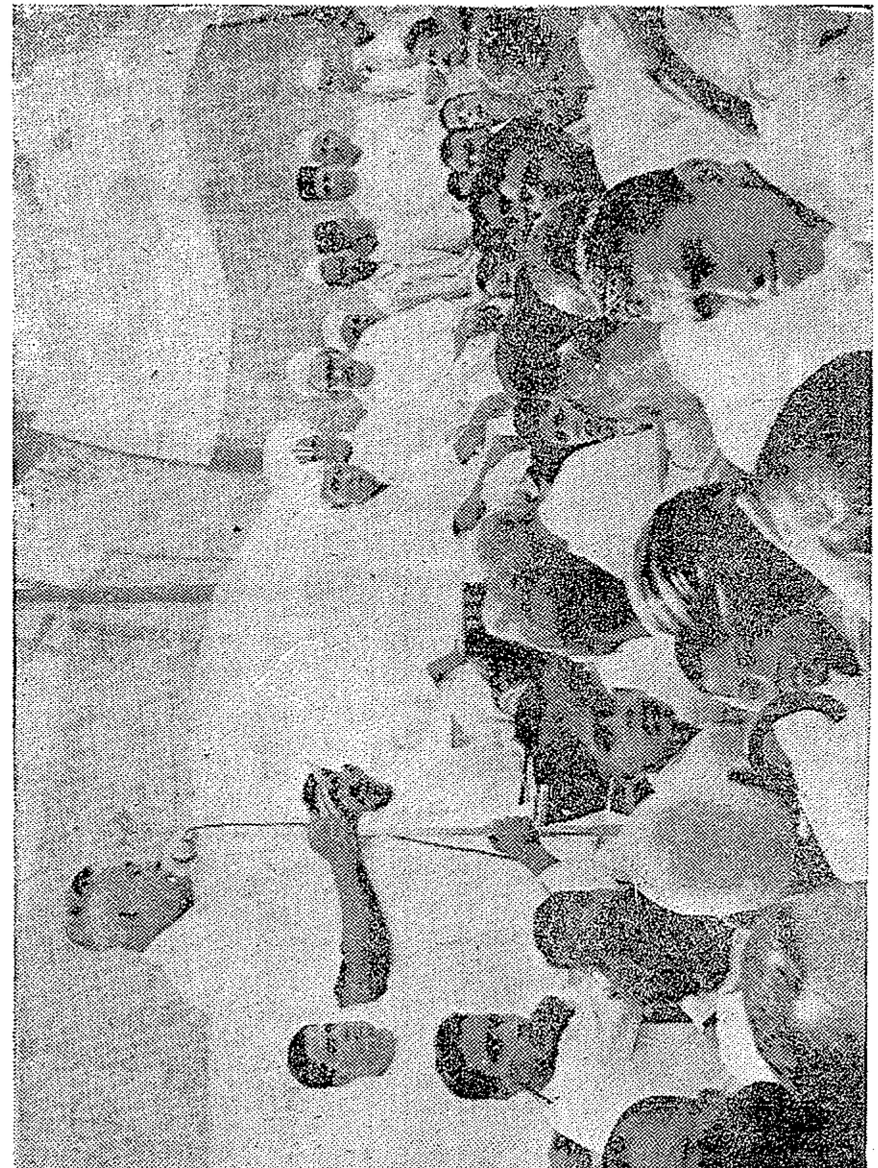
तीन पोस्ट आफिस हैं। बिजली एवं नल आदि की इस शहर में पूर्ण सुविधा है। यद्यपि पानी का अभाव होने के कारण नलों द्वारा शहर को पर्याप्त जल नहीं मिल रहा है किन्तु यह आशा अवश्य प्रकट की जा रही है कि आगामी आने वाली विशाल जमुना नहर के आते ही पीने एवं सिंचाई के लिए पानी पर्याप्त मात्रा में शहर को मिल सकेगा।

पंजाब सरकार द्वारा भिवानी शहर में पुरुषार्थी भाइयों के लिए एक पृथक बस्ती दिनोद दरवाजे के पास हालुवासिया मन्डी में बसा दी गई है जिसे कृष्ण नगर कहा जाता है। इस कृष्ण नगर का उद्घाटन सम्वत् २००६ में श्री पं० नेकीराम शर्मा के कर-कमलों द्वारा हुआ था। उद्घाटन समारोह पर श्री सेठ किरोड़ीमलजी लुहारीवाला, श्री हरचन्दरायजी चिड़ीपाल श्री स्वामी मुरलीधरजी आचार्य, श्री बाबुलालजी एवं पुष्करदत्त जी टी. आई. टी., श्री रामस्वरूपजी बुवानी वाले आदि आदि नगर के प्रमुख व्यति सम्मलित हुए थे। स्वामी मुरलीधराचार्य ने नगर के मुहूर्त पर अपना मांगलिक आशीर्वाद तथा शुभ कामना प्रगट करते हुए कहा कि "आज इन छोटी छोटी कुटियाओं में हमारे पुरुषार्थी बन्धु जिस प्रसन्नता के साथ निवास करने को

उद्यत हो रहे हैं। भगवान करे एक दिन यह छोटी छोटी कुटियाएं विशाल भवन बन कर इनकी उस याद को भुला दें जो यह पीछे बड़े बड़े विशाल भवन छोड़ कर आए हैं।"

आगन्तुक महानुभावों का स्वागत श्री तुलसीदासजी महतानी ने अपने सुमनोहर भाषण से किया, और उनके भाषण के बाद बहुत धूम धाम के साथ पं० नेकीरामजी के कर कमलों द्वारा कृष्ण नगर का उद्घाटन हुवा। कृष्ण नगर में इस समय करीब तीनसौ पुरुषार्थी परिवार निवास करते हैं और निकट भविष्य में दौसो परिवारों के निवास के लिए और भी प्रबन्ध किया जा रहा है। यहां नल, बिजली, सड़क आदि का पूर्ण प्रबन्ध हो गया है।

भिवानी में अतिथि निवास के लिए १५ धर्मशालाएं भी हैं। १९५२ से पहले पुरुषार्थी बन्धु ५ साल तक धर्मशालाओं में अतिथि बन कर निवास कर चुके हैं शहर में सामाजिक एवं राजनैतिक कार्य करने वाली अनेकों संस्थाएं हैं जिनमें कांग्रेस, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, सेवा समिति, हिन्दू महा सभा, भारतीय जन संघ, स्काउट एसोसियेशन, आर्य वीर दल, सिंह सभा, पुरुषार्थी सभा, राम राज्य परिषद सोसलिस्ट पार्टी, कम्यूनिस्ट पार्टी आदि आदि हैं। आज कल भिवानी शहर दिनों दिन उन्नति करता जा रहा है।



— कृष्णनगर का उद्घाटन —

अनेकों महत्व पूर्ण निर्माण इस नगर में हो चुके हैं। सेठ किरोड़ीमल द्वारा निर्मित श्री गौरी शंकर मन्दिर तो इस इलाके का विशेष तोर पर आकर्षक बना हुआ है। दूर दूर तक हांसी हिसार, रोहतक और सरसा तक के व्यक्ति इस मन्दिर के दर्शन करने आते हैं। यह मन्दिर पंजाब का अद्वितीय मन्दिर है। वैसे सब मिला कर २०० से अधिक मन्दिर इस नगर में उपस्थित हैं। कभी ३०० से ऊपर मन्दिर भिवानी में थे जिनमें अब कुछ भग्न एवं खण्डहरावस्था में समाप्त प्रायः हो चुके हैं जिनका जिर्णोद्धार होना जरूरी है। भिवानी का जलवायु अत्यन्त लाभकारी होने के कारण कलकत्ता, बम्बई के व्यक्ति स्वास्थ्य सुधारने के लिए यहां आते रहते हैं। भिवानी नगर वैसे तो पंजाब में है किन्तु इसका आहार व्यवहार वेश भूषा राजस्थान से मेल खाए हुए है। वहीं के तीज, गूगा, नागपंचमीं आदि त्यौंहार यहां मनाए जाते हैं। वैसे भिवानीं की भाषा सिंह-भाषा मानी जाती है, किसी भी इलाके से मेल नहीं खाती किन्तु राजस्थान की भाषा से भिवानी की भाषा का काफी सम्बन्ध है। जो आचार विचार राजस्थान के व्यक्तियों में होते हैं वही आचार विचार यहां के व्यक्तियों में हैं। यद्यपि भिवानी पंजाब में है किन्तु पंजाबी सभ्यता से कतई मेल नहीं खाती। अब पश्चिमी पंजाब से पुरुषार्थी भाई आजाने से पहनाव पर अवश्य प्रभाव पड़ा है। यहां का पह

नाव अनादि काल से ही राजस्थानी रहा है, और वर्तमान समय तक भी यहां अधिकतर राजस्थानी पहनाव पाया जाता है किन्तु यहां के निवासियों की प्रवृत्ति पंजाबी पहनाव की तरफ आकृष्ट होने से अन्दाजा लगाया जा रहा है कि भिवानी से राजस्थानी पहनाव समाप्त होकर पंजाबी पहनाव ही यहां का प्रमुख पहनाव रह जायगा। इस प्रकार भिवानी नगर का संक्षिप्त परिचय पाठकों को करवा दिया गया है। आगामी पृष्ठों में भिवानी नगर की संस्थाओं व अन्य आवश्यक बातों पर प्रकाश डाल दिया है। संक्षिप्त परिचय इतना ही है।

— श्री गौरीशंकर मन्दिर भिवानी —



निर्माता:—श्री सेठ किरोड़ीमल जी लुहारीवाले

भिवानी नगर और उसकी धार्मिकता

भिवानी शहर समस्त पञ्जाब में सर्वश्रेष्ठ धर्म नगर समझा जाता है। किसी समय तो यह नगर छोटी काशी के नाम से विख्यात था किन्तु आज यह बात नहीं है। किसी समय इस नगर के १२ कोस की दूरी तक पशु हिंसा करना उग्र पाप समझा जाता था और पशु पक्षी का बध कानूनन मना था।

भिवानी में बने हुए तालाब और उनके किनारों पर बने विशाल घाट, बुर्जियें, देवमन्दिर आज भी भग्नावस्था में खड़े भिवानी की विशाल धार्मिकता का उदाहरण दे रहे हैं, कभी इस नगर के प्रायः नर नारी प्रातः ही इन तालाबों में स्नान करने के लिए एकत्रित होते, और श्रद्धा पूर्वक स्नान कर मन्दिरों में बैठ कर कथा सुनते तथा हरि कीर्त्तन करते थे। इस प्रकार प्रभात का सुमंगल समय भिवानी वासियों का धार्मिकता से व्यतीत होता था।

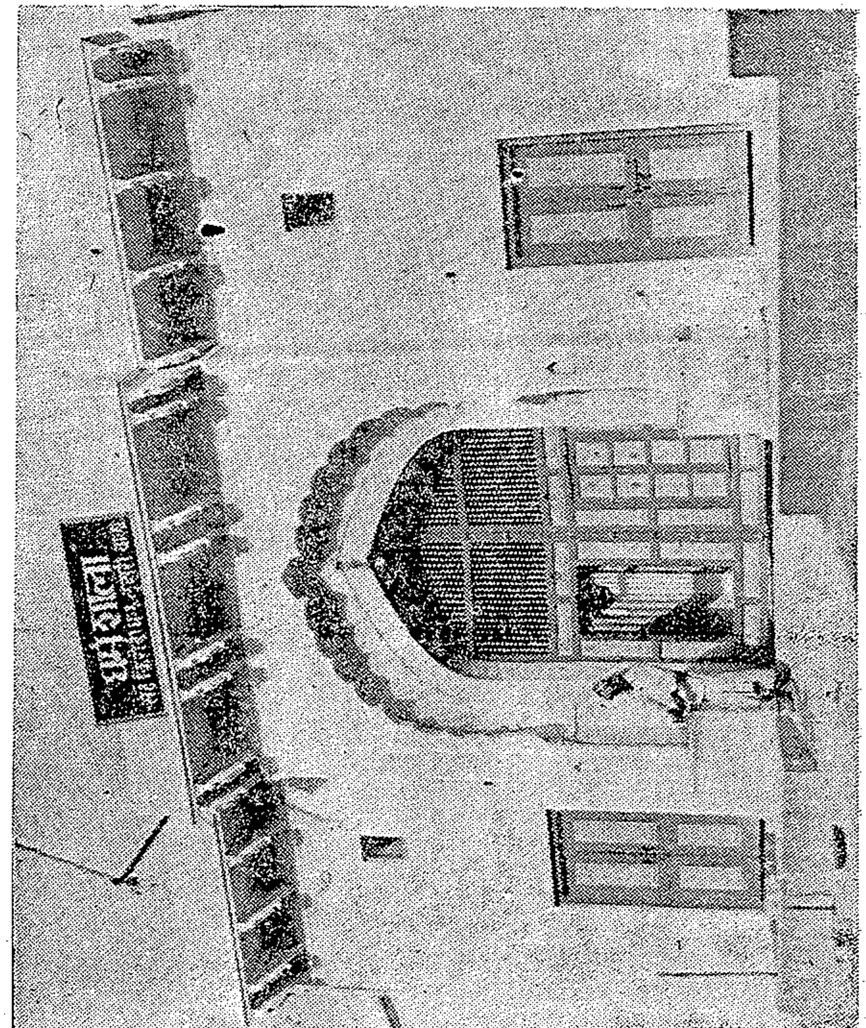
जिन व्यक्तियों की प्रातः ही धार्मिक वृति बन जाती है उन व्यक्तियों से शाम तक कोई अधार्मिक कार्य नहीं बन सकता। यही प्रभात के सुकार्यों का फल है।

भिवानी में पहले यह एक विशेष बात थी कि यहां कोई भी अभ्यागत बिना भोजन किये नहीं लौटता था। इसका कारण यह था कि यहां जगह २ सदाव्रत खुले हुए थे, यहां के सेठ

अपने नौकरों के सिरों पर सौड़ें रख कर रात्री के समय घरों में जा कर यह देखते थे कि कोई रात्रि में सर्दी से तो नहीं ठीठर रहा है। यदि किसी के पास सौड़ नहीं होती थी तो रात्री में उसको सौड़ उढा कर उसकी अन्तरात्मा से लाखों मूक आशीषें लेते थे। इसी प्रकार कभी कोई भूखा न हो इस बात का बहुत ही ध्यान रखा जाता था। अच्छे कुलों के लज्जावान व्यक्ति जो बेचारे लाज के कारण किसी से कुछ मांग नहीं सकते उनकी हर तरह से प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप में सहायता की जाती थी।

ग्रीष्म ऋतु में भिवानी के चारों तरफ २०-२० मील तक एक एक मील के फासले पर ठण्डे जल की प्याऊ बैठाई जाती थी ताकि कोई यात्री तृषा से व्याकुल न होसके, इन प्याऊओं पर भुना हुआ चना भी होता था यदि कोई भूखा यात्री लेना चाहे तो उसे दे दिया जाता था। कहा जाता है कि निर्जला एकादशी व रामनवमी तथा जन्माष्टमी आदि पुण्य पर्वों पर भिवानी में जगह जगह खाण्ड व गुड़ का मीठा पानी पिलाया जाता था। गौ माताओं के लिए भिवानी वृन्दावन था। जगह जगह चौपटों में गौ भक्त चारा डलवाते थे, और गुड़ एवं दाना यहां प्रतिदिन साण्डों को खिलाया जाताथा। आज की तरह देखते २ गौवें भूख से प्राण उस समय इस धर्मनगरी में नहीं छोड़ती थी। उस समय यह भिवानी नगरी स्वर्ग भूमि थी और यहां के निवासियों में चिन्ता एवं शोक नाम मात्र भी नहीं था।

किन्तु आज इस जगह की तमाम बातें विपरीत होगई हैं,



-: धर्मशाला श्री सेठ किरोड़ीमल जी लुहारीवाला :-

किसी भी घर में ऐसा व्यक्ति नहीं है जो चिन्ता से मुक्त हो और उसको किसी प्रकार की शान्ति प्राप्त हो।

इतना होते हुए भी भिवानी अन्य जगहों की अपेक्षा फिर भी अच्छी है। आज भी प्रायः यहां गली २ में देवस्थान मन्दिर बने हुए हैं और अनेकों संस्कृत पाठशालाएं खुली हुई हैं जिसमें छात्र निःशुल्क विद्याध्ययन कर अपने मनुष्य जीवन को सफल बना रहे हैं। बड़ी २ विशाल धर्मशालाएं अतिथियों के निवासार्थ बनी हुई हैं जिन्हें देख कर प्रत्येक यह कहे बिना नहीं रह सकता कि यह धर्मशाला नहीं बल्कि रईसों के निवास के लिए उत्तम कोठिय हैं। जगह २ बगीचे हैं, जहां सकड़ों व्यक्ति प्रातः उठ कर स्नान करने जाते हैं और इन बागीचों में गर्मी में शीतल जल एंव शर्द ऋतु में गर्म जल स्नान के लिए मिलता है।

दो विशाल गौ–शालायें हैं जिनमें असहाय, लङ्गड़े, लूले पशुओं की सुश्रुषा होतीहै और अच्छी २ गौवेंभी रखी हुई हैं।

निःस्वार्थ चिकित्सा करने के लिए यहां अनेकों धर्मार्थ औषधालय हैं जिनमें अनेकों रोगी मुफ्त दवाई लेकर स्वास्थ्य लाभ करते हैं। विदेशी दवाई महंगी होने के कारण गरीबोंका इलाज होना अत्यन्त कठिन है इसीलिये यहां निःशुल्क भारतीय औषधियों द्वारा औषधालयों में जनता की धर्मार्थ सेवा की जाती है।

भिवानी में इस समय पांच धर्मार्थ हस्पताल भी हैं जो जनता

को सेवा कर महानयश प्राप्तकर रहेहैं इनमें किशनलाल जालाण का आई हस्पताल' सेठ. किशनलाल जी द्वारा संचालित है। दूसरा फैरर हस्पताल मिशन द्वारा सुश्रुषा कर रहा है। बाकी दो हस्पताल सरकारी तौर पर संचालित है। इनमें जनाना हस्पताल जो चौ० छाजूराम जी द्वारा बनवाया गया था। अब सरकारी प्रबन्ध द्वारा चलाया जा रहा है।

इसी प्रकार आज भी अनेकों छोटे मोटे धार्मिक कार्य संचालित हैं। अभी २ सेठ किरोड़ीमल जी ने जनता का स्वास्थ्य सुधारने दृष्टि से एक पार्क भी बनवाया है जिसमें बिना भेद भाव के सभी समानता पूर्वक सैर करने जाते हैं।

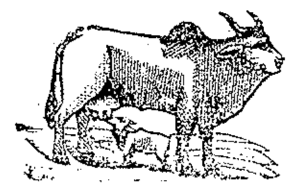
यहां अनेकों पुस्तकालय भी हैं जिनमें प्रत्येक व्यक्ति निःशुल्क बैठ कर पढ़ सकते हैं। शिक्षा के लिए सरकारी एवं गैर सरकारी प्रबन्ध भी है जिनमें सैकड़ों बच्चे निःशुल्क पढ़रहे हैं।

वैसे तो भिवानी नगर में ३०० मन्दिर सुने जाते हैं। किन्तु आज कितने ही खण्डहर हो चुके हैं और कितनों ही का अस्तित्व नष्ट हो गया है केवल उनका नाम मात्र ही सुना जा रहा है। संभव है पञ्जाब में किसी भी नगर में इतने मन्दिर उपलब्ध नहीं हो सकते जितने भिवानी में हैं।

आज के इस भीषण समय में भी जबकि लोग धर्म करना पाप मान कर उससे दूर होते जा रहे हैं, है। यह सब उन महापुरुषों की ही कृपा है जो धनसे पहले

धर्म और जीवन से अधिक शुभ कर्मों को अपना लक्ष्य बनाए हुए थे आज उन्हीं महानुभावों की सन्तान चाहे कैसा भी भीषण समय क्यों न हो अपने परम्परागत पैतृक कर्तव्य को यदि अधिक नहीं तो समयानुकूल करने में किसी से कम नहीं हैं। भगवान करे यहां धार्मिक वृति का उत्थान पहले से अधिक जागृत हो और यह शहर फिर से स्वर्ग बन सुख शान्ति का स्थान बने।

धर्मो रक्षति: रक्षतः सत्यं जयति नानृतम्।



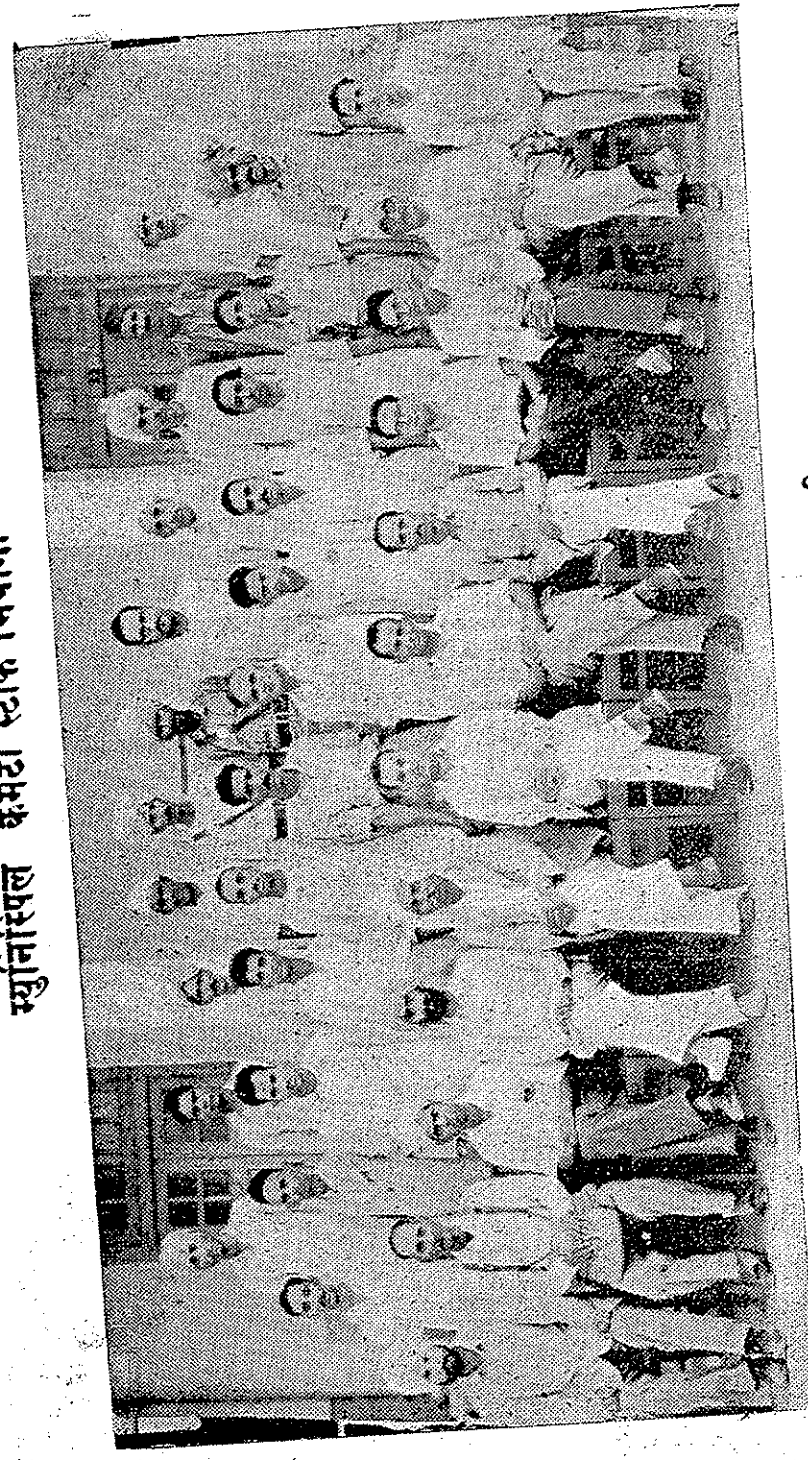
भिवानी—म्युनिसिपल कमेटी भिवानी

यह म्युनिसिपल कमेटी पंजाब में दूसरे दर्जे की मानी जाती है और इस समय इसकी वार्षिक आय ४३०००० रु० हैं, जिसमें और इतना ही वार्षिक खर्चा बिजली विभाग वाटर वर्क्स सड़क सफाई, हस्पताल, शिक्षा आदि २ और भी छोटे मोटे अनेको कार्यो में व्यय हो जाता है।

कमेटी में आय के प्रधान श्रोत महसूल चूंगी है। इसी कारण कमेटी की आय बढी हुई है। पहले कमेटी की आय २ लाख से कुछ अधिक थी किन्तु अब लगभग साढे चार लाख रुपये प्रति वर्ष हो जाती है। म्युनिसिपल कमेटी द्वारा १० प्राईमरी स्कूल तथा अनेंको नगर हितैषी कार्य चलाए जारहे हैं।

पहले म्युनिसिपल कमेटी का प्रबन्ध करने के लिए १६ मैम्बर शहर से चुने जाते थे, किन्तु अब शहर को १५ हिस्सों में बाट दिया गया है, और १७ मैंम्बर चुनाओं द्वारा लिये जाते हैं। इनमें दो मैम्बर हरिजनों की ओर से भी उन्हे बराबरी का अधिकार देने की भावना से लिये जाते हैं। इस तरह यह १७ मैम्बर भिवानी म्युनिसिपल कमेटी का प्रबन्ध कर रहे हैं। यही मैम्बर अपने में से एक को अपना प्रधान चुनते हैं। पहले म्युनिसिपल कमेटी का प्रधान सरकारी व्यक्ति होता था, परन्तु नए नीयम के अनुसार [illegible]रों में से ही प्रधान चुन लिया जाता है।

म्युनिसिपल कमेटी स्टाफ भिवानी



श्री ईशादास जी डा० निर्मलप्रकाश जी

भिवानी नगर का प्राचीन तथा वर्तमान व्यापार।

यह शहर भिवानी, पंजाब के प्रसिद्ध नगरों में से एक है हिन्दुस्तान और पाकिस्तान का बटवारा होने के पश्चात यह शहर पंजाब में दूसरे नम्बर का माना जाने लगा है। इसका कारण यह है कि अमृतसर के बाद कपड़े की मण्डी भिवानी कोही समझा जाता है। कभी तो यह शहर पंजाब में व्यापारिक दृष्टि से बहुत ही ऊंचा था। कारण कि पंजाब में भिवानी शहर ही ऐसा था जिसमें सीधे अरब से ऊंट माल भर कर आते थे और समूचा माल यहां खपता था। इसी प्रकार लाहौर अमृतसर, पीलीभीत आदि दूर दूर तक का माल यहां भिवानी में खपता था। यहांकी बीमा एजैन्सी सबसे बड़ी मानी जातीथी। बड़े २ लखपति अपना माल इन्श्योरैंस भिवानीमें कर वाते थे। सच्चा साहूकारा था, बहीबसने उस समय नाम मात्र के थे। लेन देन जबानी होता था, कारण कि उस समय शिक्षा का विशेष प्रचार नहीं हुवा था। परन्तु इमानदारी हद दर्जे की थी। जुबान के सन्मुख लिखावट कुछ भी मायने नहीं रखती थी। पहले तो यहां मेवा का काफी व्यापार था बाद में भिवानी नमक की सब से बड़ी मण्डी मानी जाने लगी। हिसार जिले के गजिटियर देखने से पता चलता है कि भिवानी शहर प्राचीन समय से ही व्यापारका माना हुआ केन्द्र रहा है। राजपूताना एवं

शेखावाटी की उपज प्रायः भिवनी शहर ही खरीदता था और दिसावरों में ऊंटों व बैल गाड़ियों द्वारा माल भी यहीं से जाता था। इस नगर के विशाल बाजार लम्बी २ ऊंटों की कतारों से और राजस्थानी पुरुषों के गमन आगमन से हर समय गुन्जायमान रहते थे। क्रय-विक्रय की चहल पहल से यहां एक तरह का मेला लगा रहता था।

राजपूताना के लिए भिवानी से कपड़ा, जेवर, मसाले, खाद्य सामग्री, बर्तन, मिठाई, नमक, सिन्दूक, डब्बे, गोटा किनारी, बिसातखाना, मकान बनाने का सामान तथा पशुधन आदि सभी भिवानी से जाता था। उस समय जबकि यहां काफी व्यापार था लोग प्रायः दिसावरों में जाना पसन्द नहीं करते थे। लोग बहुत ही धार्मिक वृत्ति के थे। फिजूल खर्ची तो यहां नाम मात्र भी नहीं थी। मोटा खाना और मोटा पहनना ही यहां का लिवास था। गृहस्थ कार्य से जो धन बचता था उससे कोई भी धार्मिक कार्य करना अपना इह लौकिक कर्तव्य समझते थे। इसी कारण आज यहां जगह २ विशाल धार्मिक स्थान पाए जाते हैं और उन्हीं सभी धर्मकार्यों के कारण भिवानी आजतक धर्म नगरी कहलाती है।

किन्तु अब भिवानी में नाम मात्र का व्यापार रह गया है। वर्तमान सरकार की व्यापार सम्बन्धी नीति के कारण यहां खोखलापन आ गया है। आज भिवानी में व्यापार द्वारा मुश्किल

से निर्वाह होता है। जबकि पहले व्यापार से धन बचा कर धर्म किया जाता था।

इस समय भिवानी में विशेष कर कपड़े का काम अधिक होने के कारण यह शहर कपड़े की मन्डी कहलाता है और इस समय यहां ३०० के लगभग कपड़े की दुकानें हैं। अधिकतर यहां के कपड़ा व्यापारी अहमदाबाद, बम्बई, कलकत्ता, देहली आदि २ नगरों से कपड़ा मंगवाकर इस तहसीलके अलावा दूर २ तक कपड़ा भेजते हैं। यहां भिवानी में दो कपड़ा मिलें हैं। इन मिलों में करीब ८५ हजार गज कपड़ा प्रति दिन तैयार होता है। जहां इन मिलों से इस इलाके को अंग ढांपने को कपड़ा मिलता है वहां यह मिल अपना कपड़ा विदेशों में भेजकर डालर प्राप्ति में भी काफी सहयोग दे रही हैं।

एक मिल जो राय बहादुर सेठ ताराचन्दजी द्वारा बनवाई गई थी वह बिरला बन्धुओं के अधिकार में टी. आई. टी. के नाम से चल रही है। इसकी आय धार्मिक कार्यों में व्यय होती है। दूसरी मिल जो कभी चिड़ीपालों ने बनवाई थी आज श्री पूरणमलजी बूबना तथा श्री राधाकृष्णजी सांगानेरिया जो भारत विख्यात उद्योगपति हैं के अधिकार में चल रही है। इन दोनों मिलों में लगभग ४ हजार मजदूर कार्य कर, अपना पेट पालन कर गरीबी का सामना कर रहे हैं।

भारत का सुप्रसिद्ध काला नमक भिवानी में ही तैयार होता है। यहां कई कारखाने काले नमक के चल रहे हैं। यदि यहां रेलवे बड़ी लाइन का प्रबन्ध हो जाए तो यहां का काला नमक जो इस समय अन्य मन्डियों में कुछ ऊंचे दामों पर बिक रहा है सस्ता बिक्री होने लगे और यहां नमक व्यापार की अधिक प्रगति हो जाए।

कपड़ा एवं जेवर आदि रखने के लिये यहां सिन्दूक एवं डिब्बों का काफी संख्या में निर्माण होता है। हांसी, हिसार रोहतक, दादरी, बीकानेर, पटियाला, देहली आदि दूर २ तक भिवानी के बने सिन्दूक एवं डिब्बे जाते हैं। छाज, छलनी, ट्रंक, पेटियें भी यहां की प्रसिद्ध हैं और काफी तादाद में बाहर जाती हैं।

भिवानी तहसील की मूंज बहुत ही मजबूत होने के कारण विशेष ख्याति रखती है। मूंज उद्योग द्वारा देहात के व्यक्तिओं को काफी लाभ हो रहा है यदि यहां इस उद्योग की ओर भी उन्नति की जाए तो काफी लाभ हो सकता है।

वर्तनों का उद्योग यहां ठठेरा जाति के व्यक्ति ही करते हैं। यह बर्तन निर्माण में बहुत ही कुशल व योग्य कारीगर माने जाते हैं। यहां की टोकनी, गंगासागर, कांसी की थाली विशेष प्रसिद्ध मानी जाती हैं और दूर दूर तक मन्डियों में बिकने जाती हैं।

इस तरह से अब यहां मामूली ही व्यापार रह गया है उपरोक्त व्यापार द्वारा कुछ थोड़ेही व्यक्ति अपना निर्वाह करते हैं। अब वह समय नहीं रहा जो दूर दूर तक के व्यक्ति भिवानी में व्यापार करने आते थे और यहां से काफी धनोपार्जन कर लाभ उठाते थे। अब तो भिवानी के अधिकांश व्यक्ति दिशावरों में रहते हैं और वहां कमा कर भिवानी में आकर अपना गुजारा करते हैं। कुछेक लखपति एवं करोड़पति महानुभाव जिनका व्यापार दिशावरों में ही है वह भिवानी को अपनी जन्मभूमि समझ इसकी सेवा में कोई न कोई धर्म कार्य करते रहते हैं जिससे आज भी यह नगरी धर्म नगरी कहलाती है किन्तु यहां कोई भी ऐसा व्यापार नहीं है जिससे कोई विशेष लाभ प्राप्त किया जावे।

भारत सरकार की वर्तमान नीति के अनुसार यदि यहां पानी की नहर आ जावे तब कुछ व्यापार चमक सकता है और लोगों में खुशहाली की लहर दौड़ सकती है अन्यथा आए वर्ष कहत का शिकार बना हुआ नगर यहदिनों दिन व्यापार से हीन होता जा रहा है और व्यापारी वर्ग इसे छोड़ते जा रहे हैं।

इस समय शहर का अधिकांश कपड़े का व्यापार पश्चिमी पंजाब से आए हुए पुरुषार्थी भाइयों के हाथ में आ गया है जो बहुत ही नेक नियत से सफल हो रहा है।

—o—

राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक संस्थाएं

भिवानी नगर में सामाजिक एवं धार्मिक उत्थान प्रारम्भ से ही कतिपय संस्थाओं द्वारा हो रहा है। जिनसे अनेकों जन हितार्थ कार्य सम्पन्न हुए हैं और समय समय पर होते ही रहते हैं। इनमें शहर की सबसे प्राचीन संस्था

सेवा समिति

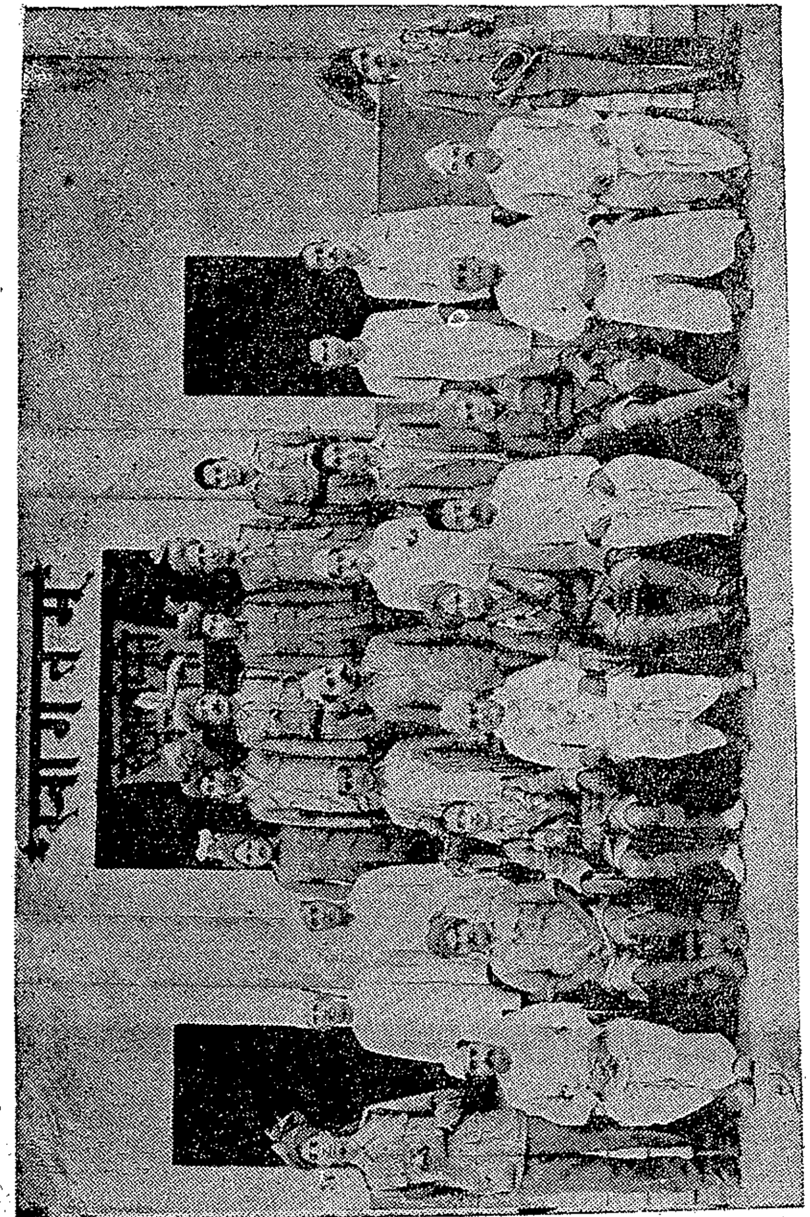
इस संस्था का स्थापन सन् १९१७ में कुछ महानुभावों द्वारा हुवा था आज ३६ वर्ष हो चुके यह संस्था अपनी समयोचित शहर की सेवा करती ही आ रही है। इस समय इस सभा के सभापति श्री स्वामी कृपारामजी आयुर्वेदाचार्य हैं। चित्र में वही प्रमुख व्यक्ति दिखलाए गए हैं जो इस संस्था के विशेष अधिकारी हैं। यह संस्था शहर एवं शहर से बाहर लगने वाले मेलों पर पहुँच कर स्त्री एवं बच्चों की रक्षा व गुम शुदा बालकों की तलाश आदि आदि जन हितार्थ कार्य करती है। वैसे यह महामारी, कहत, तूफान, विनाशकारी उपद्रवों में भी सेवा करने में पीछे न हट बहुत ही दृढ़ता पूर्वक कार्य करती है।

इस संस्था के आधीन एक पुस्तकालय भी है। जिसमें अच्छी २ पुस्तकों का संग्रह है।

स्काउट एसोसियेशन भिवानी।

वैसे तो स्काउट एसोसियेशन देश व्यापी संस्था है किन्तु इसकी एक शाखा भिवानी में बहुत समय से कार्य

सेवा समिति भिवानी



स्वामी कृपाराम जी वैद्य, डा० दिवानचन्द वासुदेव, श्री चन्दुलाल वर्मा, श्री बनवारीलाल खेमका, हरीराम, चिरंजीलाल

कर रही है। भिवानी स्काउट एसोसियेशन के प्रधान कार्यकर्ता श्री डा०जनार्दनजी सौपर्ण हैं इन्हीं के सदुद्योग से यह संस्था अहर्निश उन्नति कर रही है। इस संस्था का संचालन शहर के दानियों के ही शुभ दान से होता है। भिवानी के मेलों और अनेकों धार्मिक समारोहों में इस संस्था का ही प्रबन्ध अधिक सुन्दर देखा जाता है। वैसे तो दूर दूर तक हरिद्वार, कुरुक्षेत्र, प्रयाग आदि तीर्थों पर समय समय पर पहुँच कर सेवा कार्य करती है, जिससे इस संस्था के पास अनेकों सम्मान पत्र व स्वर्ण पदक हैं समुचे शहर की सहानुभूति इस संस्था के साथ सदा से ही रहती आई है इसी कारण यह दिनों दिन उन्नति करती आ रही है। इसके प्रमुख अधिकारी डा० जनार्दन सौपर्ण के अतिरिक्त बा० महादेव प्रसादजी आलमाल, श्री रामसिंहजी वैद, लाला हजारीमलजी सांवड़िया, श्री रंगीलाल जी वकील आदि आदि अनेकों प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं।

भिवानी कांग्रेस कमेटी

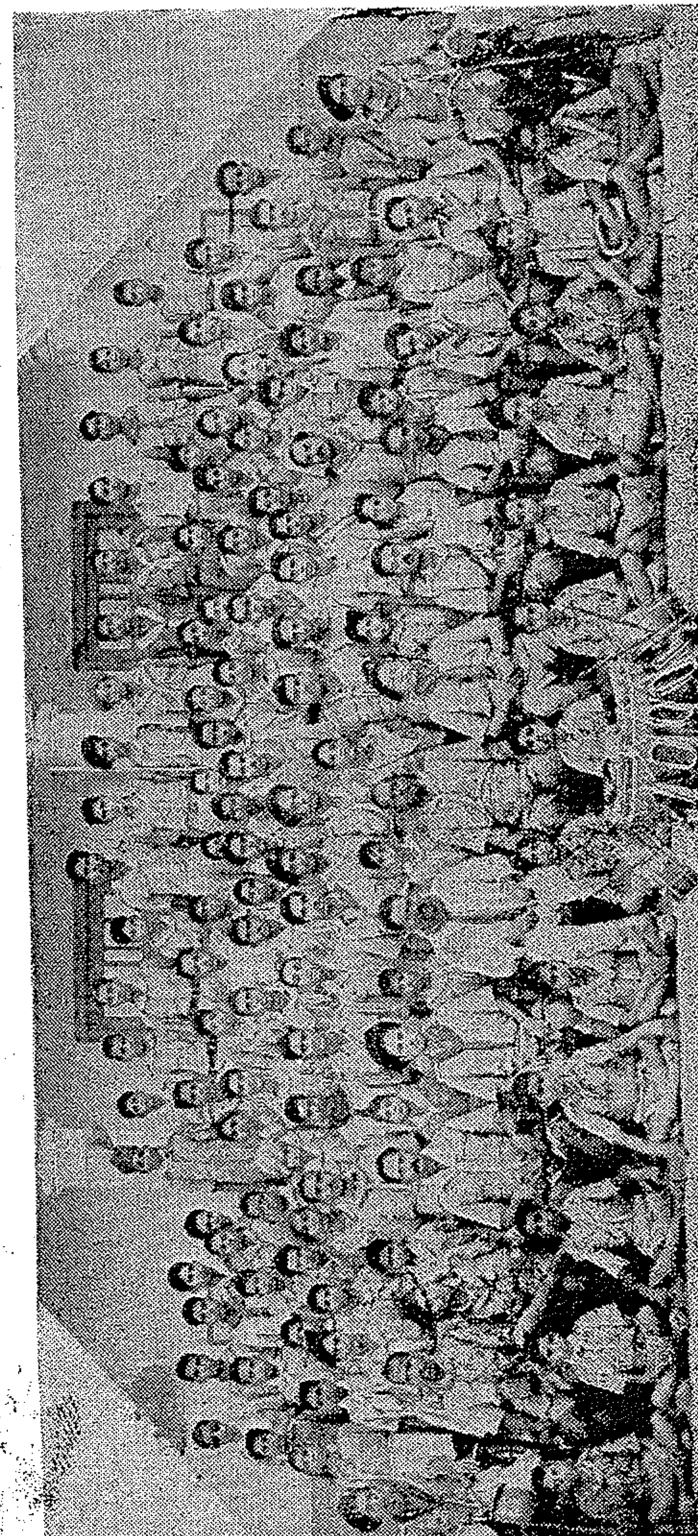
सन् १९२१ में महात्मा के. ए. देसाई, पं० नेकीराम जी शर्मा, ला० बनारसीदासजी वैद आदि कांग्रेसी नेताओं द्वारा इस पिछड़े हुए इलाके में जागृति लानेकी भावना से एक राजनैतिक कान्फ्रेन्स बुलाई गई थी। जिसमें विश्वबन्ध्य बापू श्री गान्धी जी, त्यागमूर्ति ला० लाजपतरायजी आदि आदि देश के अनेकों बड़े बड़े नेता यहां पधारे। यह कान्फ्रेंस कालरे में जिस

स्थान पर इस समय लाला राधाकृष्ण जी आलमाल व लाला मेलाराम का बगीचा बना हुआ है उसी मैदान में हुई थी।

इस कान्फ्रेंस के लिये एक विशाल मण्डप बनाया गया था—यह बात विशेष ध्यान से पढ़ने की है कि इस मन्डप में जिसमें कि हजारों की संख्या में श्रोताओं के बैठने का प्रबन्ध किया गया था, कोई कुर्सी नहीं थी। जमीन को साफ करवा कर और उसको ढलमां बनवा कर दरियां बिछा दी गई थी। बीच में प्रधान के बैठने का स्थान रक्खा गया था।

महात्मा गान्धी ने इस प्रबन्ध की अपने भाषण में खास तौर पर प्रशंसा की थी और अपने पत्र में गांधीजी ने लिखा था कि "आल इण्डियां कांग्रेस को इस भिवानी मण्डप की नकल करनी चाहिये।" प्रति वर्ष कांग्रेस के अधिवेशन में कुर्सियां बिछाई जाती थी, एक अधिवेशन में अनेकों कुर्सी टूटने का कांग्रेस को खर्चा बर्दास्त करना पड़ता था। और कुर्सी जगह भी अधिक लेती थी। जब के बाद यह देखने में आया कि "आल इन्डिया कांग्रेस के अधिवेशन में इस प्रबन्ध की नकल की जाने लगी।" और कुर्सियों का अभाव देखा जाने लगा।

यह उसी मण्डप का चित्र है जिसकी नकल आजभी अखिल भारत वर्षियकांग्रेस व अन्य विभिन्न दल प्रतिवर्ष अपने अधिवेशन में करते हैं।



भारत स्काउट एण्ड गाईड्स भिवानी

वर्तमान समय में भिवानी कांग्रेस के प्रधान श्री हरिचरण जी ज्योतिषी उप प्रधान राधाकृष्ण जी वर्मा, यह संस्था नगर के प्रमुख कार्यों में पूर्ण सहयोग देती हुई शहर की भलाई का पूर्ण ध्यान रखती है।

भारतीय जन संघ भिवानी।

इस समय इसके प्रधान श्री चौ० रणसिंहजी बी. ए. एवं पं० देवीदत्तजी वैद्य हैं मन्त्री श्री परमेश्वरीदासजी सूगला और श्री गोबिन्दरामजी कसेरा आदि २ हैं।

अभी पिछले दिनों गत मार्च १९५३ को इस संस्था ने एक बहुत बड़ा आन्दोलन काश्मीर को भारत में विलय करने के प्रश्न पर छेड़ा था उस समय इस भिवानी नगर से पं० देवीदत्तजी वैद्य, श्री गोबिन्दरामजी कसेरा, श्री रणसिंह B-A- तथा मूलचन्दजी आदि २ अनेकों हिन्दू नेता भारत की राजधानी देहलीमें सत्याग्रह करते हुए गिरफ्तार कर लिये गए थे। इस समय संस्था के प्रमुख कार्यकर्ताओं में श्री दीनदयालजी बी. ए. वकील डा० नारायणदास एम. सी. श्री पं० बलभद्र जी मस्ता श्री बलदेव शर्मा आचार्यसम्पादक— 'रंगनाथ' श्री ठाकुरदास जी सूगला (वकील) श्री रामप्रकाशजी आदि हैं। इस संस्था का प्रधान कर्तव्य नगर हित के अनेकों कार्यों में भाग लेकर राजनैतिक तत्वों से सम्बन्ध रखना और हिन्दुत्व विचारधारा का प्रचार करना है।

रामराज्य परिषद भिवानी

श्री पूज्य करपात्रीजी महाराज द्वारा संस्थापित अखिल भारतीय राम राज्य परिषद की शाखा भिवानी में भी है। इसके प्रधान श्री पं० निहालचन्दजी शास्त्री, श्री डा० बैजनाथजी कौशिक एम. सी. पं० बलदेव आचार्य सम्पादक रंगनाथ हैं। मन्त्री पं० केशवदेव शर्मा आयुर्वेदाचार्य तथा श्री बैजनाथ पुजारी हैं। जिस समय करपात्री जी महाराज ने गौ रक्षा आन्दोलन चलाया उस समय डा० बैजनाथ कौशिक एम. सी. की अध्यक्षता में एक बहुत बड़ा जत्था जिसमें पं० बैजनाथजी ज्योतिर्विद, भादरमलजी मालाकार, पं० नत्थूरामजी कौशिक ला० तुलसीराम जी आदि २ सत्याग्रह करने देहली पहुंचा वहां पुलिस द्वारा इन पर बहुत बुरी तरह लाठी प्रहार हुआ था इस से पहले गौरक्षार्थ चलाए गए सत्याग्रह में मुरलीधरजी आचार्य श्री रामरिछपालजी कुंगड़ आदि २ गौभक्त सत्याग्रह करने गए थे,

यह संस्था समयानुकूल जैसी भी ऊपर से आज्ञा आती है कार्य करती है। इस संस्था के कार्यकर्ताओं में अधिक उत्साही पं० बैजनाथजी ज्योतिर्विद हैं।

राष्ट्रीयस्वयं सेवक संघ भिवानी

इसके प्रधान कार्यकर्ता श्री सुखबीरसिंह जी राणा हैं पहले माननीय श्री अणुजी इसके प्रधान कार्यकर्ता थे। नगर के कई

भागों में इसकी शाखा लगती है ५०० के करीब स्वयं सेवक इस संस्था में अत्यन्त श्रद्धा के साथ सहयोग दे रहे हैं। श्री लोकनाथजी बुवानी वाले श्री प्यारेलालजी बी.ए श्रीरामदेव जी भूत श्री अर्जुनदेव जी आदि आदि अनेकों व्यक्ति इसके प्रमुख सहयोगी हैं।

हिन्दुमहा सभा भिवानी

भारत व्यापि हिन्दुमहासभा की एक शाखा भिवानी में भी है, जिसके प्रधान श्री पं० ज्येष्टानन्द जी आयुर्वेदाचार्य हैं और यह संस्था समयोचित कार्य करती ही रहती है।

आर्यवीरदल भिवानी

आर्य वीरदल भिवानी के प्रधान कार्यकर्ता श्री प्रहलादराय जी शर्मा श्री पुनमचन्द जी मोड़का श्री बलदेव जी आर्य आदि आदि हैं।

श्री सिंहसभा भिवानी

यह संस्था सिख भाइयों द्वारा संचालित है इसके प्रधान कार्यकर्ता श्री सरदार मोतीसिंह जी वेदी श्री सरदार दलीपसिंह जी सोढी श्री सरदार रामसिंह जी श्री किशनलाल जी छावड़ा आदि २ कई प्रमुख व्यक्ति हैं और यह शहर के अनेकों कार्यों में भाग लेकर पूर्ण सहयोग प्रदान करती रहती है।

पुरुषार्थी सभा भिवानी

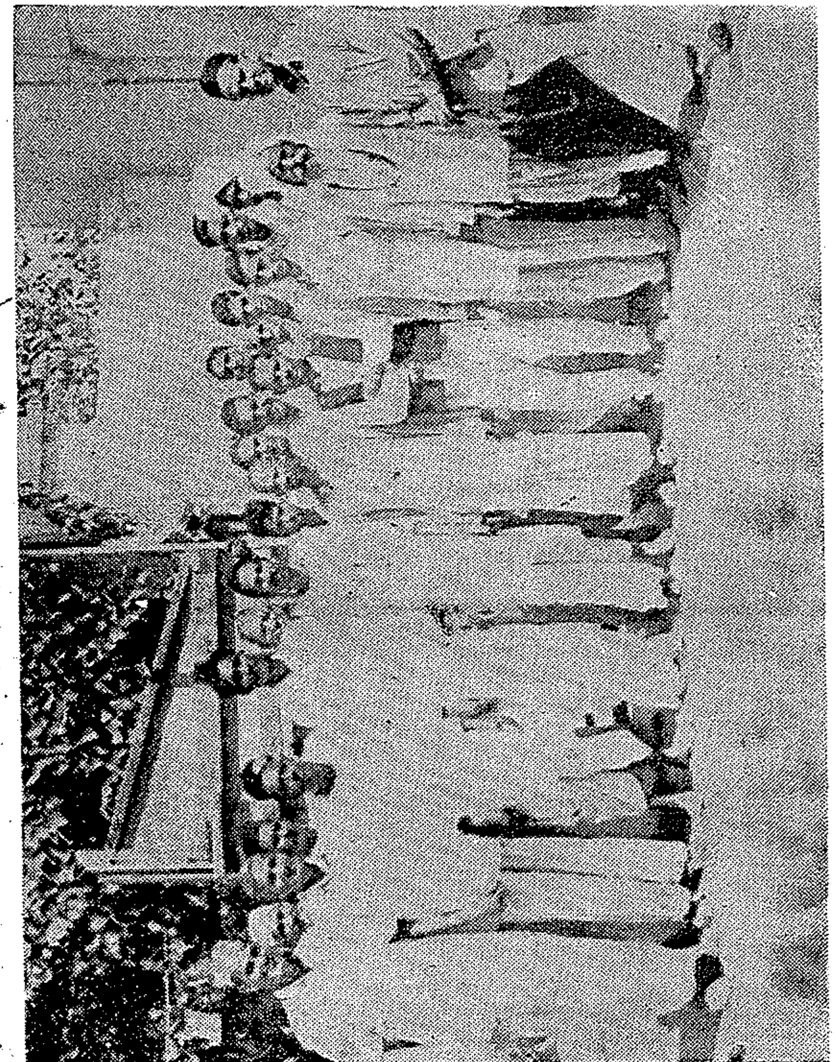
यह सभा भिवानी के १५ हजार पुरुषार्थियोंका प्रतिनिधित्व करती है प्रधान कार्य कर्ता—डा० तुलसीदास जी मैहतानी, डा० नाराणयदास जी, महता खिल्लाराम जी, महाशय गणेशदास जी सुन्दरदास जी, डा० मोहनलाल जी पं० रतनलाल जी लाला सानुराम जी, मेहता लूणीचन्द जी, ला० हकूमतराय जी आदि आदि का नाम विशेष उल्लेखनीय है । चित्र में वही व्यक्ति दिखलाए गए हैं जो इस सभा के मुख्य कार्य कर्ता हैं, यह सभी अनुशासनशील एवं बहुत ही कुशलता पूर्वककार्य करने वाले हैं ।

आयुर्वेद मण्डल भिवानी

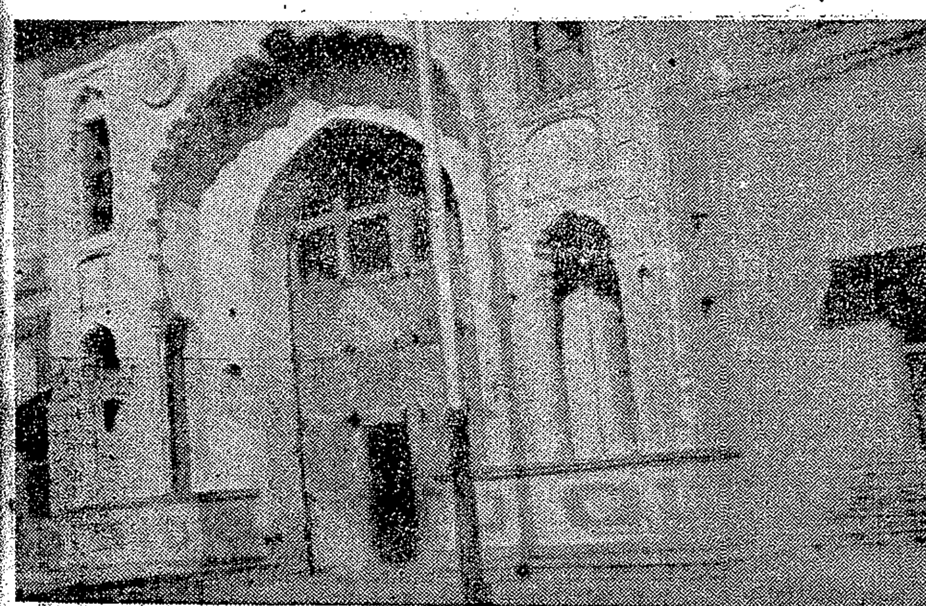
भिवानी के समस्त वैद्य बन्धुओं की यह संगठित सभा है इसके प्रधान सनातनधर्म कालेज के प्रिन्सिपल श्री—नत्थुराम जी मुद्गल पं० कृष्णानन्द जी वैद्य स्वामी कृपाराम जी वैद्य डा० बैजनाथ जी कौशिक पं० बनारसीदास जी वैद्य ठा० हजारीसिंह जी वैद्य देवीदत्त जी वैद्य अयुध्याप्रसाद जी वैद्य श्री घनश्यामदास जी वैद्य आदि आदि हैं ।

कैम्युनिष्ट पार्टी भिवानी

इसके प्रधान कार्यकर्ता श्री सत्यपाल जी शर्मा श्रीरिच्छपाल सिंह डा० दयाकृष्ण जी श्री किशनलाल जी पेन्टर एम. सी. और सरदार चन्दनसिंह जी आदि २ योग्य कार्य कर्ता है जो कैम्युनिज्म का प्रचार करने के लिए काफी सचैष्ट रहते हैं ।



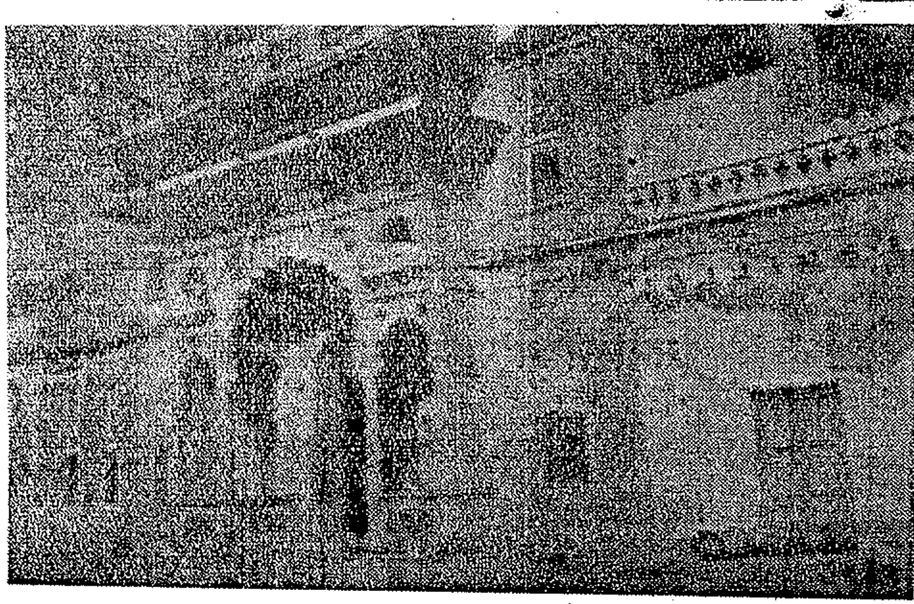
भिवानी रामराज्य परिषद द्वारा प्रेमित
हिन्दू कोडबिल विरोधी सत्याग्रही जत्था



सनातनधर्म पाठशाला भिवानी

यह सनातनधर्म पाठशाला सनातनधर्म सभा के अन्तर्गत सं० १९५४ में पं० दीनदयाल जी शर्मा व्याख्यानवाचस्पति के उद्योग से स्थापित हुई थी यहां काशी अयोध्या एवं पंजाब की हिन्दी एवं संस्कृत की सभी परीक्षाएं दिलाई जाती हैं इस संस्था के हजारों स्नातक भारत के विभिन्न भागों में फैलकर अपना जीवन निर्वाह और अनेकों महत्व पूर्ण कार्य कर रहे हैं। यहां पर विद्यार्थियों के ठहरने व भोजन आदि का पूर्ण प्रबन्ध है। इस पाठशाला में एक शास्त्रीय विषय का पुस्तकालय भी है, जिसमें

प्रायः सभी धार्मिक ग्रन्थ उपस्थित है। इस पाठशाला में एक इतना विशाल सभा भवन है जिसमें दो हजार मनुष्य एक साथ बैठकर व्याख्यान सुन सकते हैं। पाठशाला का प्रबन्ध सनातन धर्म सभा के अधीन है जिसमें सार्वजनिक चुनाव द्वारा सभा पति और मन्त्री चुने जाते हैं वही इस संस्था की देखभाल करते हैं।

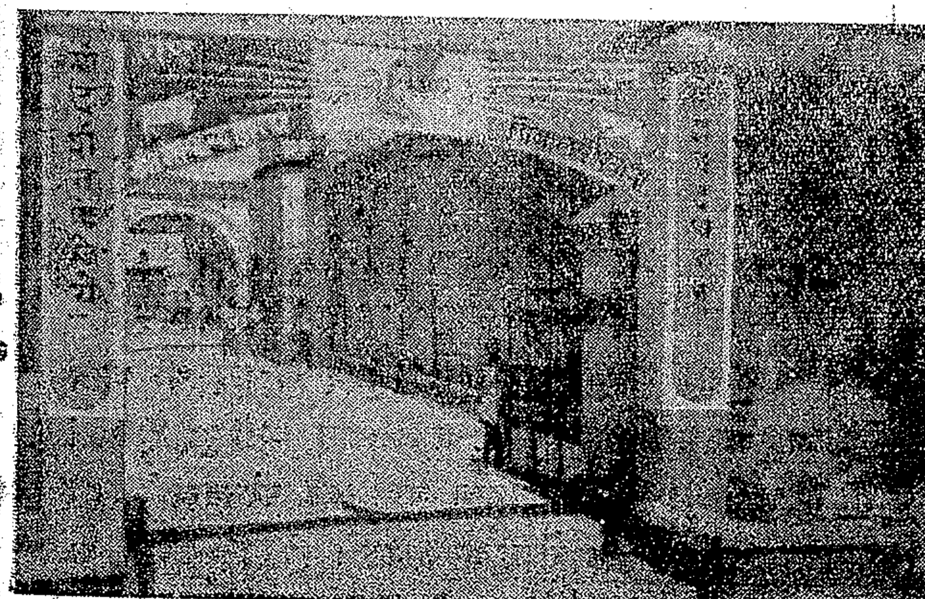


गोशाला भिवानी

संवत १९४६ में पं० दीनदयाल जी शर्मा व्याख्यान वाचस्पति द्वारा इस संस्था का स्थापन हुआ था, इस गोशाला की एक शाखा लठियावाला तालाबपर भी है। गोशाला का सिंह द्वार जो बहुत ही भव्य एवं सुविशाल है श्री चौ० छाजु

राम जी ने बनवाया था गोशाला के अन्दर भिवानी के दानियों द्वारा गोभक्तों के लिए अलग २ स्थान बने हुए हैं। ४ हजार बीघों के करीब इसमें दानियों द्वारा दी हुई जमीन है जिसमें गउओं के लिए पर्याप्त मात्रा में अन्न व चारा पैदा हो जाता है। इस गोशाला के बीड़वाले भवन में एक इतना विशाल कूप है जिसके मुकाबले का जिले भरमें अन्य कूप नहीं है। वर्तमान समय में करीब ५ मन दूधप्रति दिन होता है। इस समय इसके प्रधान श्री हरचन्दराय जी चिड़ीपाल तथा श्री रामस्वरूपदास जी बुवानीवाले हैं।

श्री गोपाल गोरस गोशाला भिवानी



इस गोशाला की स्थापना संवत् १९६६ में श्री पन्नालाल जी

स्वर्णकार द्वारा हुई थी । प्रारम्भ में इस गोशाला का रूप बहुत छोटा था किन्तु जब से इसका प्रबन्ध नगर के अच्छे कार्यकर्ताओं के हाथ में आया है तभी से यह दिनों दिन उन्नति करती जा रही है इस समय यहां करीब ४०० के लगभग गोमाताएं रहती है इन में कुछ लंगड़ी लूली अपाहज भी हैं जिनका यथोचित पालन पोषण हो रहा है श्री नन्दाकिशोर सर्राफ द्वारा गोशाला के कूप में मोटर लगवा कर यहां सदा के लिए पानी का अभाव दूर कर दिया गया है, वास्तव में यह सर्राफ परिवार द्वारा गोमाताओंकी बहुत बड़ी सेवा हुई है । इसके प्रधान कार्यकर्ताओं में डा० जनार्दन जी सौपर्ण श्री नन्दकिशोर जी सर्राफ, श्री बाबुलाल जी चमड़िया एवं श्री नन्दकिशोर जी उमरिया का नाम विशेष उल्लेखनीय हैं । श्री विश्वेसरलाल मोतीलाल हालवासिया ट्रस्ट द्वारा यहां गो माताओं की चिकित्सा का भी समुचित प्रबन्ध है ।

ब्रह्मचार्याश्रम भिवानी

इस संस्था की स्थापना द्विजकुल भूषण विद्यामार्तण्ड श्री— पं० सीताराम जी शास्त्री द्वारा वि० १९६६ में हुई थी आज जिस जगह ब्रह्मचर्याश्रम की विशाल बिल्डिंग बनीं हुई हैं यहां कभी भिवानी का श्मशान स्थान था । उन परमतपस्वी श्री विद्यामार्तण्ड जी की कृपा से न जाने कितने ही द्वि–जाति के बालक यहां विद्याध्ययन कर भारत के विभिन्न भागों में सेवा कर रहे हैं ।

इस ब्रह्मचर्याश्रम में प्राय: १० वर्ष की अवस्था के छात्र ब्रह्मचर्यव्रत की दीक्षा लेकर प्रवेश करते हैं और यहां वेद वेदांग की शिक्षा ऋषिकुल की भन्ति प्राचीन भारत के आधार पर दी जाती है । छात्रों के लिए भोजन, वस्त्र, तथा पुस्तकों का प्रब न्ध आश्रम की तरफ से हैं यहां ब्रह्मचार्यों को त्रिकाल सन्ध्या और दोनों समय हवन अनिवार्य रूप से करना पड़ता है, पंजाब एवं कांशी की परिक्षाएं यहां दिलाई जाती है । परिक्षाओं के इलावा कर्मकांड, ज्योतिष, एवं वैदिक शास्त्र का पूर्ण ज्ञान करवाया जाता है यहां एक बहुत विशाल यज्ञशाला बनीहुई है जो समस्त पंजाब में प्रसिद्ध है पूर्ण वैदिक रीति से बनी, इस यज्ञशाला को देखने दूर दूर के व्यक्ति आते हैं । आश्रम में एक पुस्तकालय भी है जिसमें अनेकों हस्तलिखित पुस्तकें विद्य मान हैं और एक पौराणिक आधार पर बनाया गया ब्रह्माण्ड का नक्सा भी है, जिसे भारत के बड़े २ दिग्गज विद्वान देश्व विद्यामार्तण्ड जी की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करते हैं । सबसे बड़ी महत्व की बात इस आश्रम में यह है कि जब से यह आश्रम स्थापित हुआ है तब से आजतक अग्निमन्थन द्वारा शास्त्र रीति से प्रगट की हुई अग्नि विद्यमान है । इस अग्नि को प्रचण्ड हुवे आज करीब २५ वर्ष होचुके हैं यह ज्योति आजतक प्रज्वलित है । इस आश्रम में एक बहुत सुन्दर व विशाल बागीचा भी लगा हुआ है । यह वानप्रस्थियों के लिए एक अलग स्थान बना हुआ है जो कोई सज्जन वानप्रस्थ धारण

कर अपना जीवन आश्रम में बिताना चाहे उनके लिए स
साधन उपलब्ध हैं। आश्रम में भगवान श्यामसुन्दर का मन्
एवं विशाल मधुर जलयुक्त कूप भी है। इस समय इस संस्
का संचालन ट्रष्टियों द्वारा हो रहा है और इसका मुख्य प्रबन्
रा० ब० पं० श्रीदत्त जी शर्मा श्री पं० पुष्करदत्त जी शर्मा त
ं० केशवदेव जी आयुर्वेदाचार्य के आधीन हैं।

भिवानी अनाथालय

इस संस्था का स्थापन सन् १८६८ में त्याग मूर्ति
पंजाब केसरी लाला लाजपतराय जी के करकमलों द्वारा हु
था यह हरियाणा प्रान्त की एक मात्र संस्था है जिसमें हि
जाती के अनाथ अबोध बालिक एवं बालिकाएं जो संसार
निःसहाय समझी जाती है यहां उनका समुचित रूप से प्रब
कर उन्हीं का पालन पोषण किया जाता है अनेको बार हिन्दु
पर ऐसे भीषण एवं जघन्य पाप हुए हैं जिनका विवर्ण भा
के रक्त रञ्जित इतिहास में लिखा हुआ है उस समय इस सं
द्वारा बिना किसी भेद भाव के प्राणी मात्र की जो सेवा हुई
वह प्रशंसनिय है।

यहां पर अनाथ बच्चों के रहन सहन भोजन व
आदि का पूर्ण प्रबन्ध है इस समय इसके प्रधानकार्य कर्ता
ला० जसवन्तराय जी एम. ए. मेरठ, ला० बैजनाथ जी एडवो
हिसार, ला० हरिकृष्णदत्त जी एडवोकेट हिसार, ला० आत्मा



— डा० पुरुषोत्तमदत्त जी गिरधर, आंखों का ओपरेशन करतेहुए —



श्री किशनलाल जालाण फ्री आई हस्पताल भिवानी

जी एडवोकेट है हिसार, ला० बजीरसिंह जी रिटायर्ड इन्जिनियर हिसार, ला० ललपतरायजी चिड़ीपाल भिवानी, ला० हरदत्तराय जी सूगला, आदि का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

श्री किशनलाल जालान फ्री आई हस्पताल

इस संस्था द्वारा भिवानी का नाम भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी काफी रोशन हुआ है। दूर दूर के विदेशी डाक्टरों ने यहां आकर नेत्र-ज्ञान प्राप्त किया है।

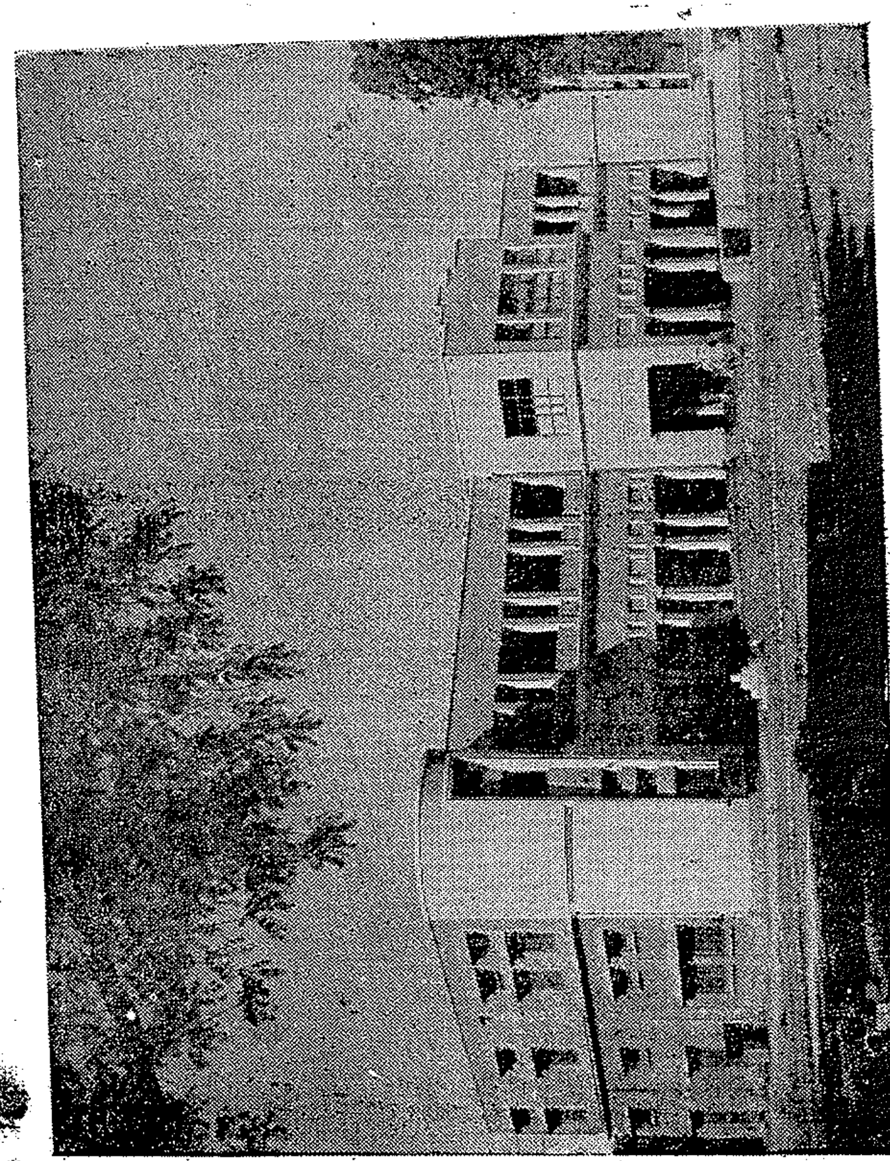
इस संस्था का स्थापन स्वर्गीय श्री सेठ किशनलाल जी जालाण ने राय बहादुर पं श्रीदत्त जी शर्मा भू. पू. ऑनरेरी मजिस्ट्रेट की प्रेरणा से सन् १६३३ में किया था। प्रारम्भमें यह हस्पताल बहुत छोटे रूप में था, किन्तु यहां प्रतिवर्ष नेत्ररोग पीड़ित मरीजों का मेला लगने के कारण इसे बढाना पड़ा आज यह हस्पताल इतना विशाल बनगया है कि इसमें करीब ७००,-८००, मरीजों के निवास आदि का सुप्रबन्ध हैं, इतना विशाल होनें पर भी यहां प्रति सीजन (आश्विन एवं चैत्र) में अनेकों तम्बू एवं तम्बोटियें लगाकर मरीजों को स्थान देना पड़ता है, फिर भी नेत्र रोगियों का इन्तजाम मुस्किल से ही पार होता है। इस हस्पताल के इन्चार्ज डा० पुरुषोत्तमदत्त जी गिरधर एवं असिस्टेन्ट श्री नारायणदास गिरधर हैं, यह इतने बड़े सुविशाल हस्पताल का संचालन बहुत कुशलता व अनथक

परिश्रम से कर रहे हैं। यद्यपि इस हस्पताल को श्री घनश्याम दास जी जालाण की कुशाग्रबुद्धि एवं डा० पुरुषोत्तमदत्त गिरधर का परिश्रम ही इतने बड़े पैमाने पर लासका है कि आज भिवानी "आंखोंवाली भिवानी" के नाम से समूचे भारत में प्रसिद्ध है

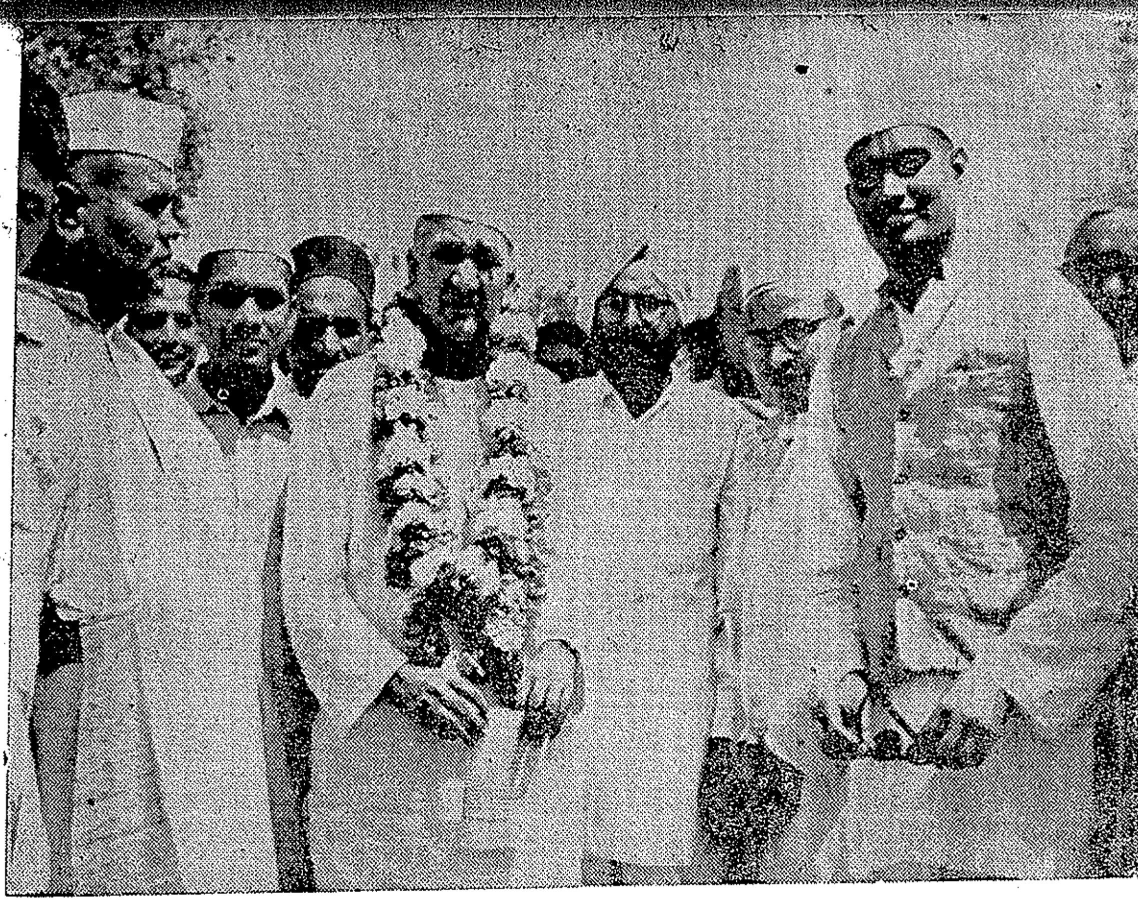
भीषण गर्मी एवं आंधी आदि के कारण इस इलाके में फैले हुए नेत्र रोगों के लिए यह हस्पताल वास्तव में कल्प वृक्ष है। प्रारम्भ में इस हस्पताल में केवल १२ रोगियों के ही रहने का प्रबन्ध था। किन्तु आज ७००, ८०० रोगी हस्पताल में रहते हैं, और जब तक इसमें १५०० रोगियों के रहने का प्रबन्ध न होगा तब तक बहुत बड़ी मुस्किल का सामना करते ही रहना पड़ेगा। इस हस्पताल की वास्तविक उन्नति का श्रेय डा० पुरुषोत्तमदत्त गिरधर को ही है जिनके सतत् प्रयत्न द्वारा नवलगढ, रतनगढ, चूरू, गोकरणनाथ, यू० पी० आदि कई स्थानों के डाक्टर यहीं से शिक्षा प्राप्त कर अनेकों हस्पतालों का संचालन कर रहे हैं। और उन सभी हस्पतालों की देख रेख भी स्वयं डाक्टर पुरुषोत्तम दत्त जी ही करते हैं।

श्री किरोड़ीमल सिविल हस्पताल भिवानी

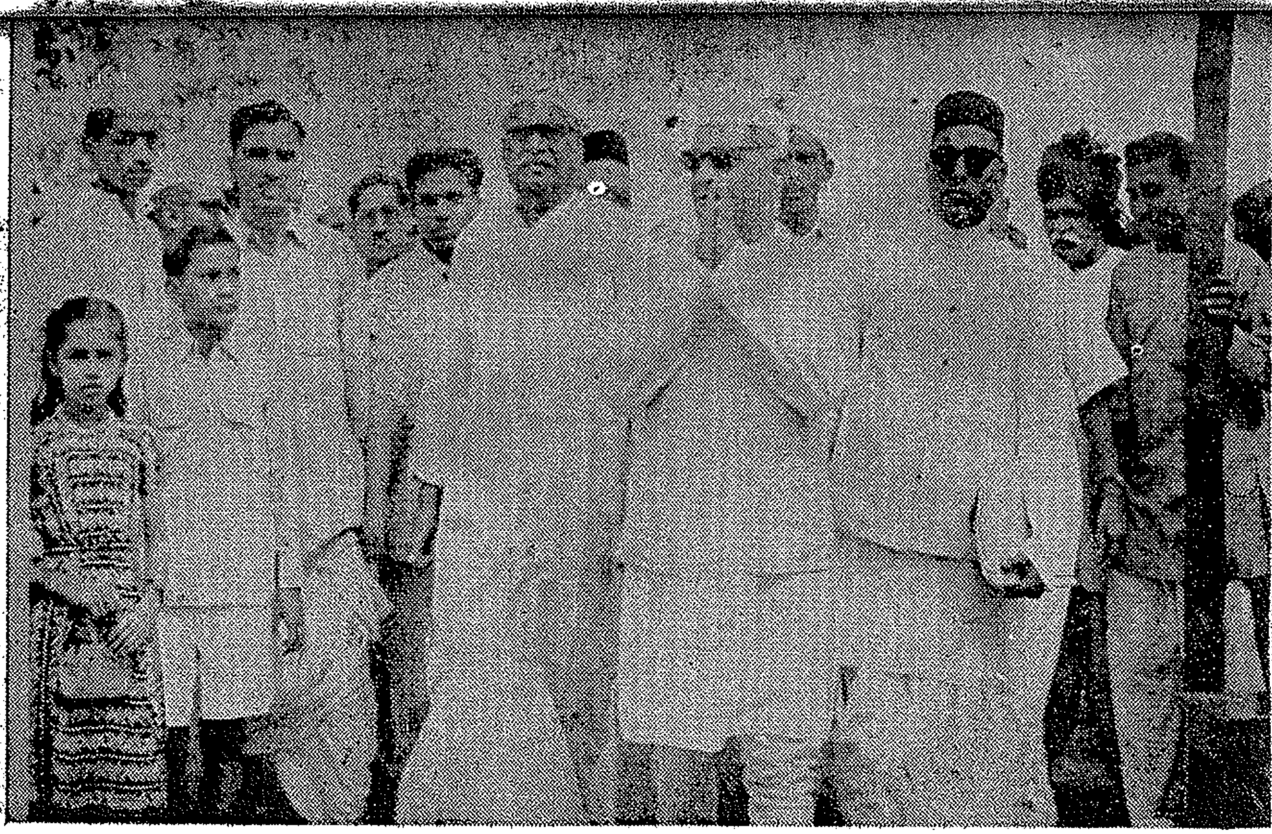
यह हस्पताल पहले म्युनिसिपल कमेटी के आधीन था इसकी बिल्डिंग अत्यन्त जीर्ण शीर्ण होने के कारण बिलकुल खराब हो चुकी थी, फटी टूटी छतें, गन्दी हवा



श्री किरोड़ीमल सिविल हस्पताल भिवानी।



ला० जगतनरायण जी शिक्षा मन्त्री पंजाब, सरदार हरदयालसिंह R. M. भिवानी
श्री प्रेमचन्द लुहारी वाले, पं० हरिचरण जी ज्योतिषी, पं० बलदेव शर्मा आचार्य



मुख्य मन्त्री श्री सच्चर जी तथा सेठ पालुराम जी धनानिया
श्री जानकीदास जी नलवेवाले, श्री छगनलाल जी हैदराबादी ।

वर्षा में मरीजों पर पानी गिरता था, जिस से रोगियों को महान कष्ट होता था यह सभी बातें देख कर इस नगर के दानवीर सेठ किरोड़ीमल जी के हृदय में दया उत्पन्न हुई और उन्होंने मरीजों को पूर्ण आराम मिले और उनकी अच्छी चिकित्सा हो सके इस भावना को लेकर एक सुविशाल हस्पताल बनवादिया, जो प्राय: सभी तरह के आधुनिक यन्त्रों से सुसज्जित एवं सभी साधनों से सम्पन्न है। इस हस्पताल का नाम "श्री किरोड़ीमल सिविल हस्पताल" है।

इस हस्पताल का उद्घाटन पंजाब के स्वास्थ्य व शिक्षा मन्त्री श्री ला० जगतनारायण जी के कर कमलों द्वारा ता० १०-६-५२ को हुआ था। हस्पताल की बिल्डिंग समूचे पंजाब में अपने ढग की निराली है, खुली हवा और स्वच्छएवं सुन्दरता का पूर्ण ध्यान रख कर इस हस्पताल का निर्माण करवाया गया है। इसके निर्माण आदि पर करीब ७ लाख रुपया व्यय हुआ है। अब इसका प्रबन्ध पंजाब सरकार द्वारा किया जा रहा है। और अच्छे अच्छे डाक्टरों की देख रेख में मरीजों की सुश्रूषा हो रही है। वर्तमान समय में हस्पताल के इन्चार्ज डा० देशराज गुलाठी जी एम० बी० बी० एस० हैं।

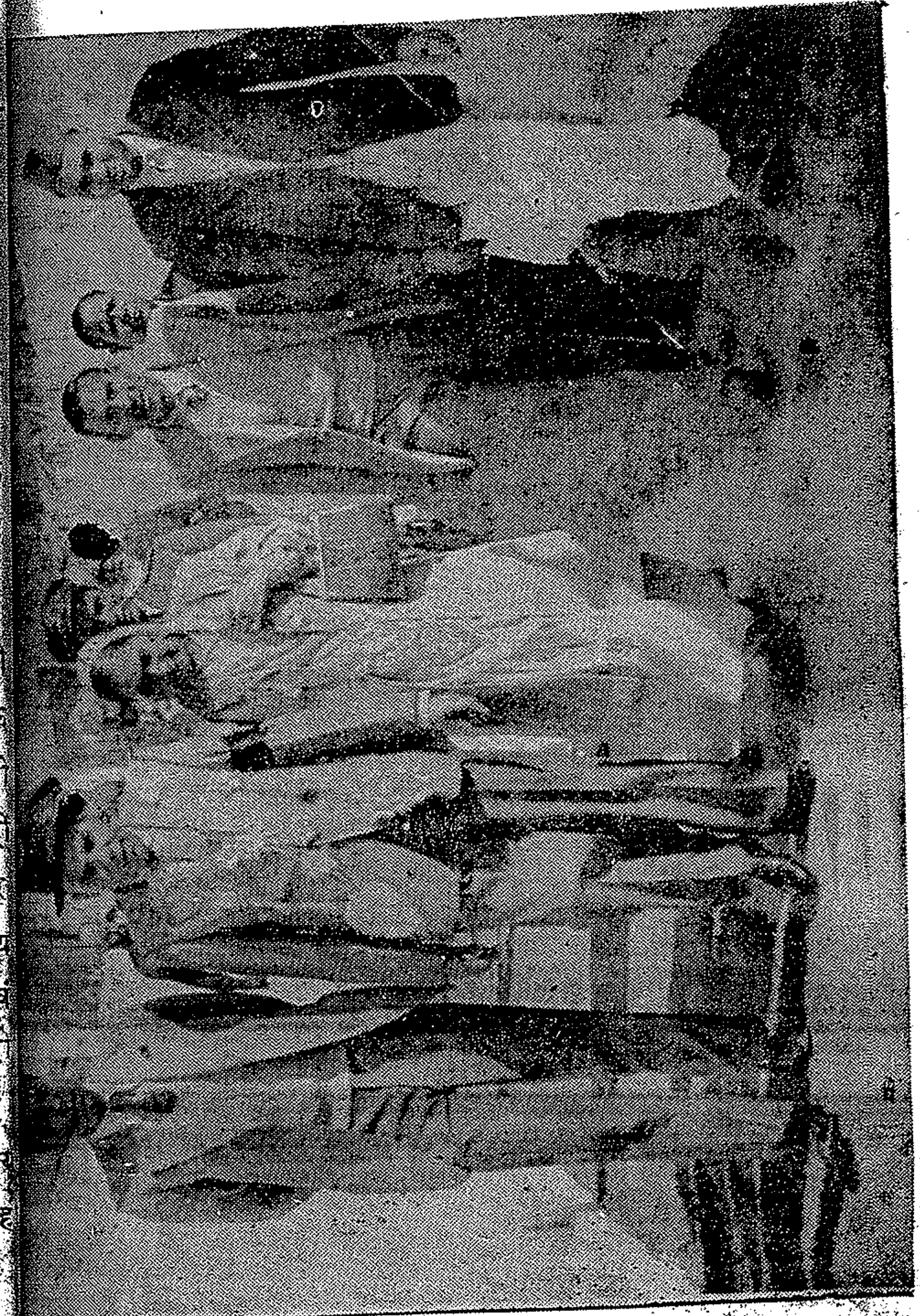
रा० बा० बिश्वेश्वरलाल मोतीलाल हलुवासिया ऐक्सरे

इसी हस्पताल में रा० बा० श्री विश्वेसरलाल मोतीलाल

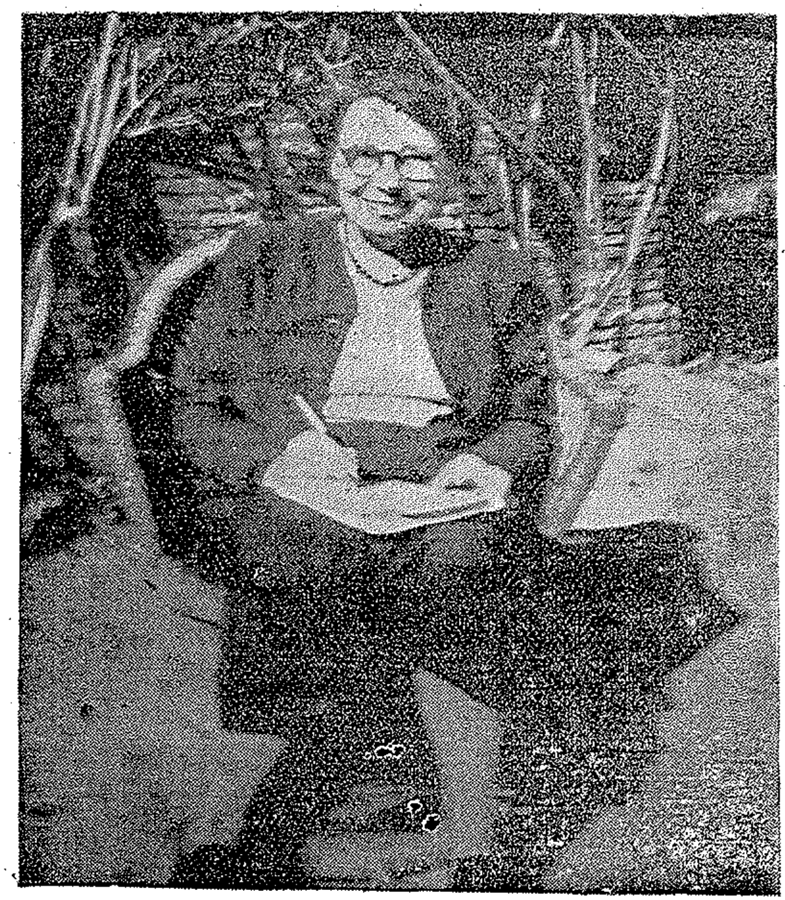
हालुवासिया ट्रस्टकी तरफ से एक ऐक्सरे मशीन लगी हुई है। जिसका का उद्घाटन करने पंजाब के गवर्नर माननीय श्रीचन्द लाल जी त्रिवेदी पधारे थे। पहले भिवानी में ऐक्सरे की कोई मशीन न होने के कारण यहां के निवासियों को देहली जाना पड़ता था.वहां उनका काफी खर्च लगता, और गरीब व्यक्तिों के लिए तो ऐक्सरे करवाना सर्वथा असम्भव था। जबकि आज बिमारियों की प्रारम्भिक चिकित्सा एक मात्र ऐक्सरे ही रहगई है।

उसके बिना यहां बहुत कष्ट का सामना करना पड़ता है ऐसी अवस्था देखकर इस नगर के महान शुभ चिन्तक हालुवासिया ट्रस्ट के सम्मानित ट्रस्टी श्री पुरुषोत्तमदास जी हालुवासिया के पवित्र हृदय में दया उत्पन्न हुई और इन्हो ने अपने हालुवासिया ट्रस्ट द्वारा रुपया पास करवा कर इस महान सेवा को पूर्ण किया यह फोटो उसी समय का है जिस समय श्री श्यामसुन्दर जी हालुवासिया एवं श्री पुरुषोत्तमदास जी हालुवासिया श्री चन्दुलाल जी त्रिवेदी गवर्नर पंजाब के साथ उद्घाटन करने पधार रहे हैं। इस ऐक्सरे विभाग के इन्चार्ज डा० एस० एल० नन्दा महोदय है। गक्सरे मशीन क लगजाने से इस इ लाके को बहुत ही बड़ा लाभ हुआ है।

—



एक्सरे उद्घाटन



डा० वैन्जे
इन्चार्ज—फेरर हस्पताल भिवानी

फेरर हस्पताल भिवानी

सन् १८६० में इस हस्पताल की स्थापना आरम्भ में वैदों की हवेली (जो बाजारी में है) हुई थी, भिवानी में डाक्टरी चिकित्सा के प्रचार का यह सब से पहला हस्पताल है इसकी संस्थापक मिस मरियम थी यह बहुत ही करुणाहृदय की अंग्रेज महिला थी और एक वर्ष तक यहां निःशुल्क सेवा करती रही बाद में सन् १८६१ में डा० फेरर इंगलेण्ड से यहां पधारी उन्होंने इस इलाके के व्यक्तियों की पैदल घूम घूम कर देहातों में पहुँच कर सेवा की १८६७ में जब इस इलाके में कहत पड़ा उस समय डा० फेरर ने जो सेवा की है वह लिखने से बाहर है तनमन और धन तीनों को जनता जनार्दन की सेवा में अर्पण कर दिया इसी सेवा से प्रभावित हो कर भिवानी के दानियों ने कालरे में फेरर हस्पताल के नाम से एक हस्पताल बनवा दिया जो आज बहुत विशाल रूप में विद्यमान है डा० फेरर चिकित्सा में सफल हस्त और बहुत ही समझदार थी सेवा धर्म उनकी नस नस में भरा हुआ था।

अब यह हस्पताल बहुत विशालरूप में बनगया है ३०-४० नर्सें कार्य करती है इसकी इन्चार्ज डा० फेरर के बाद मिसजैकब मिस विसट और डा० ग्लेजिट तथा डा० बनर्जी और अब क्रेशरे हिन्द डा० बन्जे है और इनके स्थान परकार्य कर्ता के

लिये डा० B- गरे M-A-M-B आगई है डा० बैन्जे ने इस इलाके की बहुत बड़ी सेवा की है जिसे भुलाया नहीं जा सकता इस समय जो डाक्टर बी. गरे आई है यह भी बहुत सुयोग्य एवं सेवा में रत तथा अच्छे विचारों की महिला है।

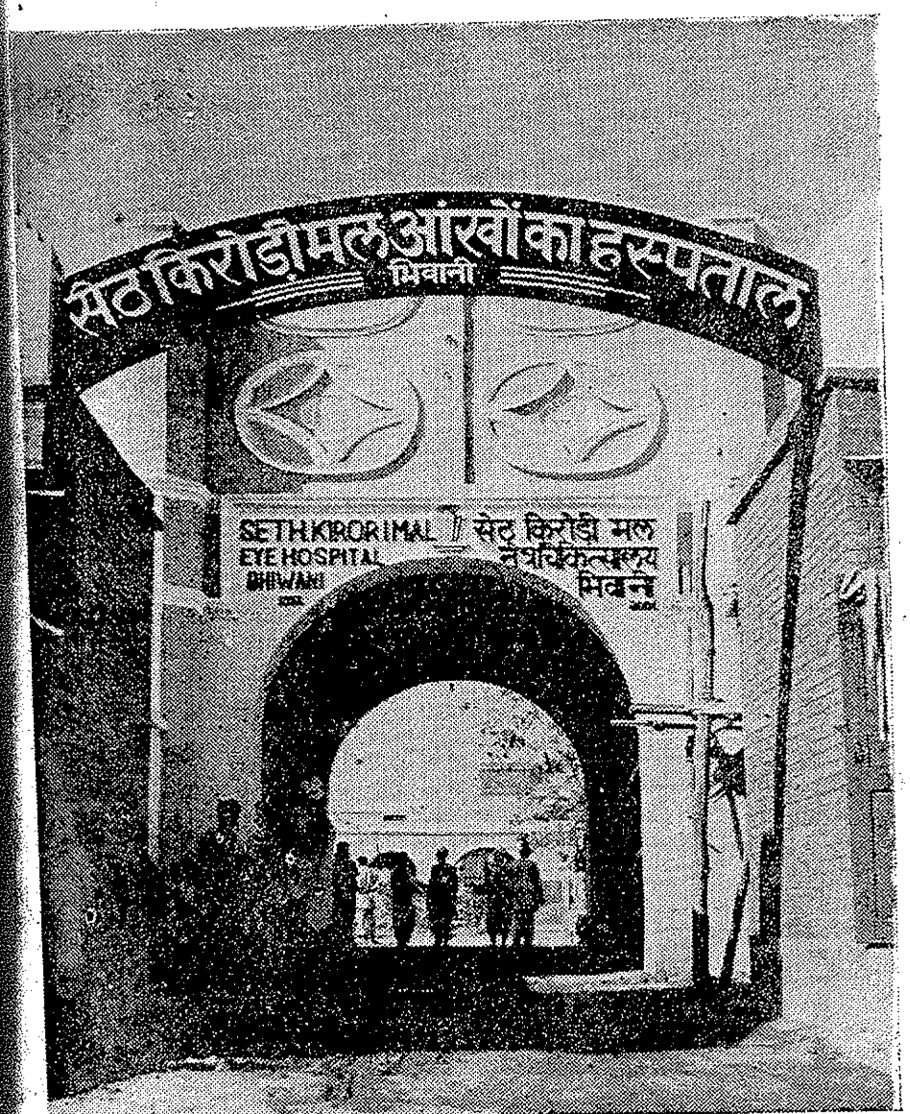
लेडी हेली हस्पताल भिवानी

यह हस्पताल सन् १९३४ में अपनी स्वर्गीया पुत्री कमलादेवी की पुण्य स्मृति में चौ० छाजुराम जी ने स्थापितकिया था इसका उद्घाटन पजाब प्रान्त के श्री गवर्नर द्वारा हुआ था और उनकी स्त्री "लेडी हेली" के नाम पर हस्पताल का नाम रक्खा गया अस्तु यहां पर यह बतला देना जरूरी है कि जिस समय यह हस्पताल खोला गया उस समय हिन्दु लेडी डाक्टरों का मिलना बहुत ही मुश्किल था अंग्रेज़ लेडी डाक्टर एवं ईसाई नर्सें ही अधिक होती थी।

चौ० छाजुराम जी के अधिक प्रयत्न करने पर श्री कुमारी मालती बाई-सप्रे जो महाराष्ट्र की रहने वाली ब्राह्मण देवी है मिली, चौ० छाजुराम जी को यह देखकर और भी महान् प्रसन्नता हुई कि यह केवल हिन्दु देवी ही नहीं बल्कि एक विशुद्ध भारतीय भावनाओं को जागृत करने वाली स्वतन्त्र विचारों की देवी है। आज जिस सेवा धर्म का विशेष श्रेय ईसाइयों को ही मिल रहा है उस सेवा धर्म को यह भारतीय



केशरे हिन्द—
श्रीमति मालतीदेवी जी सप्रे
इन्चार्ज—लेडीहेली हस्पताल भिवानी



सेठ किरोड़ीमल नेत्र चिकित्सालय भिवानी ।

देवियों में फैलाना चाहती है, यह समझ इनको यहां भिवानी हस्पताल में इन्चार्ज बना कर लाया गया उस समय डा० सप्रे हस्पताल की इन्चार्ज बनकर तो आ गई किन्तु यहां नर्से कहां! वैसे इसाई नर्सें तो बहुत थी किन्न वह मिशन द्वारा संचालित हस्पताल में ही सेवा कर सकती थी। प्राईवेट हस्पतालों में कार्य करना ठीक नहीं समझती थी, इस कारण डा० सप्रे कई महिनों तक नुकसे लिखती और दवाई बनाती रही। इस में कोई सन्देह नहीं है कि इस हस्पताल, के जेरें जेरें को डा० सप्रे ने अपनी कठिन मेहनत से सफल बनाया है, यह हस्पताल प्रारम्भ में बहुत छोटा था आज इसमें ३-४ जनरैल वार्ड और सभी तरह के यन्त्र व चारपाइयों का बहुत बड़ा प्रबन्ध है जहां इस हस्पताल के निर्माण में चौ छाजुराम जी का नाम अमर है वहां इस हस्पताल की सब तरह अभिवृद्धि करने में डा० सप्रे का नाम भी अमर है। अब यह हस्पातल १९५२ से सरकारी प्रबन्ध द्वारा चलाया जा रहा है।

श्री किरोड़ीमल नेत्र चिकित्सालय भिवानी

इस हस्पताल का स्थापन हमारे नगर के दानवीर सेठ किरोड़मल जी को इस लिये करना पड़ा कि भिवानी में नेत्र रोगों से दुःखित रोगियों की चिकित्सा और भी ज्यादह हो सके

और रोगियों को पूर्ण आराम मिल सके, यह समझ सिविल हस्पताल की पुरानी बिल्डिंग को नए ढंग से बनवाकर और उसमें मरीजों के आराम के लिये नए साधन सम्पन्न यन्त्रों को जुटाकर २६ अप्रेल १९५२ को इसका उद्घाटन पंजाबप्रान्त के माननीय मुख्य मन्त्री श्री भीमसेन सच्चर द्वारा करवाया गया इस अवसर पर सेठ पालुराम जी धनानियां" जो वास्तव में इन सभी शुभ कार्यों के प्रेरक है और इस शहर के ही नहीं बल्कि इस इलाके के सच्चे शुभ चिन्तक भी हैं" ने आगन्तुक महानु भावों का स्वागत पत्र पढ कर अभिनन्दन किया चित्र में ला पालुराम जी को अभिनन्दन पत्र पढ़ते हुए दिखलाया गया है भिवानी नगर के दानवीर सेठ किरोड़ीमल जी श्री भीमसेन जी सच्चर के साथ उद्घाटन महोत्सव पर बैठे हुए हैं और सेठ जी के पास इनके अभिन्न स्नेही हैं। श्री मौलिकचन्द्र जी खड़े है। इस हस्पताल के इन्चार्ज डा० बी० जी० पासवानी जी नागपुर के रहने वाले बहुत ही धैर्यवान डाक्टर है।

श्री वैश्य कालेज भिवानी

भिवानी जैसे विशाल नगर में कोई महाविद्यालय नहीं हो इस कमी को अनुभव करते हुवे श्री सेठ मेलाराम जी वैश्य, रा० सा० राधाकृष्ण जी आलमाल, श्री रामचन्द्र जी वैद एवं श्री बाबु ईश्वरदास जी वकील आदि कई एक महानुभावों ने



श्री वैश्य-कालेज भिवानी

संचालित:- श्री सेठ किरोड़ीमल जी जिनका स्टेचू सामने है।

सन् १९४० में इस वैश्य-महाविद्यालय की स्थापना की, २१ नवम्बर को भारत प्रसिद्ध दानवीर श्री सेठ जुगलकिशोर जी बिड़ला इस संस्था का उद्घाटन करने भिवानी पधारे। इसी महोत्सव पर श्री स्वामी मुरलीधर जी आचार्य ने भिवानी नगर की तरफ से बिड़ला जी के सन्मान में एक अभिनन्दन पत्र भेंट करते हुए उनका नगर की ओर से स्वागत किया। वैश्य कालेज के उद्घाटन का समारोह बहुत ही धूमधाम से समस्त शहर में मनाया गया था। करीब १० वर्ष तक इस कालेज का संचालन वैश्य कालेज ट्रस्ट के आधीन सुचारु रूप से चलता रहा, परन्तु यह कालेज अर्थाभाव के कारण उतनी उन्नति नहीं कर सका जितनी की इसके निर्माताओं की इच्छा थी। बादमें वैश्य कालेज के ट्रस्टियों ने इस कालेज के संचालनार्थ सेठ किरोड़ीमल जी का ध्यान इधर आकर्षित करवाया। यहां यह बात बतलादेनी जरूरी है कि-इस कालेज को प्रारम्भ से ही श्री सेठ किरोड़ीमलजी का चलाने के लिए विशेष तौर पर ध्यान आकर्षित रहा, क्यों कि इस कालेज के लिए सब प्रथम जमीन देकर उसमें कई एक विशाल भवन बनवाये और समय समय पर रुपये आदियों को भी सहायता करते हुवे इसे हर तरह सफल बनाने को चेष्टा की गई। किन्तु फिर भी यह कालेज अर्थाभाव के कारण पूर्णत: सफल नहीं हो सका, इस लिए इसके ट्रस्टियों ने इस कालेज का समूचा भार सम्भालने के लिए सेठ किरोड़ीमल जी से कहा। सन्—

१९५१ फरवरी से इसका पूर्णत: संचालन सेठ किरोड़ीमलजी ने अपने हाथ में लेकर, किरोड़ीमल चेरेटी ट्रस्ट के आधीन कर दिया, अब यह बहुत सुन्दर ढग से सफल होरहा है और इस में डेढ दो लाख रुपये लगाकर कमर्सियल एवं विज्ञान के लिये विशेष कमरे तैयार करवारक इस कालेज का काफी विस्तार कर दिया गया है।

वर्तमान समम में इस कालेज के प्रिन्सिपल श्री चौ० हरद्वारीलाल जी बहुत योग्यता से कार्य कर रहे हैं और आज इस कालेज के सनातक भारत के भिन्न भिन्न भागों में कार्य करते हुवे अपने जीवन को सुखी बना रहे हैं।

छात्रावास—जो कालेज के समीप ही है उसकी भूमि सेठ गणेशदास रामगोपाल जी हलवासिया द्वारा प्राप्त हुई और करीब एक लाख रूपया श्री वैष्णव कुलभूषण रायबहादुर सेठ विश्वेश्वरलाल मोतीलाल जी हलवासिया ट्रस्ट द्वारा बोर्डिंग के निर्माणार्थ मिला था। छात्रावास के निर्माण का श्रेय रायसाहेब श्री सेठ राधाकृष्ण जी आलमाल को है। वैश्य कालेज पंजाब प्रान्त में अपना विशेष स्थान रखता हुआ भारत में भिवानी का सर ऊंचा किए हुए है।

❀—❀

टी० आई० टी० कालेज भिवानी

इस इलाके में बिड़ला बन्धुओं द्वारा टी० आई० टी० कालेज की स्थापना का मुख्य कारण यहां दस्तकारी व उद्योगिक धन्धों द्वारा लोगों को शिक्षित बनाना है। इसी कारण सन् १९४३ से टी० आई० टी० मिल्स के अन्दर ही इस कालेज की स्थापना की गई। यहां प्रत्येक बात की क्रियात्मक रूप से शिक्षा दी जाती है और परीक्षण के लिए अनेकों प्रकार के आधुनिक ढंग के यन्त्र लगे हुए हैं। जिनके द्वारा पदार्थों का अन्वेषण किया जाता है। इस कालेज के सुयोग्य छात्र भारत के विभिन्न नगरों में बहुत ही कुशलता से कार्य करते हुए भारत सरकार के अनेकों विभागों में कार्य कर रहे हैं।

आज यह कालेज इतनी उन्नति पर है कि यह समस्त भारत में दूसरे दर्जे का माना जाता है, इसके योग्य प्रोफेसर बड़ी २ विज्ञानिक खोजों में तल्लीन रहते हैं। वास्तव में यह कालेज पंजाब का नहीं बल्कि भारत वर्ष का गौरव रूप भिवानी नगर की गोद में फल फूल रहा है। इसके संचालन का श्रेय श्री बाबुलाल जी सेक्रेट्री व श्री पुष्करदत्त जी मैनेजर—टी० आई० टी० मिल्स को है। इसके सुयोग्य प्रिन्सिपलश्री डी० एल० सैन बहुत उच्चकोटी के बंग प्रदेशी विद्वान हैं।

श्री सनातनधर्म आयुर्वेद कालेज भिवानी

यह आयुर्वेद कालेज कभी तो भारत विख्यात कालेजों में गिना जाता था, किन्तु जब से पंजाब के दो हिस्से हुए हैं तभी से यह भिवानी ब्रह्मचार्याश्रम में अपना सुचारू रूप से कार्य कर रहा है। यह लाहौर में बहुत सम्पन्न एवं आधुनिक साधनों से युक्त था परन्तु अब इसका संचालन भी कठिनता से हो रहा है। रा० ब० पं० श्रीदत्त जी के सतत प्रयत्नों से ही यह कालेज भिवानी में कार्य कर रहा है। इसमें आयुर्वेदाचार्य तक शिक्षा दी जाती है गवर्नमेन्ट से रजिस्टर्ड होने के कारण यह प्रमाण पत्र भी स्वयं देता है। इसके स्नातकों को भारत के प्रत्येक विभाग में चिकित्सा करने का पूर्ण अधिकार है। आयुर्वेदिक एवं डाक्टरी चिकित्सा दोनों ही का यहां ज्ञान करवाया जाता है इसके प्रिन्सिपल श्री आचार्य नात्थुराम जी मुद्गल अत्यन्त सात्विक प्रकृति के सरल हृदय आदर्श महानुभाव हैं। यद्यपि यह आयुर्वेद के प्रगाढ विद्वानों में से हैं परन्तु इनकी सौम्यता और सादगी ही इनका सब से बड़ा आभूषण है।

दूसरे श्री प्रोफेसर सत्यदेव जी वाशिष्ठ हैं, जिन्हें देख कर प्राचीन भारत के वैद्यों की याद ताज़ा हो जाती है। श्री वाशिष्ठ जी ने नाड़ी तत्व दर्शन नामक पुस्तक लिख कर बड़ी ... किया है जहां यह आयुर्वेद

के पूर्ण ज्ञाता हैं वहां संगीत शास्त्र व ज्योतिष शास्त्र में पूर्ण अधिकार रखते हुए सुलझे हुये व्यक्ति हैं। इनकी सबसे बड़ी विशेषता-दूत द्वारा व्याधि का निदान है जो कि वास्तव में एक आश्चर्य और प्रशंसनीय गुण इनमें विद्यमान है इस कालेज में अनेकों छात्र, छात्राएं आयुर्वेद की शिक्षा लेकर जगह २ सेवा कर रहे हैं।

श्री किरोड़ीमल हाईस्कूल भिवानी

भिवानी में प्रारम्भ सन् १९२६ से ही म्युनिसपल कमेटी के पास एक सरकारी गवर्नमेंट हाई स्कूल था, इस हाई स्कूल में छात्रों के पठन पाठन के लिये पर्याप्त स्थान नहीं था क्योंकि स्कूल की बिल्डिंग छोटी थी और छात्र अधिक थे स्कूल में स्थानाभाव के कारण शहर के अनेकों छात्र प्रति वर्ष शिक्षा से वंचित रह जाते थे।

इस कष्ट को मिटाने के लिये सेठ किरोड़ीमल लुहारी वाले ने शहर से बाहर खुली हवा कालरे में एक बहुत विशाल हाईस्कूल बनवाकर सरकार के आधीन कर दिया है। इस हाई स्कूल में शिक्षा सम्बन्धी सभी साधन विद्यमान हैं और इस हाई स्कूल की बिल्डिंग समस्त जिले में अपने ढंग की निराली है, अनेकों छात्र एक साथ बैठ कर पढ़ सकते हैं, खेल कूद व्यायाम आदि के लिये पार्क भी हाईस्कूल के सामने है।

परीक्षा परिणाम भी प्रति वर्ष सन्तोषजनक रहता है इस समय इसके प्रधानाध्यापक श्री रामदित्तामल B.A.S A.B. हैं।

वैश्य हाईस्कूल भिवानी

सन् १९१० में इस विद्यालय की स्थापना श्री मेलाराम जी वैश्य, श्री मुरलीधर बैद श्री शिवरामदास जी वकील श्री रामचन्द्र जी बैद आदि आदि महानुभावों के उद्योग से हुई थी प्रारम्भ में यह प्राइमरी स्कूल के रूप में था बाद में मिडिल स्कूल और अब सन् १९४४ से नियमित रूप में हाईस्कूल बन कर अपना बहुत ही अच्छा शिक्षा परिणाम प्रस्तुत कर रहा है। श्रीरामचन्द्र जी "रुस्तगी" जो इस हाईस्कूल के प्रधानाध्यापक हैं बहुत ही परिश्रमी एवं इस हाईस्कूल को सब तरह से उन्नति पर लेजाने वाले कुशाग्रबुद्धि के व्यक्ति हैं। गत १९५२ में इस हाईस्कूल के छात्रों ने अम्बाला डिविजन के समस्त छात्रों को "हाकी टूर्नामेंट" मैच में हरा कर विजय प्राप्त की थी जो कि भिवानी की सब से बड़ी जीत पंजाब में मानी गई थी अब इस हाईस्कूल के कर्णाधार श्री हनुमान प्रसादमोड़ा ने अपने सतत प्रयत्नों द्वारा इस स्कूल की एक इतनी विशाल एवं भव्य इमारत बनवादी है जो दर्शनीय है। वास्तव में श्रीहनुमानप्रसाद जी मोड़ा का यह कार्य बहुत प्रशंसनीय है और जब तक यह — — है तबतक इनका नाम अमर है श्री सेठ राधाकृष्णजी



वैश्यहाई स्कूल के स्थान निर्माणार्थ छात्रों द्वारा संग्रहीत धनराशी को मुख्याध्यापक श्री रामचन्द्र जी रूस्तगी द्वारा श्री सेठ मेलाराम जी को भेंट



श्री हनुमानप्रसाद जी मोड़ा
(नरसिंहदास मेलाराम)

अ.लमाल ने हालुवासिया ट्रस्ट से ७५ हजार रुपया इस हाईस्कूल को दिलवा कर भिवानी नगर की महान सेवा की है। शहर के शुभचिन्तक श्री सेठ ज्ञानीराम जी चिड़ीपाल ने भी अच्छी रकम देकर इसे सर्वांग सुन्दर बनाकर अपनी उदारता का परिचय दिया है और स्वर्गीय श्री धनसीराम जी मौढ़ा की धर्मपत्नी ने इस संस्था के लिये जमीन देकर स्वर्गीय आत्मा का नाम अमर कर दिया है।

टी० आई० टी० स्कूल भिवानी

यह हाईस्कूल T. I. T. मील में संचालित है इसका परिक्षा परिणाम बहुत सन्तोष जनक रहता है, बिड़ला बन्धुओं द्वारा इस का संचालन होरहा है श्री रामरिखामल जी B.A. इस हाईस्कूल के प्रधानाध्यापक हैं। जोकि बहुत सरल स्वभाव के उन्नतिशील परिश्रमी एवं शिक्षा के कार्य में बहुत ही चतुर व्यक्ति है।

हिन्दु हाई स्कूल भिवानी

श्री चौधरी रणसिंह जी B.A. द्वारा यह हाईस्कूल ला० नन्दराम जी के कटले में संचालित है, बहुत मेहनत के साथ छात्रों को पढाया जाता है।

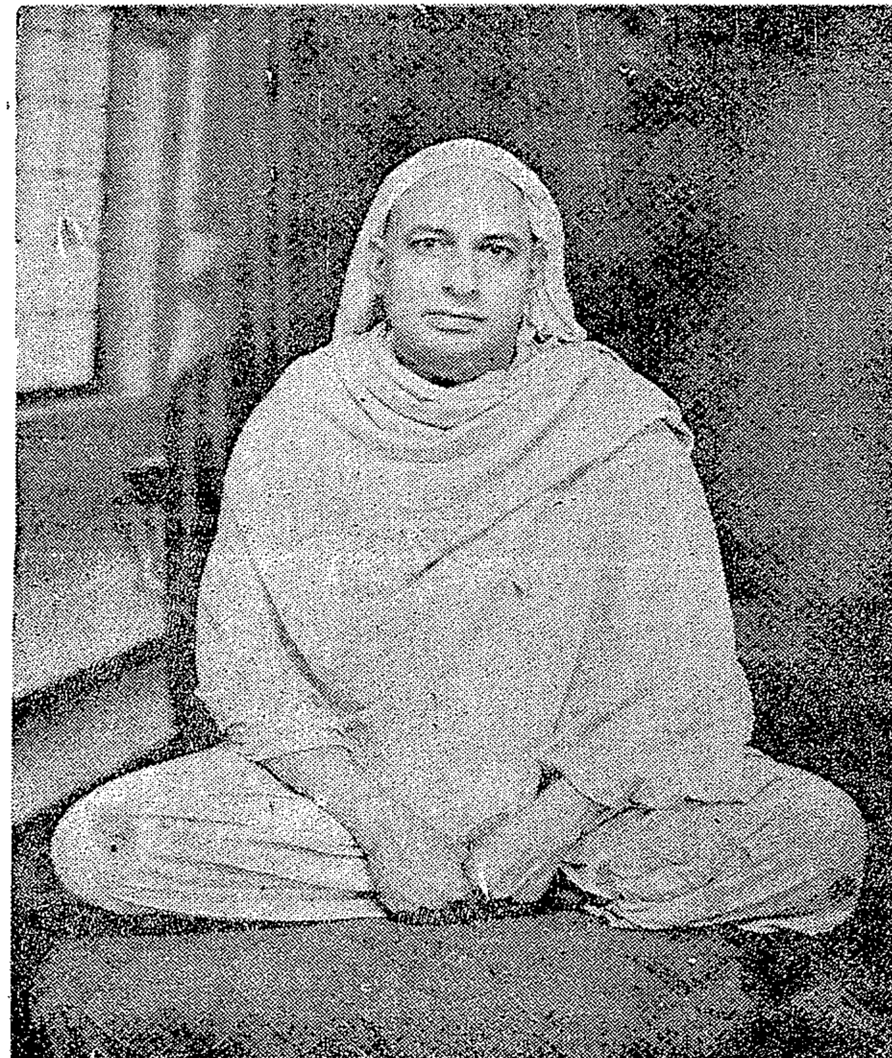


सेठ किरोड़ीमल नेत्र चिकित्सालय भिवानी ।

श्री सनातन धर्म हाई स्कूल भिवानी

यह हाईस्कूल त्याग मूर्ति, तपोनिष्ठ श्री स्वामी गणेशानन्द जी महाराज के उद्योग से १६५३ में स्थापित हुआ, श्री पं० कोकिलानन्द जी श्री स्वामी मुरलीधर आचार्य श्री हरिचरण जी चिड़ीपाल पं० रविन्द्रनाथ जी बशिष्ठ केशवदेव जी आयुर्वेदाचार्य श्री हुन्नामल जी शर्मा आदि आदि व्यक्तियों का इस के स्थापन में सब से बड़ा सहयोग रहा है वर्तमान समय में इसके प्रधान श्री हरचन्दरायजी चिड़ीपाल बहुत ही उदार हृदय के समझदार व्यक्ति हैं और हाईस्कूल की हर तरह उन्नति में सलग्न हैं। स्कूल के पास अपनी निज की कोई बिल्डिंग न होने से चिड़ीपालों के कटले में ही इसका संचालन होरहा है। श्री पं० बद्रीप्रसाद जी बी० ए० बिटी० इस स्कूल के प्रधानाध्यापक हैं जो एक महान परिश्रमी प्रभावशाली महानुभाव हैं।

संस्था के प्रारम्भ में श्री लखपत राय जी चिड़ीपाल ने आर्थिक सहयोग देकर शिक्षा प्रेम का परिचय दिया, दूसरे श्री बृजलाल झूंझनू वाले ने बड़ी उदारता के साथ छात्रों के लिये सभी फरनीचर देकर अपने यश को स्थायी बना दिया है। परीक्षा परिणामभी इस स्कूलका अच्छा रहता है।



वीतराग तपोनिष्ठ श्री स्वामी गणेशानन्द जी महाराज

आलमाल संस्कृत पाठशाला भिवानी

यह संस्कृत पाठशाला, भिवानी के सुप्रसिद्ध आलमाल परिवार द्वारा संचालित है श्री सागरमल जी श्री राधाकृष्णजी और श्रीकालूरामं जी आलमाल इन तीनों महापुरुषों का लगाया हुआ यह कल्प वृत्त, आज ३१ वष से संस्कृत विद्या का प्रचार कर, देव वाणी संकृत का सन्मान कर रहा है। इस के मुख्य अध्यापक श्री हरिज्ञानदत्त जी शास्त्री हैं बहुत विद्वान सीधे सादे सरल प्रकृति के सनातन पुरुष हैं छात्रों के लियेदोनों समय भोजनका प्रबन्ध पाठशाला की ओर से ही है।

श्री श्याम संस्कृत पाठशाला भिवानी

यह पाठशाला रा० ब० मुखरामदास जी कानोडिया द्वारा सन् १६८० से स्थापित है। यहां छात्रों को भोजन एवं वस्त्र पाठशाला की तरफ से दिया जाता है संस्कृत एवं हिन्दी की यहां से परीक्षा भी दिलवाई जाती है।

कन्या विद्यालय भिवानी

सव १६४० से भिवानं में लड़कियों को सुशिक्षित बनाने के लिये एक स्कूल जो पहले मिडिल स्कूल था और अब हाई-स्कूल बन गया है कालरे में विद्यमान है और पंजाब सरकार द्वारा संचालित है इस की विशाल बिल्डिंग जो कि पहले

किराये की थी अब निजी भवन स्थापित हो गया है शिक्षा कार्य सन्तोष प्रद है।

भिवानी म्युनिस्पिल कमेटी की तरफ से रेलवे रोड़ पर एक विशाल भवन लड़कियों को सुशिक्षित बनाने के लिये तैयार किया जा रहा है जिसके निर्माण के लिये रा० ब० विश्वेशरलाल मोतीलाल हालुवासिया ट्रस्ट द्वारा काफी रुपया दान किया गया है।

वैसे शहर में कन्याओं को प्राइमरी तक शिक्षा देने के लिये, श्री किशनलाल जी खण्डेलिया द्वारा स्थापित "धापा कन्यापाठशाला" किशनलाल जालान फ्री० आई हस्पताल के पास स्थापित है।

दूसरी नाराणी बाई कन्यापाठशाला श्री किरोड़ीमल जी लुहारी वाले द्वारा लोहड़ बाजार में स्थापित है।

श्री मुकुन्दलाल जी चिड़ीपाल द्वारा स्थापित कन्यापाठशाला जिस में सैंकड़ों ही लड़कियें शिक्षा ग्रहण कर अपना जीवन सफल बना रही हैं, श्री हरचन्दराय जी चिड़ीपाल द्वारा संचालित है। इसी प्रकार श्री श्रद्धानन्द पुत्रीपाठशाला स्वर्गीय श्री बनवारीलाल जी कानोडिया द्वारा स्थापित की हुई सफल हो रही है और इन सभी कन्यापाठशालाओं में सभी वर्णों की लड़कियों को शिक्षा दी जाती है।

फुली बाई कन्यापाठशाला

हालुबाजार में ला० वृजलाल जी झुंझनू वाला द्वारा संचालित है श्रीमति सौभाग्यवती फूलीबाई आपकी धर्मपत्नी हैं जिसके नाम से संस्था स्थापित है।

इसीतरह भिवानी म्युनिस्पिल कमेटी की तरफसे भी ३-४ लड़कियों के प्राईमरी स्कूल संचालित हैं।

श्री वैंकटेश्वर विद्यालय भिवानी

यह बहुत प्राचीन और लोकोपयोगी संस्था है. इस संस्था के स्थापन का श्रेय स्व० किशनलाल जी बलियाली वाले श्री सीताराम जी सर्राफ श्री परमेश्वरीदास जी दारुका तथा स्वामी मुरलीधराचार्य तिलक श्री मदनलाल जी रेखान ला० रामस्वरूपदास जी बुवानीवाले आदि २ को है। इस समय इस संस्था में विशेष सहयोग श्री सेठ किरोड़ीमल जी लुहारी वाले तथा सरकारी इमदाद ही प्रधान है। प्रधानाध्यापक पं० सूरजभान जी तथा श्री मातुराम जी आदि २ हैं। और इसके प्रधान श्री ला० रामस्वरूप जी बुवानीवाले हैं। जिनके प्रयत्न और परिश्रम से यह संस्था समयानुसार अपना कार्य कररहीहै।

श्री नामदेव पाठशाला भिवानी

यह संस्था हालुबाजार पतराम दरवाजे के पास ख्याली कों की गली में है। संस्था बहुत पुरानी और पूर्ण सफलता

प्राप्त किए हुए है। सरकारी इमदाद इसे प्राप्त है। काफी लडके शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। अध्यापक गण महान परिश्रमी सच्चरित्र उद्योगी हैं। श्री पं० रामेश्वर दास जी पाटनिया इसके सभी कार्यों को सफल बनाने में सचेष्ट हैं। और इसके संचालक हैं। इनके ही उद्योग एवं परिश्रम से यह शिक्षा-संस्था भिवानी के स्कूलों में अपनी प्रसिद्धि प्राप्त किये हुए है। श्री बृजलाल जी झूंझनू वाले ने इस संस्था की इमारत में अपना सहयोग देकर छात्रों के लिए अनुकूल स्थान तैयार करवाए हैं।

श्री भजनाश्रम विद्यालय भिवानी

यह संस्था भिवानी की प्राचीन संस्था है, बच्चों को शिक्षित बनाना व भगवत नाम का प्रचार करना ही इसका मुख्य उद्देश्य है बिचला बाजार में यह भजनाश्रम विद्यालय विद्यमान है।

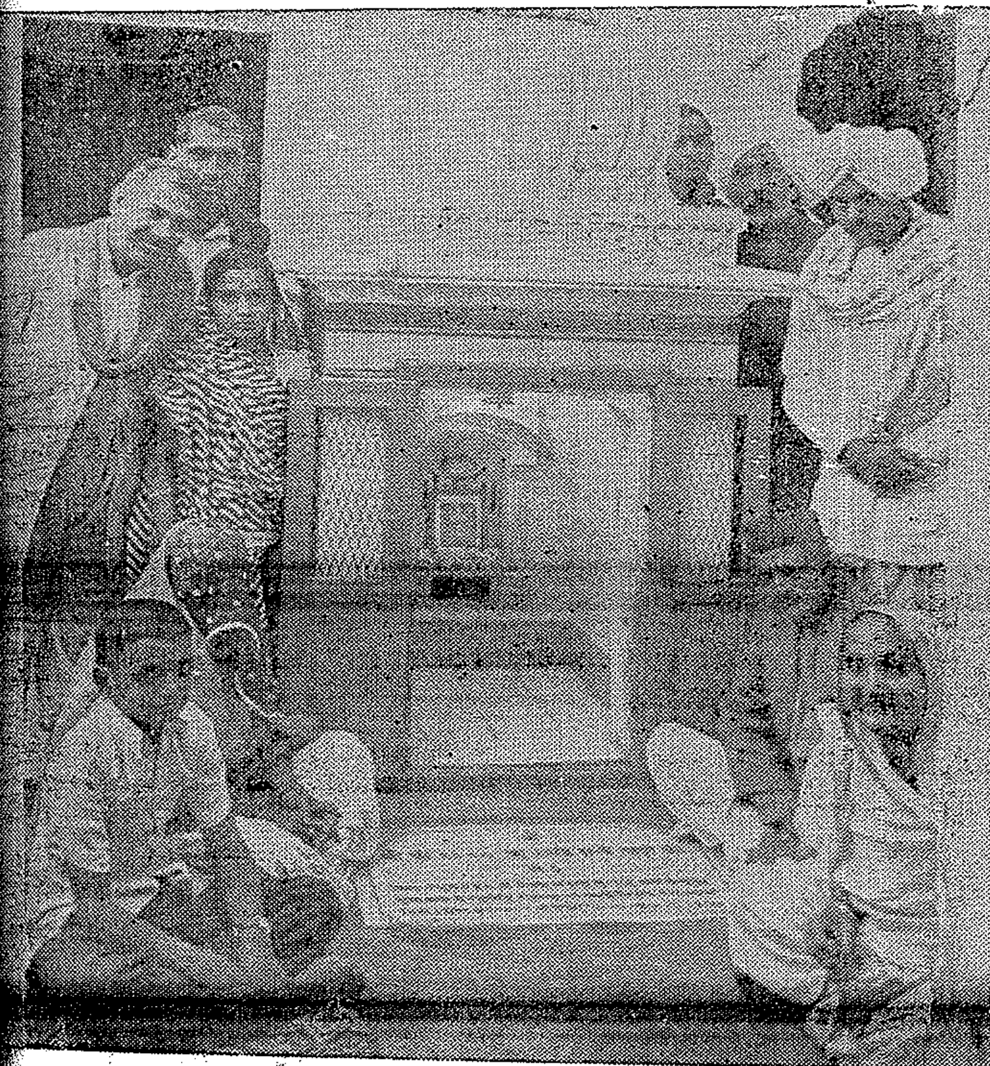
पतित पावन विद्यालय भिवानी

यह प्राईमरी विद्यालय दादरीदरवाजे के बाहिर हरिजनों द्वारा स्थापित किया हुआ है, इसमें हरिजनों के बालक ही शिक्षा प्राप्त करते हैं।

आर्यसमाज मन्दिर भिवानी

भिवानी नगर में सं० १९६० से आर्य समाजियों द्वारा स्थापित आर्य समाज मन्दिर रेलवे रोड पर विद्यमान है, इसके

श्री दादी रानी सती जी का मन्दिर निर्माता:-श्री बृजलाल जी झूंजनूवाला



नाम देवमन्दिर अध्यक्ष:-रामेश्वर दास पाटनिया

आद्यसंस्थापक ला० जमनादास जी कल्याणदास जी आदि २ हुए हैं। वर्तमान समय में इस संस्था के कार्य कर्ता श्री फूलचन्द निडर ला० मनीराम जी भोड़ूका श्री पुन्नमचन्द जी भोड़ूका श्री हनुमानप्रसाद जी कटले वाले आदि २ महानुभाव हैं। श्री जोहरीमल आर्यस्मारक भवन नाम से एक विशाल हौल आर्य समाज मन्दिर में बनवाकर श्री जोहरीमल जी की सेवाओं को अमर किया गया है। दूसरा आर्य समाज मन्दिर श्री श्योकरणदास जी पत्थरवाले श्री देशबन्धु गुप्ता आदि २ द्वारा संचालित है।

वैश्य औषधालय भिवानी

यह औषधालय आचार्यों के मन्दिर के सामने विद्यमान है और इस इलाके का सब से प्राचीन निःशुल्क सेवा करने वाला आयुर्वेद औषधालय है, यहां बिना किसी भेद भाव के श्री पं० कृष्णानन्द जी आयुर्वेदाचार्य द्वारा सेवा की जाती है। इस लिये यह सर्व प्रिय भिवानी शहर का औषधालय है और पण्डित जी अत्यन्त सरल स्वभाव के सज्जन प्रकृति के महानुभाव है।

श्री आशाराम औषधाय भिवानी

यह औषधालय श्री आशाराम जी की पुण्य स्मृति में इनके परिवार द्वारा बिचला बाजार गेड़ पर संचालित है और हजारों बीमार प्रति वर्ष इस दवाखाने से आरोग्य लाभ प्राप्त करते हैं श्री पं० भीमसैन वैद्य द्वारा यहां चिकित्सा होती है।

हालुवासिया औषधालय भिवानी

यह औषधालय बहुत दिनों से अनाथ सनाथ सभी तरह के मनुष्यों की बिना किसी भेद भाव के सेवा कर रहा है, और विश्वेशरलाल मोतीलाल हालुवासिया ट्रस्ट द्वारा इसका समूचा व्यय दिया जाता है। श्री गंगाचरण जी वैद्य इस औषधालय के इन्चार्ज हैं और बहुत ही कुशल चिकित्सक तथा उदार महानुभाव हैं।

लुहारीवाला औषधालय भिवानी

जह औषधालय लोहड़ बाजार में पजावे-पर स्थित है श्री उमरावसिंह जी लुहारी वालों द्वारा इस औषधालय का संचालन होरहा है और काफी संख्या में रुगण यहां आते हैं। पं० अयुध्याप्रसाद जी योग्य चिकित्सक इस औषधालय के कुशल वैद्य हैं।

राधाकृष्ण मोड़ा औषधालय

यह औषधालय हालुबाजार में संस्थापित है पं० बनारसी दास जी वैद्य इसके कुशल चिकित्सक तथा बुद्धिमान महानुभाव हैं।

श्री जैन सभा भिवानी

भिवानी शहर में जैनियों द्वारा संचालित श्वेताम्बर और दिगम्बर सभाएं विद्यमान है और सुचारू रूप से समय समय पर कार्य करती रहती है।

श्री नवल प्रेम सभा भिवानी

यह संस्था बहुत पुराने समय से भिवानी में श्री प्रभुलाल जीन्दिये के मन्दिर में संस्थापित हैं और इस सभा द्वारा बड़े २ महोत्सव शहर में मनाकर धार्मिक भावनाओं का प्रचार किया गया है। वर्तमान समय में इसके संचालक प्रभु भक्त श्री जगदीशचन्द्र जी वैद्य कीर्तनाचार्य जी हैं। और प्रति वर्ष इसका महोत्सव बहुत धूम धाम से मनाते हैं।

श्री तिलक भवन भिवानी

यह बिचला बाजार स्थित गेड़ पर कांग्रेस कमेटी भिवानी का निजि तिलक स्मारक भवन है। इसके स्थापन का विशेष श्रेय पं० नेकीराम जी शर्मा को है। इस समय यहां थाना कांग्रेस कमेटी का कार्यालय बना हुआ है।

श्री युवकमण्डली पुस्तकालयः—यह पुस्तकालय बिचला बाजार में श्री रंगनाथ प्रेस के सामने स्थापित है इसकी स्थापना सं० १९१४ में कई एक योग्य व्यक्तियों द्वारा हुई थी। इस में प्राचीन एवं कुछ नवीन साहित्य विद्यमान है और शहर की यह प्राचीन संस्था है पहले इसके अन्तगत औरभी जन हित कार्य होते थे किन्तु इस समय केवल पुस्तकालय ही का कार्य है।

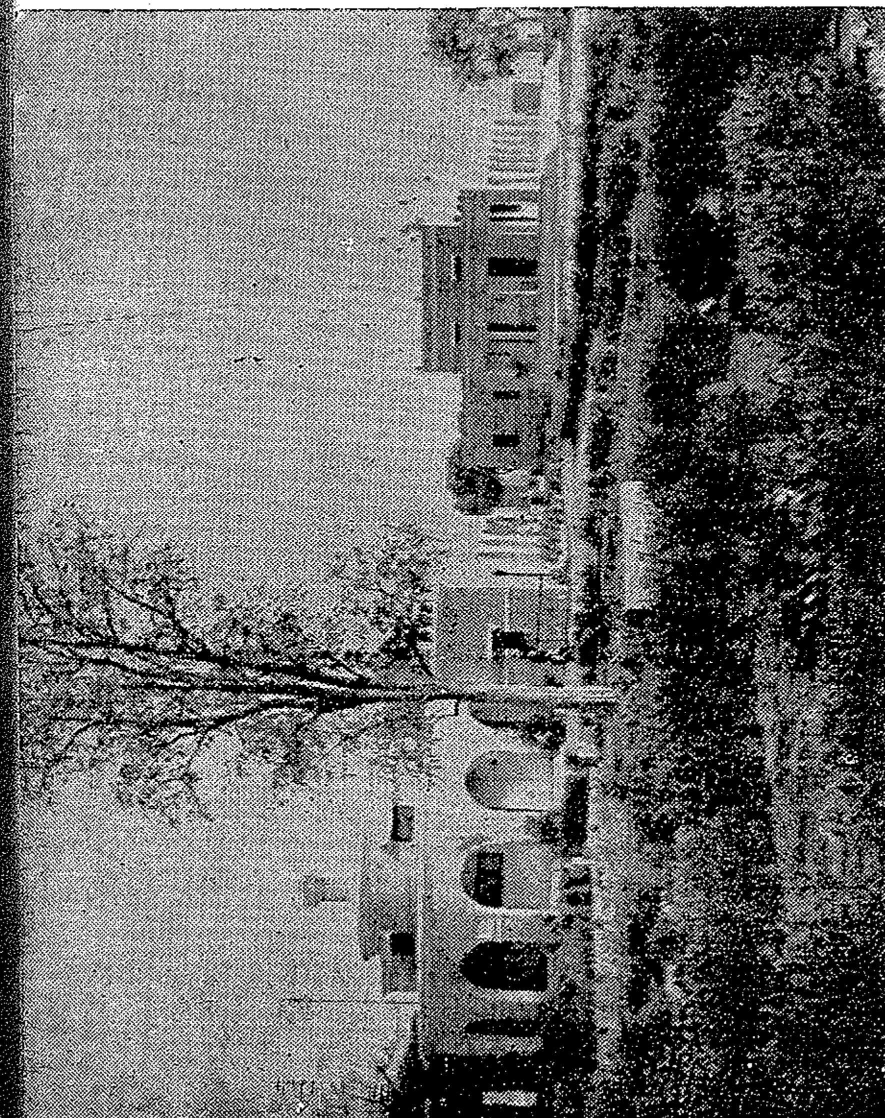
आर्यसमाज पुस्तकालयः—यह पुस्तकालय लोहड़ बाजार के चोपटे में सन १९४२ से स्थापित है और अच्छा साहित्य इस पुस्तकालय में उत्साही युवकों ने एकत्रित किया है बैठकर पढ़ने का पूरा आराम है।

सोसलिस्ट पार्टी—इस पार्टी के मुख्य श्री पं० आनन्दप्रकाश एडवोकेट श्री ला० बनारसीदास गुप्त श्री पं० सरद रमलजी शर्मा पं० विश्वेसरलाल जी पुरोहित आदि आदि हैं।

श्री किरोड़ीमल पुस्तकालय एवं किरोड़ीमल पार्क

वैसे तो भिवानी में ४—५ पुस्तकालय हैं परन्तु यहां आधुनिक नवीन साहित्य से युक्त पुस्तकालय की अत्यन्त आवश्यकता थी इस बहुत बड़ी कमी को दूर करने के लिए सेठ किरोड़ीमल जी ने एक विशाल पुस्तकालय का स्थापन कालरे में जहां पहले डाक बंगला था उसी बिल्डिग में सन् १९५१ में किया इस का उद्घाटन करने पंजाब गवर्नर श्री चन्दुलाल जी त्रिवेदी पधारे। यह पुस्तकालय समस्त जिले में अपने ढंग का एक ही है इसमें हजारों रूपये की अच्छी अच्छी पुस्तकें विद्यमान हैं प्राय: सभी तरह के पत्र एवं पत्रिकाएं आती हैं। इसके विशाल कमरे और सुन्दर सजावट तथा पढने के लिए सभी उपयुक्त साधन देख कर यह कहना पड़ता है कि यह पुस्तकालय नहीं बल्कि मां शारदादेवीका मन्दिरहै। खेल कूद के लिए एक विशाल मैदान तथा बागीचा भी सेठ जी द्वारा यहां पर बनाया हुआ है यह पार्क और पुस्तकालय शहर की शोभा को बढाए हुए हैं। भिवानी में पानी की कमी के बावजूद भी इस पार्क को कितनी मेंहनत के साथ सजा कर रखा जा रहा है, यह देखने से ही पता लगता है।

यहां बच्चों के खेलकूद के लिये एक पृथक विनोदालय भी विद्यमान है। स्नान के लिये एक विशाल डिग्गी [टैंक] भी बना हुआ है जिस में गर्मियों में बहुत से मनुष्य स्नानार्थ आते हैं। प्रतिष्ठित एवं पढे लिखे व्यक्तियों के मनोरंजन हेतु यहां एक क्लब भी है इसमें आधुनिक ढंग के सभी साधन प्रस्तुत हैं। सेठ किरोड़ीमलजी ने उपयुक्त सभी स्थान अपनी भिवानी के हित एवं उत्थान के लिये बनवाए हैं, और भी बन रहे हैं।



— श्री किरोड़ीमल पुस्तकालय, पार्क तथा क्लब —

मन्दिरों का संक्षिप्त परिचय

श्री गौरी शंकर मन्दिर

दानवीर सेठ किरोड़ीमल जी ने करीब १० लाख रुपये व्यय करके एक सुविशाल मन्दिर भगवान श्री गौरी शंकर का संवत २००८ विक्रमी मार्गशीर्ष में रेलवे रोड़ पर स्थापित कर अपने नाम को अमर कर लिया है।

यह मन्दिर समस्त पंजाब में अपने ढंग का अद्वितिय है और इसकी भव्यता एवं सुन्दरता की प्रशंसा दूर दूर तक फैली हुई है प्रति दिन सैंकड़ों व्यक्ति इसके दर्शनार्थ आते हैं। इस मन्दिर में १८ अध्याय सहित श्रीमद्भगवत गीता मारविल पत्थर पर लिखवा कर दीवारों पर अंकित की गई है ताकि श्रीमद्भगवतगीता अमर रहे। इससे इस मन्दिर की महानता और भी बढ गई है।

मन्दिर के अन्दर मार्बिल पत्थरों में खोद कर बहुत सुन्दर ऐतिहासिक सुनहरे चित्र दिवारों के अन्दर ही लगाए गए हैं जिन्हें देख कर भारत का प्राचीन इतिहास नेत्रों के सामने नाचने लग जाता है। यह चित्र भारत के उन महापुरुषों के हैं जिनके अचल यशों को श्री वेदव्यास जी ने १८ पुराणों में लिखा है, इस मन्दिर में भगवान गौरीशंकर, भगवान राधाकृष्ण

जी भगवान सत्य नाराययण जी की प्रमुख प्रतिमाएं विराजमान हैं और हनुमान जी अष्टभुजी दुर्गा जी श्री गरुड़ जी और भैरव जी की मूर्तियें भी सुशोभित हैं। इस इलाके के तपोनिष्ठ अवधूत महात्मा श्री तिगड़ानिया बाबा की प्रतिमा भी स्थापित की गई है। ११० फुट ऊंचा गगन चूंबी मन्दिर का शिखर दूर मीलों तक दीखता है।

जिस दिन इस मन्दिर का प्रतिष्ठामहोत्सव मनाया गया उस दिन श्री सेठ किरोड़ीमल जी ने अपने आराध्य देव भगवान गौरीशंकर का विशाल जलूस हाथी पर इतनी सजधज के साथ निकाला जो शायद ही भिवानी के इतिहास में इतना विशाल जलूस निकला हो।

श्रावण में झूला महोत्सव पर इस मन्दिर को देखने के लिये देहात की विशाल जनता उमड़ पड़ती है और एक तरह का २० दिन तक मेला लगा रहता है। इस मन्दिर के बन जाने से दर्शनार्थी इस प्रकार उत्कण्ठा से आते हैं जैसे कोई तीर्थ पर भारी उत्कण्ठा लिये यात्री पहुंचते हैं यह बात निःसन्देह कहनी पड़ेगी कि इस मन्दिर के कारण भिवानी शहर एक तरह का तीर्थ बन गया है जिस मे हर समय दर्शनार्थी यात्रियों का आवागमन रहता है।

श्री सेठ किरोड़ीमल जी ने अपनी जन्म भूमि भिवानी की गोदमें यह एक ऐसा धर्मवृक्ष उपजाया है जिसकी मकरन्द से

— भगवान श्री गौरीशंकर जी —



आराध्यदेव श्री सेठ किरोड़ीमल

भिवानी का यश चारों तरफ फैल गया है और सेठ किरोड़ीमल का पवित्र जीवन अमर होकर सदा के लिये स्थायी होगया है।

श्री रंग मन्दिर भिवानी

यह मन्दिर बिचले बाजार में स्थित है और उत्तर देशीय श्री वैष्णव समुदाय के मन्दिरों में यह दीव्य देश समझा जाता है इसके संस्थापक प्रातः स्मरणीय पूज्य पाद १००८ स्वामी रामाचार्य जी महाराज श्री स्वामी रामशरण जी महाराज श्री स्वामी नारायणदास जी महाराज हुए हैं।

मन्दिर में भगवान श्री रंगनाथ, महाप्रभु "श्री देवी" "भू" देवी के साथ विराजमान हैं और नारद पंचरात्र विधि से नित्याराधन होता है। उन्हीं आत्माओं के वंशधर अधिकाकारयों द्वारा इस मन्दिर की सेवा पूजा विधि विधान से होती आ रही है। इस मन्दिर के इस इलाके में अनेकों शिष्य एवं प्रशिष्य विद्यमान हैं और यह मन्दिर शहर का बहुत बड़ा श्रद्धास्पद मन्दिर है।

प्रभुलाल जीन्दिये का मन्दिर

यह मन्दिर डोभी तालाब पर श्री शिवसहाय जी द्वारा स० १८८४ में स्थापित कियागयाथा यह चिड़िया ग्राम (बाघोत) के पास के रहने वाले बहुत बड़े गायन प्रवीण भूदेव थे आज उन्हीं महा पुरुष के वंशज इस मन्दिर के उत्तराधिकारी हैं।

पहले यह मन्दिर एक छोटे रूप में कच्चा बना हुआ था बाद में स्व० श्री प्रभुलाल जी जीन्दिया ने पक्का बनवा दिया था तभी से यह मन्दिर प्रभुलाल जीन्दिये के नाम से प्रसिद्ध है इसमें मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम महाप्रभु जनक नन्दनी सीता जी के साथ सुशोभित है।

श्री रामप्रभु (खाकी बाबा) मन्दिर

यह खाकी सम्प्रदाय के वैरागियों का मन्दिर है। प्रारम्भ में श्री मंगलदास नामक महात्मा इस मन्दिर में रहते थे अब प्रातः बन्दनीय श्री खाकी बाबा जी महाराज, जो इस इलाके के तपोनिष्ठ सिद्ध महात्मा है निवास करते हैं इस मन्दिर में श्रीराम लक्ष्मण सीता जी की प्रतिमाए विराज मान है और बहुत विधि विधान से सेवा पूजा होती है।

श्री मूलचन्द जी का मन्दिर:—इसमें भगवान श्रीराम प्रभु की प्रतिमा सुशोभित हैं और यह श्री नन्दराम जी के वंशज श्री मूलचन्द जी द्वारा बनवाया गया था और उन्होंने श्री आदेराम जी भजनानन्दी ब्राह्मण के अर्पित कर दिया था आज उसी परम्परागत वंशके व्यक्ति इसकी विधि विधानसे आराधना करते आरहे हैं।

श्री डाबले वाला मन्दिर:—यह पंचायती मन्दिर के नाम से ...हड़ बाजार में विख्यात है रामगढ़ निवासी श्री सेठ ताराचन्द

...नश्यामदास द्वारा इस मन्दिर की स्थापना हुई थी डाबले ...ले पुजारी इस मन्दिर के परम्परागत अधिकारी होने के नाते ...वा पूजा करते आरहे है।

...भानीराम आशाराम मन्दिर:—यह बिचले बाजार में गेड़ ...र सुभाष गल में स्थित है। यह लखमीचन्द बैजनाथ द्वारा स० ...८८ में स्थापित हुआ था बहुत ही भव्य एवं सुन्दर मन्दिर है

...लमालों का मन्दिर:—इस मन्दिर को स्थापित हुए करीब सौ ...हो गए हैं, इसकी स्थापना श्री सेठ सेढमल श्री कृष्ण जी ...लमाल द्वारा हुई थी, वर्तमान समय में इन्ही के वंशजों द्वारा ...र का बहुत सुन्दर संचालन होरहा है।

...बड़ा मन्दिर:—यह मन्दिर १८४७ में श्री ला० नन्दरामजी ...स्थापित कर अपने गुरु श्री कृष्ण स. ज. तपोनिष्ठ ...सा अर्पित करदिया था, तभीसे इनके वंशज इस मन्दिर की ...पूजा करते आ रहे हैं। इस में सत्यनारायण भगवान की ...स्थापित है।

...भूतों का मन्दिर:—इस मन्दिर की स्थापना मल्लू वाले ...पर भूत परिवार द्वारा हुई है और इस में भगवान ...न्द्र जी विराजमान हैं।

...श्री हनुमान:—यह पतराम दरवाजे बाहिर वैरागी साधुओं ...स्थापित है और इस में एक विशाल पंचमुखी महाबीर जी ...तिमा सुशोभित है।

बड़ा मन्दिर श्री हनुमानजी महाराजः—यह शहर का सब से प्राचीन मंदिर है इसमें अच्छे अच्छे महात्मा हो चुके हैं, सैकड़ों ही व्यक्ति दर्शनार्थ जाते हैं और यहां प्रति मंगल एक छोटा सा मेला लग जाता है।

श्री शनिश्चर का मन्दिरः— यह घनश्यामदास बासुदेव जी लिल्हा द्वारा पतराम दरवाजे के बाहिर स्थापित है, और शनिश्चर जी का यह एक ही मन्दिर है।

महाभारतीजी का मन्दिरः—कोल ग्राम निवासी श्रीमहाभारती जी जो बहुत बड़े तान्त्रिक विद्वान थे उन्हीं द्वारा इस मन्दिर की स्थापना सम्वत १६१५ में हुई थी इसमें श्री राधाकृष्ण जी की प्रतिमा सुशोभित है और महाभारती जी के वंशजों द्वारा यहां सेवा पूजा होती है।

ब्रह्मचर्याश्रम में एक मन्दिर भगवान श्री रामप्रभु का रा० ब० पं० श्रीदत्त जी द्वारा स्थापित है। और यहीं पर सेठ आशाराम भानीराम परिवार द्वारा निर्मित शिवालय भी है जहां भगवान विश्वनाथ सब देवों के साथ विराजमान हैं।

रा० ब० ताराचन्द का मन्दिरः—यह नीमवाले तालाब पर स्थापित है, इसकी स्थापना श्री सेठ ताराचन्द मुरलीधर द्वारा हुई थी।

हालुवासिया मन्दिरः—यह भव्य मन्दिर दिनोद दरवाजे के बाहिर श्री हृषीकेश हालुवासिया द्वारा स्थापित है इस मन्दिर की विधिवत पूजा श्री पं० बद्रीदास जी तिवाड़ी के वंशधर करते आरहे हैं।

बुवानी वालों का मन्दिरः—यह मन्दिर बुवानी वालों के बाग कालरे में बना हुआ है, और इसकीस्थापना बुवानी वाले परिवार द्वारा हुई है।

लालचन्द जी का मन्दिरः— यह मन्दिर बाड़ी में बहुत प्राचीन समय से स्थापित है, इन में श्री पं० हरिचरण जी ज्योतिषी सेवा पूजा आदि करते हैं।

श्री नाम देव मन्दिरः— यह पतराम दरवाजे के पास भिवानी के दरजी समाज द्वारा स्थापित है श्री मातुरामजी पाटनियों के वंशज ही इसमें सेवा पूजा करते आरहे हैं भगवान राधाकृष्ण की मूर्ति स्थापित हैं।

वैदों का मन्दिरः—यह बहुत प्राचीन काल से भिवानी के वैद परिवार द्वारा स्थापित है।

श्री गंगामन्दिरः—यह मल्लु वाले तालाब पर स्थापित है और चोरासिया परिवार द्वारा इसकी सेवा पूजा होती रही है।

चिड़ीपालोंका मन्दिरः—यह बिचले बाजार में बहुत भव्य चिड़ीपाल परिवार द्वारा स्थापित है।

जोगीवाला मन्दिर:—यह जोगीवाला तालाब पर भगवान शंकर जी का बहुत ही रमणीक मंदिर स्थापित है।

श्री बिहारी जी का मंदिर:— यह लोहड़ बाजार बसाते समय स्थापित किया गया था, समय समय पर पुजारियों द्वारा सेवा होती रही है, बाद में कुछ कट्टर पंथी मुसलमानों द्वारा इसको समाप्त करने की चेष्टा की गई थी अब स्वामी मुरलीधर आचार्य द्वारा संचालित है। और श्री हनुमान जी के मन्दिर का श्री भंवरलाल सर्राफ देहली द्वारा निर्माण हुआ है जिनके दर्शन करने मंगलवार को बहुत व्यक्ति आते हैं

श्री सत्यनारायण मन्दिर:—यह मंदिर श्री भीमराज जी द्वारा डोभी तालाब पर स्थापित किया गया था इस स्थान का नाम गारदा है। श्री पं० रामजीवन जी पुजारी द्वारा इस मंदिर का प्रबन्ध हो रहा है।

ठठेरों का मन्दिर:—यह भिवानी के सभी बर्तन निर्माता ठठेरों द्वारा निर्माणित है और यथा विधि इस की सेवा पूजा होती रहती है।

श्री गंगा मन्दिर—यह रोहतक दरवाजे के पास सुशोभित है और पं० नत्थुराम जी द्वारा इस की सेवा पूजा होती है।

जैन मन्दिर:— यह हालु बाजार में बहुत ही सुन्दर विशाल बना हुआ है इसकी स्थापना भिवानी के समस्त दिगम्बर जैन समाज द्वारा हुई है।

श्री हीरापुरी मन्दिर:—जिस समय यह नगर बसाया गया उसी समय श्री बाबा हीरापुरी जी द्वारा एक मन्दिर डोभी पर भगवान शंकरदेव व श्री हनुमान जी महाराज का स्थापित किया हुआ है।

भिवानी के कतिपय मठ

श्री दादू समुदाय का सब से बड़ा मठ पतराम दरवाजे के बाहिर श्री पतरामदास जी की धर्मशाला के नाम से सुप्रसिद्ध है, इस मठ में बड़े २ उच्च कोटि के तपोनिष्ठ महात्मा व सिद्ध महापुरुष हुए हैं। जिनमें श्री कन्हड़दास जी महाराज श्री हीरादास जी एवं श्री कल्याणदास जी आदि का नाम विशेष उल्लेखनीय हैं, इस मठ के नीचे काफी जमीन जायदाद आदि है और मठ के उत्तराधिकारी श्री स्वामी जयरामदास जी आयुर्वेदाचार्य द्वारा इस मठ का संचालन हो रहा है।

जहर गिरि मठ:—यह मठ औलिया साधू जहरगिर के नाम से विख्यात है एवं उन्हीं द्वारा बाड़ो मोहल्ले में स्थापित है, दूसरा मठ हरागिरी और फतेहगिरि नामक महात्माओं द्वारा स्थापित किया हुआ है।

वैसे तो भिवानी में ३०० के लगभग मदिंर और अनेकों मठ आदि हैं परन्तु प्रमुखों का संक्षिप्त परिचय लिख दिया गया है, और भिवानी इतिहास अतीत खण्ड में प्रत्येक मन्दिर का विस्तार पूर्वक परिचय दिया गया है।

गुरुद्वारा भिवानी

भिवानी में अच्छे ढंग से बना हुआ एक गुरुद्वारा सन् १९३० से रेलवे रोड़ पर स्थापित है इस के संस्थापक श्री मोतीसिंह जो वेदी एवं श्री दलीपसिंह सोढी ही विशेष तौर से हैं, यहां यह बतला देना जरूरी है कि गुरुद्वारे के पास ही भटियारी मस्जिद जहां मुस्लिम गुण्डों का अखाड़ा रहता था उनका मुकाबला करना यहां के बहादुर सिखों का ही कार्य था जो हर समय छेड़ छाड़ करते रहते थे। अब इस गुरुद्वारे का विस्तार काफी बढ़ गया है और शहर के प्रायः सभी व्यक्तियों की इसके साथ सहानुभूति है।

गिरजाघर भिवानी

इसाई धर्मावलम्बियों के लिये नये बाजार में एक गिरिजा घर १९३५ से स्थापित है रवीवार को शहर के सभी इसाई यहां एकत्रित होते हैं।

सिद्ध श्री आश्रम

यह हालु बाजार में श्मशान भूमि के पास ही श्रीमहात्मा फूलचन्द जी द्वारा स्थापित है इसे देखने से प्राचीन ऋषियों

की कुटिया स्मर्ण होजाती हैं, वैसे हमारे इलाके में श्री महात्मा फूलचन्द जी एक सच्चे साधू और उच्च कोटि के विद्वान हैं, आपका पहनाव जैन धर्म के अनूकूल है, परन्तु आपकी श्रद्धा प्रायः सभी धर्मों में है और आपने कई एक जैन धर्म पर आर्ष ग्रन्थ लिखे हैं आपका इस शहर पर काफी प्रभाव है और प्रायः सभी सार्वजनिक कार्यों में भाग लेकर उन्हें सफल बनाने में अग्र रहते हैं।

गार्डन ओनर्ज ऐसोसिएसन

इसकी स्थापना सन १९३१ में रा० सा० ठा० उग्रसेन जी द्वारा हुई थी १९३५ में यह संस्था श्री के० ए० देसाई के प्रयत्न से सरकार द्वारा मंजूर करली गई थी।

इस संस्था का काम शहर के बागों एवं तालाबों को नियमानुसार पानी विभाजन करना है इसके वर्तमान प्रधान श्री रामनिजदास धनश्याम क एव सेक्रेटरी पं० केशवदेव शर्मा भू० पू० वाईसप्रेसीडेन्ट म्युनिस्पिल कमेटी भिवानी है।

सन् १९५१ का कहत

इस इलाके का जीवन वर्षा पर ही निर्भर है। जिस वर्ष यहां वर्षा नहीं होती उस साल यहां भीषण कहत काल की प्रचण्ड अग्नि द्वारा इस इलाके को भस्मी भूत बना देता है। इस इलाके में जगह जगह पड़े उज्जड़ खेड़े इसका

प्रत्यक्ष उदाहरण है। कहत के कारण न जाने कितने ही गांव उजड़ कर उनके स्थान पर मिट्टी के टीले बन गए है। बृटिश काल में मनुष्य और पशु तो कहत के कारण अवश्य मरे किन्तु कोई गांव इस प्रकार उजड़ कर नष्ट नहीं हुआ कारण कि वह समय से पहले काफी सजग होजाते थे।

अन्य कहतों का विवरण गत अतीत खण्ड में विस्तार पूर्वक छप चुका है किन्तु अब १६५१ का भीषण कहत जिसकी वजह से यह इलाका तबाही देख चुका है। इस मैं दो लाख के करीब पशु धन इस इलाके का नष्ट हुआ भूख के कारण गोमाताए कमजोर होकर पृथ्वी पर गिर पड़ती उन असहाय और जरजर अंग गौओं पर गिद्ध और कोवें बैठ कर जीवित अवस्था में उन्हे भक्षण कर जाते। यह हरियाणा प्रान्त उस समय श्मशान बना हुआ था और हजारों पशु भूख प्यास से तड़फ तड़फ कर मर रहे थे। उस समय सेठ किरोड़ीमल जी लुहारीवाले श्री गीता प्रेस गोरखपुर, श्री मारवाड़ी रिलिफ सोसाइटी, श्री रामचन्द्र जी वैद, श्री गणपतराय जी, लुहारीवाले तथा श्री विलासराय जी रतेरिया, T. I. T. मिल्स एवं पंजाब क्लोथ मिल्स दैनिक रंगनाथ पत्र आदि आदि ने कहत के समय इस इलाके की काफी सेवा कर इस इलाके को बचाया।

श्री दुर्गादत्त जीलाधीश हिसार का नाम कहत रक्षा में विशेष उल्लेखनीय है। उन्हो ने रात दिन दौड़ धूप कर प्रचण्ड गर्मी में एक दिन भी विश्राम न लेते हुवे वह सेवा की जिसकी वजह से यह इलाका भीषण कहत होने पर येन केन प्रकार बच गया है।

भिवानी के कतिपय महोत्सव

श्री सनातन धर्म महोत्सव

सन् १६५१ में भिवानी शहर के कतिपय सनातन धर्मावलम्बियों ने यह निश्चय किया कि इस धर्म नगर में सनातन धर्म का कोई महोत्सव जरूर होना चाहिये कारण कि काफी समय धर्म प्रचार किये हो चुका है यह समझ इस इलाके के तपोनिष्ठ कर्मठ महात्मा श्री स्वामी गणेशानन्द जी महाराज के सदुद्योग से यहां चिड़ीपालों के कटले में सनातन धर्म महोत्सव प्रारम्भ हुआ देहली से वीतराग श्री स्वामी करपात्री जी महाराज स्वामी कृष्ण बोधाश्रम जी महाराज तथा श्री पं० माधवाचार्यजी शास्त्रार्थ महारथी श्री प्रोफेसर वशिष्ठ श्री रा० ब० पं०श्रीदत्त जी शर्मा आदि २ पधारे।

वेद भगवान का विशाल जलूस अद्वितीय था इस महोत्सव को सफल बनाने में श्री निहालचन्द जी शास्त्री श्री पं० किशोरीलाल जी डा० बैजनाथ जी कौशिक पं० रघुबर कृष्ण शर्मा श्री पं० शिवनारायणजी शास्त्री ला० रामस्वरूपदास जो बुवानीवाले श्री गोपीराम जी दलाल श्री बाबूलाल जी चमड़िया श्री द्वारकादास जी गर्ग पं० देवीदत्त जी पियूषपाणी प० केशवदेव जी शर्मा प० रविन्द्र जी शर्मा श्री प० हुन्नामलजी पं० बलदेव शर्मा आचार्य प० बैजनाथ जी शर्मा पुजारी, ला०

पालुराम जी मंगला आदि आदि का नाम विशेष उल्लेखनीय है, महोत्सव बहुत धूमधाम से मनाया गया और सनातन धर्म का काफी प्रचार हुआ।

श्री माघ महोत्सव भिवानी

एक बार सन १९७७ में ला० द्वारकादास जी के उद्योग से भिवानी में श्वेताम्बर सम्प्रदाय के महान आचार्य श्री कालुराम जी का चातुर्मास महोत्सव हुआ था, उस समय यहां जैन सम्प्रदाय में काफी जागृति आगई थी, इसी भावना को लेकर यहां के जैन उत्साहियों ने फिर यह निश्चय किया कि वर्तमान समय के महान तपोनिष्ठ श्रद्धेय श्री आचार्य तुलसी गणी जी महाराज जो अणुव्रत संघ के संचालक हैं यहां महोत्सव करवाया जाये, उनके यहां कुछ समय निवास करने से हम सभी भिवानी निवासियों का सभी तरह हित होगा, यह निश्चय कर यहां माघ महोत्सव का आयोजन बड़ी धूम धाम से प्रारम्भ कर दिया। जगह जगह दूर दूर से हजारों की संख्या में भक्त गण आचार्य श्री के दर्शन करने आने लगे भिवानी में एक तरह का मेला लग गया और यह नगर उस समय ऐसा प्रतीत होता था कि मानों यह शहर श्वेताम्बरी जैनियों का बहुत बड़ा तीर्थ हो। इस प्रकार एक मास तक आचार्य श्री तुलसीगणी जी अपने भ्राता श्री चम्पालाल

जी जो वास्तव में सच्चे महात्मा और आदर्श विशाल हृदय निर्भिमानी उच्च कोटी के साधू हैं के साथ निवास करते रहे उस समय हज्जारों सतियें एवं साधुओं के बीच में उच्च सिंहासन पर आचार्य श्री ऐसे शोभायमान होते थे मानों उच्च सिंहासन पर महावीर स्वामी विराजमानहों। इस महोत्सव को सफल बनाने में श्री मंगतराय जी जैन, श्री जुगलकिशोर जी जैन श्री दुलीचन्दजी जैन श्री रामस्वरूपजी बजाज श्री पेशीराम जी जैन, श्री सन्तलाल जी उमरिया, श्री रामशरणदास वकील प० जेष्टानन्दशर्मा डा० पुरुषोत्तमदत्त गिरधर श्री गिरधारीलाल जैन श्री नानकचन्द जैन श्रीमीरुमल जी जैन ला० ज्योतीप्रसाद जी जैन आदि आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

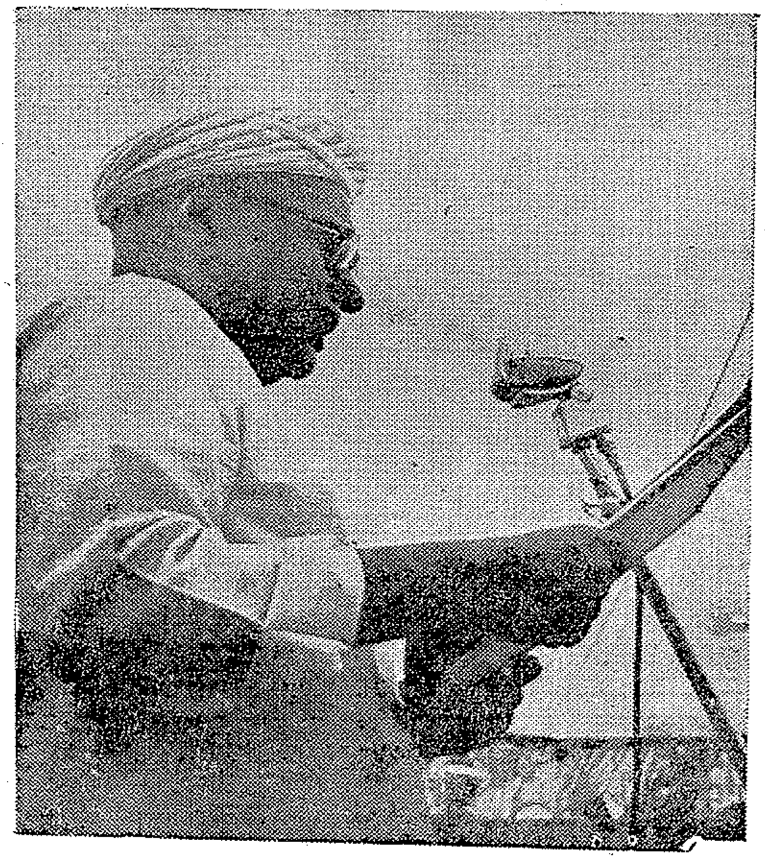
यह बात वतला देना आवश्यक है कि स्व० ला० द्वारकादास जी के अभिन्न मित्र स्वामी मुरलीधर जी आचार्य ने इस अधिवेशन को सब तरह सफल बनाने के लिये सब से पहले अगाड़ी होकर कार्य प्रारम्भ किया उनके इस कार्य से सनातन धर्मी जनता हर तरह रुष्ट थी और चाहती थी कि यह सदाके लिये सनातन जगत से स्वामी जी पृथक किये जाए परन्तु जब जैन मतावलम्बी हमारे हर कार्य में पूर्ण सहयोग देते आये हैं फिर आज उनका एक ही उत्सव और उसमें एक महा-पुरुषका पदार्पण हो, ऐसे समयमें साथ न देना हमारी महानता के

प्रति जनता का अविश्वास पैदा करना था। इसलिये स्वामी जी का सहयोग देना आवश्यक था, कोई भी शहर का ऐसा कार्य नहीं जिसमें स्वामीजी का सहयोग न रहा हो, फिर एक सार्वजनिक कार्य कर्ता के लिये सीमित विचार रखना कहां तक शोभनीय है यह सोच समझ स्वामी जी ने इस महान महोत्सव में पूर्ण सहयोग देकर इसे सफल बनाया।

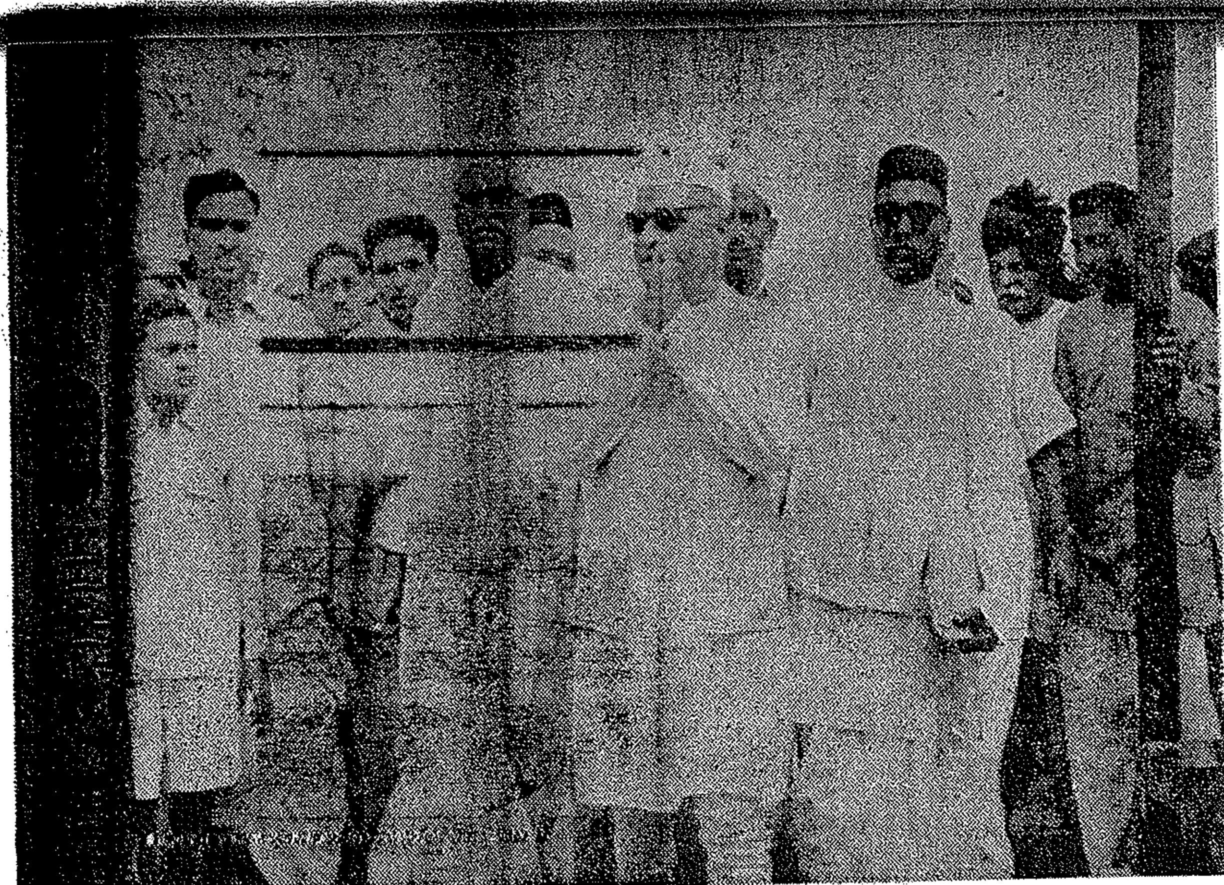
श्री सेठ किरोड़ीमल अभिनन्दन महोत्सव

जिस समय श्री सेठ किरोड़ीमल जी लुहारी वाले ने श्री गौरीशंकर मन्दिर की स्थापना अपने कर कमलों से की और जनताने इस भव्य मन्दिर एवं इसमें बनाई गई अद्भुत सजावट देखी तब प्रत्येक व्यक्ति ने हृदय से यही कहा कि यह इतना सुविशाल धर्म का कार्य बिना किसी महापुरुष के नहीं हो सकता क्यों कि धन बहुतों के यहां हो सकता है और है भी, परन्तु धन का धर्ममें लगाना बहुत ही कठिन है, और धर्ममें धन महापुरुषों का ही लगता है, जिसे शुभ कमाई कही जाती है।

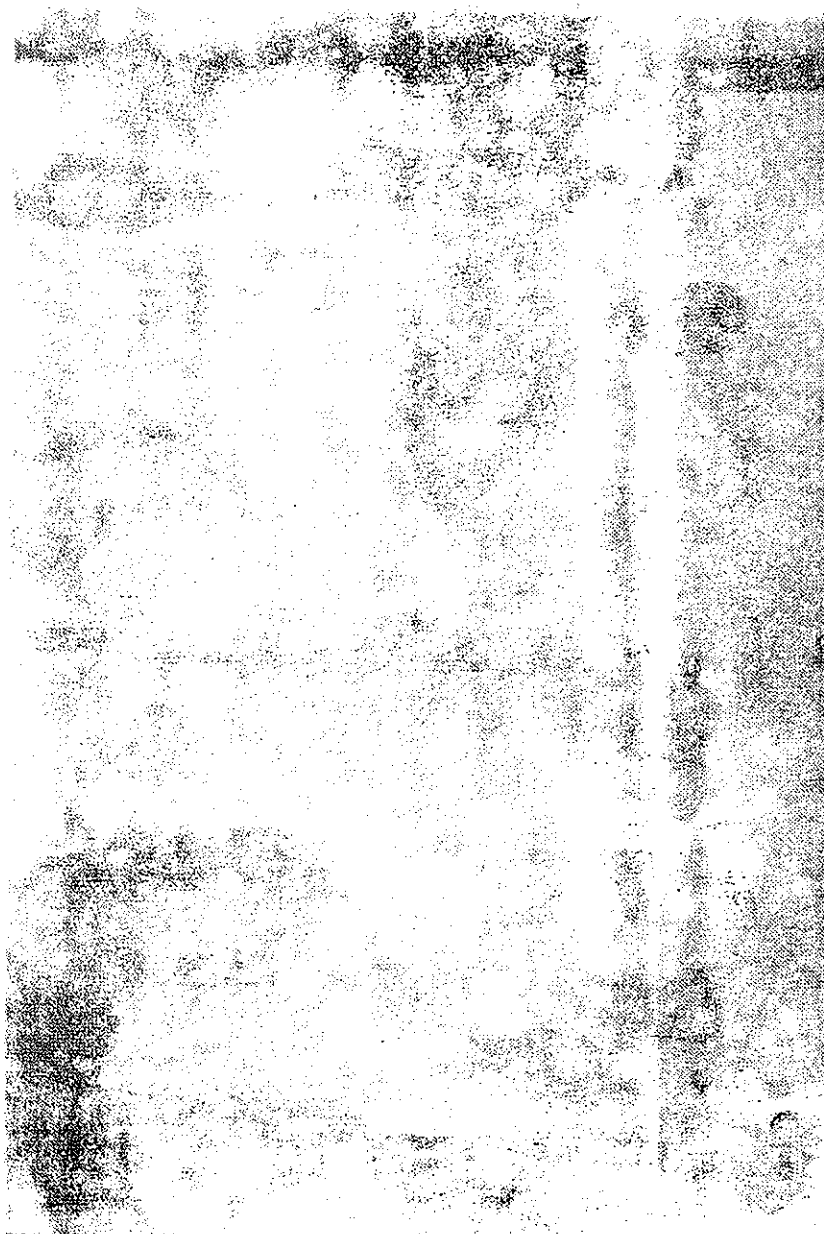
यह समझ शहर की सनातन धर्मी जनता ने सेठ किरोड़ीमल का अभिनन्द करने का निश्चय किया। स्थानीय वैश्य कालेज के विशाल भवन में एक उच्च आसन पर सेठ किरोड़ीमल जी और उनके अभिन्न मित्र श्री ला० पालुराम जी धनानिया आदि आदि बैठे हुए थे उस समय भिवानी की प्रायः



श्रीपालुरामजी धनानिया, द्वारा
मुख्यमंत्री श्री सच्चर महोदय पंजाब की सेवा में मानपत्रः-



मुख्य मन्त्री श्री सच्चर जी तथा सेठ प लुरा धनानिया



सभी संस्थाओं ने सेठ किरोड़ीमल जी के स्वागत में अभिनन्दन पत्र भेंट किये।

सनातन धर्म सभा की तरफ से ला० पालुराम जी पूनीवाले ने अग्रवाल सभा भिवानी की तरफ से ला० गोपीराम जी दलाल ने दैनिक श्री रंगनाथ पत्र की ओर से, श्री स्वामी मुरलीधर जी आचार्य ने पुरूषार्थी सभा की तरफ से, श्री तुलसीदासजी महतानी ने वैश्य कालेज की तरफ से, प्रिन्सिपल एवं स्काउट की तरफ से डा० जनार्दन सौपर्ण ने अभिनन्द पत्र भेंट कर सेठ जी के प्रति अपनी श्रद्धा प्रगट की। बाद में सभी आगन्तुक महानुभावों के प्रति सेठ किरोड़ीमल जी की तरफ से ला० पालुराम जी धनानिया ने कृतज्ञता प्रगट करते हुए विनम्रभाव से सभी का सत्कार किया भिवानी संस्थाओं को सेठ जी की तरफ से धन्यवाद के साथ साथ अपनेस्वभावानुसार आर्थिक सहायता (दान दिया) यह महान समारोह बड़ी ही सभ्यता एवं सेठ जी के प्रति स्नेह और प्रेम का परिचारक था।

श्री रामलीला महोत्सव

भिवानी नगर का सब से बड़ा त्योंहार श्री रामलीला महोत्सव है जो प्रतिवर्ष बहुत धूम धाम से मनाया जाता है और शहर के सभी व्यक्तियों का इसमें पूर्ण सहयोग रहता

है चिड़ीपालों के मैदान में पोष्ट आफिस के पीछे दस दिन तक एक विशाल मेला लगा रहता है जिसमें प्रति दिन हजारों नर नारी पहुंचते हैं। भगवान श्री राम की सवारियां भी बहुत धूम धाम से निकाली जाती है। करीब ५० साल से शहर में रामलीला होती आरही है।

भिवानी रामलीला के प्रमुख कार्य कर्ता:— श्री रामेश्वर दास जी हकीम, श्री जगदीशचन्द्र जी वैद्य, स्वामी मुरलीधर जी आचार्य, ला० हरचन्दराय जी चिड़ीपाल, पं० किशोरीलाल जी ला० रामस्वरूप जी बुवानी वाले, डा० बैजनाथ जी कौशिक पं० केशवदेव जी शर्मा, श्री रविन्द्रनाथ जी वाशिष्ठ, श्री हुन्ना मल जी शर्मा, ठा० जवाहरसिंह, ला० पालुराम पूनीवाले, बाबू मोतीराम जी वकील, श्री द्वारकादास जी गर्ग, श्री गोपीराम जी दलाल, डा०नारायणदास जी एवं सागरमल जी आलमाल है।

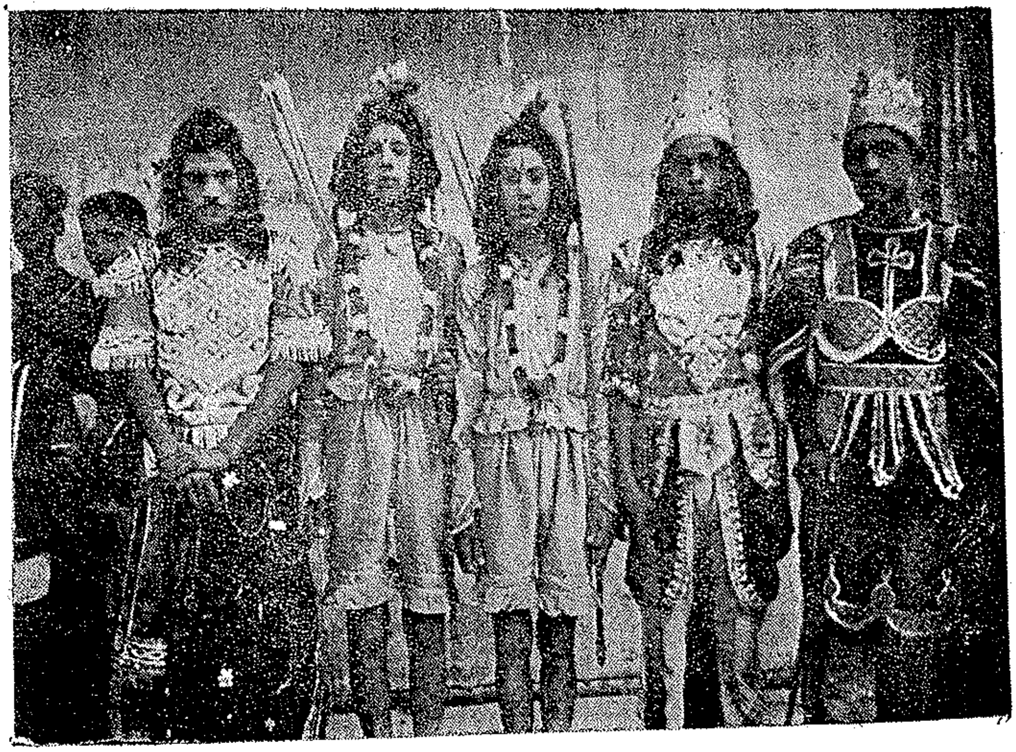
धर्मार्थ ट्रस्ट

भिवानी वालों द्वारा धर्म कार्यों सुचारु रूप से चालू रखने के लिये कतिपय धर्मार्थ ट्रस्ट चालूकिये हुए हैं जिनका पूरा विवरण गत अतीत खण्ड में छप चुका है, विशेष तौर पर कार्य करने वाले प्रमुख धर्मार्थ ट्रस्टों का विवरण इस प्रकार है:—

हालवासिया ट्रस्ट जिसके माननीय ट्रस्टी भारत प्रसिद्ध

प्रधान श्री हरीकिशन जी चिड़ीपाल, बाबा किशोरीलालजी, पं० केशवदेव जी शर्मा श्री बलदेव आचार्य





श्री रामलीला महोत्सव
भिवानी ।

गोयनका, भागीरथमल जी कानोड़िया, श्री भगवतीप्रसाद जी खेतान, रा० सा० श्री राधाकृष्ण जी आलमाल, श्री श्यामसुन्दर जी हालुवासिया, श्री पुरुषोत्तमदास जी हलवासिया, आदि हैं। वैष्णव रत्न रा० ब० श्री विश्वेश्वलाल मोतीलाल हालुवासिया जिनके पास करोड़ों रूपये की सम्पत्ति थी मरते समय ६० लाख रुपये का दान देकर एक ट्रस्ट कायम करगए आज उसी ट्रस्ट द्वारा न जाने कितने ही गरीबों व असहायों की सेवा के साथ साथ बड़े २ शुभ कार्य सम्पन्न हो रहे हैं।

दूसरा:—श्री किरोड़ीमल धर्मार्थ ट्रस्ट है। इस ट्रस्ट की स्थापना दानवीर श्री सेठ किरोड़ीमल जी लुहारीवाले द्वारा सन १६४६–१२ मई को हुई थी इसके सन्माननीय ट्रस्टी श्री सेठ किरोड़ीमल जी चेयरमैन श्री सेठ पालुराम जी धनानया, श्री प्रेमचन्द जी गुप्ता, श्री पुरुषोत्तमदास जी मोडा, श्री— निभीराम जी बुवानीवाले, श्री अमोलकचन्द जी बजाज, श्री— सीताराम जी खण्डेलिया आदि का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

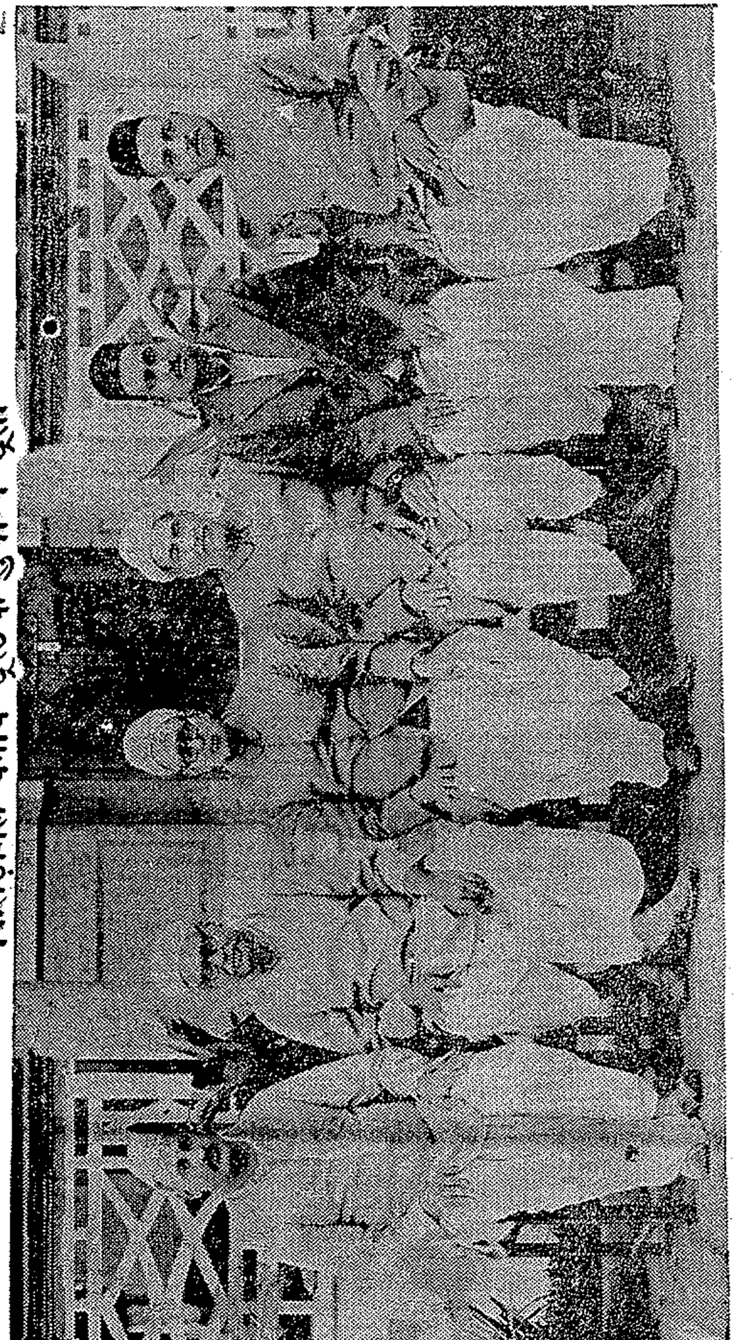
यह सभी महानुभाव ट्रस्ट की उन्नति के लिये हर तरह निःस्वार्थभाव से सेवा करते रहते हैं, और अनेकों धर्मकार्यों का इस ट्रस्ट द्वारा संचालन हो रहा है हजारों गरीब एवं असहाय विधवाओं का पालन पोषण भी इसी ट्रस्ट से होता है, बड़े बड़े महत्व पूर्ण कार्य जिनमें श्री गौरीशंकर-मन्दिर भिवानी श्री गौरीशंकर मन्दिर रायगढ़, वैश्यकालेज भिवानी, श्री

किरोड़ीमल लायब्रेरी भिवानी, महात्मा गांधी-नेत्र चिकित्सालय रायगढ, और किरोड़ीमल नेत्र-चिकित्सालय भिवानी, श्रीमति अशर्फी देवी मातृ सेवासदन रायगढ, एवं अशर्फी देवी नर्सिंग ट्रेनिंग स्कूल भिवानी, श्री किरोड़ीमल दातव्य औषधालय रायगढ, श्री किरोड़ीमल अन्नक्षेत्र भिवानी एवं रायगढ़ आदि आदि है जिनका पूर्ण विवरण सेठ जी के जोवन चरित्र में अंकित है इस ट्रस्ट द्वारा अनेकों शुभ कार्य हुवे हैं और दिन प्रतिदिन होते ही जा रहे हैं। इस ट्रस्ट की अमर सेवाओं द्वारा भिवानी की जो सेवा हुई है, वह लिखने से बाहिर है ।

जालान ट्रस्ट भिवानी

श्री रा० सा० किशनलाल जी जालान द्वारा एक ट्रस्ट दीन हीन असहाय गरीबों की सेवा के लिये स्थापित किया हुआ है जिसके द्वारा अनेको प्रकार की सेवाए प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप में समय समय पर होती रहती है। इस ट्रस्ट द्वारा संचालित श्री किशनलाल जालान फ्री आई हस्पताल है। दूसरा किशनलाल जालान धर्मार्थ औषधालय मालाड़ में संचालित है जिस के द्वारा जनता जनार्दन की महान सेवा हो रही है। इस ट्रस्ट के मैनेजिंग ट्रस्टी जालानजी के सुपुत्र श्री सेठ घनश्याम दास जी जालान है।

दानवीर सेठ किरोड़ीमल जी द्वारा संस्थापित—
किरोड़ीमल धर्मार्थ ट्रस्ट के सुयोग्य ट्रस्टी



(१) श्री सीताराम जी खण्डेलिया, (२) श्री पालुराम जी धनानिया,
दानवीर श्री सेठ किरोड़ीमल जी लुहारीवाले [चेयरमेन]
(४) श्री निर्भाराम जी बुवानीवाले, (५) श्री पुरुषोत्तमदास जी मोदा,

श्री० पं नेकीराम जी अभिनन्दन समारोह

देशभक्त भारत प्रसिद्ध श्री पं० नेकीराम जी शर्मा का अभिनन्दन हालुबाजार श्री नन्दराम कटले में रखा मन्त्री श्रीमान् श्रीमहावीरप्रसाद जी "त्यागी" की अध्यक्षता में बडे समारोह के साथ सम्पन्न हुवा।

भिवानी की प्रायः सभी संस्थाओं की तरफ से 'श्री शर्माजी' की सेवा में मान-पत्र अर्पित किये गए, और ११ हजारकी थैली श्री हरदत राय जी सूगला द्वारा शर्मा जी के कर कमलों में सादर स सन्मान भेंट की गई।

इस समारोह में श्रीठाकुरदासजी भार्गव M.P.।ने विशेष तौर पर भाग लेकर पण्डितजी के पवित्र जीवन पर प्रकाश डाला। दैनिक श्रीरंगनाथपत्र की तरफसे सम्पादक बलदेव शर्मा आचार्य द्वारा श्री शर्मा जी की सेवा में सादर अभिनन्दन पत्र भेंटकरते हुए अपनी श्रद्धा प्रगट की।



मेरी जननी यह भूमि है, इस विचार से जिस का मन ।
नहीं उमगित हुआ वृथा है, उसका पृथ्वी पर जीवन ॥

परिवार परिचय

कर्तव्य पालन

गत सम्वत २००७ में भिवानी इतिहास का जो "अतीत खण्ड" प्रकाशित हुआ था उस में उन्हीं स्वर्गस्थ आत्माओं का परिचय था जो कि आज इस नश्वर संसार में नहीं हैं। अब भिवानी इतिहास के वर्तमान खण्ड में उन महानुभावों का परिचय है जो कि आज सन्मान पूर्वक विद्यमान हैं, और भिवानी एवं भिवानी से बाहिर दिशावरों में फैले हुए अपना यशस्वी जीवन व्यतीत कर रहे हैं। साथ ही साथ इस वर्तमान खण्ड में उन कतिपय व्यक्तियों का भी परिचय दिया गया है जिनका स्वर्गवास गत अतीत खण्ड छपने के बाद हुआ है और जो मरने से पहले अपने हाथ से अपना फोटो एवं जीवन परिचय दे चुके थे। अतः उनकी उत्कण्ठा अपनी मातृभूमि के इसभिवानी इतिहास में अपना परिचय देखनेकी थी परन्तु वह छपने से पहले इस नाशवान संसार को छोड़कर स्वर्गवासी हो गए। अतः उन महानुभावों का भी परिचय इस वर्तमान खण्ड में देना आवश्यक समझ कर्तव्यका पालन कियागया है।

लेखकः—

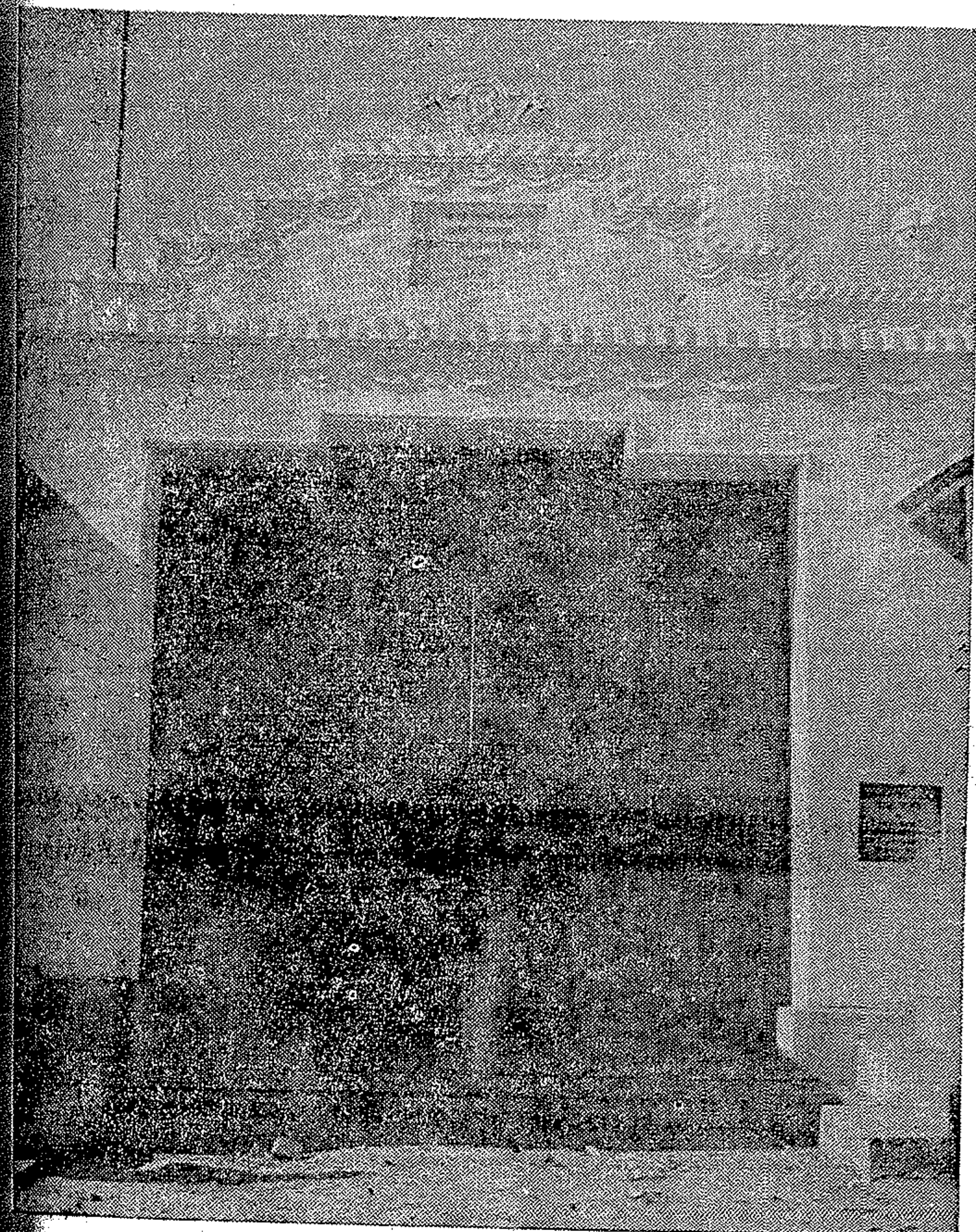


श्री महात्मा खाखी बाबा जी महाराज

आदरणीय महात्मा श्री खाखी बाबा जी

भिवानी शहर में अनादि काल से देखा जा रहा है कि जबसे यह शहर बसा है तभीसे कोई न कोई तपोपुंज महात्मा इस शहर और इस इलाके का मंगल करने के लिये अवश्य विद्यमान रहता है, ऐसे महात्मा ही वास्तव में नगर की सच्ची विभूति होती हैं और उन के तपोबल पर ही नगर कुशलक्षेम का उपभोग करता हैं, एक पुन्यात्मा लाखों दुःस्कर्मों को दहन कर देता है, इसी नियम के अनुसार हमारे नगर के महान मंगलस्वरूप तपोनिष्ठ सिद्ध महात्मा श्री बाबा खाखी जी महाराज आज विद्यमान हैं ।

यह मूलचन्द वाले तालाब पर वैरागी सम्प्रदाय के खाखी मन्दिर में निवास करते हैं, इस मन्दिर की अभिवृद्धि श्री बाबा खाखी जी का सिद्ध चमत्कार है और यह मन्दिर इन्हीं के नाम से समस्त इलाके में विख्यात है, बाबा खाखी जी आचार निष्ट तो इतने हैं जो शायदही इस इलाकेमें कोई दूसरा व्यक्ति मिलेगा। आप जितनी बार लघुशंका करने जाते हैं उतनी बार ही ठंडे जल से स्नान करते हैं चाहे कैसी ही भीषण शर्दी क्यों न पड़ती हो। दिन भर में एक क्षण भी बिना राम नाम लिये वृथा नहीं जाने देते, रात्री में सोते हैं या नहीं यह भी अभी तक नहीं जाना गया है, आज बाबा खाखी की आयु १३०



श्रीमति अशर्फीदेवी नर्सिंग ट्रेनिंग स्कूल,
सौभाग्यवती धर्मपत्नी सेठकिरोड़ीमल लुहारी वाला

वर्ष के लगभग सुनी जारही है परन्तु मुख में सम्पूर्ण दांत और नेत्रों में पूर्ण प्रकाश तथा स्मरण शक्ति बालकों जैसी है, यद्यपि शरीर श्वेत बालों से ढका गया है और अंग भी शिथिल पड़ गये हैं किन्तु बोलने की बुलन्द ध्वनि इतनी तीव्र है कि प्रातः दूर दूर तक उनका सुमंगलमय कीर्तन प्राणियों के कानों में पड़ कर उनका सभी तरह क्षेम करता है।

विद्यार्थियों के लिये एक पाठशाला तथा अतिथियों के लिये एक धर्मशाला का श्री बाबा खाखी ने अभी निर्माण करवाया है, श्री बाबा खाखी की हर समय यही इच्छा रहती है कि किसी तरह भी अधिक से अधिक प्राणियों का भला हो और वह सुखों का उपभोग करें इसी कारण जनता जनार्दन के हित के लिये कोई न कोई निर्माण एवं यज्ञ आदि करवाते रहते हैं। न जाने कितने ही अच्छे अच्छे व्यक्ति जब वह संसार से किसी विशेष परिस्थिति वश सताये जाते हैं तब बाबा खाखी की शरण में जाकर वह शांति प्राप्त करते हैं, यही उनकी तपस्या का सब से बड़ा प्रभाव देखा जा रहा है।

हमारे भिवानी इतिहास के प्रारम्भ में उन्ही हम महर्षि महात्मा खाखी जी के चरणों में बार बार अभिवादन करते है।

—



पूज्यपाद श्री स्वामी माधोराम जी आचार्य

श्री स्वामी वरदराज जी महाराज

आप भारत प्रसिद्ध संस्कृत विद्या के अपूर्व विद्वान प्रातः स्मरणीय आचार्य पाद् श्रीस्वामी महावन जी शास्त्री के पौत्र हैं। भगवान श्री रंगनाथ प्रभु की सेवा में अहर्निस आप का समय व्यतीत होता हैं। आप बड़े साधू व सरल स्वभाव के महापुरुष इस युग के आल्वार हैं आपकी भगवान में प्रेम व निष्ठा सेवा भाव आदर्श हैं। आप आचार्य परिवार में इस समय भूषण हैं और सब से बड़े तथा परमादरणीय हैं, आपके पुत्र श्री नन्दकिशोर जी आचार्य हैं।

श्री लक्ष्मीनारायण जी पुजारी

आप वयोवृद्ध श्री रामप्रभु के अनन्य भक्त भजनानन्दी परमसन्तोषी और साधु स्वभाव के, बन्दनीय महानुभाव हैं।

श्री प्रभु जीन्दिये के मन्दिर के आप आचार्य हैं। आज जो इस मन्दिर का भिवानी तथा इस समस्त इलाके में मान व प्रतिष्ठा है, इस का सारा श्रेय आपके उदार हृदय एवं सच्चे स्नेह और सन्तोष जनक व्यवहार के साथ साथ हर व्यक्ति में सद्भावना ही इसका मुख्य कारण है, आप इस युग के ऋषि एवं सच्चे सन्त हैं, गृहस्थ में रहते हुए भी आप का विरक्तों जैसा पवित्र जीवन है। आपके लघुभ्राता श्री हरिप्रसाद जी ज्योतिषी व कथा वाचक तथा व्यवहार कुशल सर्वप्रिय महानु-

भाव हैं। श्री लक्ष्मीनारायण जी पुजारी के पुत्र श्री जगदीश प्रसाद जी वैद्य और श्री पं० हरिप्रसाद जी के भगवतप्रसादजी हैं।

श्री पं० रामेश्वरदास जी हकीम

आपका जन्मकाल सं० १९२६ वि० एवं गौत्र भारद्वाज है। आप बड़े सिद्धहस्त वैद्य है श्री हनुमान जी आपके परिवार भर में सभी को इष्ट हैं। आप के वंश में यही सब से बड़ी विशेषता है कि आपके पास आया हुआ रोगी प्रायः अपना रोग-निरोग करके ही सुखी जीवन बनाता है। आपने अपनी युवावस्था में शहर एवं देहात की महान सेवा कर बहुत यश एवं प्रतिष्ठा प्राप्त की है। आपको गायन विद्या का बहुत अच्छा ज्ञान है। आप अच्छे कवि भी हैं। भिवानी की श्री रामलीला होने का बहुत सा श्रेय श्रीमान जी को ही है। पहले आप द्वारा लिखे गये कई एक नाटक भी होते रहे हैं जैसे विधवा विवाह खण्डन आदि। आपका सभी वर्णों व वर्गों से बहुत प्रेम एवं सम्बन्ध हैं। भिवानी में रहने वाले मुसलमान भी आपको अपना उस्ताद मानते थे क्योंकि आप पटे (गदका) के एक बहुत अच्छे खिलाड़ी भी हैं।

वैसे आप बड़े सौम्य गंभीरात्मा और परोपकारी जीवन युक्त शहर के महान पुरुषों में हैं। आजकल आप सब कार्यों

से उपराम होकर केवल प्रभु भजन और शान्तिमय जीवन अनुभव कर रहे हैं। आपके सुयोग्य पुत्र श्री पूर्णचन्द जी तथा वेदनिधि पं०हरिचरणजी आयुर्वेदाचार्य तो हैं ही पर तीसरे पुत्र श्री दुर्गाप्रसाद जी है इस परिवार का कलकत्ता, बम्बई, देहली और भिवानी में बड़ी सावधानी के साथ रोगी सेवा करना ही मुख्य ध्येय है, और सभी जगह सम्मान पूर्वक औषधालयों का संचालन कर आयुर्वेद जगत की बहुत बड़ी सेवा कर रहे हैं। आपके परिवार का बालवृद्ध आपका हृदयसे सम्मान करता हैं।

श्री पं० नेकीराम जी शर्मा

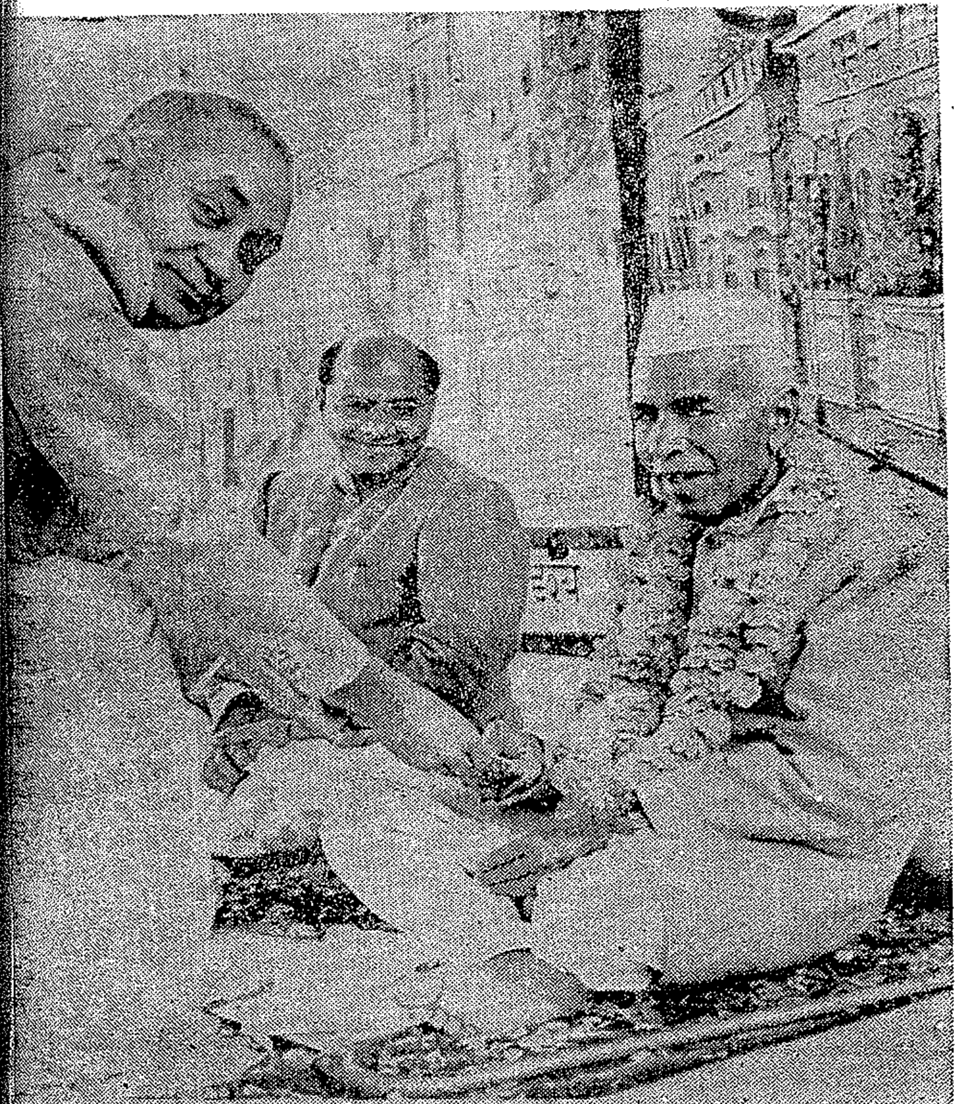
श्री प० नेकीराम जी शर्मा भारत प्रसिद्ध देशभक्त नेता है। भिवानी के पास रोहतक जिले के एक छोटे से केलंगा गांव में आपका जन्म हुआ। जब से आप ने होश सम्भाला है तभी से आप देश सेवा में एक वीर सैनिक की भांति बृटिश सरकार से अनवरत लड़ते रहे हैं। लोकमान्य तिलक एवं श्री प० मदनमोहन मालवीय जी के आप विशेष कृपा पात्र और उनके साथ कन्धे से कन्धा लगाकर कार्य करने वालों में से आप एक हैं। श्री पं० जवाहरलाल जी और देश के सभी बड़े बड़े नेता आप में बहुत बड़ी श्रद्धा रखते हैं श्री पूज्य महात्मा गांधी तो आपको पंजाब का सर्व श्रेष्ठ राजनैतिक कुशल व्यक्ति मानते थे। पंजाब के जितने भी कांग्रेसी नेता, स

मन्त्री हैं, यह सभी आपके राजनैतिक शिष्य हैं और आप में पूर्ण श्रद्धा व भक्ति रखते हैं।

आप श्रीमद्भगवत गीता की कथा विद्वता पूर्ण कहते हैं और संस्कृत के अच्छे विद्वानों में गिने जाते हैं वक्तृत्व शक्ति आप में अद्वितीय है जिस समय आप भाषणदेते हैं उस समय चाहे कैसा भी जनतामें कोलाहल क्यों नहीं मच रहा हो ? स्वतः जनता बैठ जाती है, पण्डित जी ने अपने जीवन में शायद यह नही कहना पड़ा होकि "बैठ जाओ शान्त होकर मेरा भाषण सुनो" ज्यों ही भाषण प्रारम्भ हुआ त्यों ही जनता मन्त्र मुग्ध हो स्वतः शान्त बैठ जाती है यही आपकी सबसे बड़ी विशेषता है।

आपकी वजह से भिवानी ने समस्त हिन्दुस्तान में काफी ख्याति प्राप्त की है। और आज भी नेकीराम की भिवानी इस नाम से काफी प्रसिद्ध है।

इस इलाके में बेगारी नामक जुल्म जो बृटिश काल में सत्ता के मद में चूर अधिकारीगण गरीबों पर करते थे और गरीब जनता इस बेगारी सिष्टम के मातहत पशु तुल्य जीवन व्यतीत कर रही थी उस समय आपकी सिंह गर्जना ने समस्त इलाके में एक नया जोश पैदा कर दिया और यह सोता हुआ वीर प्रदेश जिस पर कायरता की भस्मी आच्छादित होगई थी



भारत प्रसिद्ध राष्ट्रीय नेता—
श्री पं० नेकीराम जी शर्मा
देशभक्त—श्री हरदत्तराय जी 'सुगल।' तथा महावीरप्रसाद जी त्यागी

इसे संगठित कर तानाशाही मदोन्मत्त सरकार के विरुद्ध मोर्चा लगाकर बेगारी जुल्म को सदा के लिये समाप्त कर दिया उसी दिन से गरीब जनता आपको देवता के तुल्य पूजती है।

सन १९४२ में बम्बई में जब अखिल भारतीय कांग्रेस सभाके विशाल पण्डालमें "भारत छोड़ो" प्रस्ताव पास किया जा रहाथा और समस्त बृटिश सत्ताका ध्यान उस महान पण्डालकी तरफ उसे नष्टभ्रष्ट करने के लिये आकर्षित था उस समय गोरी सरकार ने तोप पण्डाल की तरफ बढाकर कहा कि इसे खाली करो नहीं तो पण्डाल उड़ा दिया जायेगा उस समय पंजाब का यह वीर सेनापति अगाड़ी बढ कर खड़ा होगया और बोला लो यह सीना जो सदा बृटिश सरकार के जुल्म सहता रहा है तैयार है पहले इसे मारो, फिर मेरे कांग्रेस पण्डाल पर गोला फैंकना, इस वृद्ध तेजस्वी वीर ब्राह्मण के आगे जुल्म करने वाले नतमस्तक होकर आगे से हट गये।

पण्डित जी की देश के प्रति की गई महान सेवा अमर है और लेखन शक्ति के बाहिर है। यह हमारे प्रान्त के एक गौरव रूप स्वाभिमान आदर्श एवं उच्च चारित्रयुक्त महापुरुष है।

अभी थोड़े समय पहले भिवानी की जनता ने अपने श्रद्धेय वीरपुरुष का सन्मान करने के लिये ११ हजार रुपये "पत्रं पुष्पं फलं तोयं" की भांति भेंट कर अपने नेताके प्रति श्रद्धा प्रगट की है। आपके श्री मोहनकृष्ण जी आयुर्वेदाचार्य हैं।

रा० ब० पं० श्रीदत्तजी शर्मा भू० पू० ऑ० मजिस्ट्रेट

जन्म वि १६४८ फा० कृ० ६ शुक्रवार तिगड़ाना ग्राम में हुआ। आप वैसे तिगड़ाना ग्राम निवासी है, आपका जीवन प्रारम्भ में बहुत लघुतर रहा है। आपका गौत्र आत्रेय है। आपने रपम पूज्य श्री सीताराम जी शास्त्री संस्थापक—श्री ब्रह्मचर्याश्रम के ब्रह्मचारी आश्रम में रहकर वेदादि की पूर्ण शिक्षा प्राप्त कर पंजाब युनिवर्सिटी की संस्कृत की उच्च परिक्षोत्तिर्ण होकर आयुर्वेदिक संसार में अपने आपको सेवा कार्य में तत्पर किया। आयुर्वेद में आपका ज्ञान महामान्य है, बड़े २ अंग्रेज, जो विदेशी औषधियों के सेवन-कर्ता और डाक्टरों के भक्त रहे है उन्हें आपकी आयुर्वेद चिकित्सा द्वारा सफलता प्राप्त हुई है, और वह आज भी आपको देवता तुल्य मानते हैं। आप आयुर्वेद विद्यापीठ के मन्त्री और कई संस्थाओं के संस्थापक हैं। आपके सभापति पद से दिये गए भाषणों का अंग्रेजी में अनुवाद होकर विदेशों में पहुंचा है और अच्छे २ अनुभव शाली डाक्टरों नें भूरी २ आपके अनुभव और ज्ञान शक्ति की प्रशंसा की है। बंगाल के प्रसिद्ध कविराज श्री महामहोपाध्याय गणनाथ जी सैन, महान आयुर्वेद के ज्ञाता ने आप को सभा द्वारा स्वर्णपदक भेंट कर आपकी प्रतिष्ठा को बहुत महत्व

दिया है। राजनीति में आप एक पंजाब के कार्यकर्ता परिश्रमी उच्चविचार युक्त माने गए हैं। आपके दरवाजों पर उस समय के डिप्टी कमिश्नर, कमिश्नर, और गवर्नर तक आपकी सलाह और सद् परामर्श के लिए मित्रवत् होकर आते थे और आपकी सलाह प्राप्त कर हर्ष मनाते हुए आपके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करते थे। पंजाब में कोई भी होने वाला सरकारी काम अथवा सरकूलर आपकी राय के बाहर नहीं हो सकता था। बृटिश सरकार आपको बड़ा हितैषी जनता का शुभ चिन्तक समझ आपके ऊपर पूर्ण भरोसा रख कार्य का सन्चालन करवाती थी। आप बड़े सच्चे और जनता का हृदय से भला चाहने वाले वीर पुरुष समझे जाते हैं।

आपके तत्वावधान में बड़ी २ सभाएं एवं जलसे हुए प्राई मनिष्टर तथा गवर्नरों द्वारा कई बार आपके उद्योग से पंजाब प्रान्तीय सभा सम्मेलन आदि हुए। आप भिवानी कमेटी के प्रैजीडेण्ट भी रहे हैं। भिवानी को विख्यात करने वाला श्री किशनलाल जालान फ्री आई होस्पिटल आपकी दुरदर्शिता एवं रोगियों की सेवा का एक महान परिचायक है। जो आपकी शुद्ध प्रेरणा से यह हस्पताल आज अनेकों अन्धों को नेत्रदान देकर आपको तथा स्वर्गीय आत्मा को आशीर्वाद प्राप्त करवा रहा है।

आशाराम औषधालय भी आपके ही परामर्श को लेकर स्थापित हुआ है जहां काफी रोगी रोग मुक्त होते हैं।

आपका सारा ही जीवन सेवा व्रत परायण रहा है और बहुत छोटे जीवन से सभी सफलता प्राप्त कर अपने बाहुबल द्वारा महा प्रतिष्ठा प्राप्त की है। जिस शहर में जो कौपीन धारी ब्रह्मचारी भिक्षा मांग कर शिक्षा प्राप्त कर चुका हो वह उसी शहर का प्रेजीडेन्ट, डिस्ट्रिकबोर्ड का मैम्बर और जागीर दार तथा न्यायाधीश बनकर इस शहर की महान सेवा एवं शासन कर चुका हो, इस से बढकर सफल जीवन और क्या हो सकता है! ऐसे सफल जीवी व्यक्ति विरले ही होते हैं। भिवानी की प्रसिद्ध संस्था श्री ब्रह्मचर्याश्रय के आप इस समय सर्वेसर्वा हैं।

इतना वैभव और समृद्धिशाली व्यक्ति आज सब कुछ त्याग वानप्रस्थ आश्रम में रहकर भारत विख्यात श्री १०८ श्री कालीकमली वाले क्षेत्र ऋषीकेष में निवास कर जनता जनार्दन की निःस्वार्थ भाव से सेवा सुश्रुशा कर अपने जीवन के मुख्य लक्ष्य सेवा धर्म द्वारा सादगी जीवनबनाए हुए है।

आपने भारतीय संस्कृति के द्योतक "आत्म विज्ञान भवन" का ऋषीकेश में निर्माण किया है इस संस्था में करीब ५० लाख रू० व्यय होकर भारत की प्राचीन संस्कृति का अभ्युत्थान किया गया है, और यह संसार का सब श्रेष्ठ अध्यात्मवाद का स्थान होगा।



आत्म-विज्ञान-भवन हृषीकेश के संस्थापन समय में महाराज नैपाल
स्वामी मुरलीधराचार्य तिलक रा० ब० श्रीदत्त जी शर्मा मानपत्र अर्पित कर रहे हैं।

आपने अपने एक मात्र पुत्र स्व० रमाकान्त के नाम पर ट्रस्ट भी जारी किया है, जिससे समम समय पर लोक सेवा और गृहस्थी जनों की जिनका जीवन दुखी है प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से होती है। आपका जीवन बड़ा सयंमी, धर्म परायण, सरल व सादा महान आदर्श जीवन रहा है। आपका सम्मान सभी वर्णों में है। आप शहर के एक महान यशस्वी और साहसी पराए दुःख के साथी और सच्चे प्रभु भक्त हैं। आपके सुयोग्य पुत्र श्री केशवदेव जी हैं जो कमेटी के वाईस प्रेजीडेन्ट एवं आयुर्वेद के अच्छे चिकित्सक हैं। बडे साहसी, उत्साही, कार्य-कुशल, मिलनसार, व्यक्ति हैं। महम दरवाजे के पास "श्री फार्मेसी" आप द्वारा संचालित है।

कानोडिया परिवार

आप स्वा० श्री पूज्य चोखराज जी महाराज के जो इस शहर व इलाके के सुप्रसिद्ध ज्योतिषी एवं बहुत मान व प्रतिष्ठा सम्पन्न महानुभाव थे, उन्ही के सुयोग्य सुपुत्र है आपका अनुभव भी उन्ही की तरह ज्योतिष में महान है। वैसे आप वयोवृद्ध हैं और संस्कृत साहित्य के महापण्डित है। आज कल आप सभी कार्यों से विराम लेकर श्री हरिस्मरण में ही अपना समय लगा रहे हैं। आपके सुयोग्य सुपुत्र श्री रामकुमार जी विद्वान M L A. तथा श्री जगदीशचन्द्र जी हैं।

आयुर्वेदाचार्य श्री स्वामी जयरामदास जी महाराज

आप छोटी आयु में ही यहां श्री पतरामदास जी की धर्मशाला यानी दादू मन्दिर जिसके अध्यक्ष स्व० महात्मा कल्याणदास जी थे। और वह दादू पन्थ सम्प्रदाय के आचार्य तो थे ही परन्तु सच्चे सन्त और पूर्ण महात्मा, त्यागी व उपकारी साधु भी थे। उन्हीं ने आपको अपना पूर्ण अधिकारी बनाया और वह स्वर्गवासी होगये। आपका विचार संस्कृत विद्या की तरफ विशेष रूप से रहा। अतः आप काशीनगरी गये और वहां पर कुछ वर्ष रह कर संस्कृत का अच्छा ज्ञान प्राप्तकर भिवनी लौटे।

यहां आने पर आपकी रुचि आयुर्वेद शास्त्रों की तरफ हुई क्योंकि आप के हृदय में सेवा भाव की भावनाएं जागृत हो रही थी। फलस्वरूप आप स्वामी मुरलीधर जी आचार्य के साथ जयपुर पूज्य चरण श्री लक्ष्मीराम जी महाराज की सेवा में उपस्थित हुए। उन्हीं के चरणों में बैठ कर आपने आयुर्वेद का ज्ञान प्राप्त किया और जयपुर में महाराजा संस्कृत कालेज की भारत प्रसिद्ध आयुर्वेदाचार्य की सर्वोच्च परीक्षा अच्छे रूप से पास की। और स्वामी जी का प्राचीन आयुर्वेद संग्रह एवं उनकी औषध निर्माणशाला का संचालन आपकी देख रेख में होने लगा।

पूज्य स्वामी जी महाराज की वृद्धावस्था होचली थी और वे चिंतित रहतेथे कि इतनी बड़ी सम्पत्ति किस योग्य व्यक्ति के अधिकार में दी जाए जो इस परिश्रम युक्त शुद्ध कमाई को जनता जनार्दन की सेवा में व्यय करता हुआ मेरे बाहुबल द्वारा एकत्रित सम्पत्ति को स्थायी बनाये रक्खे एवं सदुपयोग में लगाता रहे 'पुरुषष्य भाग्यम्' के अनुसार हमारे शहर के श्री जयरामदासजी पर जोकि उनके शिष्य बन चुके थे श्री महाराजका ध्यान इनकी तरफ आकर्षित हुआ और उन्हों ने विचार किया कि जयरामदास आज सर्व प्रकार से सुयोग्य प्रमाणित हो चुका है क्योंकि उनके जीवन काल में ही लाखों की सम्पत्ति का लेन देन सब कार्य श्री जयरामदास जी ही योग्यता पूर्वक करते थे। उन्होंने यह प्रस्ताव बहुत सम्मान और स्नेह भरे शब्दों में जयरामदास जी के समक्ष अपना उत्तराधिकारी बनने के लिये रक्खा, श्री जयरामदास जी ने उदारता पूर्वक यही कहा "मेरे लिये मेरा स्थान भिवानी में मेरे गुरुजी द्वारा प्राप्त है और मुझे उस स्थान को उनकी मनोकामना पूर्ति करने के लिये संभालना है"। यह उत्तर सुन श्री स्वामी जी महाराज कुछ चिन्तित एवं दुःखी से होगये इस पर जयरामदासजी मौन हो गये और उन्होंने अपने पूर्ण शुभचिंतक एवं अभिन्न मित्र स्वामी मुरलीधर जी आचार्य तिलक से परामर्श लिया। यही उत्तर जयरामदास जी को श्री तिलक जी ने दिया कि "आज्ञा गुरूणां

गुरु" आचार्य श्री की आज्ञा ही सर्व मंगल प्रद और हितकर हो सकती है आप यहीं जयपुर में बैठे ही भिवानी स्थान का प्रबन्ध सुचारू रूप से कर सकते हैं, तिलक जी की इस राय पर श्री जयरामदासजी ने अपने महाराज की आज्ञा जो उन्हों ने इन्हें सुयोग्य समझ कर ही दी थी सहर्ष स्वीकार करली। और उन्हें पूर्ण सन्तोष होगया। क्योंकि उनके जीवन काल में ही स्वयं जयरामदास जी ने सब काम उनकी रुचि के अनुकूल ही सम्भाल लिया था। प्रभु गति अपार—श्री स्वामी लक्ष्मीराम जी का देहान्त होगया। भारत के कोने कोने के गद्दीधारी सन्त महन्त साधु, और धनी विद्वान, स्वामी जी के आयुर्वेद जगत के बड़े बड़े वैद्य शिष्य-प्रशिष्य उपस्थित हुए और समस्त जन समाज के समक्ष श्री स्वामी जयरामदास जी को उनका सर्व प्रकारेण उत्तराधिकारी घोषित किया गया। आज आप उन्हीं महापुरुष के स्थान पर विराजमान हैं और बहुत सुयोग्यता पूर्वक उनके स्थापित एवं संचालित कार्यों का प्रबन्ध कर रहे हैं, उनके आशीर्वाद से आज विद्वत् समाज साधु समाज एवं आयुर्वेद समाज में स्वामी जयरामदास जी का स्थान सम्मान पूर्वक, सुप्रतिष्ठित, गौरवशाली स्थान है, आप बड़े सम्पत्तिशाली, वैभवशाली, समृद्धिशाली रईस हैं और बड़े ही मितव्ययी हैं। जयपुर महाराज संस्कृत कालेज में आयुर्वेद शिक्षा-विभाग



श्री स्वामी जयरामदास जी आयुर्वेदाचार्य
[श्री लक्ष्मीराम आयुर्वेद चिकित्सालय जैपुर]

के प्रधान हैं। राजस्थान में आपका बहुत मान व प्रतिष्ठा है। भिवानी एवं पेटवाड़ का स्थान आपके ही अधिकार में संचालित हैं। आप बड़े साहसी, उद्योगी कर्मनिष्ठ, सदाचारयुक्त एवं प्रतिभा सम्पन्न महानुभाव होने के साथ साथ धनी और पण्डित भी हैं। आप जैसे सुयोग्य व्यक्तियों से सभ्य व शिक्षित समाज को बहुत कुछ आशाएं हैं। आपके द्वारा जनता की महान सेवा हो रही है। आप भारत की महान विभूतियों में आयुर्वेद जगतके और कई एक संस्थाओं के प्रधान व पोषक हैं।

श्री पुष्करदत्त जी शर्मा

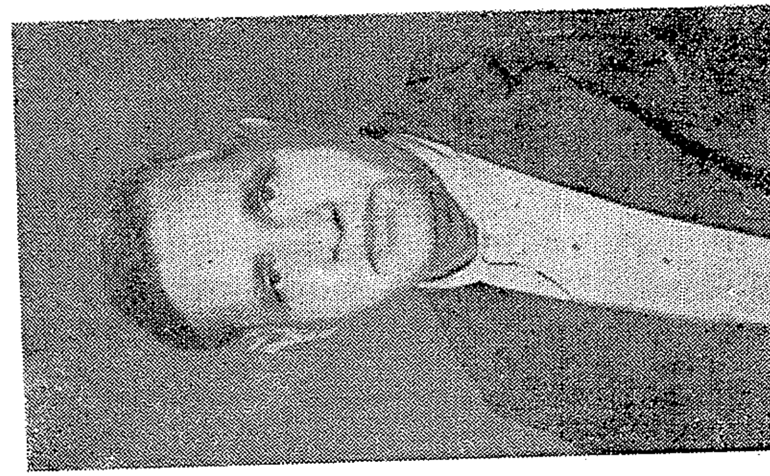
आप बुवानी ग्राम के आदि निवासी हैं आपका बहुत सा जीवन भिवानी में ही व्यतीत हुआ है। आप स्व० श्री प० सीताराम जी शास्त्री विद्यामार्तण्ड जी के शिष्य एवं उन के विशेष कृपा पात्र रहे। बुवानी ग्राम में आपने अपनेउद्योग से एक धर्मशाला तथा पुस्तकालय का निर्माण करवाया है।

आप का विशेष समय ब्रह्मचर्याश्रम की सेवा एवं उसकी हर तरह उन्नति में ही व्यतीत होता है, आप हिन्दी साहित्य के साथ साथ संस्कृत के भी पूर्ण विद्वान एवं कथा वाचक भी हैं भाषण देने की शैली आपकी प्रशंसनीय एवं प्रभावशाली है, प्राचीन हिन्दु संस्कृति के आप दृढ अनुयायी और सादगी पसन्द व्यवहार कुशल महानुभाव हैं। ब्रह्मचर्याश्रम की हर प्रकार

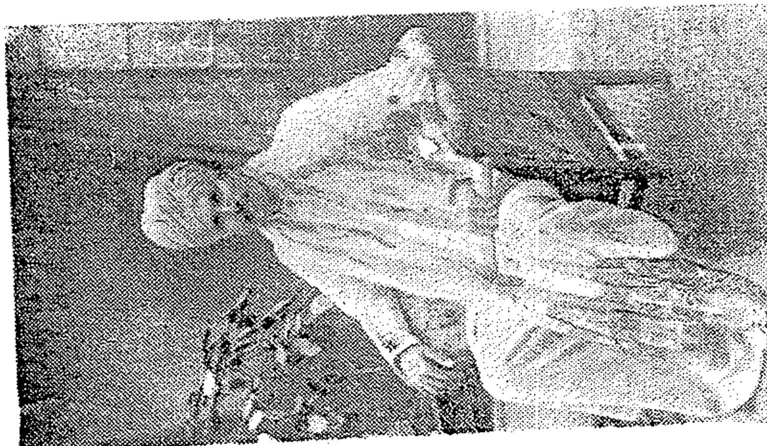
उन्नति में आपका सब से बड़ा सहयोग रहा है। आप बड़े संयमी आचार निष्ठ प्रभु भक्त और मिलनसार सरल स्वभाव के स्वाभिमानी भूदेव हैं। आपके पुत्र श्री प० गंगादत्त जी वैद्य आयुर्वेद का कार्य करते हैं और महेश्वरी रसशाला के अध्यक्ष हैं।

श्री पं० कोकिलानन्द जी ज्योतिषी

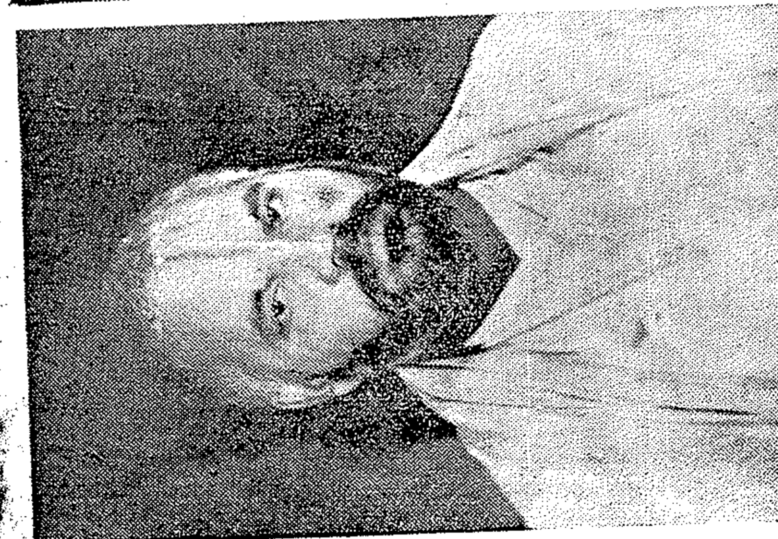
इनका वाशिष्ठ गौत्र है श्री पं० कोकिलानन्द जी शर्मा ज्योतिषी एक ख्याति प्राप्त ज्योतिष शास्त्र के पूर्ण ज्ञाता व अनुभवी महानुभाव हैं। आप संस्कृत एवं हिन्दी-साहित्य के अच्छे विद्वान हैं। पूज्य श्री सीताराम जी शास्त्री द्वारा आपने संस्कृत विद्या का पूर्ण अध्ययन किया है। इस शहर में आपके द्वारा हिन्दी शिक्षा का काफी प्रचार हुआ है। आप पहिले वैश्य विद्यालय एवं हिन्दुहितैषी विद्यालय में सम्मान पूर्वक अध्यापक का कार्य कर चुके हैं। आप आस्तिक विचारों के गौरक्षक, संयमी, ईश्वर भक्त साधु स्वभाव के निराभिमानी सज्जन हैं। और शहर में आप की बड़ी प्रतिष्ठा है, आपके बड़े बड़े शिष्य एवं यजमान हैं जो आप में पूर्ण श्रद्धा भक्ति रखते हैं। आपके श्री रवीन्द्रनाथ शर्मा वाशिष्ठ हैं जिन्हों ने शर्मा आदर्श फर्म का संस्थापन कर व्यापारिक क्षेत्र में फर्म को सम्मानित किया है। आप न्यूज़ पेपरों के एजेन्ट भी हैं।



पं० गंगाचरण जी वैद्य



श्री पुष्करदत्त जी शर्मा



श्री मोतीराम जी आचार्य

दूसरे बनारसीदास शर्मा फर्म में ही योग्यता पूर्वक काम करते है तीसरे मुनोश्वर शर्मा का अल्प आयु में देहावसान होगया।

आपसे छोटे स्वर्गीय पं० फतेहचन्दशर्मा थे जो व्यापारिक केन्द्र में काम करते थे। उनके पुत्र श्री ओमप्रकाश शर्मा हैं।

महमिया परिवार

यह हलवासिया वशं के पुरोहित हैं और शहर में इस वशं की बहुत प्रतिष्ठा है।

श्री प० द्वारकादास जी:- आप बहुत विद्वान योग्य कर्म-काण्डी सज्जन ब्राह्मण हैं और भगवान की सेवा पूजा करते हैं, साथ में एक पाठशाला का भी संचालन कर रहे हैं। आप के सुपुत्र भागीरथमल आंखो के हस्पताल में कम्पाउण्डर के पद पर कार्य कर रहे हैं बड़े सरल स्वभाव के हैं।

प० दीनदयाल जी:—आपभी इसी परिवार में से हैं आप पहले सरकारी हस्पताल में एक योग्य कम्पाउण्डर के पद पर कार्य करते थे। अब आराम के साथ हरिस्मरण में जीवन बिता रहे हैं।

प० रेडूमल जी:-आप अच्छे कर्मकाण्डी विद्वान हैं मिलनसार और प्रतिष्ठित महानुभाव हैं आपके सुपुत्र विद्या अध्यन कर रहे हैं वैसे यह परिवार बहुत बड़ा और शहर का प्रतिष्ठा सम्पन्न परिवार है।

पं० रामेश्वरदास जी पाटनिया

आप पाटन स्टेट के आदिवासी है, आपका निवास ह तु बाजार में है। आप आयुर्वेद चिकित्सा के शहर में माने हुए वैद्य है, वैसे सरल स्वभाव के मिलनसार अनुभवी पुरुष है, चिकित्सा प्रणाली आपकी शास्त्रीय पद्धति के अनुसार सोच विचार के साथ होती है।

लुहारी वाला परिवार

श्री पण्डित किशोरीलाल जी महाराजः—आपका गौत्र भारद्वाज है, आपका जीवन सार्वजनिक जीवन रहा है। भिवानी की रामलीला में आप प्रथम से ही पूरा २ भाग लेते हैं। आप बड़े अच्छे जमीदार व मान प्रतिष्ठा वाले व्यक्ति हैं आप प्रत्येक धर्म कार्य में आगे हो कर कार्य करना ही आपकी विशेषता है यद्यपि आप वृद्ध हो गये हैं परन्तु उत्साह युवकों जैसा है आपके सुयोग्य पुत्र पं० हुन्नामल जी लौकमान्य स्टोर के प्रोप्राइटर हैं। सर्व प्रिय एवं स्वावलम्बी जीवन युक्त योग्य व्यक्ति हैं दूसरे पुत्र श्रीनिवास अलग कार्य करते हैं। पं० नानूराम जी आदि बहुत से महानुभाव इस परिवार में कृषिक्रम द्वारा स्वावलम्बी जीवन बनाए हुए हैं ब्राह्मण समाज में इस परिवार की काफी प्रतिष्ठा है।

डाबला परिवार

पाटन स्टेटके पास डाबला ग्राम है इनका आदि स्थान वहीं पर है। इस कुल में बड़े २ महात्मा और विद्वान तथा प्रभु-भक्त हुए हैं। लोहड़ बाजार में पंचायती मन्दिर के नाम से इनका एक विशाल मन्दिर है, इसी में श्री कन्हीराम जी महाराज बड़े प्रतापी तथा बचन सिद्ध पुरुष हो चुके हैं। जिन्होंने कहा था "मैं पाण्डवों जैसे पुत्र उत्पन्न करुंगा" वही हुआ पं० भीमराज जी कलकते के श्री सत्यनरायण मन्दिर में बहुत दिनों तक पुजारी रहे। अब इस परिवार में श्रीरामजीवन जी पुजारी बहुत सुयोग्य, प्रिय भाषी, स्वाभिमानी पुरुष हैं। कलकत्ते में भिवानी वालोंके आप पंच हैं। अधिकतर कलकत्ता में ही निवास करते हैं। आपने अब एक धर्मशाला बनवाने का संकल्प कर रखा है। श्री भीमसैन जी वाला मन्दिर जो गार्द के पास है इन्ही की देख रेख में चल रहा है। आप सदा प्रसन्न चित्त और सदा प्रत्येक व्यक्ति के शुभ चिन्तक हैं। आपकी आयु लग भग ५५ वर्ष की है।

पण्डित तारीचन्द जी स्वर्गीय नकुलदेव के पुत्र है, बड़े मिलनसार व्यक्ति है। और आपका परिवार बहुतबड़ा परिवार है, सब परिजन अपना निर्वाह कुशलता पूर्वक कर रहे हैं।

श्री गणपतराय जी शर्मा अशंक

आपका कौशिक गोत्र है आप भिवानी के प्रसिद्ध डाबला परिवार के सम्मानित भूदेव हैं आप बड़े साहसी उद्योगी प्रभु भक्त, मिलनसार महानुभाव है, वैसे आपका जीवन स्वावलम्बी जीवन है व्यापारिक कार्यों में आप बड़े होशियार एवं सुलझे हु शिक्षित व्यक्ति हैं। वैसे आप बड़े स्वाभिमानी एवं सत्य प्रे दृढ विचारों के पारस्परिक प्रेमभाव को प्रोत्साहन देने वाले मित्रों के मित्र हर व्यक्त के दुःख सुख के सच्चे साथी, शुद्ध हृदय पवित्र विचारों के सर्वप्रिय सज्जन हैं कटक (उड़ीसा) आपका बहुत बड़ा सन्मान है रा० सा० श्री गिरधारीलाल जी आपकी बहुत ही इज्जत करते थे और हर कार्य में आपकी राय की कदर करते थे आज उनके पुत्र भी आप में तद्वत भावना रखते हैं। आपका चि० जगदीशप्रसाद शर्मा बड़ा योग्य सुपुत्र है जो किसी सरकारी विभाग की सर्विस में है।

पुजारी परिवार

यह परिवार हालुबाजार में निवास करता है ला० नन्दराम जी द्वारा संस्थापित जो बड़ा मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है उसमें यह भगवान की सेवा पूजा का कार्य भी करते हैं। इनका भारद्वाज गौत्र है।

इस परिवार में बहुत बड़े २ विद्वान और महात्मा होचुके हैं। सच्चे त्यागी, परोपकारी, प्रतिष्ठा सम्पन्न व्यक्तियों में स्वर्गीय हरदत्तराय जी गंगादत्तजी श्री रामदत्त जी बहुत प्रसिद्ध व्यक्ति हुए हैं। आयुर्वेद के ज्ञाता भाई उमादत्त जी वैद्य भी इसी परिवार में जन्म लेकर अमर हो गए हैं। पं० रामरूप जी पुजारी बड़े अनुभवी वैद्य हुए हैं। अब श्रीमान् पं० हरदेव दत्त जी और पं० केशवदेव जी शर्मा बड़े सुयोग्य, परिश्रमी, कार्य कुशल व्यवित हैं, जो देहली विरला-मिल में बड़ी बुद्धि मानी और सुयोग्यता पूर्वक कार्य करते हैं। पं० उमादत्त जी के सुपुत्र ज्ञानीराम शर्मा कार्य कुशल है। पण्डित सुरेशचन्द शर्मा बी० ए० बड़े मिलनसार शिक्षित नवयुवक हैं और अब सब लोग अपना कार्य बड़े स्वावलम्बी होकर सुखमय और मान प्रतिष्ठा से बड़ों की मान मर्यादा को बढाए हुएजीवन व्यतीत करते हैं। श्री पं० कुन्दनलाल जी शर्मा बिरला होजरी के सैल्ज मैनेजर है पं० पद्मनाभ जी योग्य व्यक्ति हैं।

उपाध्याय वंश

इस वंश में पण्डित नन्दकिशोर जी उपाध्याय बड़े अच्छे कर्मकाण्डी और ज्योतिषी हैं। आप बडे शान्त स्वभाव, प्रेमी, प्रतिष्ठा सम्पन्न महानुभाव हैं। आपके पुत्र श्री प्रहलादराय शर्मा कलकत्ता में व्यापारिक क्षेत्र में कार्य करते हैं। इसी वंश

में पण्डित हरिराम शर्मा हैं, जो कर्मकाण्ड का कार्य करवाते है। पण्डित नन्दकिशोर जी के पुत्र डा० बैजनाथ कौशिक नेत्रों की चिकित्सा करते हैं।

चौखानी परिवार

श्री पण्डित विश्वम्भरदयाल जी चौखानी इसी वंश में हैं. आप बड़े साहसी उदार चित्त कार्य कुशल उद्योगी पुरुष हैं। आप जमीदारी और मुखत्यारी का कार्य सुचारु रूप से करते थे। आपके सुयोग्य पुत्र पण्डित रामस्वरूप शर्मा जो भिवानी म्युनिस्पिल कमेटी के प्रजीडेन्ट रह चुके हैं बड़े सुयोग्य प्रभाव शाली व्यक्ति हैं, इनसे छोटे पं० गोपीराम तथा पण्डित शिवनरायण डाक्टर हैं। पण्डित सरदारमल जी जमीदारी आदि का कार्य करते हैं इन सभी महानुभावों की शहर में बहुत बड़ी प्रतिष्ठा है।

मांमुका परिवार

श्री रामशरणदास जी महाराज:—आपका मुद्गल गोत्र है, आप ईश्वर भक्त एवं ब्राह्मणत्व पूर्ण महानुभाव हैं। आप अपना समय भगवान के स्मरण में ही व्यतीत करते हैं।

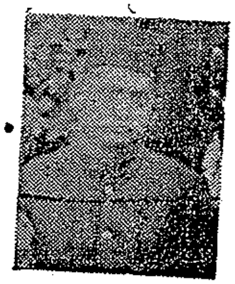
आपके सुयोग्य पुत्र श्री फूलचन्द जी शर्मा है जो कपड़े का कार्य करते हैं, और एक आटे मिल का कार्य करते हैं।



श्री पं० रामजीवन जी पुजारी



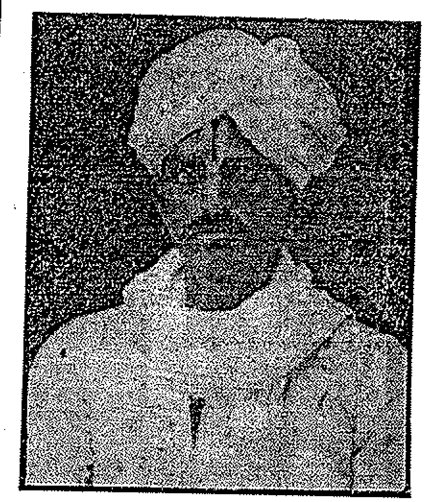
पं० भोलारामजी शर्मा M.A.



पं० हरदेवदत्तजी पुजारी



कविराज श्रीरामशर्मा, कलकत्ता



श्री रामरिच्छपालजी मिश्र ज्योतिषी

दूसरे आपके सुयोग्य पुत्र पं० भोलाराम जी एम० ए० वकील हैं। यह समाज में सुयोग्य शिक्षित और ख्याति प्राप्त व्यक्ति हैं, आप वैसे वकील हैं किन्तु सत्य प्रिय होने के कारण आपको इस कार्य से घृणा होगई। शिक्षा प्रिय होने के नाते अब आप गवर्नमेंट हाई स्कूल में अध्यापक का कार्य कर रहे हैं। आप समाज प्रिय और प्रतिष्ठित महानुभाव हैं।

बजीणिया परिवार

श्री पं० निहालचन्द जी शास्त्री:—आप बड़े प्रभावशाली एवं शास्त्रों के पूर्ण जानकार और सार्वजनिक कार्य कर्ता प्रतिष्ठा सम्पन्न महानुभाव है आपने अपने जीवन को उन्नतर बनाया है संस्कृत विद्या में आपका धारा प्रवाह भाषण होता है आप शहर में एक ख्याति सम्पन्न व्यक्ति एवं पुरोहित भी हैं। शहरमें जो भी धर्मकार्य होता है उसमें आप हर तरहसे परामर्श देते हैं आप अपने जीवन को सफल और परोपकारी बनाये हुए हैं पूर्ण आस्तिक सद्विचार स्वाभिमानी सज्जन हैं, भिवानी रामराज्य परिषद के प्रधान तथा और भी कई संस्थाओं के पदों को सम्भाले हुए हैं।

नारनौंदिया परिवार

इस वशं का सांडिल्य गौत्र है और इस परिवार में बड़े साहसी पराक्रमी और वीर पुरुष हुए हैं जिनकी धाक से घर

बैठे पूजा होती रही है। पं० पोहकरदत्त जी, महात्मा श्री गणपत राय जी मौनी स्वामी विश्वेश्वरानन्द जी सन्यासी आदि अपने ब्राह्मणत्व को कायम रखते हुए प्रतापी मानव हो चुके हैं। स्व० श्री सोहनलाल जी, प० गोपीराम जी प० हरविलास जी, प० रघुबरकृष्ण जी आदि इन्ही के वंशज हैं जो अपना कार्य जमींदारी आदि का करते हुए मान प्रतिष्ठा बनाये हुए हैं। शहर में यह चलती वाले माने जाते हैं, और शहर के प्रत्येक कार्य में भाग लेकर सन्मान प्राप्त करते हैं, श्री रघुबरकृष्ण जी का जीवन सार्वजनिक एवं यह शहर के पंच भी माने जाते हैं।

रंगा परिवार

श्री पं० बलदेव जी बड़े मिलनसार और जमींदार तथा इस परिवार में उच्च विचारों के पंच महानुभाव हैं। आपका जीवन सदा से ही एकसा जीवन रहा है आप के लड़के दुकान आदि का कार्य करते हैं और सम्मान प्रद व्यक्ति हैं। पं० रामदेवा आदि स्वतन्त्र कार्य करते हैं।

श्री पं० हरज्ञानदत्त जी शास्त्री

आपका जीवन विशेषकर भिवानी का ही बन चुका है वैसे आप करनाल जिले के निवासी हैं। यहां पर आपने स्वयं शिक्षा प्राप्त की और फिर आप हलवासिया कानोडिया आदि

पाठशालाओं में पढाते रहे। अब आप आलमालों की पाठशाला में पढा रहे हैं। आप के द्वारा शास्त्री विशारद प्राज्ञ आदि परीक्षाओं में अनेकों विद्यार्थी उत्तीर्ण हुए हैं आपका जीवन सीधा सादा और लोकोपकारी महान जीवन है।

कैरूवाला परिवार

यह आदिवासी कैरू ग्राम के हैं इनका गोत्र अत्री है। पं० शीशराम जी महाराज पुराने भजनानन्दी, सद्विचारों के सनातन धर्मी श्री वैष्णव सम्प्रदाय गामी महात्मा हैं और इनकी शहर में काफी प्रतिष्ठा है आपके सुयोग्य पं० गणपतराय जी अपना स्वतन्त्र कपड़े का व्यापार करते हैं। दूसरे अपने गांव मेंकृषि कार्य करते हैं।

श्री कृष्णानन्द जी वैद्य

आपका आदि निवास स्थान यू० पी० है। आप आयुर्वेद सम्बन्धी परीक्षा उत्तीर्ण कर भिवानी श्री वैश्य औषधालय में प्रधान वैद्य पद पर पधारे। उस समय आपकी आयु लगभग २५ वर्ष की थी यहां आकर आपने बड़े परिश्रम और त्याग एवं निस्वार्थ भाव के साथ आयुर्वेद चिकित्सा द्वारा अकथनीय सेवा कर अपनी सुयोग्यता का परिचय दिया।

जिस समय आप ने यह संस्था सम्भाली उससमय संस्था की आर्थिक स्थिति शोचनीय थी, और कोई विशेष प्रभाव भी

नहीं था आपके विशुद्ध सेवा भाव का ही फल है जो यह संस्था इस शहर और आस पास के गांवों में अपना गौरव शाली स्थान प्राप्त किये हुए है ।

आज आप का जनता में बहुत मानप्रद स्थान है और आप बड़े अच्छे ढंग से रोगी का निदान कर उसको अच्छी तरह आश्वासन देकर उसकी पूर्ण रूप से गम्भीरता पूर्वक चिकित्सा कर सफल वैद्य कहलाते हैं । आपकी नस नस में दयाभाव रमा हुआ और आपके हृदय में गरीब अमीर के लिये समता भरी हुई है । आपका प्रधान गुण (चलो वैद्य जी चलो भाई) है । यह आपकी उदारता और आपका व्रत ही आपको सर्व गुणों से विभूषित कर रहा है । आप वर्षा, धूप, शीत, रात दिन, वक्त बे वक्त कभी भी किसी व्यक्ति को नाहीं नहीं करते । जिसने आप को घर में रोगी देखने को कह दिया आप उसी समय बुलाने वाले के साथ चल पड़ते हैं, आप अपने मानव धर्म का पालन कर आज पूर्ण रूप से शहर में ख्याति प्राप्त व्यक्तियों में गिने जाते हैं, बड़ी शान्त एवं सौम्य प्रकृति के विवेकशील, पर पीड़न को अपनी पीड़ा समझने वाले निपुण वैद्य श्री कृष्णानन्द जी के नाम से प्रसिद्ध हैं आपका पुत्र चि० श्यामसुन्दर अंग्रेजी की उच्च शिक्षा में पढाई कर डाक्टरी विभाग में शिक्षा प्राप्त कर रहा है ।



श्री स्वामी कृपाराम जी वैद्य भिवानी
(अध्यक्ष—श्री रामकृष्ण औषधालय भिवानी)

श्री पं० लालचन्द जी महाराज

आपका मन्दिर बहुत प्राचीन हालु बाजार बाड़ी में है इस मन्दिर की शहर में बहुत प्रतिष्ठा है इस परिवार में अच्छे अच्छे विद्वान भजनानन्दी महापुरुष हो चुके हैं। अब पं० लक्ष्मीनरायण जी पुजारी बड़े सरल स्वभाव के प्रतिष्ठा सम्पन्न महानुभाव हैं रात दिन प्रभु सेवा और ईश्वर भक्ति में लीन रहते तथा कथा उपदेश का कार्य करते हैं शहर में आपकी मान प्रतिष्ठा बहुत है आपके सुपुत्र हरीचरण जी ज्योतिषी हैं।

स्वामी कृपाराम जी वैद्य

आप श्री रामकृष्ण औषधालय जो हालु बाजार बाड़ी में बहुत वर्षों से संस्थापित है उसके अध्यक्ष हैं आपका जीवन वास्तव में बहुत ऊंचा एवं लोकोपकारी सफल जीवन हैं आप दादू पन्थी सम्प्रदाय के सच्चे सन्त हैं। और इस सम्प्रदाय में आप का महत्व प्रद स्थान है। आप कई एक साधु संस्थाओं के ट्रस्टी एवं पदाधिकारी सदस्य एवं पोषक भी हैं। आयुर्वेद जगत में आपका नाम बहुत सम्मान पूर्वक और बहुत बड़ा गौरवशाली समझा जाता है। आपकी चिकित्सा शैली शास्त्रीय पद्धति से होती है और आपने बड़े २ महान पुरुषों द्वारा जैसे श्रद्धेय आयुर्वेद मार्तण्ड श्री स्वामी लच्छीराम जी

जैसों के चरणों में चिरकाल तक विद्या प्राप्त के साथ साथ औषध निर्माण का पूरा २ ज्ञान प्राप्त किया है। वास्तव में भिवानी के वैद्यों में स्वामी कृपाराम वैद्य का ही आयुर्वेद चिकित्सा में सर्व श्रेष्ठ स्थान सम्मानित हैं। आप में सब से बड़ा विशेष गुण यही है कि आप की पवित्र और दयालु आत्मा ने गरीब और अमीर एक ही समझे हैं। जो बहुमूल्य औषधियां आप अमीर को देते हैं वही औषधी गरीब रोगी के लिये आप के उदार और विशाल हाथों से दी जाती है। और प्रायः आपके चिकित्सालय से गरीब वर्ग ही अधिक औषध प्राप्त करते हैं

प्रभु के प्राण निर्धन जन आप को हर्ष के साथ अपनी सुखी आत्मा से आशीर्वाद प्रदान करते हैं उसका फल यह है कि भिवानी की सभी सस्थायें प्रायः आपके सहयोग की भारी इच्छुक रहती हैं। विशेष क्या भिवानी म्युनिस्पिल इलैक्सन के आप आचार्य एवं पण्डित माने जाते हैं। आप कई बारम्युनिस्पिल कमेटी के मेम्बर भी रह चुके हैं। जिस पर आप ने वरद हस्त रख दिया वह सफल ही होगया। स्वामी जी के विषय में कुछ भी लिखना सूर्य के आगे दीपक रखना है। स्वामी जी सर्व प्रिय मानव हृदय योग्य पुरुष हैं इनकी सेवा तथा इनके सच्चे स्नेह में बन्धे व्यक्ति सदा कृतज्ञ रहते हैं।



* सौपर्णी—परिवार *

इन्हें अपना सब कुछ मानते हैं । । जिस साधू का जीवन उपकारी जीवन है वही सच्चा और वन्दनीय साधु है । स्वामी जी कुम्भ तथा ग्रहण के अवसरों (मेलों) पर बहुत सेवा करते हैं । स्वामी कृपाराम जी इस युग के महान व सच्चे साधु हैं ।

सौपर्णी परिवार

स्वर्गीय श्री डा० जयदयाल जी एक बहुत अनुभवी डाक्टर हो चुके हैं पहले आप नाभा रियासत में डाक्टरी का कार्य करते थे और सरकारी हस्पताल में मुख्य डाक्टर थे। आपने इस प्रान्त में बहुत उन्नति प्राप्त की है । आप रामायण के बहुत प्रेमी थे, रामायण पढ़ते २ आपने इस नाशवान शरीर का त्याग किया। आपके सुपुत्र श्री कान्तीचन्द्र जी वकील और श्री सुरेशचन्द्र जी वकील दोनों ही बहुत योग्य और शिक्षित महानुभाव विवेकयुक्त व्यक्ति हैं, सरलता और न्यायोचित प्रकृति के होने के साथ २ कर्मनिष्ठ ब्राह्मण हैं । इस परिवार में

डाक्टर जनार्दन जी सौपर्णी

आप शहर के एक सार्वजनिक कार्य कर्ता–मिलनसार बुद्धिमान मधुर भाषी सफल डाक्टर हैं । प्रथम आपने उच्चतम अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त कर डाक्टरी की विधिवत शिक्षा प्राप्त करनी प्रारम्भ की फिर आप ने सिविल हस्पताल में कई

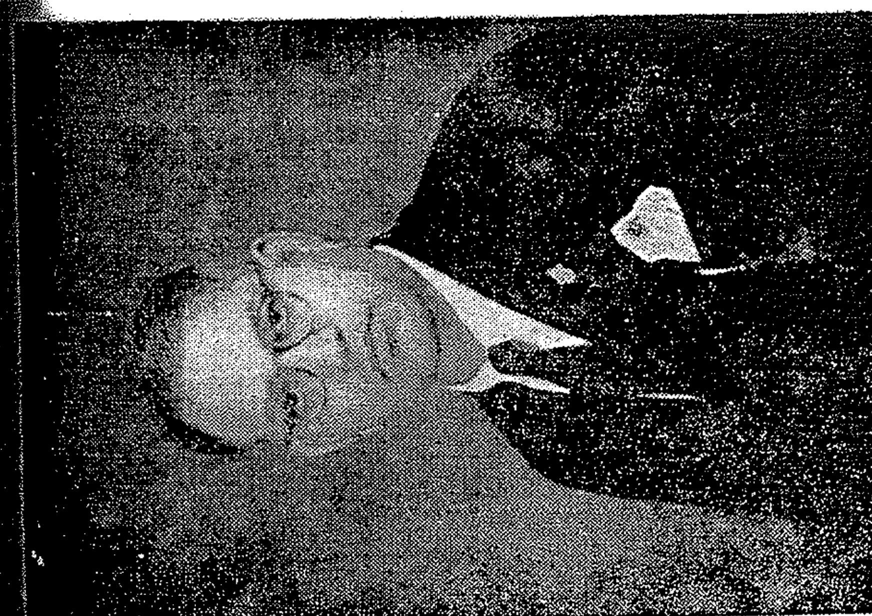
वर्षों तक कार्य किया आपका प्रेम और सेवाएं जो आप के द्वारा जनता की कीगई हैं लोक विदित हैं आपके शुभचिंतकों के परामर्श से आपने अपनी स्वतन्त्र श्री हरीदेव फार्मेसी का संस्थापन कर बहुत परिश्रम और उद्योग द्वारा ख्याति प्राप्त की साथ ही साथ यहां के हर एक कार्य में पूर्ण सहयोग देकर आप सर्व प्रिय नेता बनकर आज समाज में प्रतिष्ठा सम्पन्न व्यक्ति माने जाते हैं आपने सुधारक व्यायामशाला की स्थापना की और वह आज भारत स्काउट ऐसोसियेशन के नाम से बहुत सेवा कर रही है। आप के दोनों पुत्र आप ही के सहयोग में डाक्टरी का काम करते हैं। इससमय डाक्टर साहबने कलकत्ता में एक डिस्पेन्सरी की स्थापना की है जिस की वजह से कलकत्ता निवासी भिवानी वालों को काफी फायदा हुआ है। डाक्टर साहब एक सहृदय कुशल चिकित्सक एवं सिद्ध हस्त डाक्टर हैं भिवानी की तरह कलकत्ता में भी सन्मान प्राप्त कर रहे हैं।

धाराड़वाला वंश

इस वंश में श्री पं० हरस्वरूप जी शर्मा बहुत प्रतिष्ठित व्यापारिक क्षेत्र में सम्मानित महानुभाव हो चुके हैं। उनके सुपुत्र अब श्री देवव्रत शर्मा हैं जो बहुत सुयोग्य विद्वान व्यापार कुशल प्रेमी महानुभाव हैं, आप अपने सम्पादकत्व में भिवानी



डा० भिष्मचन्द जी M. B. B. S.



श्री डा० जनार्दन जी सौपर्णा

से "एकता" नामक पत्र कासफलता पूर्वक सम्पादन कर चुके हैं कलकत्ता में चरक कैमिकल फार्मेसी के आप चेयरमैन हैं आपकी फार्मसी से विशुद्ध आयुर्वैदिक औषधियों का निर्माण होता है और शुद्ध ब्राह्मी आंवला तेल आपका उस प्रान्त में बहुत प्रसिद्ध है आप हिन्दी अंग्रेजी के योग्य विद्वान हैं ! आप का सम्बन्ध हरियाणा प्रान्त के राष्ट्रीय नेता श्री पं० श्रीराम जी शर्मा एम० एल० ए० की सौभाग्यवति सुपुत्री के साथ सम्पन्न हुआ है । आप प्रेमी और राष्ट्र प्रेमी कांग्रेसी विचारों के दृढ़ संकल्पी और विचारशील, प्रतिष्ठा सम्पन्न महानुभाव हैं आप के लघुभ्राता श्री सत्यव्रत शर्मा आपके सहयोग में बड़ी चतुरता और सावधानी से कलकत्ते में कार्य करते हैं । आपका विवाह बड़वा ग्राम निवासी श्री ज्वालाप्रसाद जी के यहां हुआ है ।

तिवाड़ी परिवार

इस परिवार का गौत्र सांण्डिल्य है । पहले इसमें अच्छे अच्छे योग्य व्यक्ति हो चुके हैं । श्री जमुनादास जी तिवाड़ी इस परिवार में बहुत सम्मान युक्त व्यक्ति हैं, कलकत्ता व्यापारिक क्षेत्र में भी इन्होने अच्छा मान प्राप्त किया है इनके पुत्र श्री गूगनराम जी तिवाड़ी हैसियन बोरे के काम में ख्याति प्राप्त महानुभाव हैं इनकी फर्म का नाम श्री "गूगनराम रामप्रताप एण्ड कम्पनी" पड़ता है और यह बहुत सज्जन प्रकृति

के प्रसन्न मुख सहिष्णु मानव हैं। स्वाभिमानी होने के साथ स
इन्हों ने अपने बाहुबल से काफी सम्पति उपार्जित की है यह
बाल्यकाल से ही अत्यन्त चतुर और लोक प्रिय होने के कारण
कलकत्ता में अच्छा मान प्राप्त किये हुवे हैं।

इसी परिवार में श्री बनारसीदास जी तिवाड़ी बम्बई में स्वतन्त्र व्यापार कर रहे हैं और बहुत शक्तिशाली वीर पुरुष हैं।

श्री गजानन्द जी तिवाड़ी:—यह किशनलाल जालान फ्री आई हस्पताल में कार्य कर रहे हैं और बहुत सज्जन तथा मिलनसार प्रकृति के उद्योगी महानुभाव हैं।

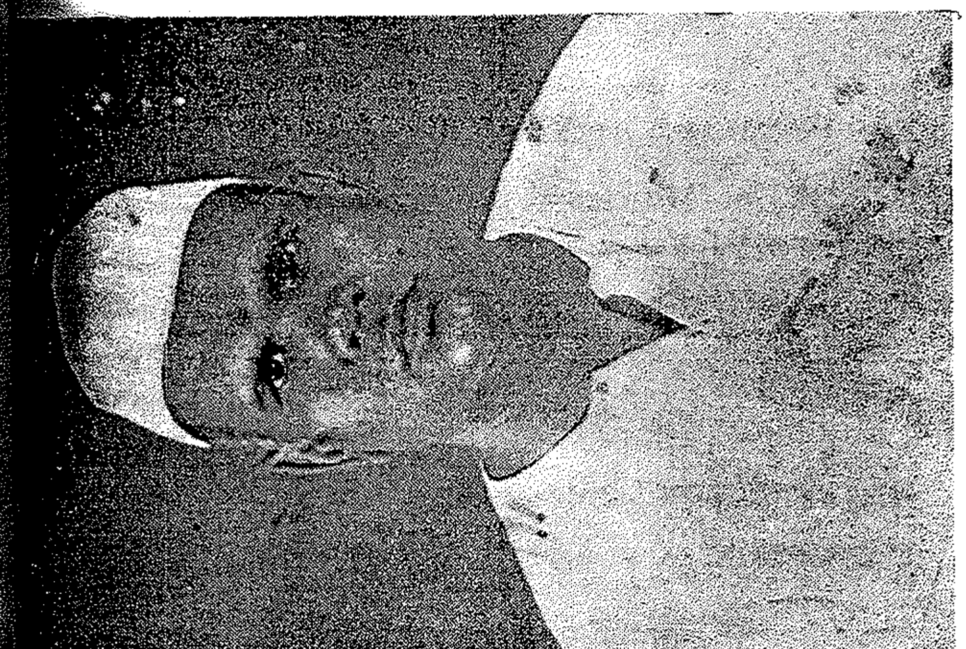
बद्रीप्रसाद जी तिवाड़ी

इस वंश का गौत्र भारद्वाज है इसमें श्री पं० बद्रीप्रशाद जी तिवाड़ी बहुत योग्य व्यक्ति होचुके हैं। अब इनके वंश में पं० कालीचरण शर्मा तथा पं० मखनलाल जी हालुवासियों के मन्दिर में सेवा पूजा करते हैं और इनके मकान आदि हालु-बाजार में बने हुए हैं। इस परिवार का शहर में काफी सम्मान है और ब्राह्मणों में प्रतिष्ठा युक्त परिवार माना जाता है।

मस्ता परिवार

इस परिवार का गौत्र कौत्स है इस वंश में अच्छे र
कर्मकाण्ड के विद्वान हो चुके है। श्री दिलसुखराय जी मस्ता,





एवं श्री रामगोपाल जी मस्ता बहुत ही योग्य एवं नगर प्रसिद्ध व्यक्ति हुए हैं । वर्तमान समय में श्रीनिवास जी मस्ता बहुत योग्य मिलनसार तथा प्रतिभासम्पन्न व्यक्ति हैं और इस समय आप दाता ट्रांसपोर्ट कम्पनी के सुयोग्य मैनेजर पद पर कार्य कर रहे हैं और भिवानी नगर में इनका काफी सम्मान है और यह हर कार्य के कुशल प्रबन्धक समझे जाते हैं । इनके सुपुत्र देवकीनन्दन, सुरेशचन्द्र, प्रकाशचन्द्र आदि हैं ।

श्री नन्दराम जी मस्ताः—यह भी बहुत होशियार तथा मिलनसार प्रकृति के सुयोग्य महानुभाव हैं और व्यापारिक क्षेत्र में अच्छा अनुभव रखने के कारण सम्मान प्राप्त किये हुवे हैं । इनके सुयोग्य पुत्र बलभद्र जी मस्ता दाता—ट्रांसपोर्ट में ही कार्य करते हैं और हिन्दुत्व विचार धारा के सुयोग्य महानुभाव हैं ।

श्रीदत्त जी मस्ताः— आप दिजसुखराय जी के सुपुत्र हैं, मस्ता परिवार में योग्य व्यक्ति माने जाते हैं भगवान शंकर के अनन्य उपासक एवं स्वावलम्बी ब्राह्मण हैं । श्री जमुना—प्रसाद जी एवं श्री बनवारीलाल जी तथा सीताराम जी बहुत योग्य और अपने पूर्वजों की चलाई हुई परम्परा के अनुसार कार्य करते हैं और गौरव के साथ रहते हैं ।

श्रीपं० गगनप्रसाद जी शर्म्मा:—आप रायगढ में लोहे का व्यापार करते हैं और यह भी सज्जन प्रकृति के व्यक्ति हैं ।

महात्मा शम्भुदयाल जी मोतीला वाले

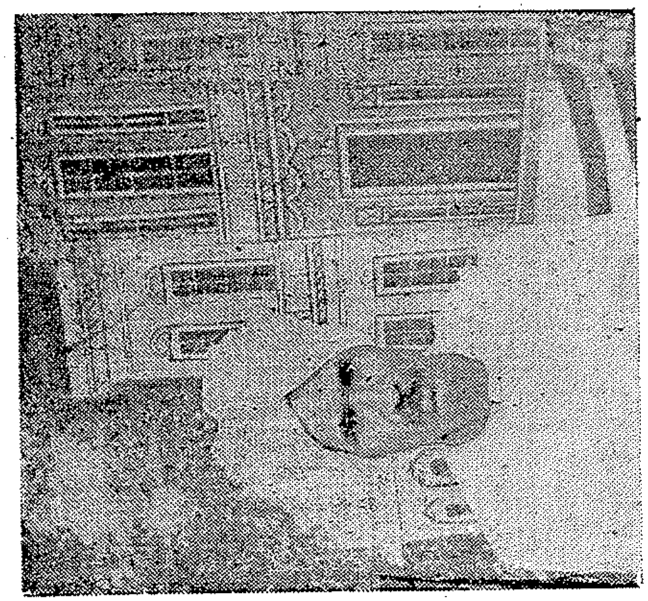
आपका जन्म सन् १६८१ मोतीला ग्राम जिला गुड़गावां में हुआ था और लाहौर में इन्जनियरिंग की उच्च शिक्षा प्राप्त कर टेकन (ग्वालियर) में S. D. O. पद पर सरकार द्वारा नियुक्त कर दिये गए, २७ वर्ष तक आप बहुत ही ईमानदारी बुद्धिमत्ता से कार्य करते हुए एक कर्मयोगी की भांति सर्व प्रिय महानुभाव बनगए। १६३२ में आप स्वास्थ्य लाभार्थ भिवानी पधारे तबसे भिवानी को ही अपना प्रमुख निवासस्थान बना लिया आपका पवित्र जीवन यज्ञ मय है आपने भक्ति एवं अध्यात्मवाद पर कई पुस्तकें भी लिखी है भारत प्रसिद्ध श्री तुलसीराम जी दिनेश के आप गुरु हैं आपही के संसर्ग से उन्हे भक्ति मार्ग का ज्ञान प्राप्त हुआ था। आप हिन्दी साहित्य के अपूर्व विद्वान तथा उच्च कोटि के सन्त हैं। सादगी की तो आप प्रत्यक्ष मूर्ति हैं, नंगे पाव और नंगे सिर पैदल अनेकों बार दूर दूर की यात्रा कर आए हैं। आप संशय रहित पूर्ण ज्ञानी तथा सदैव भक्ति में तल्लीन रहने वाले महात्मा हैं।

खरकिया परिवार

इस परिवार का गौत्र भारद्वाज है और यह आदि निवासी खरक गांव के होने के कारण इन्हे खरकिया कहा जाता है।



स्व० सोहनलाल जी



— श्री काशीनाथ जी वेदपाठी —



श्री रामुदयाल जी

इस परिवार में पहिले अच्छे २ विद्वान कर्म काण्डी कथा वाचक हो चुके हैं। अब स्वर्गीय श्री विष्णुदत्त जी के सुयोग्य सुपुत्र पं० गोपीराम जी शर्मा बहुत मिलनसार धर्म—निष्ठ एवं विद्वान और योग्य पण्डित हैं। आप कर्मकाण्ड और ज्योतिष शास्त्र के अनुभवी एवं जन्म पत्री आदि के विद्वान हैं आपके सुपुत्र श्री रामकृष्णदास जी एवं प्रेमनरायण आदि शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

श्री पं० श्रीनिवास जी शास्त्रीः—आप ज्योतिष शास्त्र के अच्छे ज्ञाता एवं संस्कृत के शास्त्री और कथा वाचक भी है। बड़े सज्जन व्यवहार कुशल और शान्त स्वभाव के महानुभाव हैं। आप हालुबाजार में ज्योतिष का कार्य करते हैं।

श्री मुरारीलाल जी शास्त्रीः—आप सनातन विचारों के संयमीजीवन युक्त शुद्ध महानुभाव हैं आप कथा वाचक एवं कर्म काण्ड तथा ज्योतिष का भी सफलता पूर्वक कार्य करते हैं।

श्री रामबिलास जी शास्त्रीः—आप ज्योतिष एवं कर्मकाण्ड के कार्य में निपुण तथा शास्त्रों के अच्छे ज्ञाता हैं और निर्भिमानी सात्विक विचारों के व्यक्ति हैं।

इस परिवार में श्री शिवनरायण जी शर्मा अच्छे वक्ता व सादगी युक्त महानुभाव हैं।

भिवानी विद्वत् समाज में इस परिवार की बहुत बड़ी प्रतिष्ठा है यह सभी शंकर भगवान के अनन्य उपासक तथा पूर्ण आस्तिक विचारों के महानुभाव हैं।

श्री महाभारती जी परिवार

यह भिवानी शहर का बहुत पुराना प्रसिद्ध परिवार है और इनका आदि निवास कुरुक्षेत्रान्तर्गत कौल ग्राम है। श्री महाभारती जी बहुत बड़े प्रसिद्ध तान्त्रिक एवं महाभारत के एक अद्वितीय विद्वान थे, इन्द्र यज्ञ के महान् ज्ञाता और तातकालिक फल दिखलाने वाले महापुरुष थे। अब पं० श्री-निवास जी महाराज बहुत अच्छे विद्वान मिलनसार सुयोग्य महानुभाव हैं और कर्म काण्ड के अच्छे विद्वान् होने के कारण इन्द्रयज्ञ द्वारा एक दो बार तत्क्षण फल दिखला चुके है।

श्री मुरारीलाल जी शास्त्री:-यह सनातन धर्म के माने हुए उपदेशकों में से हैं, भारतवर्ष के प्रत्येक प्रान्त में घूम घूम कर इन्होंने बहुत प्रचार किया है, अफ्रिका आदि देशों में भी सनातन धर्म का प्रचार कर काफी ख्याति प्राप्त की है। आप माने हुए विद्वान होने के साथ साथ अच्छे सुवक्ता भी हैं और भारतवर्ष के पण्डितों में आपका सन्मान है।

श्री विष्णुदत्त जी शर्मा:-आप आयुर्वेद का कार्य कौल ग्राम में ही करते हैं और सफल वैद्य समझे जाते हैं।

श्री पं० भीमसैन जी शर्मा:-आप बहुत मिलनसार सुयोग्य कार्य कर्ता प्रतिष्ठा सम्पन्न बुद्धिमान महानुभाव हैं कलकत्ता में किसी फर्म में योग्यता पूर्वक कार्य कर रहे हैं। आप के भाई श्री नित्यानन्द जी शर्मा बहुत योग्य सरल स्वभाव के व्यक्ति हैं

श्री महरोली वाला परिवार

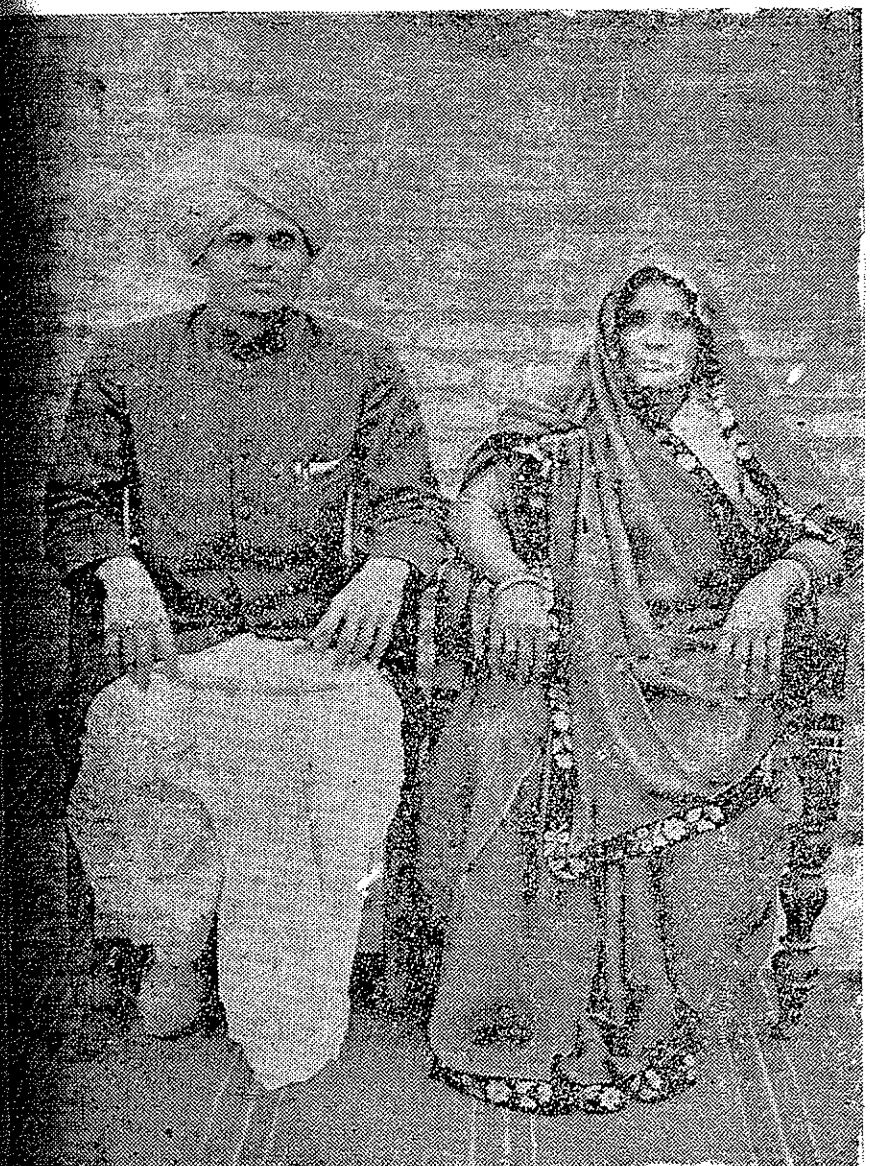
श्री पं० ईश्वरी प्रसाद जी शर्मा:—इनका बचपन से ही कर्मठ जीवन रहा है लोकोपकारी कार्य में श्री पं० ईश्वरी प्रसाद जी का नाम भिवानी में सब से पहले लिया जाता है, आप मित्र धर्म के इतने सहृदय अनुयायी हैं कि जिसके साथ आपकी मित्रता होगई उस के लिये आप सब कुछ हैं। आप में ईमानदारी और सत्य व्यवहार कूट कूट कर भरी हुई है। आपके हृदय में किसी भी व्यक्ति के प्रति अनहित की भावना उत्पन्न नहीं होती जैसा भी आप से बनता है हर व्यक्ति की आप मदद करते हैं आप जब तक भिवानी रहे ऐसा कोई भी वहां सार्वजनिक कार्य नहीं हुआ जिसमें पण्डित जी का किसी न किसी रूप में हाथ न रहा हो।

आपका अदम्य साहस कर्मनिष्ठ कार्य और सदाचार ही आपके विशेष गुण हैं, श्री शर्मा जी की शान्त प्रकृति और गम्भीर भाव ही इनका विशेष प्रभाव प्रकट करते हैं।

इस समय आप सहारनपुर स्टार पेपर मिल्स में उच्च पद पर कार्य कर रहे हैं, मिल में मालिक और मजदूरों के सम्बन्ध को जोड़ने वाली आप कड़ी समझे जाते हैं, इसी लिये आप की मिल मालिक बहुत कदर करते हैं और मजदूर आप में पूर्ण श्रद्धा रखते हैं। सहारनपुर स्टार पेपर मिल्स में आज सब से बड़ा सन्मान शर्मा जी का इनकी योग्यता शुद्ध व्यवहार और कार्य कुशलता के ही कारण हैं शर्मा जी की धर्मपत्नी श्री कमला शर्मा बहुत सरल स्वभाव की गृहलक्ष्मी थी अभी थोड़े दिन पूर्व स्वर्गवास होगया है। आप के पुत्र श्री महावीरप्रसाद जी हंसमुख प्रकृति के निर्भिमानी श्रेष्ठ गुणों युक्त योग्य व्यक्ति हैं बम्बई सिनेमा संसार में आप अपने विशेष गुणों के कारण अच्छी तरक्की कर रहे थे परन्तु इस समय आप अपने पिता जी के पास ही उनकी आज्ञा में रहकर स्टारपेपर मिल्स में कार्य कर रहे हैं।

मिश्र परिवार

इस परिवार का गोत्र भारद्वाज है, यह परिवार एक बहुत बड़ा और विद्वान परिवार है। जिस में पं० माधोप्रसाद जी मिश्र पं० राधाकृष्ण जी मिश्र जैसे साहित्य के धुरन्धर विद्वान् लेखक, पूर्ण वक्ता सभा चतुर नेता हो चुके हैं। जिनके द्वारा बहुत से कार्य सफल हुए हैं। इसी वंश में पं० रामरिछपाल जी



श्री पं० ईश्वरीप्रसादजी शर्मा
धर्मपत्नी: स्व० कमलादेवी शर्मा

बड़े अच्छे कर्म काण्ड के विद्वान ज्योतिषी और सुयोग्य मिलनसार तथा पक्के सनातन धर्मी हैं। पं० राधाकृष्णजी के सुयोग्य पुत्र स्वर्गीय श्री कृष्णकुमार जी शास्त्री के पुत्र ऋषिकुमार शर्मा है जो शिक्षा प्राप्त कर रहा है। शिवकुमार जी के एक दत्तक पुत्र सुरेश शर्मा पढ रहा है।

बनेटी वाला परिवार

इस वंश में पं० रामेश्वरदास जी ज्योतिषी बड़े विद्वान और सत्य प्रिय हो चुके हैं उन्हीं की सन्तानों में पं० श्रीदत्त वैद्यक का कार्य करते हैं। और पं० जगन्नाथजी शर्मा अहमदाबाद में अपना स्वतन्त्र कपड़े का व्यापार करते हैं। कपड़ा समाज में आपकी बड़ी प्रतिष्ठा है आपके छोटे भाई भी दुकान का कार्य करते हैं। आप सुयोग्य मिलनसार व्यापार कुशल एवं स्वावलम्बी व्यक्ति हैं।

भाडा परिवार

इस परिवार में ज्योतिष शास्त्र का बड़ा प्रभाव रहा है इस समय श्री पं० हरीराम जी शास्त्री बी० ए० जो गणित के एक अपूर्व विद्वान हैं आपका जन्म पत्र फलादेश शत प्रतिशत सफल सिद्ध है। आप अंग्रेजी तथा संस्कृत साहित्य के पण्डित हैं, और विचार शील मिलनसार व्यक्ति हैं।

सांवड़िया परिवार

इस परिवार में पं० देवीदत्त जी शर्मा अपना अलग कार्य करते हैं और पं० बदरीप्रसाद जी व्यापारिक क्षेत्र में कार्य करते हैं श्री पं० विष्णुदत्त जी शर्मा एक अच्छे अनुभवी वैद्य हैं, कलकत्ते के मारवाड़ी हस्पताल की निर्माणशाला में आप सफलता के साथ कार्य करते रहे हैं। आप बड़े मिलनसार स्वाभिमानी स्वावलम्बी व्यक्ति हैं। भिवानी की माहेश्वर रसशाला के आदि संस्थापक एवं संयोजक आप ही हैं, इस समय मारवाड़ी रिलिफ सोसाईटी दार्जलिंग में कार्य कर रहे हैं और वहां आपने काफी ख्याति एवं सफलता प्राप्त की है।

दादरी वाला वंश

इस परिवार में पं० रामरिच्छपाल जी वैद्य हो चुके हैं। अब पं० श्यामलाल जी वैद्य आयुर्वेद का कार्य करते हैं दूसरे श्यामसुन्दर जी का स्वर्गवास होगया है, इन्हींमें पं० रामस्वरूप जी शर्मा हैं जो विशेष कर भिवानी ही रहते हैं, और प्रभाव शाली व्यक्ति हैं। आपका लड़का सत्यनारायण शर्मा कलकत्ते में मेडिकल स्टोर का संस्थापन कर गौरव युक्त कार्य कर रहा है। इन्हीं में श्री पं० लक्षमीनरायण जी शर्मा थे जिनका स्वर्गवास होगया। उनके सुपुत्र श्री श्यामलाल शर्मा है जो शिक्षा प्राप्त कर रहा है, बहुत सरल स्वभाव का लड़का है। दादरी वाला परिवार यहां सम्मानित और बड़ा परिवार है!

नवादा वंश

यह गामेती कौशिक ब्राह्मण हैं और जमींदारी का कार्य प्रारम्भ से ही करते हैं नवादों का दरवाजा जिसमें बाहिर निकटस्थ ग्रामों के आने वालों के लिये अच्छा स्थान बना हुआ है। यहां पर ५-१० महानुभाव हर समय विराजमान रहते हैं यह एक प्रकार का अतिथि सेवा भाव युक्त दरवाजा कहा जाता है जो भगसी पाने में श्री बिहारी जी महाराज के मंदिर के पास में है। पं० मोहरूमल जी और स्योरामदास जी दोनों प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं और दोनों भाई कृषि कार्य करते हैं सरल स्वभाव और अच्छे विचारों के महानुभाव हैं।

फुलू का वंश

अधिकतर यह महानुभाव कृषि का कार्य करते हैं। और यहां प्रतिष्ठा सम्पन्न माने हुए हैं। यह गामेति ब्राह्मण हैं इनमेंश्री चन्दगीराम जी शर्मा बहुत बुद्धिमान परम उद्योगी उत्साही और कुशल व्यक्ति हैं। प्रेस के काम में शहर में अद्वितिय हैं। बड़े मिलनसार और चतुर व्यक्ति हैं।

श्री सामराज जीः—प्रभु भक्त स्वावलम्बी जीवन बनाये हुए हैं। इनका एक मन्दिर भी है वैसे जमीन भी इन लोगों के पास अच्छी है। इस परिवार के लोगों का निर्वाह अधिकतर खेती से होता है आनन्द और शान्ति से समय व्यतीत करते हैं

सुराणा वंश

पं० जीवनराम जी सुराना:—आपका गोत्र कौशिक है शासन लाटा है पहिले आप अध्यापक थे आप राजपूतों के पुरोहित हैं आपके सुपुत्र पं० देवीदत्त जी गुडस क्लर्क है।

श्री पं० थानाराम जी (चौधरी):—आप जमीदारी और दलाली का कार्य करते हैं आपकी आयु ६० वर्ष के लगभग है आपकी मान प्रष्ठिा बहुत है।

पं० जुहारमल जी शर्मा:—पहिले आप जमीदारी का कार्य करते थे एवं चौधरी थे अब आप अपना जीवन शान्ति में व्यतीत कर रहे हैं।

पं० गणपतराय जी:—आप जमींदारी का काम करते हैं

पं० हरनारायण जी:—आप पहले डबरूगढ रहा करते थे अब यहां पर रहते हैं जिनके मकान पोद्दारों के कुए के पास श्याम के दरवाजे के अन्दर हैं। इसी वंश में मानुरामजी आदि है अधिकांश इस वंश के व्यक्ति खेती का कार्य कर शान्ति से जीवन व्यतीत करते हैं।

पं० बनवारीलाल जी:—आप हरीराम सुराणा परिवार में हैं पहिले यहां कपड़े का व्यापार करते थे अब बाहर कार्य करते हैं मगोग्य सज्जन हैं।

मुण्ढालिया परिवार

यह परिवार श्री वैष्णव सम्प्रदाय का अनुगामी है इस में अच्छे २ महात्मा प्रभु भक्त और विद्वान हो चुके हैं। अब श्री पं० श्यामसुन्दर जी है जो अध्यापक का कार्य कर शान्ति और सुख का जीवन व्यतीत करते है। श्री लक्ष्मीनरायण जी बाहर रहते हैं। यह परिवार शहर का प्रतिष्ठित परिवार है।

श्री हरीवंश जी का वंश

महात्मा श्री हरीबंश जी मौनी का नाम कौन नहीं जानता वह सत्य संकल्प ईश्वर भक्त परम विद्वान महापुरुष थे। अब पं० हरीप्रसाद जी एवं शिवप्रसाद जी आदि अपना २ कार्य कर अपने जीवन को आनन्द के साथ व्यतीत करते हैं।

पं० बैजनाथ शर्मा

आपका कौशिक गौत्र में। आप स्वर्गीत बिश्वम्बरदयाल जी शर्मा के सुपुत्र हैं। आपका जीवन सर्व प्रिय व पारमार्थिक जीवन है, पहिले आप कलकत्ते में व्यापारिक क्षेत्र में कार्य करते थे। अब आप सनातन धर्म आन्दोलन में कार्य कर रहे हैं सुयोग्य वक्ता तथा कथा वाचक भी हैं।

चौरासिया परिवार

इस परिवार में श्री पं० मदनलाल जी चौरासिया बहुत प्रभावशाली व्यक्ति हो चुके हैं। और अब इस में पण्डित सोहनलाल जी विद्यमान हैं इसी में मातृदत्त जी वैद्य हैं जो आयुर्वेद का कार्य करते हैं, आपका जीवन सार्वजनिक है। इसी में पं० फूलचन्द जी शर्मा हैं श्री रामचन्द्र जी चौरासिया सर्व प्रिय स्वाभिमानी उदारमना सुयोग्य महानुभाव हैं आप कानपुर, में कार्य करते हैं आपके विचार बड़े उच्च हैं तथा मित्रों के आप मित्र और सुयोग्य व्यक्ति हैं।

पाटनिया परिवार

आप आदि वासी पाटन स्टेट के तथा गौत्र कौशिक हैं पहिले इस वंश में अच्छे २ व्यक्ति भजनानन्दी संतोषी तथा सम्माननीय महापुरुष हो चुके हैं।

पं० रामेश्वरदास जी शर्मा पाटनिया:—आपके उद्योग परिश्रम से श्री नामदेव पाठशाला का संचालन हो रहा है आप बड़े शिक्षा प्रेमी समझदार और पुरुषार्थी तथा सरल स्वभाव के व्यक्ति हैं श्री नामदेव मन्दिर जो पतराम दरवाजे के बाहिर उन्नत अवस्था में है। उसका श्रेय आपको ही है। इस मन्दिर में कथा कीर्तन और महोत्सव बहत धूम धाम

से होते रहते हैं। आपके परामर्श को लेकर श्री बृजलाल जी झुंझनू वाले ने एक मन्दिर राणी सती दादी जी का निर्माण करवाया है। आपका जीवन या तो बालकों को शिक्षा दान करने के लिये अथवा श्रीनामदेव मन्दिर की महानता के लिये ही है। आपसे छोटे पं० किशनलाल जी शर्मा अध्यापक का कार्य इसी पाठशाला में कर रहे हैं। स्वर्गीय कृपाराम जी के पुत्र राधेश्याम आपके सहयोग में ही पाठशाला में बड़ी बुद्धिमत्ता व योग्यता पूर्वक अध्यापक का कार्य करते हैं।

श्री नूनकरण जी पाटनिया:—आप भी इसी परिवार में हैं आप बड़े बुद्धिमान कानूनों से युक्त समझदार व्यक्ति हैं। आप मुखत्यारी का कार्य बड़ी तत्परता और सावधानी के साथ करते हैं। और विचारशील महानुभाव हैं।

श्री जगन्नाथ जी पाटनिया:—आप ज्योतिष कर्मकाण्ड के पूर्ण विद्वान हैं आप अपना जीवन स्वावलम्बी बनाये हुए और स्वतन्त्र आटे के मिल का संचालन कर रहे हैं।

सागवानिया परिवार

श्री स्वर्गीय पं० सेढमल जी सागवानिया व्यापारिक क्षेत्र में ख्याति प्राप्त और सनातन धर्मी व्यक्ति हो चुके हैं। उनके पुत्र श्री सन्तलाल जी जो कपड़े का स्वतन्त्र व्यापार करते हैं। दूसरे श्री पन्नालाल जी वैद्य जो माहेश्वरी रसशाला के संचालक हैं। तीसरे हरिराम जी हैं जो अनाज का स्वतन्त्र

व्यापार करते हैं। चौथे ताराचन्द जी बिरला एयर वेज में कार्य कर रहे हैं। भिवानी का ख्याति प्राप्त परिवार है।

नारनोली परिवार

आपका गौत्र कौशिक है। आपके पूज्य पिता श्री गणेशदत्त जी महाराज भगवत् भजनी और ज्योतिषी थे। उनके रामेश्वरदत्त जी, विश्वेश्वरलाल श्रीदत्त जी दोनों भाई ज्योतिष के अच्छे जानकार हैं आपका मन्दिर डोभी तालाब पर है आप अधिक भिवानी में निवास करते हैं। आपसे छोटे प॰ ऋषिकेश जी दुकानदारी का कार्य करते हैं। और भी इस परिवार में बहुत व्यक्ति हैं।

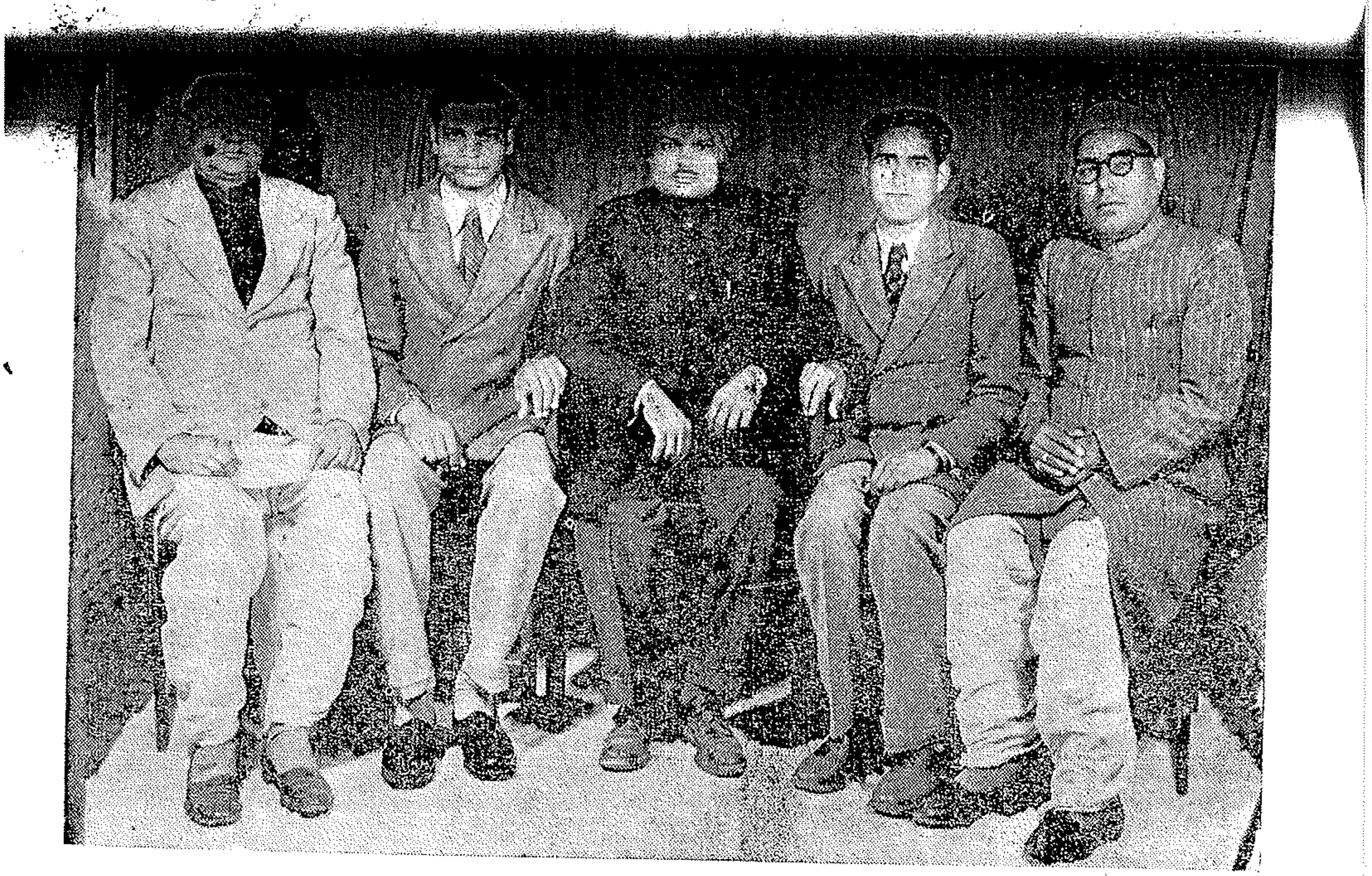
धनानिया परिवार

इस परिवार का गौत्र अत्री है। आदि निवासी धनाना ग्राम के होने के कारण यह धनानियें कहलाते हैं। श्री बनवारी लाल जी एक अच्छे मुनीम है। और व्यापारिक कार्य में कुशल व्यक्ति हैं, सीधे सादे स्वभाव के सन्तोषी महानुभाव हैं। आपके पुत्र श्री सत्यनरायण रामविलास रामकुमार आदि २ हैं।

श्री मधुसूदन जी अभय:—आप पहिले भिवानी में ही स्वतन्त्रता पूर्वक कपड़े का व्यापार करते थे। बड़े मिलनसार







परिश्रमी उद्योगी कर्मशील व्यक्ति हैं। आज कल आप मुजफ्फरनगर में कार्य कर रहे हैं, आपके पुत्र हरिचरण शर्मा कमीशन एजेन्टी का कार्य करते हैं। बहुत सरल स्वभाव के है।

श्री दुर्गादत्त जी शर्माः—इनका गौत्र कौशिक है, यह भी धनानियों के नाम से ही शहर में विख्यात है। प० चिरंजी लाल जी वैद्य भारत प्रसिद्ध वैद्य गिने जाते थे सभी उन्ही महानुभावों की सन्तान है। आप भी आयुर्वेद चिकित्सा में एक अनुभवी वैद्य एवं बड़े मिलनसार व्यक्ति हैं। आपके पुत्र श्री भवानीशंकर कौशिक वायुयान चालक है और कलकत्ते में बहुत अच्छे पद पर कार्य कर रहे हैं। बड़े साहसी उद्योगी मिलनसार व्यक्ति हैं।

श्री अम्बीकादत्त जीः—आप प्रथम समय से ही स्वावलम्बी उद्योगी एवं मिलनसार महानुभाव हैं। आपके पुत्र महावीर प्रसाद कौशिक हैं।

डाक्टर वैजनाथ जी शर्मा कौशिक

आप भिवानी के कुशल डाक्टर और धनानियां परिवार में योग्य व्यक्ति समझे जाते हैं "बेबी फ्री हस्पताल" के आप इन्चार्ज हैं जो बच्चों के निदान का एक ही हस्पताल है आप व्यवहार कुशल उदार हृदय और मिलनसार तथा मित्रों के सच्चे मित्र हैं। समाज में आपकी काफी प्रतिष्ठा है. आपने

अपने सद्व्यवहार के कारण ही भिवानी म्युनिसिपल कमेटी के चुनावों में सफलता प्राप्त की है। इस समय आप भिवानी म्युनिसिपल कमेटी के जू० वाईस प्रेजीडेन्ट हैं।

सन् १९५१ में जब श्री करपात्री जी महाराज द्वारा हिन्दु कोडबिल विरोधी आन्दोलन प्रारम्भ किया गया उस समय आप भिवानी से एक विशाल जत्थे के साथ उसके नायक होकर विरोध करने ऐसेम्बली भवन के सामने पहुंचे समाज सेवी एवं धार्मिक भावनाओं से युक्त आपकी विचार धारा है आप भिवानी रामराज्य परिषद के प्रधान हैं और १९४७ में आपने पुरुषार्थियों की जिस उदारता एवं योग्यता से निः शुल्क चिकित्सा की है वह अत्यन्त सराहनीय है। भारत-स्काउट एण्ड गाईड्स के आप उपप्रधान हैं।

पं० बुद्धदेव जी (शरश्चन्द्र) शर्मा

आप स्वर्गीय पं० नृसिंहदास जी पुजारी जो श्री सेठनन्दराम जी के मन्दिर के प्रधान पुजारी व गुरु थे उन्हीं के पुत्र हैं। आप बड़े प्रभु भक्त पुराणों के प्रवक्ता और अच्छे उपदेशक हैं वैसे आप सदैव से बड़े अच्छे विचार में रहने वाले संयमी हैं आप आजकल उड़ीसा प्रान्त कटक में श्री सत्यनारायण मन्दिर के प्रधान महन्त हैं। भगवान की सेवा पूजा में ही आपका विशेष समय व्यतीत होता है आप बड़े मधुरभाषी एवं



श्री पं० बुध्ददेव जी शर्मा (शरश्चन्द्र) पुराणाचार्य

मिलनसार प्रतिभा सम्पन्न भावुक सौम्य प्रकृति के सुयोग्य व्यक्ति हैं। कटक में आप की बड़ी मान प्रतिष्ठा है आपके द्वारा संस्थापित गीता जयन्ति का महोत्सव कटक में बहुत धूम धाम से मनाया जाता है कटक मेंगीता जी का घर घर प्रचार होना आप की धर्म निष्ठा का ही फल है। कटक के सुप्रसिद्ध रा० सा० श्री गिरधारीलाल जी मोड़ा आपमें बहुत श्रद्धा रखते थे और आपकी हर तरह सेवा मदद करते थे, आज उनके परिवार वाले भी तद्वत श्रद्धा रखते हुए आपको पूर्ण प्रतिष्ठावान बनाये हुए हैं। आपकी धर्म पत्नी भी योग्य विदूषी एवं आदर्शपति परायण बुद्धिमान महिला है। आप से बड़े पं० जगन्नाथ जी शर्मा यहां भिवानी मन्दिर में प्रभु की सेवा पूजा कथा आदि का कार्य सुचारु रूप से करते हैं कीर्तन में ही आपका विशेष समय व्यतीत होता है।

पं० धनपतराम जी शर्मा (बिजली वाले)

आपका गोत्र कौशिक हैं आपका निवास भवन बिचला बाजार में है और इलैक्ट्रिक हाउस के आप आफिस इन्चार्ज हैं आप विचार शील, कार्य कुशल, सरल स्वभाव, सत्य प्रेमी महानुभाव हैं। आप के महान विचारों के साथ २ देश भक्ति भी आपके पवित्र हृदय में है। आप आस्तिक और पूर्ण ब्राह्मण हैं आप के भ्राता पं० जयनारायण जी शर्मा पहिले भिवानी मे

हो कार्य करते थे अब कलकत्ते के व्यापार क्षेत्रमें कार्य कर रहे हैं। आप सर्वजन प्रिय सुयोग्य और अपने सिद्धान्त के पक्के महानुभाव हैं। आप के पुत्र चि० मुरारीलाल भारतीय वायुयान विभाग में स्टोर कीपर का कार्य योग्यता पूर्वक कार्य कर रहे हैं।

पेटवाड़िया वंश

पं० रामप्रसाद जी शास्त्री:-आप बास पेटवाड़ ग्राम के आदि निवासी हैं। पहिले आप वैश्य विद्यालय में संस्कृत के अध्यापक थे अब कानोडिया पाठशाला में पढाते हैं संस्कृत के अच्छे विद्वान् और योग्य व्यक्ति हैं।

पं० हुकमचन्द जी शर्मा

आपका गोत्र भारद्वाज है देहली में आप कार्य करते हैं आपकी देहली के व्यापारी वर्ग में प्रतिष्ठा व ख्याति है कपड़ा कर्मचारी संघ देहली के आप प्रधान हैं। आपका भवन सुरानों की गली में है आप विशेष रूपसे भिवानी में ही रहते हैं। आप का सुपुत्र लीलाधर शिक्षा प्राप्त कर रहा है, आपके पिता उदमी राम जी चौखानी एक महापुरुष थे।

श्री पुरुषोत्तमदास जी शर्मा

आप स्वर्गीय पं० जगदीशदत्त जी शास्त्री के सुयोग्य पुत्र हैं। आज कल आंखो की चिकित्सा करते हैं मिलनसार योग्य

व्यक्ति हैं आप के छोटे भाई परसराम जी बी० ए० बी० टी० गवर्नमेंट हाईस्कूल में अध्यापक हैं आप दोनों भाई सर्व जन-प्रिय और शिक्षित व्यक्ति हैं।

कविराज पं० जनार्दन शर्मा आयुर्वेदाचार्य

आप स्व० पं० मुरलीधर जी वैद्य पाटनिये के सुयोग्य सुपुत्र हैं आपका जन्म १६७८ में हुआ। भिवानी में संस्कृत शिक्षा प्राप्त कर आयुर्वेद शास्त्रों का आपने सुचारु रूप से विधिवत अध्ययन कर यहीं पर स्वतन्त्र आयुर्वेद चिकित्सा करने लगे। बाद में दानवीर सेठ किरोड़ीमल जी लुहारी वाले द्वारा श्री किरोड़ीमल दातव्य औषधालय रायगढ (मध्य प्रदेश) में प्रधान चिकित्सक के रूप में कार्य करने लगे। फलस्वरूप आज आपकी चिकित्सा प्रणाली पर हर एक व्यक्ति आपको सन्मान की दृष्टि से देखता है और आप के अधिकार में रह कर पूर्ण-तया निरोग हो आपका तथा श्री सेठ जी का धन्यवाद करते हैं।

आप प्रथम समय से बड़े मिलनसार, चतुर, समझदार और अनुभव प्राप्त व्यक्ति हैं। वैसे आप आयुर्वेदिक यूनानी चिकित्सा बोर्ड (मध्य प्रदेश) नागपुर के सम्मानित सदस्य भी हैं। आपके पवित्र हृदय में दया, उत्साह, रोगी के प्रति स्नेह एव सेवा करने की भावना है। ६ वर्ष से आप उसी औषधालय में जनता की सेवा कर रहे हैं।

श्री पं० रामप्रसाद जी वंश

इस में पं० सन्तलाल शर्मा हैं जो कर्म काण्ड का कार्य करते हैं, दूसरे श्री हीरालाल जी शर्मा हैं जो डाक्टर कहलाते हैं जिस समय जो कार्य उपस्थित होता है कर लेते हैं ।

बासिया परिवार

इसमें श्री पं० हीरालाल जी शर्मा वैद्य बड़े सत्यप्रिय कर्मशील और दृढ विचारों के मित्रों के मित्र और त्यागी पुरुष हैं। आप आयुर्वेद चिकित्सा का कार्य योग्यता पूर्वक करते हैं।

श्री सिद्ध जी वैद्य

पहिले आप हलवासिया धर्मार्थ औषधालय में प्रधान चिकित्सक थे अब आप यहां पर स्वतन्त्र ही सिद्ध जी औषधालय का संचालन कर रहे हैं। आपका आयुर्वेद चिकित्सा में भारी ज्ञान है आप सुयोग्य वैद्य हैं।

हीरापुरी

पं० हरलाल जी पुजारी एक साहसी और उत्साही व्यक्ति हैं और हीरापुरी डेरे के अध्यक्ष हैं। इनके छोटे भाई बाबूलाल जी आशाराम भानीराम के मन्दिर में सेवा पूजा का कार्य करते हैं और पण्डिताई भी करते हैं, योग्य मधुर भाषी सज्जन व्यक्ति हैं।।

श्री सालिगराम जी निघन्टू

आप बहुत समय से भिवानी ही रहते हैं। पहिले डिस्ट्रिक्ट बोर्ड तथा म्युनिस्पिल कमेटी में ओवरसियर के पद पर योग्यता पूर्वक कार्य करते थे। अब अपना स्वतन्त्र कार्य करते हैं। आपके सुपुत्र ज्ञानचन्द्र हिसार में ड्रिल मास्टर हैं। और पं० आनन्दप्रकाश वकील शहर में वकालत का कार्य योग्यता पूर्वक कर रहे हैं। वैसे आप सार्व जनिक कार्यों में भाग लेते रहते हैं सर्व प्रिय परिश्रमी उद्योगी और उच्च विचारों के व्यक्ति हैं प्रेमचन्द गवर्नमेंट कन्ट्राक्टर है और योग्यता पूर्वक कार्य करते हैं।

श्री कृष्णा कवि जी

आप भिवानी के ही नहीं बल्कि पंजाब और यू० पी० प्रान्त के एक माननीय कवि हैं। आपके कविता सम्बन्धि कई ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं आप राष्ट्रीय विद्यालय सीतापुर में हिन्दी शिक्षा के प्रधानाध्यापक हैं। सीतापुर में आप के द्वारा हिन्दी साहित्य व कवित्व सम्बन्धि योजनाओं का काफी प्रचार हुआ है। आपने अपनी योग्यता के बल पर भिवानीके नाम को प्रसिद्ध किया है। आपकी कविताओं में वीर रस की प्रधानता होती है। मिलनसार सुयोग्य और सज्जन व्यक्ति हैं।

श्री मुकुन्दलाल जी महाराज

आप पहिले व्यापारिक क्षेत्र में प्रतिष्ठा के साथ कार्य करते थे। आपका हालुबाजार में भव्य भवन है अब आप शान्ति मय जीवन के साथ प्रभु सेवा भजन कर रहे हैं। आप के श्री सत्यनरायण जी विशेष कर व्यापारिक क्षेत्र में कार्य करते हैं। इनके लड़के श्री रामकुमार जी शर्मा तथा नन्दकिशोर शर्मा फोटोग्राफर हैं जो बहुत सुन्दर और योग्यता पूर्वक कार्य कर रहे हैं। आपके दूसरे भाई श्री रामेश्वरदास जी जिनका अभी स्वर्ग वास हो गया है।

बुवानी वाला वंश

इस परिवार में श्री पोहकरमल जी व्यापार कुशल सुयोग्य व्यक्ति है। इसी में श्री सूर्जभान जी शर्मा अध्यापक का कार्य करते हैं श्री वकटेश्वर विद्यालय में प्रधान अध्यापक हैं। मिलनसार सुयोग्य शिक्षा प्रेमी महानुभाव हैं।

सिखरद्वारी

श्री स्वर्गीय पं० पोहकरमल जी सिखरद्वारी महापुरुष का नाम कौन नहीं जानता जिन्होने यवनों के यहांसे शाक तक नहीं खरीदा आप बड़े सदाचारी विचारों के दृढ प्रतिज्ञ कर्म निष्ठ— महापुरुष हो चुके हैं। आपके पुत्र पं० खगेशचन्द्र जी शर्मा

है। आप वैदिक चिकित्सा में निपुण हैं और अपने पूज्य पिता के सदृश्य ही शुद्ध आचार विचार के व्यक्ति हैं आपको संस्कृत विद्या का भी पूर्ण अभ्यास है आप भी अपने सिद्धान्त के एक ही दृढ संकल्प व्यक्ति हैं।

पं० बृन्दाबन जी शर्मा

आपका मन्दिर डोभी तालाब पर सराफों के कूवे के सामने है, आप सार्वजनिक कार्यकर्ता और सर्वप्रिय हैं। आज कल आप हैदराबाद में आयुर्वेदिक चिकित्सक हैं आप वहां पर वैद्य जी के नामसे प्रसिद्ध हैं सपरिवार वहां निवास करते हैं। आपमें गरीबों के लिये दयाभाव है आप सज्जन स्वावलम्बी जीवन युक्त योग्य व्यक्ति हैं।

ज्योतिषी वंश

आप स्वर्गीय पं० गंगराज ज्योतिषी के सुपुत्र अनन्तराम जी ज्योतिषी हैं ज्योतिष का कार्य करते हैं और पं० जीवनराम जी व्यापारिक क्षेत्र में कार्य करते हैं।

डा० रामेश्वरदास (उमरावतिया वंश)

आप स्वर्गीय पं० अर्जुनदत्त जी वैद्य जो स्व० आशाराम मानीराम धर्मार्थ औषधालय भिवानी में प्रधान चिकित्सक थे।

आपके सबसे बड़े लड़के डा० रामेश्वर दास जी बड़े अच्छे अनुभवी और सुयोग्य डाक्टर हैं बिरही में डाक्टरी चिकित्सा करते हैं इनके छोटे भाई शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

कोलिया परिवार

श्री डा० ओमदत्त जी शर्मा को भिवानी का ऐसा कौन व्यक्ति है जो नहीं जानता हो। आपने अपने जीवन का अधिकांश समय भिवानी में डाक्टरी करके सेवा भाव में बिताया है आप मित्रों के सच्चे मित्र और प्रत्येक व्यक्ति के सुख दुख में काम देने वाले हैं। इस लिये भिवानी में आपका हर व्यक्ति हृदय से बहुत मान करता है, पहले आप सिविल हस्पताल में काम करते थे। अब आप स्वतन्त्र रूप में कोल ग्राम में ही चिकित्सा कर रहे हैं बहुत मिलनसार कुशल चिकित्सक एवं व्यवहार कुशल बुद्धिमान व्यक्ति हैं। आपसे छोटे श्री सोमदत्त जी शर्मा वीर ब्राह्मण हैं और रायगढ में ससम्मान कार्य कर रहे हैं, यह भी अच्छे व्यक्ति तथा मिलनसार हैं। आपसे छोटे श्री रवीदत्त जी शर्मा आयुर्वेद के पूर्ण विद्वान एवं कुशल चिकित्सक हैं।

यह परिवार कौल ग्राम निवासी होने के कारण कौलिये कहलाते हैं तीनो भाई स्वावलम्बी और ससन्मान व्यक्ति हैं।

है। आप वैदिक चिकित्सा में निपुण हैं और अपने पूज्य पिता के सदृश्य ही शुद्ध आचार विचार के व्यक्ति हैं आपको संस्कृत विद्या का भी पूर्ण अभ्यास है आप भी अपने सिद्धान्त के एक ही दृढ संकल्प व्यक्ति हैं।

पं० बृन्दाबन जी शर्मा

आपका मन्दिर डोभी तालाब पर सराफों के कुवे के सामने है, आप सार्वजनिक कार्यकर्ता और सर्वप्रिय हैं। आज कल आप हैदराबाद में आयुर्वेदिक चिकित्सक हैं आप वहां हर वैद्य जी के नामसे प्रसिद्ध हैं सपरिवार वहां निबास करते हैं। आपमें गरीबों के लिये दयाभाव है आप सज्जन स्वावलम्बी जीवन युक्त योग्य व्यक्ति हैं।

ज्योतिषी वंश

आप स्वर्गीय पं० गंगाराज ज्योतिषी के सुपुत्र अनन्तराम जी ज्योतिषी हैं ज्योतिष का कार्य करते हैं और पं० जीवनराम जी व्यापारिक क्षेत्र में कार्य करते हैं।

डा० रामेश्वरदास (उमरावतिया वंश)

आप स्वर्गीय पं० अर्जुनदत्त जी वैद्य जो स्व० आशाराम भानीराम धर्मार्थ औषधालय भिवानी में प्रधान चिकित्सक थे।

आपके सबसे बड़े लड़के डा० रामेश्वर दास जी बड़े अच्छे अनुभवी और सुयोग्य डाक्टर हैं बिरही में डाक्टरी चिकित्सा करते हैं इनके छोटे भाई शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

कोलिया परिवार

श्री डा० ओमदत्त जी शर्मा को भिवानी का ऐसा कौन व्यक्ति है जो नहीं जानता हो। आपने अपने जीवन का अधिकांश समय भिवानी में डाक्टरी करके सेवा भाव में बिताया है आप मित्रों के सच्चे मित्र और प्रत्येक व्यक्ति के सुख दुःख में काम देने वाले हैं। इस लिये भिवानी में आपका हर व्यक्ति हृदय से बहुत मान करता है, पहले आप सिविल हस्पताल में काम करते थे। अब आप स्वतन्त्र रूप में कोल ग्राम में ही चिकित्सा कर रहे हैं बहुत मिलनसार कुशल चिकित्सक एवं व्यवहार कुशल बुद्धिमान व्यक्ति हैं। आपसे छोटे श्री सोमदत्त जी शर्मा वीर ब्राह्मण हैं और रायगढ में ससम्मान कार्य कर रहे हैं, यह भी अच्छे व्यक्ति तथा मिलनसार है। आप से छोटे श्री रवीदत्त जी शर्मा आयुर्वेद के पूर्ण विद्वान एवं कुशल चिकित्सक हैं।

यह परिवार कौल ग्राम निवासी होने के कारण कौलिये कहलाते हैं तीनो भाई स्वावलम्बी और ससन्मान व्यक्ति हैं।

खण्डेलिया परिवार

श्री पं० श्योकरणदास जी इस परिवार में प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं और कलकत्ता में हैसियन बोरे का कार्य करते हैं कलकत्ते के माने हुए मुनिमों में आपका नाम है. तुल्लापट्टी में श्योरकरणदासजी की अच्छी इज्जत है और यह राष्ट्रभक्त तथा बुद्धिमान व्यक्ति हैं। इनके पुत्र श्री ठाकुरदास जी सत्यनारायण जी एवं मुरारीलाल जी आदि हैं और कलकत्ते में ही अपने पिता जी के साथ कार्य करते हैं।

श्री पं० छाजुराम जी शास्त्री

यह अलवरग्राम निवासी भारद्वाजगोत्री ब्राह्मण हैं बाल्यकाल से भिवानो में ही रहते हैं, यहीं पर इन्होंने शास्त्रों का अध्ययन किया है और अब सनातन धर्म महाविद्यालय में प्रधानाध्यापक पद पर ससम्मान कार्य कर रहे हैं। पहले आप श्री रंगनाथ पाठशाला में पढाते रहे हैं फिर ब्रह्मचर्याश्रम के मुख्याध्यापक पद पर कार्य कर चुके हैं श्री पण्डित छाजुरामजी शास्त्री पंजाब के अद्वितीय विद्वान तथा भिवानी नगर की शोभा है। साहित्य में इनका इतना बड़ा ज्ञान है कि पंजाब के अलावा यू० पी० के विद्वान भी इनका सन्मान करते हैं, जयपुर सरकार द्वारा इन्हें साहित्याचार्य की पदवी मिली हुई है और सन्मान में एक स्वर्ण पदक भी दिया गया है।

इस प्रान्त का कोई ही देहात ऐसा मिलेगा जिस में आप के स्नातक न रहते हों आपका पाण्डित्य और प्रतिभा प्रशंसनीय है आपका धारावाही संस्कृत प्रवचन आश्चर्य में डालने वाला है आप की पढाने की शैली अद्वितीय है जो छात्र आपसे एक बार भी पढ लिया है वह फिर दूसरी जगह जल्दी से नहीं पढ सकता यही आपकी पाठन विषयक विशेषता है, जिस समय आप भिवानी में मामूली विद्यार्थी के रूप में पढते थे, कौन कह सकता था कि यह भी कभी एक प्रतिभा सम्पन्न विशिष्ठ व्यक्ति होगा। आप ने अपने मामूली जीवन से उन्नति कर बहुत उच्च कोटि की योग्यता प्राप्त की है। आप मिलनसार स्वाभिमानी सच्चे ब्रह्मण हैं। विद्यादान ही आपके जीवनका मुख्य लक्ष्य है वैसे आप ज्योतिष कर्मकाण्ड एवं अंग्रेजी का भी पूर्ण ज्ञान रखते हैं। आपके बड़े भाई श्री नारायणदास जी भी अच्छे व्यक्ति हैं।

श्री बाबूलाल जी पुजारी

आप डाबला परिवार से सम्बन्धित हैं आयुर्वेद में आप का अच्छा अभ्यास है कलकत्ता में ही स्वतन्त्र कार्य कर रहे हैं सार्वजनिक कार्य में भाग लेना और पूर्ण उत्साह से कार्य करना आपकी विशेषता है।

खण्डेलिया परिवार

श्री पं० श्योकरणदास जी इस परिवार में प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं और कलकत्ता में हैसियन बोरे का कार्य करते हैं कलकत्ते के माने हुए मुनिमों में आपका नाम है. तुल्लापट्टी में श्योरकण दासजी की अच्छी इज्जत है और यह राष्ट्रभक्त तथा बुद्धिमान व्यक्ति हैं। इनके पुत्र श्री ठाकुरदास जी सत्यनारायण जी एवं मुरारीलाल जी आदि हैं और कलकत्ते में ही अपने पिता जी के साथ कार्य करते हैं।

श्री पं० छाजुराम जी शास्त्री

यह अलवरग्राम निवासी भारद्वाजगोत्री ब्राह्मण हैं बाल्यकाल से भिवानी में ही रहते हैं, यहीं पर इन्होंने शास्त्रों का अध्ययन किया है और अब सनातन धर्म महाविद्यालय में प्रधानाध्यापक पद पर ससम्मान कार्य कर रहे हैं। पहले आप श्री रंगनाथ पाठशाला में पढाते रहे हैं फिर ब्रह्मचर्याश्रम के मुख्याध्यापक पद पर कार्य कर चुके हैं श्री पण्डित छाजुरामजी शास्त्री पंजाब के अद्वितीय विद्वान तथा भिवानी नगर की शोभा हैं। साहित्य में इनका इतना बड़ा ज्ञान है कि पंजाब के अलावा यू० पी० के विद्वान भी इनका सन्मान करते हैं, जयपुर सरकार द्वारा इन्हें साहित्याचार्य की पदवी मिली हुई है और सन्मान में एक स्वर्ण पदक भी दिया गया है।

इस प्रान्त का कोई ही देहात ऐसा मिलेगा जिस में आप के स्नातक न रहते हों आपका पाण्डित्य और प्रतिभा प्रशंसनीय है आपका धारावाही संस्कृत प्रवचन आश्चर्य में डालने वाला है आप की पढाने की शैली अद्वितीय है जो छात्र आपसे एक बार भी पढ लिया है वह फिर दूसरी जगह जल्दी से नहीं पढ सकता यही आपकी पाठन विषयक विशेषता है; जिस समय आप भिवानी में मामूली विद्यार्थी के रूप में पढते थे, कौन कह सकता था कि यह भी कभी एक प्रतिभा सम्पन्न विशिष्ठ व्यक्ति होगा। आप ने अपने मामूली जीवन से उन्नति कर बहुत उच्च कोटि की योग्यता प्राप्त की है। आप मिलनसार स्वाभिमानी सच्चे ब्रह्मण हैं। विद्यादान ही आपके जीवनका मुख्य लक्ष्य है वैसे आप ज्योतिष कर्मकाण्ड एवं अंग्रेजी का भी पूर्ण ज्ञान रखते हैं। आपके बड़े भाई श्री नारायणदास जी भी अच्छे व्यक्ति हैं।

श्री बाबूलाल जी पुजारी

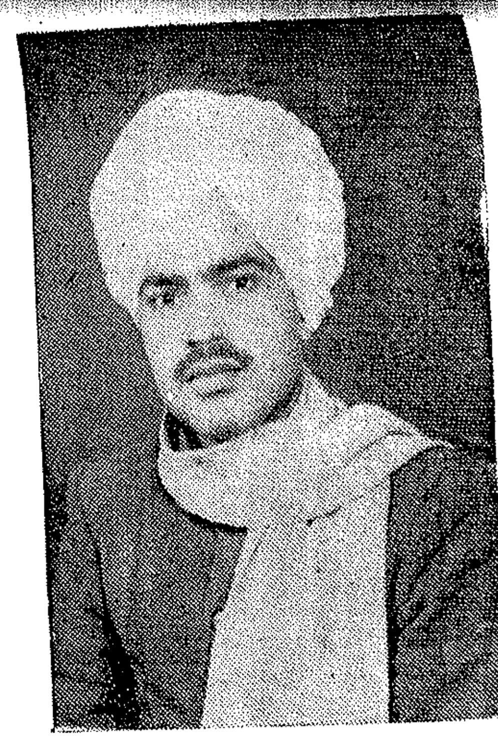
आप डाबला परिवार से सम्बन्धित हैं आयुर्वेद में आप का अच्छा अभ्यास है कलकत्ता में ही स्वतन्त्र कार्य कर रहे हैं सार्वजनिक कार्य में भाग लेना और पूर्ण उत्साह से कार्य करना आपकी विशेषता है।



श्री पं० छाजुराम जी शास्त्री साहित्याचार्य
भिवानी।



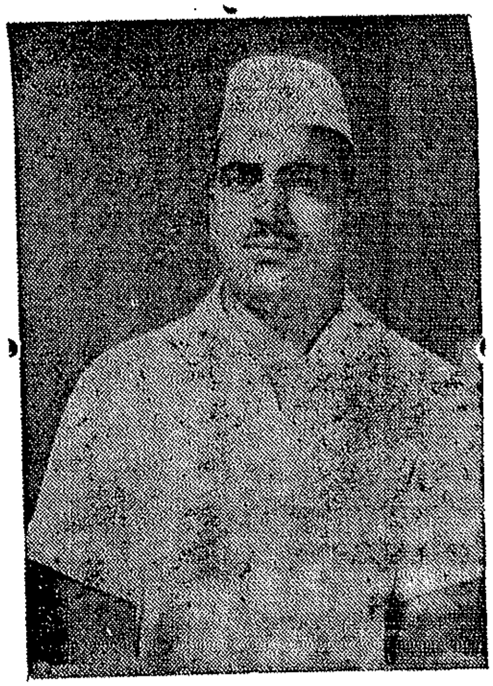
डा० बैजनाथ जी कौशिक
म्यु० क०



प० शिवनरायण जी शास्त्री



कविराज श्री जनार्दन जी शर्मा
प्रधान वैद्य-सेठ किरोड़ीमल धर्मार्थ औषधालय रायगढ़।



श्री परमानन्द जी शर्मा वैद्य
म्युनिसिपल कमिश्नर भिवानी

पं० नत्थूराम जी शर्मा

आप रोहतक दरवाजे के पास गंगामन्दिर के पुजारी हैं मिलनसार और स्वाभिमानी योग्य व्यक्ति हैं।

पं० देवीदत्त जी धनानिया

आप मुनीमी के कार्य में बहुत कुशल एवं योग्य व्यक्ति हैं आपका आदि निवास धनाना ग्राम है। बहुत सात्विक प्रकृति के सीधे सादे योग्य ब्राह्मण हैं ईमानदारी और सद्-व्यवहार आप का विशेष गुण है।

सौपर्णा जीन्दिया परिवार

भिवानी में जीन्दिया परिवार पहले बहुत ख्यातिवान हो चुका है, श्री लखपयराय जी बहुत बड़े विद्वान और ज्योतिष शास्त्र के ज्ञाता थे संस्कृत विषयक पुस्तक भिवानी में इन्हीं के यहां प्राप्त होती थी, अब इस परिवार में श्री रामकुमार जी नन्दलाल जी आदि आदि हैं और समयानुकूल कार्य कर स्वावलम्बी जीवन बनाये हुये हैं। इसी में पं० चिरंजीलाल जी देहली में योग्यता पूर्वक कार्य कररहे हैं इनका मकान रूपाचन्पा की गली में बना हुआ है।

—

श्री पं० शिवनारायण जी शास्त्री

आप भिवानी सुप्रसिद्ध पण्डितों में गिने जाते हैं आप संस्कृत की शास्त्री हिन्दीकी प्रभाकर आदि कई एक विषयों के प्रगाढ विद्वान हैं। पंजाब युनिवर्सिटी द्वारा आप परिक्षक नियत किये हुए हैं। आप व्यवहार कुशल और मिलनसार प्रकृतिके प्रशंसनीय व्यक्ति हैं। आप उन कर्मशील व्यक्तियों में से हैं जिन्होंने अपने अनुभव के आधार पर अपने वंशको उन्नत बनाया है। और समय के साथ साथ पलट कर पूर्ण सन्मान प्राप्त व्यक्ति बने हुवे हैं। कर्मकाण्ड और ज्योतिष शास्त्र के आप पूर्ण ज्ञाता हैं। इस समय वैश्य विद्यालय में आप अध्यापक का कार्य कर रहे हैं, वैसे आप सुन्दर लेखक भी हैं संस्कृत में आपका धारावाही भाषण प्रशंसनीय है आपका सर्व प्रिय जीवन होने के कारण शहर के प्रत्येक धार्मिक कार्य में आप पूर्ण हिस्सा लेते हैं। हिन्दु संस्कृति के आप मानने वाले और विशुद्ध भारतीय विचार धारा के व्यक्ति हैं। आपके बड़े भाई देहली में कुशलता पूर्वक व्यापार करते हैं और छोटे भाई अपने वंश परम्परा के अनुकूल कर्मकाण्ड का कार्य करते हैं।

श्री पं० मुन्शीराम जी शर्मा

आपका आदि निवास स्थान नारनौन्द होने के कारण आप नारनौन्दिये कहलाते हैं विशेष तौर पर आप कलकत्ता में ही कार्य करते हैं बड़े बड़े वैश्य परिवारों में आपका बहुत बड़ा सन्मान है और कलकत्ता में आप भिवानी वालों की तरफ से पंच माने जाते हैं कर्मकाण्ड के बहुत कुशल विद्वान हैं और ब्राह्मण समाज में आप प्रतिष्ठा सम्पन्न व्यक्ति माने जाते हैं। आपके पुत्र श्री मामनचन्द शास्त्री भी बहुत अच्छे विद्वान एवं सरल स्वभाव के मिलनसार व्यक्ति हैं।

श्री पं० नत्थुराम जी शर्मा M. A.

आप श्री मंगतराय जी के सुपुत्र हैं और रेलवे विभाग में उच्च कार्य पर सन्मान प्राप्त व्यक्ति हैं ईमानदारी व मिलनसार व्यवहार ही आपका विशेष गुण है, गरीबों के प्रति आपके हृदय में सहानुभूति है आप अच्छे विचारों के व्यक्ति, सुयोग्य लेखक तथा साहित्य के ज्ञाता हैं।

श्री काशीराम जी (वेदपाठी)

आप वेद के स स्वर ज्ञाता हैं इसलिये भिवानी में आप वेदपाठीजी के नामसे सुप्रसिद्ध हैं काशीजीमें आपने वेद विषय की शिक्षा प्राप्त की ब्रह्मचर्याश्रम में आप ब्रह्मचार्यों को वेद की शिक्षा देते थे अब स्वतन्त्र कार्य करते हैं, विद्यामार्तण्ड पं० सीताराम जी शास्त्री के आप विशेष कृपा पात्र थे, और आप भी उनमें पूर्ण श्रद्धा रखते थे आप व्यवहार कुशल निर्भि-

मानी सरल स्वभाव के सीधेसादे सच्चे भूदेव हैं। श्री तुलसीकृत रामायण के आप बहुत सुयोग्य वक्ता तथा भावुक हृदय के व्यक्ति हैं। आपके पुत्र श्री महादेवजी स्वतन्त्र कार्य करते हैं।

श्री परमानन्द जी वैद्य M. C.

आप बहुत अच्छे चिकित्सक तथा मिलनसार प्रकृति के सुयोग्य वैद्य हैं गरीबों के प्रति आप के हृदय में बहुत बड़ी दया है। महान कर्मठ एवं गम्भीरता ही आपका विशेष गुण है आपका सर्व प्रिय जीवन इतना विशाल है कि भिवानी म्युनिस्पिल इलैक्सनों में आप ने बहुत बड़ी विजय प्राप्त कर सन्मान प्राप्त किया है। आपके पिता श्री सन्तलाल जी बहुत सुयोग्य व्यक्ति थे उनका अल्पायु में ही स्वर्गवास होगया। आपके बाबा श्रीसांवलरामजी भिवानी नगर के विदेह माने जाते हैं बहुत बड़े आत्मज्ञानी साधुपुरुष तथा प्रतिष्ठा सम्पन्न कुशल महानुभाव हैं ईश्वर में पूर्ण अनुरक्ति एवं श्रद्धा होने से यह दुःख सुख को समान समझते हैं।

डा० दयाकृष्ण जी शर्मा

आप कम्युनिष्ट पार्टी के सेक्रेटरी तथा सुयोग्य वक्ता हैं मजदूरों के प्रति सहानुभूति और कुशलता पूर्ण चिकित्सा ही आप का विशेष गुण है कर्मठ और उत्साह शक्ति आप में

प्रयाप्त है। आप के पिता श्री पं० राधाकृष्ण जी बहुत सच्चे एवं वीर ब्राह्मण है पहले यह पटवारी का कार्य करते थे अब विराम लेकर ईश्वर भजन करते हैं।

श्री पं० विसुराम जी शर्मा कौशिक (कटक)

यह कटक में बहुत सन्मान प्राप्त व्यक्ति है सार्वजनिक कार्यों में भाग लेने के कारण आपने अच्छा यश प्राप्त किया है। आप उदार प्रकृति के प्रतिभा सम्पन्न सुलझे हुए महानुभाव हैं और व्यवसाय कुशल होने के कारण अनुभवी एवं योग्य व्यक्ति है आपका जीवन स्वावलम्बी एवं गौरवशील जीवन है कटक हिन्दी साहित्य समिति के आप कार्य कर्ता हैं आपका विवाह बेरी के सुप्रतिष्ठित ब्राह्मण परिवार में हुआ है आपका सहनशील स्वभाव तथा पूर्ण ब्राह्मणता आदर्श है आप का कौशिक गौत्र एवं शासन लाटा है भिवानी में आप के पूर्वजों का बहुत सन्मान था।

श्री दुलीचन्द जी शर्मा पुरोहित

आप का आदि निवास स्थान भिवानी नगर है। कटक के प्राय सभी सार्व जनिक कार्यों में आप पूर्ण रूप से भाग लेते हैं और मोड़ा परिवार के आप पुरोहित हैं सरल स्वभाव मिलनसार प्रकृति के बुद्धिमान व्यक्ति हैं।

श्री पं० सूरजभान जी शर्मा

आप पंजाब क्लोथ मिल्स में कार्य करते हैं। भिवानी में आपकी रिस्तेदारी अच्छे २ ब्रह्मणों में होने के कारणतथा बहुत सा समय भिवानी में बीतने के कारण आप एक तरह से भिवानी के ही माने जाने लगे हैं। सुयोग्य व्यक्ति निर्भिमानी मिलनसार प्रकृति के सर्व प्रिय महानुभाव हैं।

पं० बनारसीदास जी शर्मा

आप श्री पण्डित सम्पतराय जी वैद्य जो कि एक बहुत बड़े तान्त्रिक विद्वान तथा भिवानी के सम्मान प्राप्त व्यक्ति थे। उन्ही के भतीजे हैं जालान फ्री आई हस्पताल में कार्य कर रहे हैं। आप मिलनसार प्रकृति के कुशल कार्य कर्ता और स्वाभिमानी ब्राह्मण हैं।

श्री सुरेशचन्द्र जी बी. ए.

आप नगर प्रसिद्ध पण्डित रामरूप जी वैद्य के सुपुत्र हैं। पंजाब को B.A. आप अच्छे नम्बरों से पा सकर इससमय सरकारी स्कूल में हेडमास्टर हैं। आप स्वाभिमानी सुयोग्य लेखक तथा कुशल वक्ता और उग्र विचारों के बुद्धिमान व्यक्ति हैं। आपने अपने जीवन मे काफी उन्नति प्राप्त कर बहुत प्रशंसनीय जीवन बनाया है। आप मित्रों के सच्चे मित्र तथा कर्म निष्ठ ब्राह्मण हैं।

पं० सन्तलाल जी रानीले वाले

आपका जीवन विद्या दान में ही व्यतीत हुआ है भिवानी म्युनिस्पिल कमेटी के स्कूलों में शिक्षक के रूप में कार्य करते हैं। भिवानी के काफी सन्मानित व्यक्ति हैं।

बावोलिया परिवार

यह भिवानी का बहुत प्रतिष्ठित एवं प्राचीन परिवार है इस परिवार के निवास स्थान वीरवान पाने में बने हुए हैं। पहिले इस परिवार में अच्छे २ महापुरुष होचुके हैं। इस समय भी इस परिवार के सुयोग्य व्यक्ति विभिन्न जगहों पर सन्मान पूर्वक कार्य कर भिवानी का नाम रोशन कर रहे हैं।

श्री पं० कुंजलाल जी शर्मा:—आप गाजियाबाद में स्टेशन मास्टर हैं। सुयोग्य तथा मिलनसार होने के कारण प्रतिष्ठा सम्पन्न समझे जाते हैं।

श्री बालमुकन्द जी B. A. देहली रामजस हायर सैकेण्ड्री स्कूल में हैडमास्टर हैं। पहिले भिवानी में एग्यूक्टिव ऑफिसर रह कर शहर-सेवा कर चुके हैं। बहुत योग्य समझदार तथा स्वाभिमानी ब्राह्मण हैं।

श्री पं० बद्रीप्रसाद जी शर्मा B.A.B.T. आप इस समय सनातनधर्म हाईस्कूल भिवानी में सैकिन्ड मास्टर है। पहिले

वैश्य हाईस्कूल भिवानी तथा राजकुमार कालेज देहरादून में पढा चुके हैं। बहुत समझदार सुयोग्य व्यक्ति हैं। सनातन धर्म हाई स्कूल के स्थापन में आपका भी बहुत बड़ा हाथ रहा है

श्री मोतीराम जी B. A. यह देहली रामजस हायर-सैकिन्ड्री स्कूल में हैड क्लर्क हैं।

श्री प्यारेलाल जी श्री सुन्दरलाल जी राजेन्द्र कुमार आदि आदि इसी परिवार में अनेकों स्थानों पर पूर्ण गौरव के साथ कार्य कर भिवानी का नाम रोशन कर रहे हैं। यह सभी सच्चे ब्राह्मण तथा सुयोग्य एवं शिक्षा सम्पन्न होने के कारण विनम्र व्यक्ति एवं अत्री गौत्र हैं।

डा० रामभक्त जी शर्मा

आप सिनेमा रोड़ पर डाक्टरी का कार्य करते हैं। तोशाम निवासी होने के कारण तोशामिया डाक्टर कहलाते हैं। आप चिकित्सा में बहुत निपुण एवं सभ्य व्यक्ति हैं यशस्वी होने के साथ साथ आपका जीवन सार्वाजनिक जीवन है। बहुत कुशलता एवं मेंहनत से कार्य कर आपने भिवानी में अच्छी सफलता प्राप्त की है। बहुत मिलनसार प्रभाव युक्त अच्छे विचारों के महानुभाव हैं।

❀—❀

श्री पं० मोतीराम जी आचार्य

आप भिवानी के महान् विद्वान श्री स्वामी जनार्दन जी महाराज के सुपुत्र हैं, सात्विक विचार गम्भीर प्रकृति मिलन व्यवहार ही आपका विशेष गुण है। छोटों में छोटे बड़ों में बड़े यही आपकी विशेषता है। जहां आप संस्कृत एवं आयुर्वेद विषय के ज्ञाता हैं वहां आप शारिरिक व्यायाम के भी पण्डित हैं, भगवत् सेवा आपका मुख्य कर्तव्य है। आपके पुत्र चि० बालमुकुन्द, मुकुट आदि २ पढरहे हैं।

पं० मुन्शीराम शर्मा

आप हालुबाजार में डाक्टरी का कार्य करते हैं। बहुत अच्छे चिकित्सक मिलनसार स्वाभिमानी बुद्धिमान व्यक्ति हैं।

डाक्टर श्यामसुन्दर जी कौशिक

आपका बिचले बाजार में "कौशिक सदन" नाम से प्रसिद्ध दवाखाना है। यहां नेत्र सन्बन्धि चिकित्सा होती है। आप बहुत मिलनसार सौम्य प्रकृति के प्रतिभा सम्पन्न बुद्धिमान महानुभाव हैं। इनसे छोटे श्री परमानन्द जी प्रभाकर बहुत कर्मठ उत्साही मिलनसार और लक्ष्मण की भांति भ्राता आज्ञा के पालक आयुर्वेद एवं डाक्टरी चिकित्सा के साथ २ नेत्र चिकित्सा में भी कुशल हस्त है। डा० श्याम–

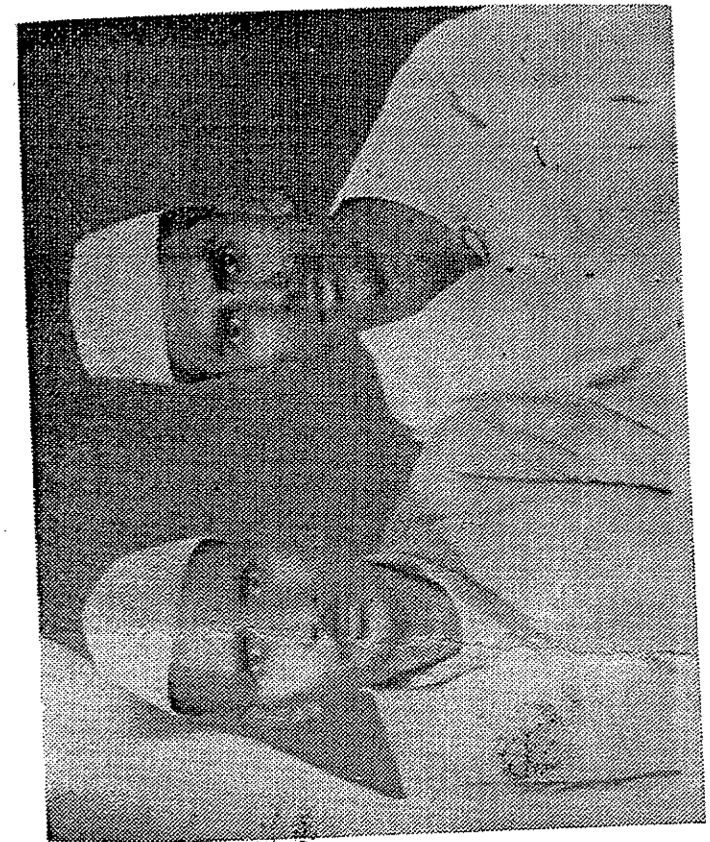
सुन्दर की धर्म पत्नी श्री कौशलदेवी वैद्या अच्छी चिकित्सक तथा बुद्धिमान विदूषि महिला है और "कौशल हसपताल" का संचालन कर रही है।

श्री देवीदत्त जी वैद्य पीयूषपाणी

आप सार्वजनिक कार्य कर्ता तथा हिन्दु विचार धारा के सुयोग्य व्यक्ति हैं शहर के प्रत्येक सार्वजनिक कार्य में भी आगे रहते हैं। भिवानी ब्राह्मण समाज में आपका अच्छा सन्मान है। आपने कहत एवं मलेरिया बिमारी के समय इस इलाके की बहुत निःशुल्क सेवा की है। भिवानी भारतीय जन संघ के आप उपप्रधान हैं। अखण्ड काशमीर के लिये आप जेल यात्रा भी कर आए हैं आप अच्छे चिकित्सक मिलनसार स्वाभिमानी दबंग ब्राह्मण हैं। और पीयूषपाणी जी के नाम से विख्यात है।

श्री मोहनलाल जी वैद्य

आप पश्चिमी पंजाब के पुरुषार्थी बन्धु हैं। १९४७ से भिवानी में आयुर्वेद का कार्य कर रहे हैं। आपका नाम पुरुषार्थी तथा लोकल दोनों में समान रूप से लिया जाता है, आप आयुर्वेद के अच्छे ज्ञाता तथा सुलझे हुए चिकित्सक हैं, सार्वजनिक कार्यों में भी आप भाग लेते रहते हैं। मिलनसार कुशल महानुभाव हैं।

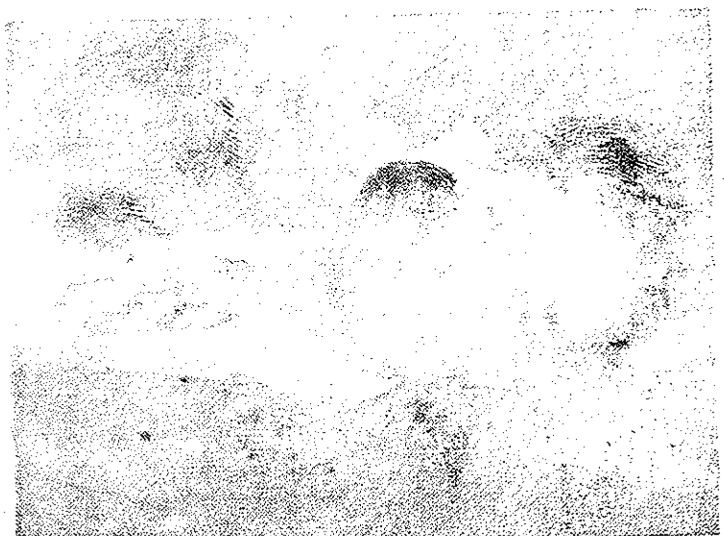


पं० केशवदेव जी शर्मा आयुर्वेदाचार्य पं० हुन्नामल जी शर्मा



श्री दीनदयाल जी शर्मा वकील





श्री दीनदयाल जी शर्म्मा B. A. L. L. B. वकील

आप भिवानी राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संस्थापक हैं आपके द्वारा यहां हिन्दुत्व का बहुत बड़ा प्रभाव हुआ है। सन् १६४७ में जब यवनों द्वारा इस नगर को समाप्त करने का षड़यन्त्र रचा गया था उस समय आपने पूर्ण संगठन से मुसलमानों का विरोध कर उनकी सम्पूर्ण आयोजना निष्फल बना कर इस नगर की महान् सेवा की थी। रात दिन सभी तरह के अस्त्र शस्त्रों से युक्त आपके स्वयं सेवक किस प्रकार मोर्चा लिये हुए थे यह देखने वाले ही जानते हैं। इस समय आप भारत सरकार के वायुयान विभाग में कार्य कर रहे हैं। आप एक अच्छे लेखक व सुयोग्य वक्ता भी हैं। सरल स्वभाव मिलनसार उदारप्रकृति आपका विशेष गुणहै आप मित्रोंके सच्चे मित्र तथा सदा प्रसन्न मुख रहते हैं। आप बहुत उच्च विचारों के गम्भीर व्यक्ति हैं और राजनीति में भी आप पूर्ण कुशल हैं। भारतीय जन संघ देहली के आप बहुत बड़े विश्वासपात्रों में हैं। आपका वकालत में बहुत बड़ा प्रशंसनीय अभ्यास है और न्यायाधीश आपकी बहस को योग्यता की बहस मानते है।

श्री स्वामी देवराजाचार्य शास्त्री

आप पंजाबप्रान्त के अद्वितीय विद्वान हैं आपकी शास्त्रार्थ विषयक योग्यता को अच्छे अच्छे विद्वान भी स्वीकार करते हैं

वैसे आप बहुत बड़े साहसी कर्मनिष्ट सुलेखक तथा सदाचारयुक्त अनेक शास्त्रों के विद्वान हैं आपकी कथा शैली बहुत प्रशंसनीय एवं भाषण शैली भी योग्यता पूर्वक होती है आप गम्भीर प्रकृति के सज्जन स्वभाव युक्त बुद्धिमान महानुभाव हैं और सार्वजनिक कार्यों में विशेष तौर पर भाग लेकर आचार्य कुल को सुशोभित कर रहे हैं । आपका चि० रघुनाथ पढता है ।

श्री स्वामी विभीषणाचार्य जी महाराज

आपने पंजाब युनिवर्सीटी की विशारद परीक्षा में रिकार्ड स्थापित किया है उस रिकार्ड को आज तक कोई भी पंजाब का छात्र नहीं तोड़ सका है । आप सदा प्रसन्न चित्त रहते हैं आप में तीक्षण समालोचना शक्ति और हर व्यक्ति को हंसा देने वाली युक्तियें प्रशंसनीय हैं । इस समय व्याधि-ग्रस्त होने के कारण कुछ खिन्न रहते हैं, किन्तु लेखन शक्ति अत्यन्त सुन्दर और पूर्ण भाव युक्त होती है । आपके पुत्र चि० वंशीधर योग्य और साहसी एवं वीरबालक है उससेछोटा केशवदेव प्रभा कर पढा रहा है श्रीधर, नरसिंहदास, गोरधन आदि पढ रहे हैं

श्री पं० श्रीरामजी शर्मा बैद्य

आपकी कलकत्ता मुक्ताराम बाबुस्ट्रीट में भिवानी आयुर्वेदिक फार्मेसी अच्छे रूप में सफल हो रही है । आप कलकत्ता की अनेक संस्थाओं के पदाधिकारी मन्त्री एवं सभापति हैं । प्रति

वर्ष गंगासागर मेले पर आप जनता जनार्दन बहुत बडी सेवा करते हैं । आप सफल वैद्य योग्य चिकित्सक तथा मिलन-सार निर्भिमानी सार्वजनिक कार्यकर्ता व्यक्ति हैं । आप के पुत्र आत्माराम जगदीश पढ रहे हैं ।

पेमाण वंश

इसके वंश में श्री तुलेराम जी पेमाण सनातन धर्म के बहुत जबर्दस्त कार्यकर्ता हो चुके हैं । अब श्री बनारसीदास जी योग्य व्यक्ति हैं, और सार्वजनिक कार्यों में भाग लेते रहते हैं ।

श्री बृजलाल जी महाराज

श्री लक्ष्मीनारायण जी और बृजलाल जी महाराज बागकोठी में निवास करते हैं यहीं इन का एक छोटासा मन्दिर है सीधे सादे योग्य व्यक्ति हैं भगवद् भजन में ही समय बीतता है ।

बुढ़ण के परिवार

इस परिवार में श्री रामसिंह श्री किशोरीलाल आदि २ प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं योग्यता पूर्वक कार्य कर रहे हैं ।

होठले ब्राह्मण

इस परिवार में श्योनारायण परमेश्वरीदास जी आदि २ सुयोग्य कार्य कुशल महानुभाव हैं ।

श्री सत्यनारायण शर्मा

आप गौरीशंकर मन्दिर में पुजारी का कार्य कर रहे हैं । बहुत योग्य सदाचारी ईश्वर भक्त निर्भिमानी सद्आचार युक्त योग्य व्यक्ति हैं ।

महर्षिये

इस परिवार में श्री रामप्रताप जी कलकत्ता में दलाली का कार्य करते हैं दूसरे श्री कुन्दनलाल जी रायगढ में ससन्मान कार्य कर रहे हैं और भी कई व्यक्ति इस परिवार में बहुत योग्य तथा ससन्मान है।

महात्मा श्री बनवारीलाल जी, हरि स्मरण और साधु सेवा में अपना सफल जीवन बनाये हुये हैं।

पं० गंगाचरण जी आयुर्वेदाचार्य

आप आदिवासी हिसार के हैं। आपकी आयु लगभग ५५ वर्ष की है। आप यहां के श्री विश्वेश्वरलाल मोतीलाल हलवासिया ट्रस्ट द्वारा संचालित औषधालय में प्रधान वैद्य हैं। आप ने आयुर्वेद की पूर्ण शिक्षा प्राप्त की है और आपका ज्ञान एवं अनुभव चिकित्सा में उत्तम है।

आपके बिशाल हृदय में रोगी के प्रति दया भाव है। सुयोग्य परिश्रमी और अनुभव शील हैं। प्रतिष्ठा सम्पन्न वैद्य हैं आप बहुत सात्विक एवं सरल स्वभाव के सीधे सादे बुद्धिमान व्यक्ति माने जाते हैं भिवानी के वैद्यों में आपका बड़ा सम्मान है। आपके सुयोग्य पुत्र भी आपकी आज्ञा में रह कर कार्य करते हैं।

पं० मोहनकृष्ण जी वैद्य

आप भारत प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता पं० श्री नेकीराम जी शर्मा के सुपुत्र हैं। आपने संस्कृत विद्या का पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर आयुर्वेद चिकित्सा में काफी उन्नति प्राप्त की है। आप टी० आई० टी० में आयुर्वेद के प्रधान वैद्य हैं। आप के परामर्श से यहां सनातन धर्म प्रेमगिरी आयुर्वेद कालेज की स्थापना हुई है इस से मालुम होता है कि आयुर्वेद में आप का कितना प्रेम और श्रद्धा है। पंजाब गवर्नमेंट ने आप को सुयोग्य वैद्य और अपना विश्वास पात्र प्रतिनिधि समझ आयुर्वेदिक एन्ड यूनानी पंजाबबोर्ड का मेम्बर नियुक्तकिया हैं।

आप भिवानी म्युनिस्पिल कमेटी के मेम्बर एवं वाईसप्रेसीडेन्ट रह चुके हैं। कार्य कुशल और चिकित्सा में अनुभवी मिलनसार व्यक्तिहैं।

पं० केशवदेव शर्मा

आप राज वैद्य पं० श्रीदत्त जी शर्मा के सुयोग्य सुपुत्र हैं आपने अंग्रेजी तथा संस्कृत की शिक्षा प्राप्त कर आयुर्वेद का ज्ञान प्राप्तकिया और चरककैमीकल औषध कं० का निर्माण कर बहुत बड़ी संख्या में औषध आदि का स्वयं अपने हाथोंसे कार्य कर आप पूर्ण सफल बने। कई बार ग्रामों तथा शहरों में बिमा

रियों ने उग्ररूप धारण किया तब २ आपने बड़े परिश्रम उद्योग और साहस के साथ जनता की सेवा की। जिससे आपका देहातों में बहुत सम्मान और याद है। श्री सनातन धर्म प्रेमगिरि आयुर्वेदिक कालेज भिवानी में आपका बहुत बड़ा हाथ व पूर्ण सहयोग है आप भिवानी म्युनिस्पिल कमेटी के लगभग १२ साल सदस्य और कई वर्षतक वाईसप्रेजीडेन्ट भी रह चुके हैं। आप अपने विचारों के एक ही दृढ संकल्प स्वाभिमानी, गौरवशाली व्यक्ति हैं। हिन्दु मुस्लिम दंगे में आप के द्वारा हिन्दुओं को जो सहयोग प्राप्त हो चुका है वह चिरस्मरणीय और भिवानी के प्रति विशुध्द प्रेमभाव हर एक व्यक्ति के दिलोंमें सम्मान पूर्ण स्थान रखता है। आप वीरात्मा के साथ २ गोभक्त भी हैं। आपको वही व्यक्ति जान सका है जिसने विपत्ति के समय याद किया है और आपने उसके लिये आत्मसमर्पण कर मानवधर्मका परिचय देकर अपने जीवन को परोपकारी जीवन बना दिया है। आपके द्वारा आंखों के हस्पताल के पास "श्री फार्मसी की स्थापना हुई है। वहां से जनता जनार्दन की सेवा होती है। आप एक अनुभव प्राप्त वैद्य और कर्मठ व्यक्ति हैं।

श्री जगन्नाथ जी आचार्य

आप श्री वैष्णव सम्प्रदाय के अनुकूल अपना जीवन बनाए हुए हैं। सात्विक विचार, व्यवहार कुशल तथा भजन पूजादि ही आपका विशेष गुण है वैसे आप संस्कृत के सुयोग्य विद्वान और पुराणों के पण्डित हैं भगवान श्री नृसिंहजी महाराज की सेवा पूजा ही आपके जीवन का सर्वोपरीलक्ष्य है। आपकी कठिन साधना एवं धर्मानुकूल सदाचार ही आपको समस्त श्री सम्प्रदाय में प्रतिष्ठिावान बनाए हुए है। असभ्य व्यवहार अनुचित कार्य आपसे कोसों दूर है। आप गृहस्थ में में रहते हुए भी सांसारिक वासनाओं से अलग रहते हैं आपका चि० सुदर्शन पढ रहा है।

श्री रामानुज जी आचार्य

आप आदरणीय श्री स्वामी मनीरामजी महाराज के पुत्र हैं और संगीत में अभिरुचि होने के कारण आपने गायन एवं वाद्य का काफी मनन किया है। आप में सबसे बड़ी विशेषता यह है कि फिल्मी अश्लील गानोंकी तर्ज को विशुद्ध धार्मिकता में परिवर्तित कर उनको भक्ति रसका रूप देकर भगन्नाम का प्रचार आधुनिक प्रणालि के अनुसार करते हैं। मिलनसार सात्विक विचार युक्त कार्य कुशल महानुभाव हैं। आपके भाई पुरुषोत्तमदास जी T. I. T. में योग्यता पूर्वक कार्य करते हैं।

डा० दीवानचन्द वासुदेव

आपका जीवन सदासे ही लोकोपकारी रहा है आप सच्चे और निर्भीक विचारों के राष्ट्र सेवक (कांग्रेसी नेता) हैं। समय २ पर कांग्रेस आन्दोलनों में आपने सर्व प्रथम उत्साहित होकर भाग लिया है। और आपका बहुतसा समय जेलों में ही बीता हैं। आप भिवानी कांग्रेस कमेटी के प्रेजीडेन्ट निरन्तर कई साल रहे हैं। आपकी निःस्वार्थ सेवाओं पर मुग्ध होकर शहर वासियों ने आपके सम्मान में सिल्वर जुबली मनाई जिसमें आपको सम्मान पत्र भेंट किये गये, आप सच्ची लगन के तथा साधु-स्वभाव के सच्चे सन्त हैं।

आपने सेवा समिति का कार्य सुचारु रूप से चलाने में पूर्ण साहस के साथ कार्य करके दिखाया, सेवा कार्य में आप हमेशा अग्रसर रहते हैं। आपकाजीवन संघर्षमें ही बीतता रहा है। पर आप कभी साहस नहीं छोड़ते। आप बड़े सज्जन जन प्रिय महानुभाव हैं।

रबलों का परिवार

इसमें पं० जयनरायण जी मंगलचन्द जी हैं। व्यापारिक क्षेत्र में अहमदाबाद में बहुत दिनों से सम्मान पूर्वक कार्य कर अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त किये हुए हैं। आप बड़े मिलनसार व्यापार कुशल व्यक्ति हैं। आपका भवन ठा० भानीसिंह जी के मकान के पास हैं। निरंजनलाल जी शर्मा (भी) योग्य तथा मिलनसार व्यक्ति हैं।

श्री विश्वम्भरदयाल जी भार्गव

आप बहुत समय से भिवानी में वकालत का कार्य करते हैं बड़े अनुभवी समझदार और अपने कार्य में निपुण हैं। आपके लड़के योग्यता पूर्वक प्रेस तथा गवर्नमेंन्ट सर्विस में बड़ी सफलता पूर्वक कार्य कर रहे हैं चि० प्रेमप्रकाश आपकी सेवा में विशेष रूप से रहता है।

पं० ज्योतिप्रसाद जी भार्गव—आप स्वभाव से बहुत विनम्र कार्य कुशल व्यक्ति है। पहिले आप फोटोग्राफरी का कार्य करते थे, बादमें बिडला मिल में कार्य करने लगे आपका परिश्रम उद्योग एवं समझदारी के कारण टी० आई० टी में आपका महान गौरव और सम्मान हैं। आप एक अच्छी पोस्ट पर सुचारु रूप से कार्य करते हैं।

श्री पं० भीमसैन शर्मा वैद्य

आप का आदि निवास स्थान बादलि है, आप आशाराम धर्मार्थ औषधालय जो कई वर्षों से संस्थापित गेड़ के पास है उसमें प्रधान चिकित्सक हैं। आप बड़े मिलनसार अच्छे अनुभव युक्त वैद्य है।

श्री अजुध्याप्रसाद वैद्य

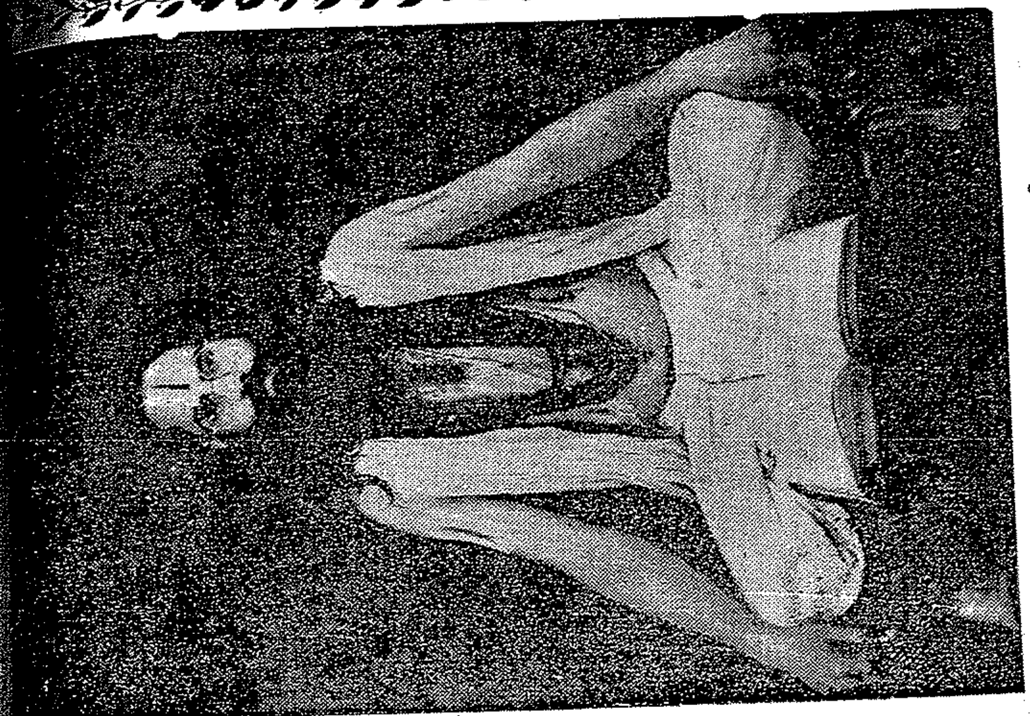
आप प्रथम श्री वैश्य औषधालय में द्वितीय स्थान पर कार्य करतेथे फिर लुहारीवाला औषधालय में प्रधान चिकित्सक बन कर चिकित्सा कार्य कर रहे हैं। आप सरल स्वभाव के अनुभवी वैद्य हैं।

पं० जगदीशदत्त जी वैद्य

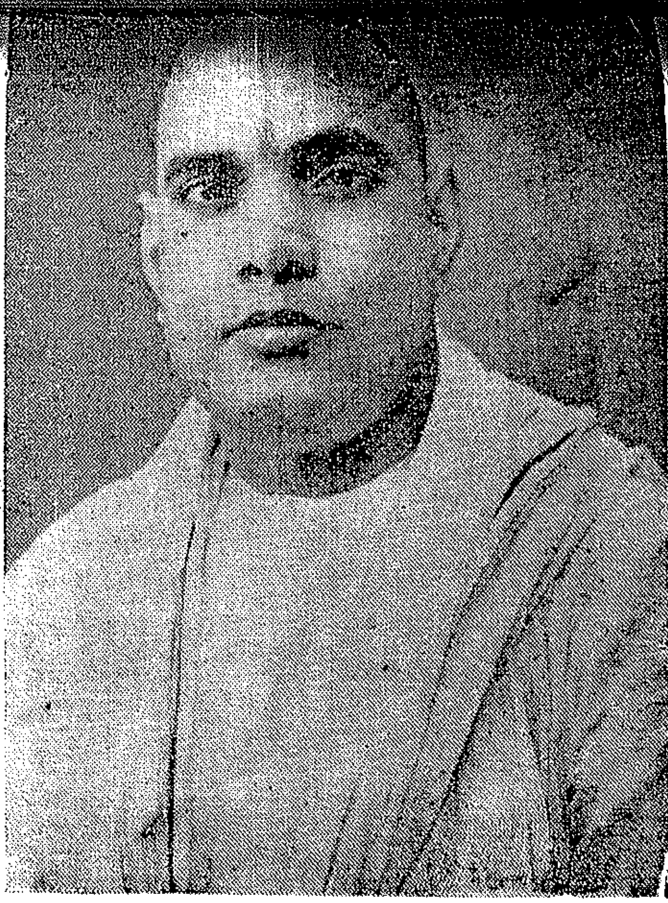
आप प्रभु भक्त और कीर्तन प्रेमी तो हैं ही पर आयुर्वेद का भी आपको पूर्ण ज्ञान है। इस विषय को आप ने विधिवत पढा है। औषध आदि बनाने की आपमें पूर्ण योग्यता है और मन्दिर में ही आप स्वतन्त्र "श्याम औषधालय" स्थापित कर रोगियों की चिकित्सा करतें हैं और प्रभु की कृपा से आप सफल वैद्य हैं। आप बड़े सौम्य स्वभाव, मान बड़ाई से दूर रहने वाले, छोटी आयु के छिपे हुए सन्त हैं। आप जिस रोगी को अनुभव द्वारा प्रभु के बल पर औषध अपने सिद्ध हाथों से दे देते हैं वह रोगी रोग विमुक्त हो जाता है। आपका औषधालय अपने निजी मन्दिर में स्थापित है।



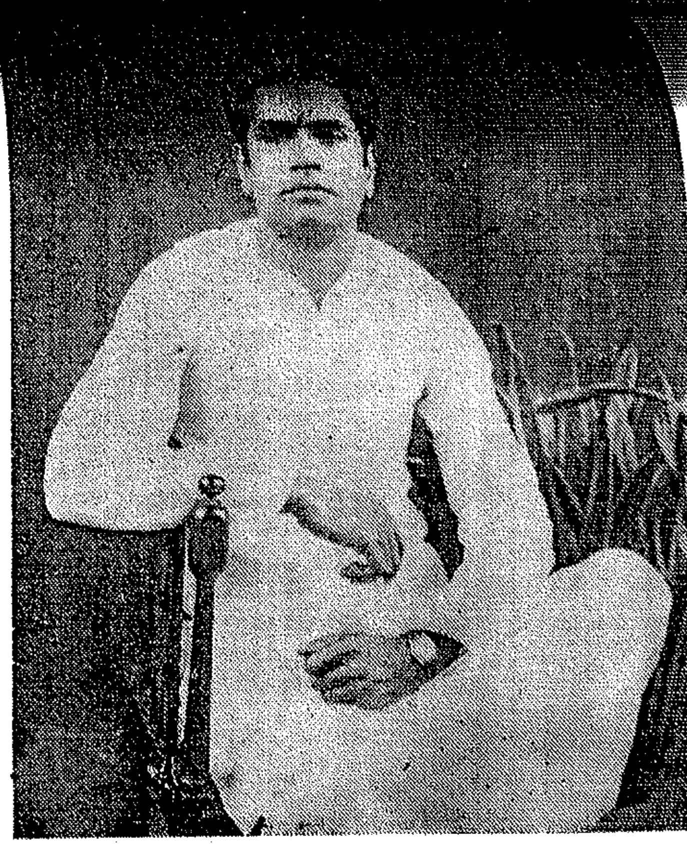
कविराजः—श्री श्यामसुन्दराचार्य जी



श्री [illegible]नाथाचार्य जी



श्री स्वामी देवराज जी आचार्य शास्त्री



श्री रामानुजाचार्य संगीतज्ञ

पं० बनारसीदास जी वैद्य

आप यहां के श्री राधाकृष्ण मोडा आयुर्वेद औषधालय में प्रधान चिकित्सक हैं और आयुर्वेद द्वारा जनता की चिकित्सा कर सेवा भाव से अपने जीवन को सफल तथा जिन के स्मारक में यह संस्था स्थापित है उन्हें अमर शान्ति प्रदान करते हैं।

पं० गंगादत्त जी वैद्य

आप पण्डित पुष्करदत्त जी शर्मा के सुयोग्य सुपुत्र हैं। आयुर्वेद के अध्ययन के पश्चात आपने हालु बाजार में महेश्वर रसशाला का स्थापन कर आयुर्वेद समाज की सेवा की है, आप के सहयोगी श्री पन्नालाल जो भी परिश्रमी तथा अनुभव युक्त वैद्य हैं, रस भस्म आदि निर्माण का पूर्ण ज्ञान होने के कारण वैद्य समाज में आपकी औषधी सन्मान प्राप्त कर रही हैं।

आप सेढमलजी शर्मा के सुपुत्र हैं। प्रथम से ही आयुर्वेद का कार्य कर रहे हैं, महेश्वर रसशाला में आपका साझा है।

पं० मदनलाल जी वैद्य आकोली वाले

आप औषध निर्माण में एक अनुभवी वैद्य हैं वैसे आप भजनानन्दी पुरुष हैं। आपका जीवन बड़ा सादा और गौरवमय है। आप एक छाता गर्मी, सर्दी आदि में साथ ही रखते हैं।

मातृदत्त जी चौरासिया

आप चौरासिया परिवार में से हैं और बहुत काल से आयुर्वेदीय चिकित्सा करते हैं। यहां पर शर्मा औषधालय लोहड़ बाजार में आपके द्वारा संचालित है। आप मिलनसार एवं सुयोग्य वैद्य हैं। वैसे आप का जीवन सार्वजनिक जीवन है।

श्री अंगुरीलाल जी शर्मा बी. कोम.

टी० आई० टी० के अधिकारियों में आपका नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। आपने सन् १९४३ में टी० आई० टी० में एक लैक्चरार की हैसियत से प्रवेश किया। कुछ समय बाद आप कालेज के स्थानापन्न प्रिंसिपल भी रहे। एक तरह से कालिज को आरम्भ करने का श्रेय आपको ही है। इसके बाद आपको मिल में लेवर वैल्फेयर आफिसर नियुक्त किया गया जिस पद पर आप अभी तक चले आ रहे हैं। आपने पंजाब विभाजन के समय शरणार्थियों को काम देने में बड़े उत्साह और सहानुभुति से काम किया।

आप श्रम जीवियों में काफी लोक प्रिय हैं। यही कारण है कि गत म्युनिसिपल चुनाव में आप निर्विरोध सदस्य चुने गये। कमेटी के कार्यों में आप को पूरी दिलचस्पी है।

पं० सन्तलाल शर्मा

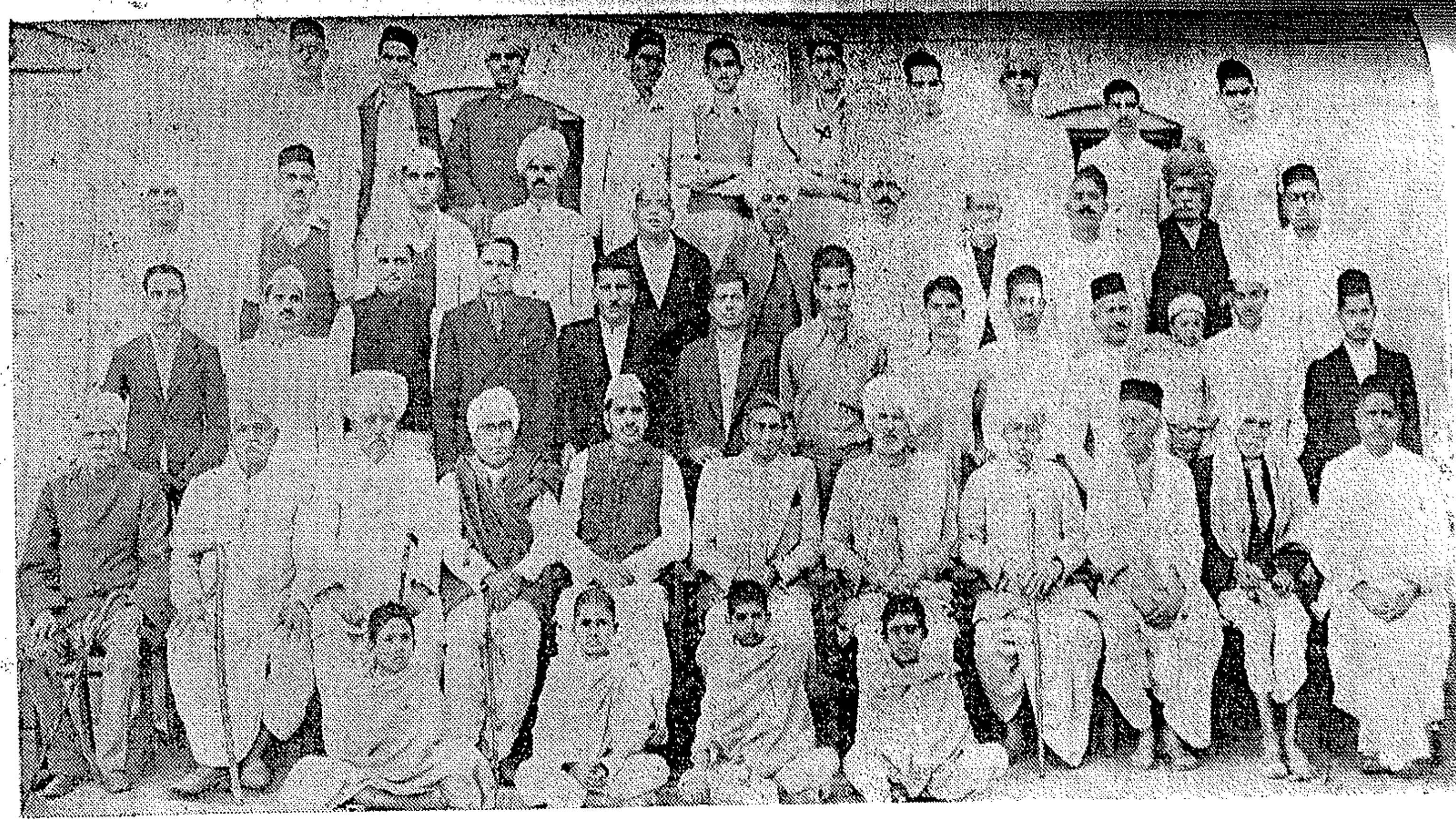
आपका व्यापार पहले करांची में था कपड़े का कारोबार ही आप सदा से करते रहे हैं। इस समय मोती कटला दिल्ली में सत्यनारायण ओमप्रकाश के नाम से कपड़े की दुकान जारी है व्यापारिक क्षेत्र में आपकी फर्म प्रतिष्ठा प्राप्त किये हुये है। आप मिलनसार आस्तिक विचारों के महानुभाव हैं। आप के छोटे भ्राता पं० नन्दकिशोर जी शर्मा देहली में कपड़े का ही कार्य सन्मान पूर्वक कर रहे हैं।

पं० रामेश्वरदास जी शर्मा

आप सदा से ही शिक्षा का कार्य करते हैं इस समय आप अमृतसर में मारवाड़ी विद्यालय में अध्यापक हैं भिवानी में आप 'सांड' के नाम से पुकारे जाते हैं।

पं० घनश्यामदत्त जी वैद्य

पहले आप कलकत्ते में आयुर्वेदिक चिकित्सा करते रहे अब भिवानी में ही वैद्यक का कार्य करते हैं। आप आयुर्वेद शास्त्र के अच्छे ज्ञाता और विद्वान हैं। आपकी चिकित्सा सराहनीय है। वैसे आप समझदार अनुभव युक्त मिलनसार वाक-चतुर प्रभावशाली वैद्य हैं।



वैद्य मण्डल भिवानी

स्वामी श्री कान्हड़दास जी वैद्य

आप श्री स्वामी श्री जयरामदास जी महाराज के दादू मन्दिर में चिकित्सालय के लिये स्वामी जी द्वारा भिवानी भेजे गये हैं। आयुर्वेद में आपका अच्छा ज्ञान हैं।

पं० जेष्ठानन्द जी वैद्य

आप कुरुक्षेत्रान्तर्गत कलायत ग्राम के रहने वाले हैं। रा० ब० श्रीदत्तजी द्वारा स्थापित श्रीकृष्ण औषधालय में प्रधान वैद्य के पद से बहुत दिन तक कार्य करते रहे। फिर आप रोहतक में अपना स्वतन्त्र कार्य करते रहे। आजकल आप नरवाना ग्राम में स्वतन्त्र कार्य कर रहे हैं।

श्री पोड़ियाल जी

आपका ज्ञान आयुर्वेद और डाक्टरी दोनों में प्रभाव पूर्ण हैं। आपका पांडित्य और अनुभव सराहनीय है। आप सादे जीवन के साथ २ उच्च विचार युक्त सरल वैद्य हैं।

कविराज श्यामसुन्दर आचार्य

कलकत्ते से आयुर्वेद की कविराज पदवी प्राप्त कर आपने महान सेवाएं की हैं इस समय आप "शान्ति-निकेतन" औषधालय का संचालन कर रहे हैं, जिसके द्वारा व्याधि ग्रस्त देहाती भाइयों की बहुत अधिक सेवा हो रही है। आपके



पं० बलभद्र जी मस्ता



पं० गंगादत्तजी वैद



पं० घनश्यामदास जी वैद्य



श्री पं० गोपालकृष्ण जी शर्मा, संगीताचार्य भिवानी

पास आयुर्वेद के अनेकों सिद्ध नुस्के संग्रहित हैं। 'सन्तान-वटियोग' औषध आपका इतना प्रसिद्ध योग है कि अनेकों घरों में इस योग की कृपा से बच्चे खेल रहे हैं। 'राघव-बाण-चूर्ण' की प्रशंसा भिवानी में इस लिए सर्वत्र फैल रही है कि जिसने भी इसका एकबार सेवन कर लिया उसकी उदर सम्बन्धि सभी बिमारियें समूल नष्ट हो गई है। आपका वैद्यक में महान गौरवशाली स्थान है

आप बहुत उच्च विचारों के नीतिज्ञ, सर्व कार्य कुशल, महानुभाव हैं। आपके चि० वेंकटेश्वर आचार्य वकालत में पढ़रहा है, छोटा गोपीनाथ भी विद्याध्ययन ही कर रहा है।

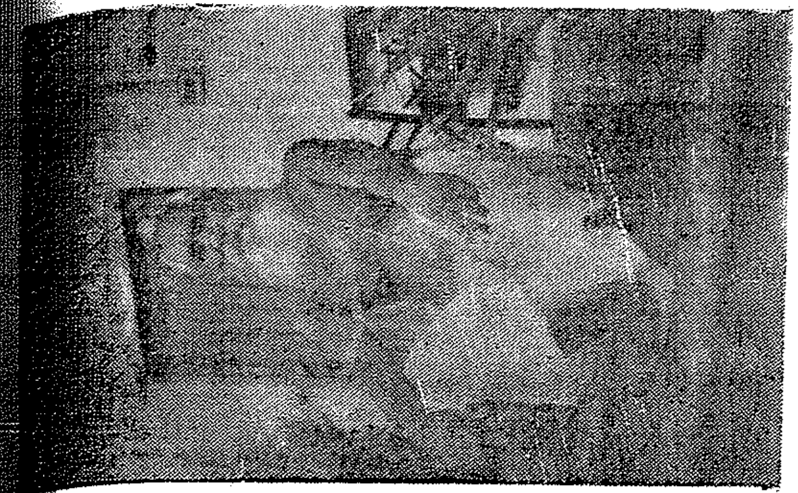
श्री गोपाल कृष्ण शर्मा

स्वर्गीय पं० नन्दकिशोर गायनाचार्य भारत प्रसिद्ध विष्णु दिगम्बर जी के शिष्यों में से एक थे। उन्हीं के सुयोग्य सुपुत्र श्री गोपाल कृष्ण वीणा वादक हैं। आपने बहुत छोटी अवस्था में ही अपने पूज्य पिता जी द्वारा संगीत विद्या का पूर्ण रूप से ज्ञान प्राप्त किया सभी वाद्यों में आपका पूर्ण अधिकार है। विशेष क्या जिस वीणा वाद्य के लिये सभी शास्त्रोंकी जानकारी आवश्यक हो! और आयु भी स्वर साधते ५० ६० वर्ष बीत चुकी हो, तब कहीं वीणा की जानकारी प्राप्त हो सकती है। लगभग आपने उसी वीणा की जानकारी १५ वर्ष की आयु में

अच्छी तरह प्राप्त करली। आज कल आप देहली रेडियो स्टेशन पर कार्य करते हैं। आपकी महान प्रतिष्ठा है। विशेष कर रेडियो स्टेशन में आपका प्रोग्राम देश और विदेश दोनों के लिये होता है। वैसे आप सदाचारी संयमी और ईश्वर भक्त साधु स्वभाव निर्मल विचारशील निर्भिमानी सुयोग्य हैं। और आप के द्वारा भिवानी का नाम देश और विदेशों में प्रसिद्ध हुआ है। आपका नाम गोपालकृष्ण शर्मा भिवानी के नाम से ब्राडकास्ट किया जाता है, आपकी आयु अभी २४-२५ वर्ष की है इतनी छोटी अवस्था में आप एक प्रसिद्ध संगीतकारों में गिने जाते हैं। भिवानी में आप के द्वारा स्थापित गांधर्व विद्यालय है जिसका संचालन आप के शिष्य करते हैं, आप एक प्रसिद्ध संगीतज्ञ और प्रेमी महानुभाव हैं।

तिगड़ानिया परिवार

इस परिवार का कौशिश गौत्र है इस परिवार में पहले अच्छे अच्छे त्यागी और महात्मा हो चुके हैं। अब पं० अजुध्या प्रसाद जी शर्मा हैं जो जन प्रिय, प्रभु भक्त, संयमी पुरुष हैं रायगढ में श्री सेठ किरोड़ीमल जी द्वारा संस्थापित श्री गौरीशंकर जी के मन्दिर में भगवान श्रीशंकरदेव की श्रद्धा पूर्वक सेवा पूजा करते हैं।



पं० श्री अजुध्याप्रसाद जी शर्मा
रायगढ



श्री महात्मा फूलचन्द जी जैन मुनि,
अध्यक्षः सिद्ध श्री आश्रम भिवानी।

पं मनोहरलाल जी पुरोहितः—आप पुराने विचारों के सीधे सादे सत्यप्रिय अपने सिद्धान्त के एकही व्यक्ति हैं आप के पुत्र श्री कृष्ण शर्मा बी० ए० बहुत बुद्धिमान सुयोग्य तथा बलदेव जी शर्मा हैं, जो अपना कार्य सुचारु रूप से कर रहे हैं

विशेश्वरलाल जी:–भिवानी के प्रसिद्ध मजदूर कार्य कर्ता हैं। इन से छोटे अर्जुनदत्त शर्मा हैं जो कांग्रेस विचारों के सुयोग्य जन प्रिय व्यक्ति हैं सेठ किरोड़ीमल जी के आई० हस्पताल में कार्य करते हैं। पं० पन्नालाल जी शर्मा भी इसी परिवार के सुयोग्य व्यक्ति हैं व्यापार क्षेत्र में कार्य करते हैं।

श्री पं० रामेश्वरदास जी शर्मा (मास्टर) :– जो बहुत ही मेहनती और अंग्रेजी हिन्दी तथा उर्दू के विद्वान होने पर भी सीधे सादे जीवन बनाए हुए है। प्राईवेट तौर पर बच्चों को शिक्षा देना ही आपका दैनिक कार्य है।

कोसली वाला परिवार

श्री पं० गंगादत्त जी व पं० रामजीलालजी:–आप रिटायर स्टेशन मास्टर हैं, सभी कार्यों से उपराम लेकर शान्ति का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। तीसरे पं० हरदत्तराय जी शर्मा यहां पर ही सरकारी स्कूल में टीचर हैं आपके रहने के मकान नरसान पाने में हैं। इसी परिवार में पं० मातुराम जी शर्मा

बागकोठी में निवास करते हैं। आप श्री सम्प्रदाय के अनुयायी हैं, यह परिवार बहुत प्रतिष्ठित एवं ख्याति प्राप्त परिवार है। शहर में इस परिवार का बड़ा सम्मान है।

बौंदिया परिवार

इसमें पं० साधुराम जी एक सुयोग्य व्यक्ति हैं पहिले आप व्यापार क्षेत्र रावलपिंडी में कार्य करते थे अब शान्ति पूर्वक प्रभु स्मरण में चित्त लगाये हुये हैं।। इसी में पण्डित मामनराम जी शर्मा जो भिवानी में दुग्ध आदि की दुकान ईमानदारी के साथ करते हैं। इन से छोटा शिक्षा प्राप्त कर रहा है। इन्हीं में श्री पण्डित प्यारेलाल जी शर्मा कलकत्ते में बहुत दिनों से शेयर तथा हैसियन बोरा आदि प्रसिद्ध फर्मों में सम्मान पुर्वक कार्य करते रहे हैं। आप अंग्रेजी तथा महाजनी के सुयोग्य निपुण ख्याति प्राप्त व्यक्ति हैं। आपने हिसाब की पूर्ण जानकारी हो जाने वाली पुस्तक लिखी है। आप भिवानी के प्रसिद्ध डा० विश्वनाथ के छोटे भाई हैं। आप बड़े जन प्रिय शुद्ध विचारक सत्य प्रिय स्वावलम्बी सुयोग्य व्यक्ति हैं।

डा० विश्वनाथ जी के सुपुत्र पं० हरिचरण जी डाक्टरी का कार्य कर रहे हैं। आपका अनुभव डाक्टरी चिकित्सा में उच्चतम है आप जन प्रिय और परिश्रमी व्यक्ति हैं।

डा० श्री रामकुमार जी शर्मा:—आप उस वीर पुरुष हनुमान भक्त ब्राह्मण, जो छोटी आयु में स्वर्गवासी हो गये, श्री पं० सत्यनरायण जी शर्मा के लघु भ्राता हैं आप प्रारम्भ से ही डाक्टरी चिकित्सा का कार्य कर रहे हैं। आजकल आप पटियाला स्टेट में काम कर रहे हैं वैसे अच्छे विचारों के जन प्रिय अनुभवी सुयोग्य व्यक्ति हैं स्व० सत्यनारायण जी के सुपुत्र रमेशचन्द्र राजेन्द्रप्रसाद पढ रहे हैं।

श्री मातुराम जी शर्मा:—आप बहुत दिनों से अहमदाबाद में स्वतन्त्र रूप से कपड़े का कार्य कर रहे हैं। बड़े ईमानदार मिलनसार उद्योगी परिश्रमी व्यापार कुशल व्यक्ति हैं। यह सभी फूलकों की बगड़ी में रहते हैं यहीं पर इनके मकान हैं।

मास्टर परिवार

यह परिवार लोहड़ बाजार में निवास करता है इसका गोत्र आत्रेय है स्व० पं० मोहनलाल जी एक बहुत अच्छे मास्टर हो चुके है, यह इन्हीं की सन्तान है सबसे बड़े पं० नन्दलाल जी शर्मा हैं जो बहुत मिलनसार कुशल हस्त हैं। आंखों के हस्पताल नवलगढ में कार्य करते हैं आपका अनुभव बहुत चढा बढा है। आंखों के इलाज में आप पूर्ण जानकारी प्राप्त कर चुके हैं बहुत सीधे सादे सर्व प्रिय व्यक्ति हैं। दूसरे डा० अमरनाथ

शर्मा आंखों का ही इलाज करते हैं, योग्य प्रेमी उत्साही अच्छे चिकित्सक सभ्य व्यक्ति हैं। श्री श्यामसुन्दर शर्मा अग्रेजी की मैट्रिक तक भिवानी में शिक्षा प्राप्त कर झांसी आयुर्वेदिक कालेज में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। बहुत सरल स्वभाव आस्तिक विचारों के मिलनसार व्यक्ति हैं। पं० दीनानाथ शर्मा शिक्षा प्राप्त कर रहा है।

स्वर्गीय मोहनलाल जी से छोटे पं० कन्हैयालाल जी कालकवि के नाम से विख्यात हैं। आप एक अच्छे कवि हैं मिलनसार हैं कई पुस्तक भी आपने कविता के रूप में लिखी हैं। आप के पुत्र डा० सत्यनरायण शर्मा आंखों की चिकित्सा करते हैं।

पं० मदनलाल जी शर्मा

आप का आत्रेय गोत्र है और आप पं० लाधुराम जी के पुत्र हैं बड़े पराक्रमी और आस्तिक विचारोंके महानुभाव हैं। व्यापारिक क्षेत्र बम्बई में सुयोग्यता पूर्वक कार्य कररहे हैं आप बहुत व्यापार कुशल तथा एक सम्मानित व्यक्ति हैं और बही खाते के कार्य में निपुण हैं। आपके विचार और स्वभाव के कारण बड़ी २ फर्म आपमें प्रेम और पूर्ण विश्वास रखती हैं। आप सत्यप्रिय विश्वास पात्र गम्भीरात्मा और सदाचार युक्त सज्जन व्यक्ति हैं।

वेदनिधि पं० हरिचरण जी आयुर्वेदाचार्य

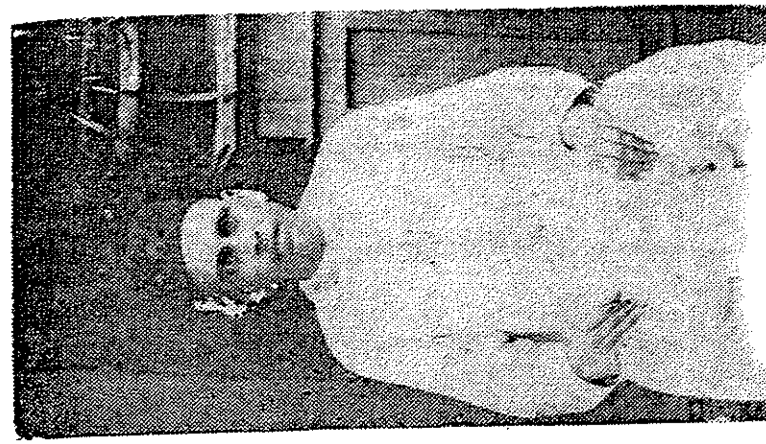
आपने अच्छे २ गुरुवरणों में बैठकर संस्कृत एवं आयुर्वेद का पूर्ण अध्ययन कर सर्वत्र ख्याति एवं महानता प्राप्त की है। आयुर्वेद में आपका निदान एवं चिकित्सा पद्धति आधुनिक डाक्टरों एवं वैद्य समाज में गौरवशाली स्थान बनाये हुए हैं। आप बड़े अच्छे वक्ता व तर्क शास्त्री और शास्त्रार्थ महारथी हैं। श्रीमान जी बड़े दयालु परोपकारी उच्चकोटि के महापुरुष हैं। आप श्रीमद्भागवत एवं श्री गीताजी के भावों पर बलते हैं। तब स्वयंतो गद्गद् होही जाते हैं। परन्तु श्रोता भी आपके प्रति अपनी अगाध श्रध्दा रखते हुवे भाव विभोर हो जाते है। आज आपके प्रभाव एवं संयमी जीवन को आदर्श रूप समझ सैकड़ों की संख्या में शिष्य हैं। आपके चरणों में अटूट श्रध्दा एवं भक्ति रखते हैं आप सदैव से ही राष्ट्रीय आन्दोलनों में भाग लेते रहे हैं। और इन्ही कारणों से आप श्रीकृष्णमन्दिर के दर्शनों के साथ २ निवास भी कर चुके हैं। सन् १९२१ से आप विशुध्द खद्दर धारण किए हैं। प्रेम सेवाभाव आपकी रग रग में कूट २ कर भरा हुआ है। उसीका यह फल है कि आज आप मलाड़ (बम्बई) के सम्मानित म्युनिस्पिल बोर्ड के मैम्बर तथा मलाड़ कांग्रेस कमेटी के प्रधान हैं। आप श्री किशनलाल जालाण आयुर्वेद धर्मार्थ औषधालय मालाड़ के प्रधान चिकित्सक हैं। आपका एक आयुर्वेद विषय

का ग्रन्थ प्रकाशित हो रहा है। इस ग्रन्थ से आयुर्वेद जगत को बहुत कुछ लाभ प्राप्त होगा। बम्बई मालाड़ म्युनिस्पिल कमेटी के चेयरमैन श्री समैया जो आप के विशेष शुभचिन्तक तथा अभिन्न मित्र हैं।

आपका जीवन विशाल एवं लोकोपकारी सार्थक और सफल है। वेदनिधि जी वास्तव में इस युग के वेत्ता महान त्यागी यशस्वी और धर्म-प्राण आदर्श विद्वान तथा धर्म नेता हैं। आपके पुत्र चि० शिवकुमार जो उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहा है, दूसरे चि० भगवतस्वरूप, रान्जेद्रबाबु पढ रहे हैं।

श्री पूर्णचन्द्र जी वैद्य

आप भिवानी सनातनधर्म सभा के मन्त्री हैं और प्राकृतिक चिकित्सा के पूर्ण विद्वान हैं। वैसे आपका आयुर्वेदिक चिकित्सा पर भी पूर्ण अधिकार इस लिये है कि आपके वंश में ३–४ पीढियों से आयुर्वेद द्वारा जनता जनार्दन की महान् सेवा होती आरही है। आप सत्य प्रिय और सरल स्वभाव के गरीबों के हितैषी परोपकारी महानुभाव हैं। आपके विशाल हृदय में प्रभु के प्राण दीन जनों के लिए बहुत बड़ा स्थान है। आपसे झूठ, छल, कपट कोसों दूर है, इस भीषण कलि–युग में आप जैसे सत्य स्वभाव के बहुत कम व्यक्ति मिलते हैं। विशेष क्या आप इस युग के देवता–पुरुष हैं।



पं० प्यारेलाल जी शर्मा



श्री विभीषणाचार्य जी शास्त्री



वेदनिधि पं० हरिचरण जी आयुर्वेदाचार्य

श्री घनश्यामदास जी जालाण की अध्यक्षता में भाषण।

श्री दुर्गाप्रसाद जी वैद्य—आपका चिकित्सा सम्बन्धि ज्ञान को बड़े २ आयुर्वेद के विद्वान भी मानते हैं आप सरल स्वभाव के व्यवहार कुशल श्रेष्ठ मति के व्यक्ति हैं। अभिमान और कटुता आपको स्पर्शभी नहीं करसकी है, आप दुःखसुखमें सच्चे हृदय से साथ देने वाले एक सच्चे वैद्य के गुणों से युक्त स्वाभिमानी भूदेव हैं। और कलकत्ते में आपका औषधालय अच्छी सफलता प्राप्त कर रहा है।

श्री जगदीशचन्द्र जी वैद्य—आपका जितना बड़ा अधिकार आयुर्वेद पर है उतनाही संगीत तथा कला प्रदर्शन में भी है आप कई एक फिल्म कम्पनियों में प्रदर्शन की करचुके हैं, आप सफल डायरेक्टर तथा कुशल वैद्य हैं। आपके पास आकर बिमार को अपनी बिमारी नहीं बतलानी पड़ती आप नब्ज देखकर स्वयं बिमारी बतला देते हैं। आप आडम्बर शून्य निर्भिमानी और सच्चे हित चिन्तक मित्र धर्म के माननेवाले अपने ढंग के एक ही व्यक्ति हैं। आपसे जो व्यक्ति एक बार भी मिल लेता है, उस पर आपका पूरा २ प्रभाव पड़ता है। आप प्रतिभासम्पन्न और भावुक हृदय के सर्व कार्य कुशल व्यक्ति हैं। इस समय आप बोल्ले पारले (बम्बई) में वैद्यक का कार्य करते हैं। अच्छे २ फिल्मस्टार आपसे राय लेने आते हैं, उन पर आपका बहुत सन्मान युक्त प्रभाव है।

श्री मुरलीधर शर्मा—आप संस्कृत के शास्त्री और आयुर्वेद के पूर्ण ज्ञाता हैं, साधु स्वभाव के अभिमान शून्य सीधे सादे सरल स्वभाव के साधु पुरुष हैं और देहरादून में जनना जनार्दन की चिकित्सा द्वारा सेवा कर रहे हैं।

श्री बजरंगलाल जी वैद्य—आप मिलनसार व्यवहार-कुशल स्वाभिमानी योग्य व्यक्ति हैं। भिवानी इतिहास के निर्माण में ब्लाक आदि तैयार करवाने में आपका बहुत बड़ा सहयोग रहा है। आप प्रतिभा सम्पन्न बुद्धिमान हर कार्य में दक्ष हैं। इस समय देहली में 'शिवनरायण औषधालय' का आप द्वारा कुशलता पूर्वक संचालन हो रहा है। आप सफल वैद्य और कुशल लेखक तथा कई एक संस्थाओं के पदाधिकारी भी हैं।

भिवानी-इतिहास समिति आपका हृदय से स्वागत करती है।

श्री श्यामलाल वैद्य—आप इस समय बिहार में सफलता पूर्वक वैदिक का कार्य कर रहे हैं। आप जितने आयुर्वेद चिकित्सा में निपुण हैं उतने ही व्यापारिक क्षेत्र में भी सफल हैं।

शिवकुमार शर्मा

आप गवर्नमेन्ट से पेन्शनर हैं। इस समय व्यापारिक क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। बहुत सज्जन बुद्धिमान तथा हर तरह के कामों में कुशल और मिलनसार सुयोग्य व्यक्ति हैं।

श्री रुद्रमणी जी शर्मा

आप कर्मकाण्ड के अच्छे विद्वान हैं और अनुष्ठान करने में बहुत ही साधनायुक्त हैं। आपका जीवन अत्यन्त सादा तथा सीधे सादे ब्राह्मण देवता हैं।

धनपति शर्मा बड़ोलावाले

आप श्रीवैष्णव सम्प्रदायानुगामी हैं। आपका निवास स्थान बागकोठी में है। बहुत विनम्र स्वभाव के मिलनसार, मृदु भाषी तथा सदाचार युक्त व्यक्ति है। सात्विक जीवन होने से आप सीधे सादे और सत्य प्रिय कार्य कुशल महानुभाव हैं। ईमानदारी और सद्व्यवहार ही आपका विशेषगुण है। आपका चि० मामनचन्द पढ रहा है

सत्यनरायण गोरीशंकर शर्मा

इनका मकान लौहड़बाजार में घाटी के पास आबाद है, सत्यनरायण भिवानी में और गौरीशंकर कटक में कार्य करते हैं। यह परिवार आजमाल परिवार का पुरोहित है। दोनों भाई बहुत योग्य, समझदार, मिलनसार तथा परिश्रमी महानुभाव है।

सहत-परिवार

पहिले इस परिवार में अच्छे २ व्यक्ति होचुके हैं अब श्री रामरूप जी शर्मा इस परिवार में मिलनसार व्यक्ति है और युवक मण्डली के पुस्तकाध्यक्ष होने के कारण इन्हे सारा शहर जानता है। इस समय आप अपना स्वतन्त्रता पूर्वक बाइडिंग का कार्य करते हैं। बहुत परिश्रमी कार्य कुशल व्यक्ति हैं।

सादीराम जी का परिवार

इनके घर सुभाषगली में आबाद हैं पहले इस परिवार में अच्छे २ व्यक्ति हो चुके हैं। अब कालीचरण शर्मा हरिचरण शर्मा शिवचरण शर्मा श्यामचरण शर्मा गीगराज आदि अपना अपना कार्य सन्मान पूर्वक योग्यता से कर रहे हैं इस परिवार में सभी मिलनसार और कार्य कुशल व्यक्ति हैं।

स्वामी दयानन्द जी महाराज

आपका निवास स्थान बीरवान पाने में है संगीत विद्या का आपको अच्छा ज्ञान है, विशेष तौर पर आप तीर्थ स्थान में ही अपना जीवन व्यतीत करते हैं। भारत वर्ष के प्रत्येक समारोह में आप अवश्य सम्मिलित होते हैं। श्री वैष्णव सम्प्रदाय के अनुयायी हैं आपके पितामह श्री शिवकुमार शास्त्री भारत के दिग्गज विद्वानों में थे।

गुजारी ब्राह्मण

इनका बहुत बड़ा परिवार है इस समय प्रतिष्ठित व्यक्ति मास्टर गंगाराम मास्टर रामचन्द्र बी० ए० बदलुराम जी आदि २ हैं, जो योग्यता पूर्वक कार्य कर अपना सफल जीवन बनाये हुये हैं।

नानगिया परिवार

यह परिवार बहुत बड़ा परिवार है और कृषि (जमीदारी) का काम विशेषकर कर इस परिवारवाले करते हैं। सराय. चौपटे में इनके मकान हैं। पं० गुलजारीलाल जो शर्म्मा जो पहिले पुलिस में बहुत दिनों तक सर्विस कर चुके, बहुत योग्य नेकनियत समझदार सत्यवक्ता सज्जन हैं। इनसे छोटे गुलाबचन्द, भानाराम, सुर्जनसिंह आदि भले एवं परिश्रमी हैं। स्व० दुर्गादत्त जी का लड़का चि० ओमप्रकाश शिक्षा प्राप्त कर रहा है।

प० खेताराम जी शर्म्मा

आप बड़े सरल स्वभाव, मिलनसार, शिक्षित और ख्याति, प्राप्त व्यक्ति है। टी० आई० टी० में सैल्ज डिपार्ट विभाग में योग्यता पूर्वक कार्य करते हैं। आपके पुत्र-दयाकिशन, रमेशकुमार आदि शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

पं० बनारसीदास जी शर्मा

आप स्व० श्री गीलूराम जी जो कलकत्ते के व्यापारिक क्षेत्र में प्रतिष्ठा सम्पन्न महानुभाव थे, उनके छोटे भाई हैं। आप आस्तिक विचारों के सत्यप्रिय प्रभुभक्त दयालु हृदय के महानुभाव है और पंजाब क्लोथ मिल मे सर्विस करते हैं।

विशेषकर देहली ब्रांच का काम देखते है। मिल मालि

कों का आपके प्रति पूर्ण विश्वास और आपको अपना महान शुभचिन्तक समझते हैं। वास्तव में श्री बनारसीदास जी का जीवन पवित्र और ईमानदार सच्चा तथा सफल जीवन है। आपके सुपुत्र चि० वसन्त, रामप्रताप शिक्षा प्राप्त कर रहे है।

पं० सत्यनारायण जी शर्मा

आपका गौत्र भारद्वाज है। आप सरल स्वभाव के मिलनसार व्यापार कुशल व्यक्ति हैं। महावीर घाटी में आपके निजी भवन हैं। आपका पुत्र सुरेन्द्रकुमार पढता है।

प० मन्नुलाल जी शर्मा

आप काफी समय से श्री मदनलाल जी केडिया के यहां सर्विस करते हैं। बहुत होशियार और कार्यकुशल व्यक्ति है केडिया जी के विश्वासपात्र और योग्य महानुभाव हैं।

पं मनोहरलाल जी शर्मा

आप श्री रघुनाथ एण्ड कम्पनी फार्मेसी में बहुत योग्ता व सावधानी से काम करते हैं। मिलनसार और चतुर कार्य कुशल व्यक्त हैं।

पं० सन्तलाल जी शर्मा

आप लोहड़ बाजार में दुग्ध, मिठाई आदि की बहुत सालों से दुकान करते हैं और इस काम में बहुत प्रसिद्धि प्राप्त व्यक्ति हैं। आपसे छोटे मूंगाराम जी कलकत्ते में कार्य करते हैं।

पं० रामबिलास जी शर्मा

आप उच्च विचारों के आस्तिक सन्तोषी महापुरुष हैं और आपके चि० निरंजनलाल शर्मा बहुत मिलनसार सुयोग्य कार्य कुशल चतुर व्यक्ति हैं। सच्चे मित्र हर व्यक्ति के सुख दुख के साथी हैं। छोटा शिक्षा प्राप्त करता है।

पं० श्यामलाल जी शर्मा

आप पुराने विचारों के उद्योगी परिश्रमी व्यक्ति हैं। आपके चन्द्रभान जी शर्मा है जो प्रभुभक्त सुयोग्य मिठाई आदि बनाने में सिद्ध हस्त एवं बहुत मेहनती है।

प० दिलेराम जो ज्योतिषी

आप प्रसिद्ध ज्योतिषी और धर्मशास्त्रों के पूर्ण ज्ञाता हैं। बहुत दिनों से देहली नटवाकूचा में पूर्ण सम्मान के साथ सभ्य समाज में उपाध्याय का कार्य करते हैं। आप बड़े मिलनसार, प्रभावशाली, बन्दनीय, परमादरणीय, श्रद्धास्पद, पूज्यपाद हैं।

श्री हरिचरण जी ज्योतिषी

आप भिवानी कांग्रेस कमेटी के प्रधान रह चुके हैं और बड़े उत्साही कार्य कुशल स्वाभिमानी व्यक्ति हैं। आप कर्म कांड तथा ज्योतिष के पूर्ण विद्वान हैं। शहर में आपकी महान प्रतिष्ठा है। आजकल आप रंगून में निवास करते हैं।

श्री श्यामसुन्दर जी शर्मा

आप स्व० श्री पं० मोहनलाल जी शर्मा के सुयोग्य सुपुत्र हैं। स्वाभिमानी उच्चविचारों के शिक्षित एवं समझदार महानुभाव हैं। इस समय झांसी आयुर्वेद कालिज में डाक्टरी

तथा वैद्यक की शिक्षा प्राप्त कर रहे और विनय सम्पन्न हैं।

श्री बिरजानन्द जी शर्मा

आप स्व० सन्तलाल जी शर्मा वैद्यराज के सुयोग्य सुपुत्र एवं श्री पं० परमानन्द जी म्यु० क० के लघु भ्राता हैं। बड़े आस्तिक विचारों के सुशील व्यक्ति हैं। वर्तमान में कालिज में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

श्री हुन्नरमल जी शर्मा

आप बड़े आस्तिक विचारों के प्रभुभक्त बड़े उत्साही सच्चे ब्राह्मण हैं। आपने जितना देशाटन किया है सायद ही किसी भिवानी निवासी ने किया हो। प्रायः तीर्थों की यात्रा आपने पैदल और कुछ सवारी से की है। अभी हाल में ही आप अपने साथियों को लेकर हरिद्वार, बद्रीनारायण, गंगोत्री, जमनोत्री, तथा गोमुख तक जहां से श्री गंगाजी का उदय होता है। आप सौम्य तथा छिपे सन्त हैं। आपके साथी पं० केशवदेव जी शर्मा रविन्द्र शर्मा भी यात्रा कर आपके उपकार को हृदय से मान रहे है।

कौन क्या लिख सकता है !

पूज्य भूदेव वर्ग के बारे में कौन क्या लिख सकता है। अनेकों ग्रन्थ अपनी साक्षी दे रहे हैं, मैं तो क्षुद्र हूं। अतः किसी महान् पुरुष के जीवन के सम्बन्ध में कुछ लिखा गया हो या किसी का रह गया हो। आपना ही समझ कर क्षमा करें, और आज्ञा करें भविष्य में तृतीय खण्ड में उसकी पूर्ति करदी जाएगी।

लेखक



राजर्षि श्री उदयसिंह जी बहादुर
पाटन-नरेश

राजपूतों का परिचय

—:※:—

राजर्षि श्री उदयसिंह जी बहादुर पाटन नरेश

श्रीमान राव राजा साहब उस पवित्र और आदरणीय गद्दी से सम्बन्ध रखते हैं जिसे हिन्दु जनता बड़ी श्रद्धा और गौरव की दृष्टिसे देखती है। इस प्राचीन सिहासन पर धर्मराज श्री युधिष्ठिर जी महाराज राज्य कर चुके हैं। और यही क्षत्रीय सम्राट श्री महाराज अनङ्गपाल की न्याय प्रिय गद्दी है जिस पर आज श्री उदयसिंह जी पाटन नरेश विराजमान हैं और यह उन महान आत्माओं के उत्तराधिकारी हैं, जिनका जीवन सम्बन्ध भिवानी तथा १४३४ खेड़ों के निर्माताओं से सम्बन्धित है।

आपके पुर्वजों ने ही तो यह समूचा इलाका आबाद किया है जो कभी भगवान श्री कृष्णजी के समय यह भीषण खाण्डव बन के नाम से प्रसिद्ध था किन्तु आज यह स्थान जगह २ नगर गांव तथा शहरों के रूप में शोभायुक्त दृष्टिगत हो रहे हैं यह सभी आपके वंशजो की कृपा का फल है।

आप सूर्यवंशावतंश महाराज नैपाल की सौभाग्यवती राजकुमारी से विवाहे हैं।

भारतवर्ष के समस्त क्षत्रियों में आपका पावन सिंहासन बन्दनीय है, आपकी सौम्य प्रतिमा, तेजस्वी ललाट, गौ-ब्राह्मण प्रतिपालिकता प्रशंसनीय है। आप के इस पवित्र शरीर में उन देदिप्यमान महापुरुषों का पावन शोणित है जो आज विश्व के गगन मण्डलमें तारे बनकर जगमगाहट कर रहे हैं

आप महान उपकारी साधु स्वभाव के उज्वल धर्मरत्न हैं जिस समय देहली में वीतराग श्री करपात्री महाराज द्वारा शतमुख कोटि होमात्मक यज्ञ किया जा रहा था उस समय आप नंगे पावों यज्ञ दर्शनार्थ पहुंचे क्यों कि कभी इतना विशाल यज्ञ आपके कुल पितामह धर्मराज युधिष्ठर ने इसी नगरी में आज से ५ हजार वर्ष पहले किया था। इस लिये आप का उस यज्ञ में भाग लेना कर्तव्य था, आपके स्नेह पूर्ण व्यवहार धर्म प्रेम को देख कर जगद्गुरु श्री शंकराचार्य जी ने आपको राजर्षि पदवी से सुशोभित कर भारत के राजाओं में आपको विशेष सम्मानित किया यह समूचा इलाका महाराज पाटन की गद्दी का कृतज्ञ है। आपके राजकुमार चि० वीरविक्रमसिंह तथा दो राजकुमार और भी हैं।

वैसे तो राजपूत जातिका विस्तृत इतिहास भिवानी इतिहास अतीत खण्डमें विस्तार पूर्वक प्रकाशित हो चुका है जिसमें वीर केसरीश्री ठा० चन्द्रभान जी, श्री ठा० पेमासिंह जी, श्री ठा० टोडरसिंहजी आदि २ वीर पुरुषोंके नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। वर्तमानसमय में जो २ पानेवार प्रसिद्ध व्यक्ति हैं उनका परिचय इस प्रकार है:—

श्री ठा० हजारीसिंह जी वैद्य

आप पहले म्युनिस्पिल कमेटी के कई वर्षों तक मेम्बर भी रह चुके हैं। पहिले ही दिन से आयुर्वेद की चिकित्सा करते हैं। आपका नाड़ी ज्ञान प्रसिद्ध है महात्माओं की सेवा करके अद्भुत नुस्खों का आपने संग्रह किया है। वैसे आप सुयोग्य आचारनीष्ठ व समझदार सत्य प्रिय महानुभाव हैं। आप के पुत्र श्री मंगुसिंह श्री श्यामसुन्दर जो मार्केटकमेटी के सेक्रेटरी हैं राजेन्द्रसिंह आदि आदि हैं

ठा० पूर्णसिंह जी बी० ए०

आप स्वर्गीय ठा० गाहड़सिंह जी जो एक सच्चे और बहादुर सत्य प्रिय बड़े नेक इज्जत राजपूत थे उनके जेष्ठ पुत्र हैं। आपने भिवानी में ही शिक्षा प्राप्त की और बाद में आप

राजस्थान बीकानेर स्टेट के शिक्षा विभाग में कार्य करने लगे फलस्वरूप कईएक हाईस्कूलों में हैडमास्टर पद पर रहे और, आपके द्वारा बहुत शिक्षा प्रचार हुआ यहां तक कि बीकानेर सरदार शहर सादुलपुर आदि शहरों के प्रायः लड़के आपसे शिक्षा प्राप्त कर आज व्यापारिक, सामाजिक, तथा सार्वजनिक वर्ग में महान योग्यता पूर्वक कार्य कर रहे हैं और उनके जीवन पर आपके व्यक्तित्व का बड़ा प्रभाव तथा आपके गौरवशील आचरणके प्रति उनकी महान श्रद्धा एवं गुरुत्व भावना बनी हुई है आपका जीवन आदर्श है।

सम्पूर्ण राजस्थान के सभ्य एवं शिक्षित वर्ग में आप के आदरणीय जीवन का चिरस्मरणीय स्थान बना हुआ है। जो व्यक्ति आपके सम्पर्क में किसी भी रूप में एकबार भी आया उसकी आपमें विशुद्ध भावना ऐसी बनी कि वह अन्तः करण से आप का ही बन गया। आप इस समय अपना साधु जीवन बनाये हुए हैं। विश्वपूज्य महात्मा श्रीअरविन्द घोष जिन्हें अध्यात्म वाद का जनताकी तरफसे आचार्यत्व प्राप्त हुआ है। उनमें आप की अगाध श्रद्धा व भक्ति है। उनके ग्रन्थों का आप अहर्निस अध्ययन ही नहीं करते बल्कि अपने पवित्र जीवन को उसी ढांचेमें ढालते जारहे हैं। और अपना जीवन सफल बना रहे हैं ठा० पूर्णसिंह इस युग के श्रेष्ठ पुरुष हैं आप के अभिन्न

मित्र एवं किसी समय के शिक्षा प्राप्त शिष्य परम हितैषी श्री नेमीचन्द जी चित्र में आपके साथ खड़े हुए हैं। इस समय आप गया सूगरमिल के सम्मनित मैनेजर है जो बहुत योग्यता सेकार्य करप्रशंसा के पात्र बने हुए हैं।

सोल्हाण।

ठा० श्योसिंह जी

आप सरकारी सर्विस में Agriculturs Assistant हैं। बहुत सुयोग्य सर्वप्रिय उद्योगी व्यक्ति हैं अपने कार्य में तल्लीन रह कर सुखी जीवन बनाए हुए हैं। आपके बड़े लड़के राजेन्द्रकुमार 'चक्रवर्ती' एम० ए० जो अच्छे लेखक ऐतिहासज्ञ और विचार शील हैं। वैश्य कालिज में दर्शन शास्त्र के प्रोफेसर हैं और भिवानी के राजपूतों में आदर्श रूप है।

ठा० नत्थुसिंह जीः—आप जमींदारी का कार्य करते हैं बड़े परिश्रमी सुयोग्य यक्ति हैं। पाने में आप सम्मानतनीय और प्रतिष्ठा सम्पन्न हैं।

ठा० चन्द्रसिंह जीः—आप भी जमींदारी का कार्य करते हैं।

खोखरानः—

ठा० रामसिंह जी नम्बरदारः—आप बडे अच्छे स्वभाव के सर्व प्रिय सज्जन हैं, आपके दूसरे भाई रूपसिंह हैं आप दोनों भाई जमींदारी करते हैं।

ठा० मातुसिंह जीः—आप जमीदारी का कार्य भी करते हैं और डाक विभाग में पत्र वितरण का कार्य भी करते हैं। सुयोग्य और जन-प्रिय व्यक्ति हैं ·

टाईयांः—

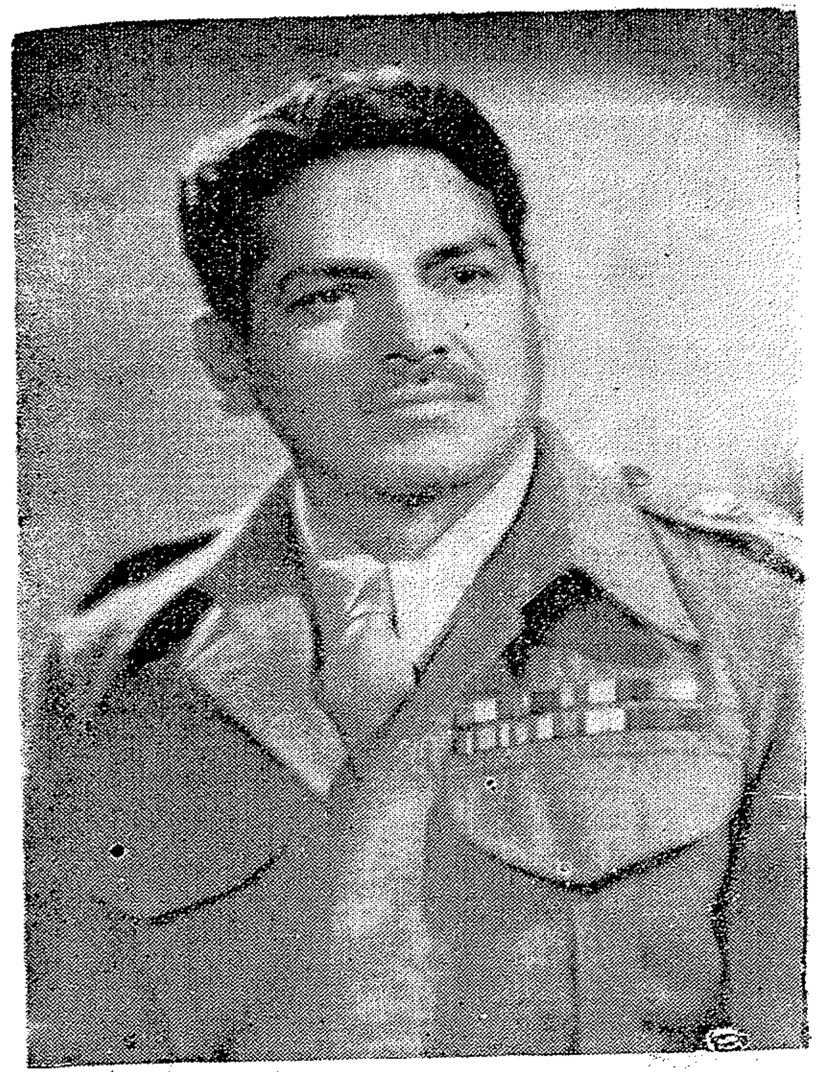
ठा० बलवन्तसिंहजीः—पहिले आप म्युनिसिपल्टी में मेम्बर रह चुके हैं सरल व सीधे सादे स्वभाव वाले और सर्वजन-प्रिय व्यक्ति हैं। आजकल मोटर ठेला जो देहली से भिवानी सामान लाने लेजाने का विशेष कार्य करते हैं। आपसे छोटे शेरसिंह द्वारा ट्रान्सपोर्ट कम्पनी के डायरेक्टर हैं और भिवानी ट्रांसपोर्ट यूनियन के मैनेजिंग डायरेक्टर हैं।

ठा० हजारीसिंह जीः—आप जमीदारी का कार्य करते हैं कमेटी में आप सर्विस भी करते थे सुयोग्य व्यक्ति हैं।

ठा० भूरूसिंह जीः—खेती का कार्य करते हैं, स्वर्गीय ठा० रिसालसिंह जी तंवर जो डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के वर्षों तक मेम्बर रहे थे, उनके सुपुत्र हैं।

ठा० पद्मसिंह जीः—यह बड़े योग्य और कुशल कार्यकर्ता हैं।

ठा० रामसिंहजी, ठा० भानीसिंहजीः— भिवानी म्युनिसिपलकमेटी के प्रेजीडेन्ट रहे काफी सम्मान प्राप्त किया



लैफ्टिनैन्ट कर्नल
ठा० धर्मपालसिंह जी बहादुर

और कमेटी के कार्यों में काफी सुधार और संशोधन किया वह बड़े परिश्रमी मित्रों के मित्र और वीर पुरुष थे।

ठा० जगरूपसिंह जी:—कमेटी की सर्विस करते थे। आप जमींदारी भी करते हैं मिलनसार सुयोग्य और परिश्रमी व्यक्ति हैं और किसी जमींदार बैंक के डायरेक्टर भी हैं।

ठा० भरथसिंह जी:—नम्बरदार और सुयोग्य व्यक्ति हैं।

राजाणः—

लेफ्टिनेन्ट कर्नल ठा० धर्मपालसिंह शेखावत

आप स्वर्गीय राय साहिब ठा० उग्रसैन जी के योग्य सुपुत्र हैं। आपका जन्म सन १९०७ में बर्मा प्रदेश में हुआ, तथा भिवानी में अंग्रेजी की शिक्षा प्राप्त कर सैन्ट स्टीफन कालेज में अच्छी शिक्षा का अध्ययन किया। सन् १९२६ में आप सिपाही के पद पर नियुक्त हुए १९३२ में देहरादून मिलैट्री कालेज में चले गये। सौभाग्य उत्साह और परिश्रम वीरता के कारण आज आप देशरक्षा विभाग में लैफ्टिनेन्ट कर्नल पद को ससम्मान सुशोभित कर रहे हैं। फ्रन्टियर, ईरान, वर्मा मलाया, जावा, सुमात्रा आदि में गत युद्ध में आपने अपनी देश रक्षा में बहुत भाग लिया। काश्मीर की लड़ाई में जिस समय शत्रु आगे बढ़ रहे थे, आपका साहस वीरता आदर्श है। वैसे आप सरल स्वभाव मधुर भाषी तेजस्वी व्यक्ति हैं।

आप के सुपुत्र चि० विजय पालसिंह एस० डबल्यू में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहा हैं, दूसरे सूर्यपालसिंह देहरादून में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहा है लड़की ग्वालियर में शिक्षा प्राप्त कर रही है।

श्री ठा० धर्मपालसिंह जी:—एक उच्च विचारों के प्रतिष्ठा सम्पन्न सज्जन हैं आपने अपने जीवन को महान उच्चत्तम बनाकर अपने सुकार्यों द्वारा भिवानी का नाम प्रकाशित कर दिया।

ठा० भीमराजसिंहजी:—आप धर्मपालसिंह जी के भाई हैं पहिले सिविल गार्ड में इन्स्पेक्टर रह चुके हैं। अब अपना जमींदरी का कार्य करते हैं।

ठा० कंवरपालसिंह जी:—जयपुर में फौजी कार्य कर रहे हैं

ठा० प्रतापसिंह जी:—आप बड़े योग्य और समझदार व्यक्ति हैं।

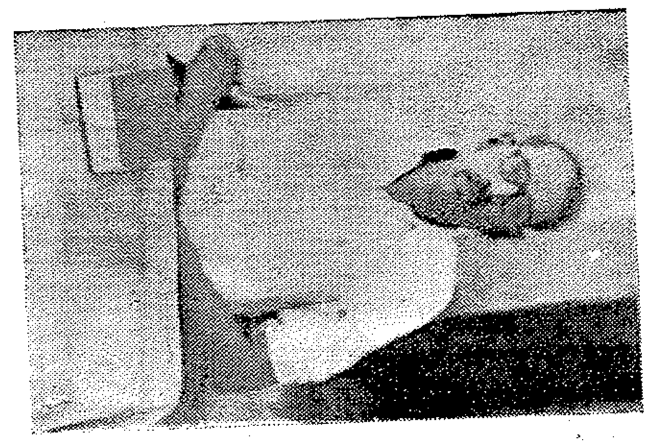
ठा° फूलसिंह जी

आप बड़े योग्य मित्रों के मित्र भिवानी की सभी संस्था के कार्यों में भाग लेते हैं। प्रत्येक व्यक्ति से आपका प्रेम है वर्तमान में आप कमेटी के मेम्बर हैं।

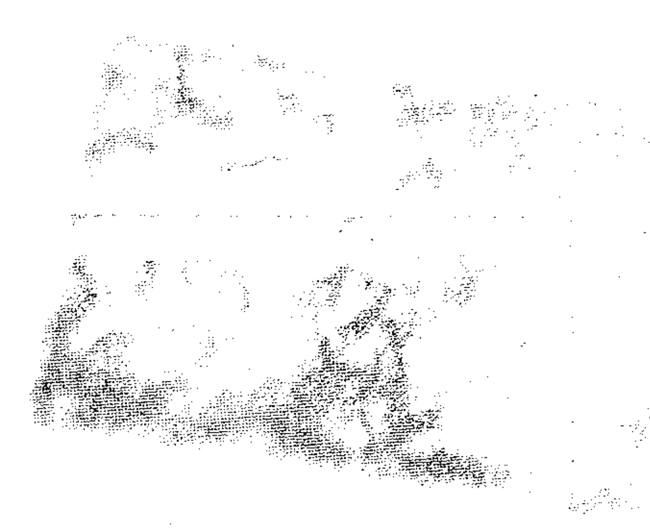
ठा० रिशालसिंह जी:—पहले जेलदार कई वर्षों तक रह चुके हैं और अब नम्बरदार हैं बड़े नम्र स्वभाव परोपकारी और योग्य व्यक्ति हैं।

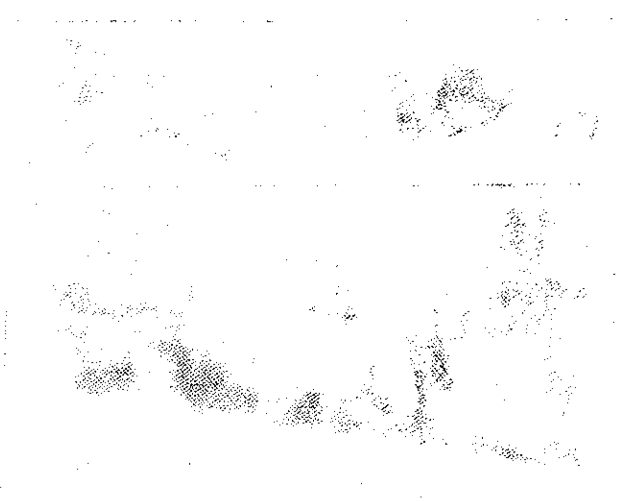


राष्ट्रपति—
महात्मा श्री के० ए० देसाई



ठा० पृथ्वीसिंह जी
बी. ए.





पूरा परिचय देकर भिवानी का नाम सर्वत्र देश में ख्यातिवान बनाया। इस समय आप श्री सेठ किराड़ीमलजी द्वारा संचालित वैश्य कालेज की मैनेजिंग कमेटी के असिस्टेन्ट सेक्रेटरी हैं। शहर के हर काम में आपका हाथ है पर इस वक्त विशेष ध्यान आपका अपनी वकालत की तरफ ही है वैसे आप शहर के सफल वकील हैं

ठा० रामस्वरूपसिंह जी

आप अपने जीवन को बहुत सीधेसादे रूप में बनाए हुए हैं सत्य निष्ठ तथा पुराने विचार युक्त सात्विक भावना के निर्भिमानी एवं सन्तोषी व्यक्ति हैं। आपके—

कंवर बीरसिंह B. A LL. B. वकील

आप बचपन से ही जनहित कार्यों में निस्वार्थ भाव से दिलचस्पी रखने वाले मिलनसार महानुभाव हैं राजपूत जाति के उत्थान में आपने बहुत मेहनत व बुद्धिमता से काम लेकर इस इलाके को शराब खोरी से बहुत बचाया है, आप वकालत में न्याय अन्याय को ठीक समझ कर ही मोकल की वकालत करते हैं अन्याय करने वाला चाहे आप को कितने ही रुपये क्यों न देवे आप उस अन्याय के पैसे को स्वीकार नहीं करते आपमें सबसे बड़ी यही विशेषता है गरीब और दया के पात्र

व्यक्ति की पैरवी आप निःशुल्क भी करते हैं क्यों कि आपके हृदय में गरीबों के प्रति भारी दया है, आप मिलनसार सत्य निष्ठ मित्रों के मित्र और व्यवहार कुशल बुद्धिमान महानुभाव हैं। आप के छोटे भ्राता सुरेन्द्रसिह एवं राजेन्द्रसिह अपना अपना कार्य कर रहे हैं।

उमरावसिह:—आप बिल्टी की दलाली करते हैं बहुत मेहनती एवं ईमानदार मिलनसार महानुभाव हैं।

ठा० जवाहरसिंह:—आप भगासी पानेमें चलतीवाले तथा सार्वजनिक कार्यकर्ता एवं सज्जन व्यक्ति हैं। शहरकी रामलीला में प्रमुख भाग लेकर प्रति वर्ष रामलीला सम्पन्न करवाते हैं, स्वाभिमानी मिलनसार बुद्धिमान व्यक्ति हैं।

पृथानः—

ठा० इन्द्रसिह जी:—आप नम्बरदार हैं आप अपने काम को पूरा निभाने वाले व्यक्ति हैं।

ठा० नत्थुसिह जी:— आप भी नम्बरदारी का कार्य करते हैं बहुत जनप्रिय, मान्यवर, परिश्रमी व्यक्ति हैं।

प्राणानः-

ठा० भोलूसिहजी:—आप नम्बरदार हैं खेती का कार्य परिश्रम के साथ करते हैं एकान्त प्रिय स्वाभिमानी व्यक्ति हैं।



ठा० चिरंजीतसिह जी एडवोकेट भिवानी

कप्तान श्री नत्थूसिंह जी ओ० बी० आई०

आप अपनी युवावस्था में बृटिश शासन काल में सेना आफिसर रहे हैं और उस समय आपने बड़े २ वीरता के कार्य किये हैं जिनके कारण गवर्नमेंन्ट द्वारा आपको बहुत से पद प्राप्त हुए हैं और कई स्वर्ण पदक आपको सन्मान पूर्वक प्राप्त हुए हैं। आप बृटिश आफिसरों की दृष्टि में जो उस समय कार्य निरीक्षण उच्च पदाधिकारी थे बहुत सुयोग्य प्रमाणित हुए। आजकल आप गवर्नमेंन्ट पेन्सनर हैं और हांसी तहसील में बहुत सी भूमि पुरस्कार में प्राप्त हुई है आपके सुयोग्य पुत्र मित्रपालसिंह वकालत की शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

ठा० चिरंजीतसिंह जी तवर एडवोकेट

इस प्रान्त के आप सर्वप्रिय तथा जमींदार वर्ग के सम्मानीय नेता हैं आपका प्रारम्भ से ही सार्वजनिक जीवन बना हुआ है। भिवानी की जनता ने आपको अपना विश्वास पात्र और श्रद्धास्पद समझ कर जिस समय आप वकालत पास भी न कर पाये थे म्युनिसिपल कमेटी का सदस्य चुना और फिर कमेटी के मेम्बरों ने आपको कार्य कुशल एवं नीति निपुण विवेकशील उत्साही निस्वार्थ भाव जनता जनार्दन की सेवा रत आपकी आत्मा को समझ अपने बीच आपको शहर का

प्रेसीडेन्ट (चेयरमैन) नियुक्त किया, इतना ही देहाती जनता
ने आपको अपना सच्चा हितैषी समझ डिस्ट्रीक्ट बोर्ड का
मेम्बर चुना, और शहर तथा इलाकों में आपके द्वारा किये गये
कार्यों की सर्वत्र प्रशंसा होने लगी शहर तथा आसपास के गांवों
में हर कार्यमें आपसे परामर्श लेने अच्छे २ व्यक्ति सभा सोसा-
इटियां आनेलगी थोड़ेही अर्से में आप सर्वप्रिय आदरणीय नेता
बन गये, अखिल भारतवर्षीय क्षत्रीय महासभा का अधिवेशन
भिवानी में आपही के उद्योग से हुआ था सैंट्रल कोपआरेटिव
बैंक के आप ससम्मानित सेक्रेटरी हैं, आपकी निगरानी में
बैंक ने काफी ख्याति के साथ २ अपनी आर्थिक स्थिति को भी
मजबूत बनाया है एक समय ऐसा भी आया कि सन १९४७ में
भिवानी नगर पर विपत्ति के बादल उस समय मण्डराये, जब
भारत में हिन्दू मुस्लिम झगड़ा जगह २ होरहा था भिवानी
शहर में भी एक तूफान आया, उस समय भिवानी नगरी से
ही नहीं बल्कि अपनी मातृभूमि से उऋण होने के लिये उस
आग में अपने जीवन की बाजी लगाकर कूद पड़े और पागल
उन्मत की तरह वीर योधा बन अपनी मातृभूमि की वह सेवा
की जो भिवानी के इतिहास में ठा० चिरंजीतसिंह का नाम
स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गया तब से इस वीर सेनानी के नाम
की धाक सर्वत्र बैठ गई और इन्होंने अपने क्षत्री धर्म का पूरा

श्री ठा० सोवर्णसिंह जी

आप यू० पी० प्रान्त जिला बुलन्दशहर के आदि वासी हैं और भिवानी सैंट्रल कोओपरेटिव बैंक के सुयोग्य मैनेजर हैं आप बड़े ही कार्य कुशल सद्विचारों के न्याय प्रिय महानुभाव है आपका बहुत सा सीधा सादा जीवन भिवानी में ही सम्मान पूर्वक बीता है। आप आस्तिक विचारों के अन्तःकरण से श्री हरि: के दास एवं स्मरण करने वाले सच्चे प्रभु भक्त और छिपे सन्त हैं। आपने अपने अब तक के जीवन में अपने कार्य को पुरी तौर से अपनी डयुटी समझ कर निभाया है। भिवानी सैंट्रल कोओपरेटिव बैंक के कार्य में सफल होकर बैंक को उन्नतिशील बनाने का विशेष श्रेय ठा० सोवर्णसिंहजी को ही है। आप बड़े ईमानदार निति व व्यवहार कुशल शान्त प्रकृति के सरल स्वभाव और मित्रों के सच्चे मित्र उच्च विचारों के महा-पुरुषहैं।आपके पुत्र चि० उदयवीरसिंह तथा वीरेन्द्रसिंह गजेन्द्र-सिंह विजयसिंह आदि आदि उच्च शिक्षा यानी कालिज में योग्यता पूर्वक शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। ठा० सोवर्ण सिंह जी आदर्श और प्रेमी सज्जन है।

ठा० प्रतापसिंह जी शेखावत

आपकी आप रा० सा० ठा० उग्रसैन जी के सुपुत्र हैं बड़े योग्य व मिलनसार प्रेमी व्यक्ति हैं। आप भिवानी सैंट्रल कोओपरेटिव बैंक में योग्यता पूर्वक कैसियर के पदपर कार्य कर रहे हैं।

मेजर रिशालसिंह जी

आपने फौजी विभाग में अच्छा सन्मान प्राप्त किया है

१६४० में आप एक सिपाही के रूप में सेना में भरती हुए थे आज अपनी योग्यता एवं सभ्यता के बल पर तरक्की करते हुए आप लेफ्टिनेन्ट तथा कप्तान एवं मेजर पद प्राप्त किये हुए हैं बड़े होशियार तन्दुरुस्त एवं राजपूती दिलके वीर पुरुष हैं।

आपकी श्रीमति धर्मपत्नि सरोज देवी जी जो आप की आज्ञा में अपना सुखमय जीवन बनाये हुये हैं ठा० नरायणसिंह जी की सुयोग्य सुपुत्री है। आपके चि० दीपकुमार पंकजकुमार शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

ठा० सूरजभानसिंह जी

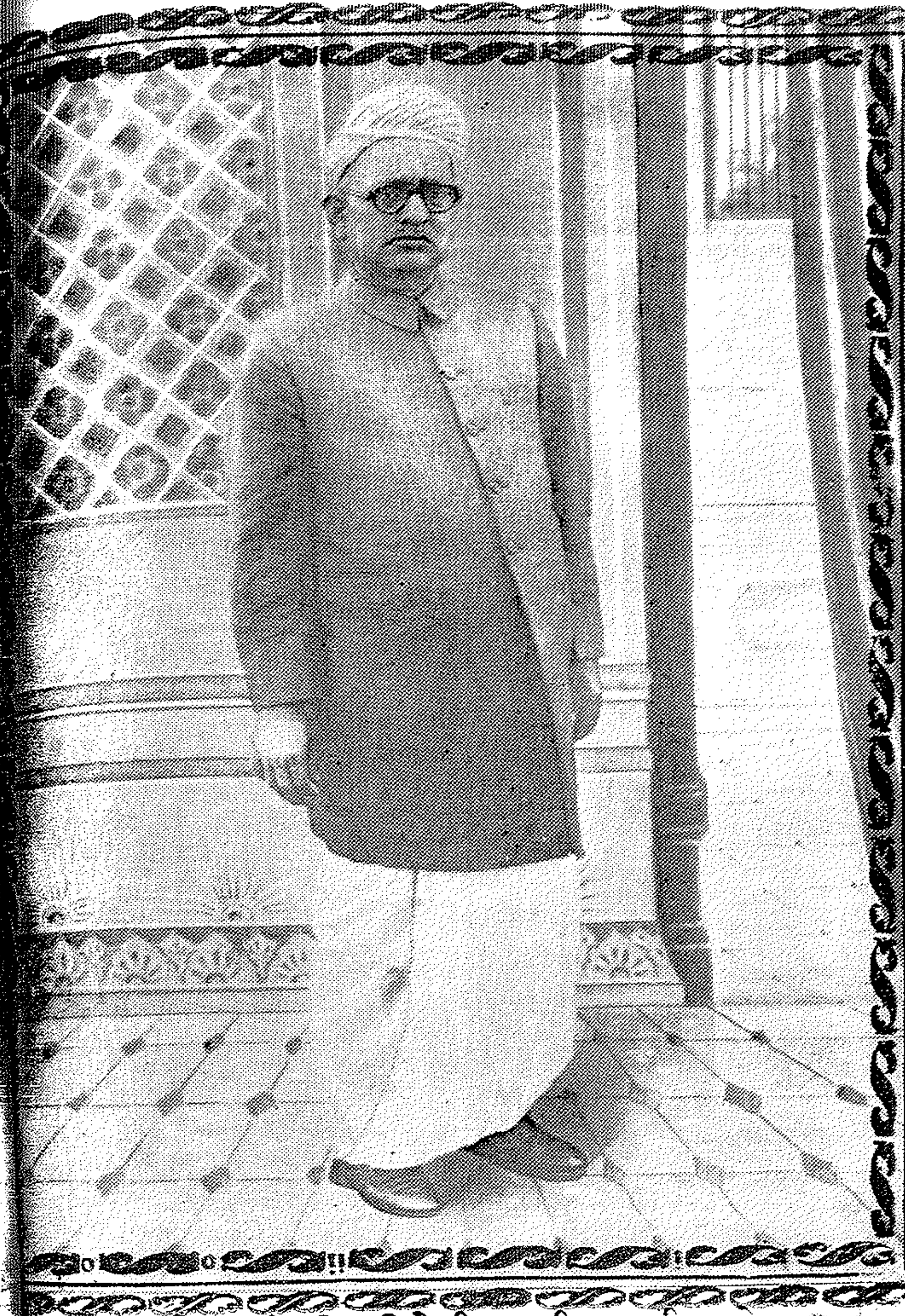
आप हालुवास के रहनेवाले क्षत्रीय कुल भूषण क्षात्र धर्म के योद्धा स्व० चन्द्रभानसिंह जी जिनका नाम आज हिन्दुजनता की जबान २ पर है उन्हीं के वंशज हैं। बड़े निर्भीक प्रकृति के भिवानी सेंट्रल कोआपरेटिव बैंक के परम शुभचिन्तक एवं कार्य कर्ता हैं आप भिवानी में ही निवास करते हैं।

सूचना

नोट:—हमारी हार्दिक इच्छा यह है कि भिवानी तथा आस पास १४४५ खेड़ों का इतिहास लिखें जिस से देश को मालूम हो कि यहां के राजपूतों ने देश धर्म और जाति के लिये कितना बलिदान किया है ठा० चन्द्रभानसिंह जी ठा० पेमासिंह आदि २ क्षत्रियों का यह समस्त इलाका ऋणि है। पहिले बड़े बड़े लोकोपकारी धर्म कार्य इसी जाति से बने हैं, जिनके इतिहास के पृष्ठ आज साक्षी हैं।

"तिलक"

—:※:—



श्रीमन्त-दानवीर सेठ किरोड़ीमल जी, लुहारी वाले.

भिवानी का वैश्य समाज

दानवीर श्री सेठ किरोड़ीमल जी लुहारीवाले

भिवानी तहसील में एक छोटासा लुहारी गांव है यहीं से सेठ किरोड़ीमलजी के पूर्वज भिवानी आकर आबाद हुएथे। बैसाख सं० १६४६ में लाला शम्भुराम जी के घर सेठ किरोड़ीमल जी का जन्म हुआ, उस समय इस बालक को देख कर कौन कह सकता था कि यह एक दिन इस छोटे से गांव सदृश भिवानी नगर का भाग्य विधाता बन इस के जीवन को पलट कर, इस नगर को पंजाब प्रान्त का सबसे अधिक आकर्षक और सुन्दर शहर बना देगा ।

"पुरुषस्य भाग्यम्" के नियमानुसार, सेठ किरोड़ीमल जी जब कुछ बड़े हुए और इन्होंने होश सम्भाला तब इनका भाग्य-चक्र इन्हें कलकत्ते की तरफ खेंच कर लेगया। वहां भगवती कालिका ने प्रसन्न होकर अपना वरद हस्त अपने इस विनम्र सपूत के मस्तक पर रख दिया फलस्वरूप यह श्री लक्ष्मी के कृपा पात्र बने ।

सेठ किरोड़ीमल जी ने धन को संग्रह करके तिजूरियों में भरकर पहरेदारी करना नहीं सीखा, बल्कि धन का सद् उपयोग धर्म कार्य में किया। सेठ किरोड़ीमल जी के घर ज्यों ज्यों लक्ष्मी की कृपा होने लगी, त्यों त्यों इनका पवित्र यश चारों तरफ फैलने लगा। जो भी इनके यहां किसी कामना को लेकर आता उसका हर तरह सन्मान करते, व्यापारी को व्यापार, गरीबों को हर तरह की मदद तथा अन्य हर प्रकार के शुभ काय में प्रतिदिन कुछ न कुछ दान देना ही इनका प्रथम कर्तव्य रहा है।

सेठ किरोड़ीमल जी के विषय में कलकत्ते के दलाल वर्ग की यह एक प्रसिद्ध कहावत है कि सेठ किरोड़ीमलजी ने अपनी जबान से किसी भी दलाल को कभी कोई अपशब्द नहीं कहा और जो कोई दलाल कभी दो बात अनुचित कह भी गया तो उसको कभी जवाब नहीं दिया, इस से बढ कर इनकी विनम्रता व सहिष्णुता और क्या हो सकती है।

फल वाले वृक्ष ही सदा नमते हैं, इसी नियम के अनुसार सेठ किरोड़ीमल जी सदा नम कर चले। यह कभीभी अभिमान किसी व्यक्ति से घृणा या किसी को छोटा समझना इन के विशाल हृदय में यह भाव पैदा हीनहीं हुए।

सेठ जी का पाणि-ग्रहण (विवाह) जिस सौभाग्यवती अशरफी देवीके साथ हुआ वह तो मानो अशरफी के रूप में साक्षात लक्ष्मी सेठ जी के घर में आगई।

भाग्यवान श्री अशरफीदेवी के आतेही यह फर्म चमक उठी और रातदिन लक्ष्मी की अभिवृद्धि होने लगी, फलतः सेठजी का सर्वत्र सन्मान होनेलगा और इनका भाग्य सितारा अधिकाधिक प्रकाशमान होगया। चंचल लक्ष्मी ऐसे सपूत को पाकर प्रसन्न हो, इनके यहां विराजमान होगई, क्योंकि माता उसी पुत्र पर प्रसन्न होती है, जो सदाचारी हो, सब का आदर करता हो, मधुर भाषी हो तथा अभिमान को जानता तक न हो। यही सब गुण सेठ किोड़ीमल जी में विद्यमान हैं।

पर्याप्त धनोपार्जन कर सेठ जी ने यह निश्चय किया कि जीवन में कुछ शुभ एवं विशाल कार्य होने चाहियें जो जनता जनार्दन की स्थाई सेवा कहला सके। जिस समय सेठ किरोड़ीमल जी के हृदय में यह भाव उत्पन्न हो ही रहे थे, उस समय भगवान श्री गौरीशंकर ने इनके पवित्र हाथों से शुभ कार्य करवाने के लिये एक धर्म प्रिय सदाचार युक्त, महान उपकारी सज्जन सेठ पालुरामजी धनानिया को, सेठकिरोड़ीमल जी से मिलाया, जिनके सहयोग से इन्हों ने अगणित धर्म कार्यों का सूत्रपात किया।

पाठक यहतो जानते ही हैं कि लक्ष्मी बहुतों के आती है परन्तु शुभकार्य इस लक्ष्मी से वही कर सकता है, जिसपर भगवान की पूर्ण कृपा हो, नहीं तो आप देखतेही हैं कि धनवानों के रुपये का आज किस प्रकार एशोइसरत की दुनियां में दुरुपयोग होता है किन्तु यह पावन कमाई तो भगवान के प्रिय दीन दुःखियों की सेवा में ही लगनी थी। इस लिये सेठ किरोड़ीमल जी और पालुरामजी दोनोंने सद् बुद्धिसे विचार विमर्ष कर सन १६४६ ई० १३ मई को सेठ किरोड़ीमल धर्मार्थ ट्रस्ट की स्थापना की जिस में सेठ जी ने ३० लाख रुपया दान स्वरुप रक्खा।

इस ट्रस्ट के चैयरमैन सेठ जी स्वयम और ट्रस्टी श्री पालुरामजी धनानिय श्री पुरुषोत्तमदासजी मोड़ श्री निभारामजी वुवानी वाले श्री प्रेमचन्द जी लुहारी वाले श्री मोलकचन्द जी बजाज, श्री सीताराम जी खण्डेलिया आदि आदि हैं। इस ट्रस्ट द्वारा जनता जनार्दन की महान सेवा और जगह जगह धर्म कार्य होने लगे।

इस ट्रस्ट के सुयोग्य ट्रस्टियों ने निस्वार्थ भाव से लग्न पूर्वक परिश्रम कर इस धर्म कार्य को जब अच्छे रूप में बढाया तब सेठ किरोड़ीमल जी का हृदय बहुत प्रभावित हुआ और इन्होंने इस ट्रस्ट को दस लाख रुपये का दान फिर देकर इस द्वारा धर्म कार्यों को प्रोत्साहन दिया।

सेठ किरोड़ीमल जी द्वारा दो गौरीशंकर मन्दिर—एक रायगढ में तथा दूसरा भिवानी में बनवाया गया है। इन दोनों मन्दिरों की बनावट व प्रतिमायें समान हैं किन्तु भिवानी का मन्दिर रायगढ के मन्दिर से काफी बड़ा है, और व्यय भी यहां अधिक हुआ है। पंजाब व सी० पी० प्रान्त में इन दोनों मन्दिरों के समान अन्य मन्दिर नहीं है। यह मन्दिर सेठ जी के जीवन को तब तब अमर रखेंगे जबतक इन मन्दिरों के स्वर्ण कलश देदिप्यमान रहेंगे। ट्रस्ट द्वारा रायगढ में महात्मा गांधी नेत्र-सेवासदन, किरोड़ीमल दातव्य औषधालय, श्रीमति अशरफी देवी मातृ सेवा सदन, किरोड़ीमल प्राइमरी शिक्षणालय तथा एक किरोड़ीमल नगर संस्थापित है।

इसी तरह भिवानी में किरोड़ीमल सिविल हस्पताल श्रीवैश्यकालेज, श्रीकिरोड़ीमल नेत्र-चिकित्सालय, श्रीकिरोड़ीमल हाईस्कूल, किरोड़ीमल पार्क, क्लब तथा पुस्तकालय और अशरफी देवी नर्सिंग ट्रेनिंग स्कूल, श्री किरोड़ीमल कालोनी, श्रीकिरोड़ी मल सब्जी मण्डी, श्री किरोडीमल धर्मशाला, श्री किरोड़ीमल भजनाश्रम आदि आदि अनेकों धर्म कार्य सेठ किरोड़ीमल जी द्वारा संचालित हैं।

इस ट्रस्ट बनने से पहले जो मथुरा छाता आदि में धर्मशालाएं व जगह जगह धर्मकार्य कियेगये थे वह सभी सेठ जी ने

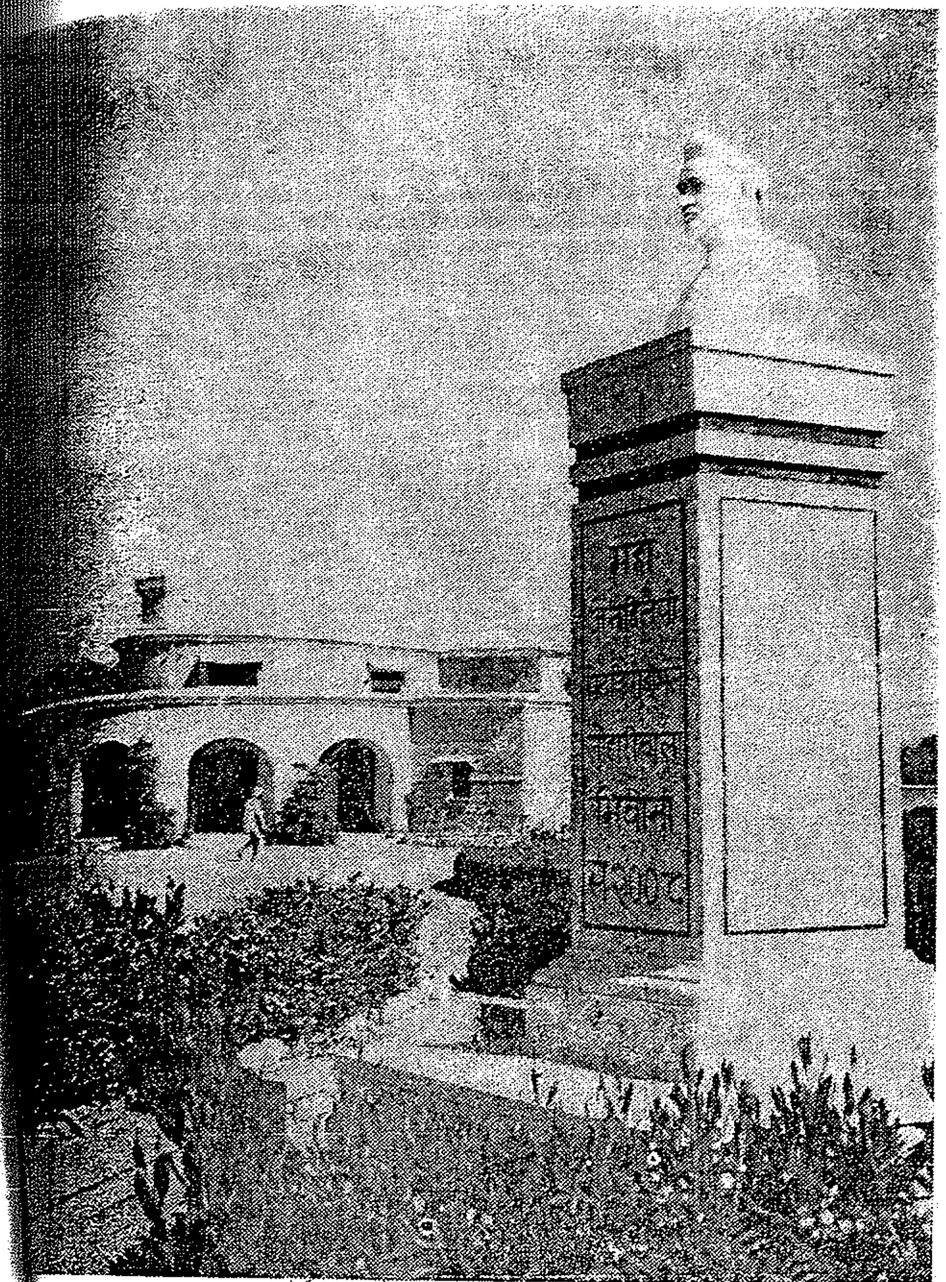
किरोड़ीमल ट्रस्ट के आधीन कर उन्हें सुरक्षित कर दिया। इस प्रकार सेठ किरोड़ीमल जी ने इतने शुभकार्य प्रत्यक्ष एवं अत्यक्ष में किये हैं जिन्हें प्रत्येक व्यक्ति का जानना तो दूर रहा, सेठ किरोड़ीमल जी भी स्वयं नहीं जानते ?

शास्त्रों में कहा है कि:—

सौ व्यक्तियों में एक विद्वान जरूर मिलता है, हजारों में एक शूरवीर भी मिल सकता है, दस हजार में एक धनी भी निश्चित मिल जायेगा किन्तु दानी तो संसार में कभी कभी ही आते हैं।

इसी उक्ति के अनुसार सेठ किरोड़ीमलजी महान् व्यक्ति हैं जो अपनी जन्म भूमि भिवानी तथा कर्म भूमि रायगढ की सेवा करने के लिये ही पैदा हुए हैं।

सेठ किरोड़ीमल जी कोटिपति होने पर भी आडम्बर शून्य हैं, और स्वयं एक साधारण से बगीचे में ही निवास करते हैं। आप मारवाड़ी होते हुए भी भिवानी के नाढ़ वैश्य हैं, सच्ची बात कहने में बडे से बड़े व्यक्ति के सामने भी खरी सुनाने में नहीं चूकते। परन्तु विशेषता यह है कि इनकी बात का कोई बुरा नहीं मानता क्योंकि प्रमाणिक हृदय की सत्य बात कट होने पर भी सत्य है।



श्री सेठ किरोड़ीमल पुस्तकालय और पार्क में सेठ जी का स्टेचू

सेठ जी का स्वभाव बहुत शान्त एवं हृदय ग्राही है, एक एक शब्द प्रेम तथा माधूर्य पूर्ण होता है। जिसके साथ सेठजी जी ने एकबार भी सम्भाषण कर लिया वह इनके सद्गुणों व योग्यता पर मुग्ध होकर इनके वशवर्ती बन जाता है। आपके विशुद्ध हृदय में सभी के प्रति सम भाव एवं उदारता है। वास्तव में सेठ किरोड़ीमल जी के विषय में कुछ भी लिखना सूर्य के आगे दीपक रखना है।

सेठ किरोड़ीमल जी भिवानी के वह नर रत्न हैं, जिनके द्वारा इस नगर की ही नहीं बल्कि पंजाब व सी.पी. आदि प्रान्तों का भी बहुत बड़ा उपकार हो सका है। इस लिये किरोड़ीमल ट्रस्ट के सुयोग्य ट्रस्टियों ने किरोड़ीमल जैसे महान् जन हितैषी के जगह जगह स्टेचू लगा कर उनके प्रति आदर भावना का परिचय दिया है।

हम जगद् नियन्ता प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि ऐसे नर-रत्न धर्मपरायण जनता के महान सेवक वैश्य रत्न हमारी जन्म भूमि भिवानी के लाडले सपूत सेठ किरोड़ीमल जी लुहारीवाला इसी प्रकार जन सेवा करते हुए शत वर्ष सुख से जीवें और भगवती जगद्माता लक्ष्मी की इन पर दिनों दिन कृपा हो ताकि और भी धर्म के महान कार्य इन द्वारा सफल होकर जनता जनार्दन की महान् सेवा कर सकें।

आपके चि० प्रेमचन्द जी ट्रष्ट के ट्रष्टी तथा सम्मानित व्यक्ति हैं, और व्यापारिक क्षेत्र में सफलता पूर्व कार्य करते हैं।

भिवानी का मौड़ा परिवार

श्री सेठ केदारनाथ जी मौड़ा

आप देहली की सुप्रसिद्ध फर्म—प्रेमसुखदास नरसिंहदास जिस पर कपड़े का बहुत बड़े पैमाने पर काम होता है मालिक हैं। आपकी मारवाड़ी तथा व्यापारिक समाज में बहुत मान व प्रतिष्ठा है। आपका बहुत सा जीवन देहली में सामाजिक और व्यापारिक सुधार में लोकोपयोगी सुकार्यों में व्यतीत हुआ है। आप बड़े तीक्ष्ण बुद्धि दूरदर्शी, सर्वप्रिय, सफलसमाज, के नेता हैं। आपने अपने जीवन में जनता जनार्दन की महान् सेवा सत्कार कर हर व्यक्ति के हृदयमें अपना सम्मानित स्थान बनाया है। देहली क्लोथ मार्केट के आप जन्मदाता हैं, इस मार्केट के संचालनार्थ आप ४० वर्ष प्रधान पद पर सुशोभित रह चुके हैं। आज समस्त व्यापारिक केन्द्रों में आपका नाम और यश फैला हुआ है। यह सब कुछ आपके प्रभाव एवं उद्योग और स्वार्थ रहित भावना का फल है। देहली निवासियों का आप में सच्चा और सम्माननीय प्रेम बना हुआ है। देहली में होने वाले प्रायः सभी समारोह चाहे किसी भी सम्प्रदाय व देशोत्थान को लेकर हुए हों उनको सफल बनाने में सेठ—



श्री केदारनाथ जी मोड़ा
(प्रेमसुखदास नरसिंहदास देहली)

केदारनाथ जी का उदार हृदय साथ रहता है। आप सीधे साधे होते हुए भी अपनी प्रतिभा एवं व्यापार और व्यवहार कुशलता के नाते अपनी फर्म को बहुत उन्नति शील एवं सम्पत्तिशाली बनाए हुए हैं।

श्री मेलाराम जी वैश्य के आप बड़े भ्राता हैं, यह भी आपके जीवन में महान गौरव की बात है। आपके सुयोग्य एवं कार्य-कुशल सुपुत्र श्री हनुमानप्रसाद जी श्री घनश्यामदास जी बी० ए० हैं जो अपनी फर्मों का कार्य बड़ी योग्यता पूर्वक संचालन कर रहे हैं।

श्री मेलाराम जी वैश्य

आप भिवानी के सुप्रसिध्द मौड़ा परिवार में वयोवृध्द सम्मानित महानुभाव हैं। आपका जीवन सार्वजनिक एवं लोकोपयोगी सार्थक जीवन रहा है। भिवानी में शिक्षा प्रचार का बहुतसा श्रेय श्रीमान्जी को ही है, बहुत प्राचीन सुप्रसिध्द संस्था श्री वैश्य विद्यालय जो आज हाई स्कूल और कालिज तक बन चुका है, उसके आदि संस्थापक आपही हैं आप व्यापारिक क्षेत्र में ख्याति प्राप्त सर्वप्रिय व्यक्ति तो हैं हीं, पर हिन्दी साहित्य जगत में भी आपका स्थान परमादरणीय है। देश की सर्वमान्य संस्था अ० भा० अग्रवाल महा सभा के आप सम्मानित सभापति पद को सुशोभित कर मारवाड़ी समाज में

अपने ही नाम को नहीं बल्कि भिवानी के नाम को ख्यातिवान बना चुके हैं। आपने राष्ट्रीय आन्दोलन में अपनी स्व० पत्नी सहित जो भाग लिया है वह देश भक्तों की नामावली में स्वर्णाक्षरों में अमर है।

आप हिन्दी साहित्य के प्रेमी तथा पूर्ण ज्ञाता और महान प्रचारक भी हैं, आपने समय समय पर अनेकों ग्रन्थों का सम्पादन कर शिक्षा क्षेत्र का बहुत कुछ उपकार किया है।

आप कवि और लेखक भी हैं। आपकी कविता में उपदेश और मनुष्य जीवन के कल्याणमय बनने का सुमार्ग होता है। अमृतसर जहां अपका बहुत बडा कपड़े का ब्यापार है वहां पर आपके उद्योग एवं ब्यक्तित्व से मारवाड़ी विद्यालय की स्थपना हुई जो आज समस्त पंजाब में अपना गौरव मय स्थान बनाए हुए है।

देहली में आपके द्वारा मारवड़ी विद्यालय की स्थपना हो चुकी है। अपने पवित्र जीवन को देशकी महान सेवा जो शिक्षा है, उसमें लगा कर अपने नास को अमर कर लिया है।

आप साधु स्वभाव के बहुत मिलनसार, निर्भिमानी, रईसी तबियत के महान ब्यक्तित्व बनाए हुए हैं। आप सर्व प्रिय राष्ट्र सेवक हैं। भिवानी देहली तथा अमृतसर बम्बई की प्रायः सार्वजनिक संस्थाओं के पोषक, संस्थापक, सम्मानित सदस्य, एवं



राष्ट्रकविः— श्रीमेलारामजी "वैश्य" भिवानी

सहायक हैं। देशके सभी कार्य क्षेत्रों में सेठ मेलाराम जी का शुभ नाम कार्य कुशलता की वजह से हर व्यक्ति के अन्त करण में पवित्र भावना को लिये हुए है।

आप के द्वारा इतने लोकोप कारी कार्य हुए हैं जिनकी गणना करना महा कठिन है। आप के द्वारा किये गए शुभ कार्य आप के जीवन को अमर बना रहे हैं।

आज कल आप शान्ति का जीवन बनाए हुए हरि स्मर्ण में सन्यास वत समय बीता रहे हैं।

आपके आज्ञाकारी एवं आप के ही समान कार्य कुशल सर्वप्रिय आप के श्री हनुमान प्रसाद मोड़ा आपकी सेवा में ही अपना समय विशेष रूप में लगाये हुए हैं यह आपके जीवन में सौभाग्य की बात है।

श्री बृजलाल जी मोड़ा—आप ला० नैणसुखदास जी के सुपुत्र हैं। अधिकतर भिवानी में ही रहते हैं। बड़े सौम्य स्वभाव, कीर्तन-भक्त और गायन आदि के प्रेमी हैं। आपके चि० हुकुमचन्द जी फर्म में समझदारी के साथ कार्य करते हैं।

श्री रोशनलाल जी मौड़ा—आप ईष्ट मित्रों के प्रेमी तथा हितैषी हैं। बड़े विनम्र स्वभाव वाले सुयोग्य व्यक्ति हैं।

श्री शशीकान्त जी मोड़ा—स्व० धसीराम जी मोड़ा के

आप सुयोग्य सुपुत्र हैं। सौम्य स्वभाव के होनहार बालक है। वैश्य हाईस्कूल भिवानी में आपकी श्री पूज्य माता जी ने ४० हजार रुपये दान देकर संस्था को अमर कर दिया है, फल-स्वरूप मौड़ा परिवार एवं आपके पिता धन्नीराम जी तथा अपने नाम को शिक्षा समाज में अमर कर यश प्राप्त किया है।

श्री छांगाराम जी रामकुमार जी मौड़ा—स्व० सेठ श्री नानूराम जी मोड़ा जो अपने समय में शहर के प्रतिष्ठित और एक सभ्य महानुभाव हो चुके हैं। उनके लड़के छांगाराम जो व्यापारिक कार्यों में ही अधिक समय लगाते हैं। सर्व प्रिय महानुभाव तथा प्रतिभाशाली व्यक्ति हैं। दूसरे श्री रामकुमार जी व्यवसायिक कार्यों के साथ २ सार्वजनिक कार्यों में भाग लेते हैं। वैश्य कालिज भिवानी की कार्य कारिणी के आप सक्रेट्री भी हैं, आप बहुत योग्य कार्य कुशल प्रतिभा सम्पन्न मिलनसार बुध्दिमान व्यक्ति हैं।

श्री पुरुषोत्तमदास जी मोड़ा—आप अपना व्यवसाय सी० पी० प्रान्त में और विशेष कर रायगढ ने ही करते हैं। आप सरल स्वभाव, मिलनसार एवं व्यापारिक कार्यों में निपुण हैं। दानवीर श्री सेठ किरोड़ीमल जी की सुशीला सौभाग्यवति सुपुत्री के साथ आपका विवाह हुआ है।

आप अधिकतर रायगढ में ही निवास करते हैं, वहां



श्री बिहारीलाल जी मोड़ा
(अन्तीराम सोहनलाल भिवानी)

आपने बहुत अच्छी जमीन जायदाद प्राप्त कर स्थाई जीवन बनाया है। सी० पी० में आपकी बहुत मानप्रतिष्ठा है सेठ किरोड़ी मल जी के हृदय में आपके प्रति स्नेह भरी दृष्टी और सम्मान रहता है। आप किरोड़ीमल चेरेटी ट्रस्ट के ट्रस्टीभी हैं।

श्री बिहारीलाल जी मौड़ा—आप स्व० गुगनमल जी के सुपुत्र हैं। बहुत सीधे सादे स्वभाव के मिलनसार व्यक्ति हैं। आपका सम्बन्ध भारत प्रसिध्द श्री वेंकटेश्वर प्रेस के अध्यक्ष स्व० सेठ श्रीनिवास जी बजाज की सुयोग्य सुपुत्री और खेमराज श्रीकृष्णदास फर्म के प्रोप्राइटर श्री मुरलीधर जी बजाज की सौभाग्यवति बहिन शकुन्तलादेवी के साथ सम्पन्न हुआ है। आप हिन्दी साहित्य से अच्छा प्रेम रखते हैं, उत्साही, कर्मशील, होनहार नवयुवक है।

— हलवासिया परिवार —

भारत प्रसिद्ध हालवासिया परिवार का नाम मारवाड़ी समाज में कौन ऐसा व्यक्ति है जो न जानता हो ! भिवानी से करीब २ माइल पर एक छोटा सा हालुबास गांव हैं यहीं से इस वंश के आदि पुरुषों का निकाष है। इस लिये यह वंश हालवासिया नाम से प्रसिद्ध है, और इस का गौत्र गर्ग है।

पहिले इस परिवार में महान् से महान् विभूति होचुकी है, जिनके सुकार्यों से भारत का समस्त सभ्य समाज अच्छी तरह परिचित है। इस परिवार के आदरणीय पुरुषों का सम्मान राजा महाराजाओं की भांति होता था। जब तक कलकत्ता व भिवानी की एक ईंट भी बाकी है तब तक इस परिवार के महान् पुरुषों का नाम अमर है।

धर्मप्राण सेठ माधोप्रसाद जी श्री ज्ञानीराम जी उदोराम जी श्री फूलचन्द जी श्री चिरंजीलाल जी, श्री हृषिकेश जी, श्री-रा० ब० विश्वेश्वरलाल जी, श्री मोतीलाल जी हालवासिया आदि २ द्वारा किये गए धार्मिक व सामाजिक कार्य आज भी मारवाड़ी जगत में गौरव मय स्थान बनाए हुए हैं। उनकी आदर्श स्मृतियां देश में उन के जीवन को स्मरण करा रही है इस परिवार में इस समय सब से बड़े महानुभाव—



स्व० श्री माधोप्रसाद जी हलवासिया

श्री हरिचरण जी हलवासिया

आप देश की उन महान विभूतियों के वंशधरों में से एक हैं जिन्हें आज भारत का व्यापारिक, सामाजिक एवं धार्मिक जगत आदर की दृष्टि से देखता है, और आपके परिवार द्वारा हुई विविध सेवाओं का आज भी आभार मानता है।

कलकत्ता एवं भिवानी की प्रायः लोकोपयोगी संस्थाएँ जिनमें मारवाड़ी हस्पताल, पींजरा पोल सोसाइटी बड़ा बाजार, लाईब्रेरी भिवानी में सनातन धर्म पाठशाला, बड़ी गौशाला, ब्रह्मचर्याश्रम आपके पूर्वजों की पवित्र कीर्ति एवं उनकी जनहितैषीता की साक्षी दे रहे हैं। जब तक वैभव शाली मारवाड़ी समाज की ध्वजा आकाश में है तब तक आपके पूर्वजों का पावन यश ताजा बन, उन्हें अमर बनाए हुए है।

कलकत्ता एवं भिवानी नगर ही नहीं बल्कि कौन ऐसा मारवाड़ी होगा जो उन परोपकारी समाज नेता श्री माधोप्रसादजी के नाम से जानकारी नहीं रखता हो। आप उसी पुरुषसिंह-उदारमना के सुयोग्य एवं उन्हीं के सदृश अविचल साहसी कर्तव्यनिष्ट सुपुत्र हैं।

जिस समय आपका जन्म संवत् १९५१ में हुआ आपके सभी नवजात कर्म आदि शास्त्रीय विधि से उत्तमता पूर्वक सम्पन्न हुए। आपका यज्ञो पवीत संस्कार भारत प्रसिद्ध महान् पण्डित सर्वशास्त्र निष्णात काशी विजेयता महामान्य श्री रामिश्र शास्त्री द्वारा बहुत ही विधि विधान से सम्पन्न हुआ। बाद में आपका

पाणी ग्रहण संस्कार भारत प्रसिद्ध गनेड़ी वाले परिवार [illegible]
सौभाग्य वती सुकुमारी दान शीला पति भक्ति परायणा [illegible]
लाड़ो ……देवी के साथ बहुत ही समारोह पूर्वक हुआ । [illegible]
जाता है जिस समय आपका विवाह हुआ भारतवर्ष के कोने
कोने से बड़े-बड़े विद्वान् साधु महात्मा, देश के नेता तथा मार-
वाड़ी समाज के गौरव रूप पुरुष भी पधारे थे। जिस स[illegible]
वर-वधू को हालुवासिया भवन में आशीर्वाद समारोह हुआ वै[illegible]
भिवानी के इतिहास में आज तक नहीं होसका है । हालुवासि[illegible]
परिवार में जिस वैभवता से आपका लालन-पालन हुआ है [illegible]
एक बहुत बड़े युवराज की उपमा के समान है ।

जिस समय आप गृहस्थ जीवन से व्यापारिक वर्ग में [illegible]
आपकी प्रतिभा बढ़ने लगी बुद्धि का विकास प्रखर होता [illegible]
उस समय अच्छे-अच्छे अंग्रेज आपकी कर्म शक्ति बुद्धिम[illegible]
की प्रशंसा करते हुए आपको व्यवसाई युग का एक महान् पु[illegible]
मानते थे ।

इसके बाद अपने औद्योगिक जीवन में पदार्पण कि[illegible]
आपके व्यक्तित्व एवं व्यापार निपुणता के कारण आपको औद्यो-
गिक धन्धों में भी सफलता प्राप्त करने में देरी न लगी, फल[illegible]
रूप जगह-जगह "गणेशदास रामगोपाल" फर्म—जिसके कि [illegible]
प्रोप्राईटर हैं। बड़े-बड़े शहरों में पैट्रोल के पैम्प नजर [illegible]
लगे, मारवाड़ी जगत में आपका गौरवमय उज्वल जीवन [illegible]
अर्ताओं के लिये आज अनुकरणीय बना हुआ है ।

जिस प्रकार आपने अपनी योग्यता एवं बुद्धिमत्ता से धन संग्रह किया उसी प्रकार आपने अपने परिवार को भी दिनों दिन उन्नत एवं यशस्वी बनाया आज आपका सुपरिवार सभी प्रकार से उन्नतिशील एवं वैभव शाली बना हुआ है जो पुरुष अपने बाहुबल द्वारा उद्योग कर अपने परिवार को उन्नत करते हैं वह वास्तव में भाग्यशाली एवं कर्तव्य निष्ट आदर्श पुरुष माने जाते हैं।

आप से छोटे स्व० श्री नवलकिशोर जी आपके शासन में रहकर सर्व प्रकार से योग्य और कर्मशील तथा सर्व सन्मानित व्यक्ति बने। आपके इस भ्रातृ प्रेम को जो कि आपकी नस-नस में समाया हुआ है कौन नहीं जानता क्योंकि इनके पिता जी (आपके चाचा जो) बहुत छोटी ही आयु में स्वर्गवासी हो गए थे। इसलिए आपने इन अपने छोटे भाइयों को पुत्र की तरह अपनाया।

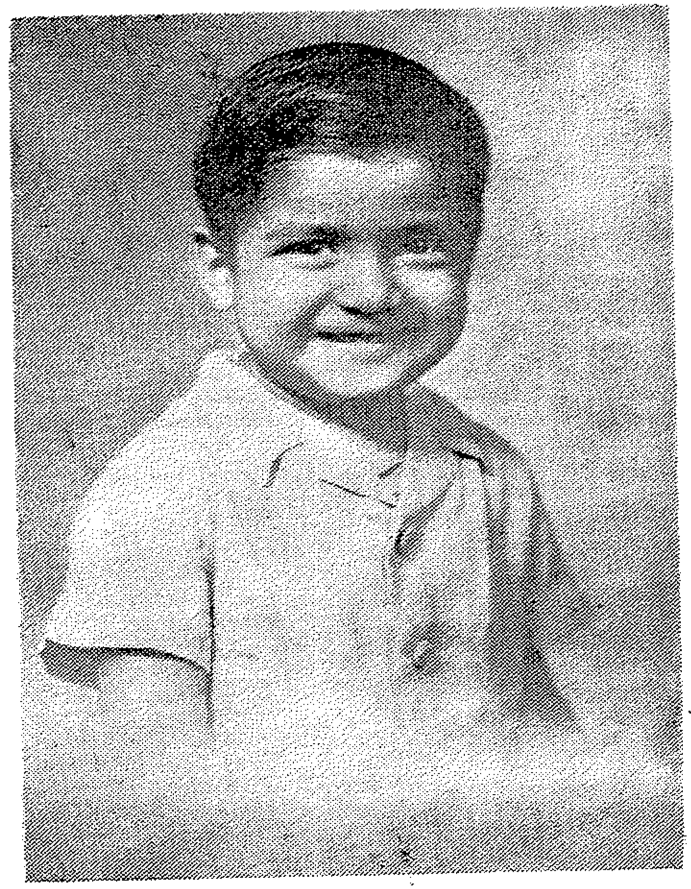
आपकी सौभाग्यशाली धर्मपत्नी भी साधारण स्त्रियों जैसी नहीं है इन्होंने भी अपने पतिदेव की आज्ञानुसार अपने देवरों का वात्सल्यता के कारण लालन-पालन कर इनको अपनाया और यही चाहा कि इनके रहते मुझे पुत्रों की कोई कामना नहीं है। इस प्रकार की देवियाँ महिला जगत में आदर्श रूप और सौभाग्य शाली गृह लक्ष्मी कहलाती है।

श्री हरिचरण जी की धर्मपत्नी वास्तव में एक वीर पत्नी पूर्ण सहयोग दात्री उच्च कोटि की बुद्धिमान महिला है जब से

आपने हालुवासिया कुल में पाँव रख इसको सुशोभित किया है; तभी से इस परिवार में सभी तरह की समृद्धियाँ एवं सुख भोग उत्तरोत्तर बढ़ते रहे हैं। आप इस परिवार में बड़ी भाग्यवान सुलक्षणा एवं आदर्श महिला रत्न है।

समय की प्रधानता के कारण अब आपने अपना दोहित्र चि० आदर्श कुमार गोद ले लिया है जो बहुत ही होनहार भाग्यशाली प्रतीत होता है। आपका मृदुल स्वभाव दूर दर्शिता और उदारता वास्तव में प्रशंसनीय एवं हालुवासिया कुल की मर्यादा के अनुकूल है।

आज व्यापारिक समाज में "गणेशदास-रामगोपाल" फर्म महान् प्रभावशाली गौरवशाली एवं वैभव शाली मानी जाती है इस फर्म की महान् उन्नति में जहाँ श्री हरिचरण जी हालवासिया ने कर्तव्य निष्ठ होकर कार्य किया वहाँ इनकी धर्मपत्नी ने भी प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष में हाथ बटाया है। आज इस फर्म के अनेकों व्यापार भारत के विभिन्न भागों में आपकी यशस्वीता को बढ़ा रहे हैं। लखनऊ में जगह-जगह आपकी गणेशदास, रामगोपाल फर्म द्वारा निर्मित "हालवासिया कोर्ट, हालवासिया मार्केट और निवास के लिये सुन्दर विल्डिगें तथा बाग-बगीचे वर्कशाप आदि आपकी उद्योगिक शोभा बढ़ा रहे हैं आप पहले ही दिन से स्वतन्त्र विचारों के महानुभाव है, जिस समय कांग्रेस को सहयोग देना अपने आपको खतरे में डालना समझा जाता था और देश भक्तों को बड़े-बड़े कष्ट दिये जाते थे उस समय आपने निर्भीकता पूर्वक



चि० आदर्शकुमार हलवासिया

श्री लोकमान्य तिलक को विलायत यात्रा के लिये १० हजार रुपयों की थैली भेंट कर कांग्रेस इतिहास में मारवाड़ी समाज का स्थाई गौरव अमर कर दिया था। कांग्रेस की हर तरह से अनेकों सेवाएं कर इस संस्था को सफल बनाने में आपका बहुत बड़ा हाथ रहा है। आप द्वारा न जाने कितने ही राष्ट्रहित प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्षमें कार्य हुए हैं यदि उन्हें लिखा जाय तो एक अलग ही ग्रन्थ तैयार हो सकता है।

कलकत्ता में कई एक भवन हाफिस कोठियें भिवानी का हालु वासिया पैलेस हालवासिया थियेटर आदि-आदि श्रीमान् जी के आदर्श जीवन को सफल बनाए हुए हैं।

आपका धनीमानी प्रतिष्ठित जीवन होते हुए भी आपकी नम्रता आपकी सौजन्यता आपकी सरलता एवं मिलन सारिता अद्वितीय है जो सज्जन आपसे एक बार भी मिल लेता है वह आपके उत्तम गुणों से प्रभावित होकर सदा के लिये आपका प्रेमी बन जाता है। इसी कारण देश की प्रायः संस्थाएं बड़े-बड़े व्यापार महारथी सभी श्रेणी के महानुभाव आपसे मैत्री एवं प्रेम रखते हुए आपको अपना ही समझते हैं। और आपकी मुक्तकण्ठ से प्रशंसा करते हैं।

आपकी एक पुत्री श्री वीणाबाई गोयल देहली रामगोपाल परसराम फर्म के प्रोप्राइटर श्री कृष्णचन्द्र जी से विवाही हैं जो पंजाब की उच्च प्रभाकर तथा अंग्रेजी की F. A. हैं। दूसरी श्री लक्ष्मीबाई कलकत्ता में ही बृजलाल विश्वेसुरलाल फर्म के

प्रोप्राइटर श्री राधेश्याम जी भूभानुवाले के साथ विवाही है जो कि इस वर्ष F. A. की उच्च कक्षा में शिक्षा प्राप्त कर रही है। श्री हरीचरण जी की दोनों ही सुपुत्रियें बहुत योग्य समझदार तथा स्वकुल की मर्यादानुकूल आदर्श ललनाएं हैं। इस प्रकार श्री हरिचरण जी का परिवार मारवाड़ी समाज में बहुत सुशिक्षित सभ्य एवं सुधारवादी सत्यनिष्ट परिवार हैं और हरिचरण जी का जीवन आज सफल जीवन है। इन्हीं सभी गुणों के कारण भिवानी इतिहास का वर्तमान खण्ड हम श्रीमान् जी के पवित्र कर कमलों में समर्पित करते हैं।

श्री देवीप्रसाद जी हलवासिया

श्री देवीप्रसाद जी हलवासिया– यू० पी० प्रान्त के उन उद्योगपतियों में से एक हैं जिन्होंने अपने बाहुबल से देश विदेशों में अपनी फर्म का नाम रोशन किया है।

आप असाधारण बुद्धि के एवं अलौकिक चातुर्य्य युक्त पुरुष हैं। आप अपने भाई स्व० नवलकिशोर जी हालवासिया द्वारा स्थापित किए हुए कारखाने एवं बिल्डिगों को योग्यता पूर्वक संचालित करके अत्यधिक उन्नतिशील बने हुए हैं। लखनऊ का हालवासिया कोर्ट यू० पी० प्रान्त की एक शानदार बिल्डिग है, जिसके बनाने का सर्वश्रेय बाबू देवीप्रसाद जी हालवासिया को ही है। स्व० नवलकिशोर जी की युवावस्था में मृत्यु, आपके लिए बहुत दुःखदाई एवं व्यवसाय निपुण जीवन



श्री देवीप्रसाद जी हालुवासिया (गणेशदास रामगोपाल लखनऊ)



श्री श्यामसुन्दर जी हालुवासिया
रा० ब० विश्वेश्वरलाल श्यामसुन्दर हालुवासिया

में महान बाधक सिद्ध हुई, फिर भी आपने उनके बाद भिवानी का सुविशाल हालवासिया-थियेटर स्थापित कर अपने को उत्साहित रहने का परिचय दिया, और समस्त व्यापार को बड़ी निपुणता के साथ सम्भाला। अब आपका जीवन सार्वजनिक जीवन बनता जारहा है। आप बड़े मिलनसार, प्रतिष्ठा सम्पन्न महानुभाव हैं। आपके उमाशंकर हैं जिनका लालन पालन हो रहा है।

श्री वेणीप्रसाद जी हालवासिया

श्री वेणीप्रसाद जी हालवासिया—हालवासिया वंश में स्व० नवलकिशोर जी हालवासिया एक ऐसे व्यक्ति हुए हैं जिनकी महानता व सर्व प्रियता की साक्षी लखनऊ म्युनिस्पिल-बोर्ड देरहा है। लखनऊ के इतिहास में आज तक किसी भी हिन्दु को लोक निर्वाचित अध्यक्ष बनने का सौभाग्यप्राप्त; बाबु नवल किशोर जी हालवासिया को छोड रक अन्य किसी को नहीं हुआ।

श्री वेणीप्रसाद जी हालवासिया उसी पुरुष सिंह के सुयोग्य सुपुत्र हैं। इनकी पितृ भक्ति के कारण भिवानी इतिहास का अतीत खण्ड बाबु नवल किशोर जी हलवासिया की पुन्य स्मृति में प्रकाशित हुआ है।

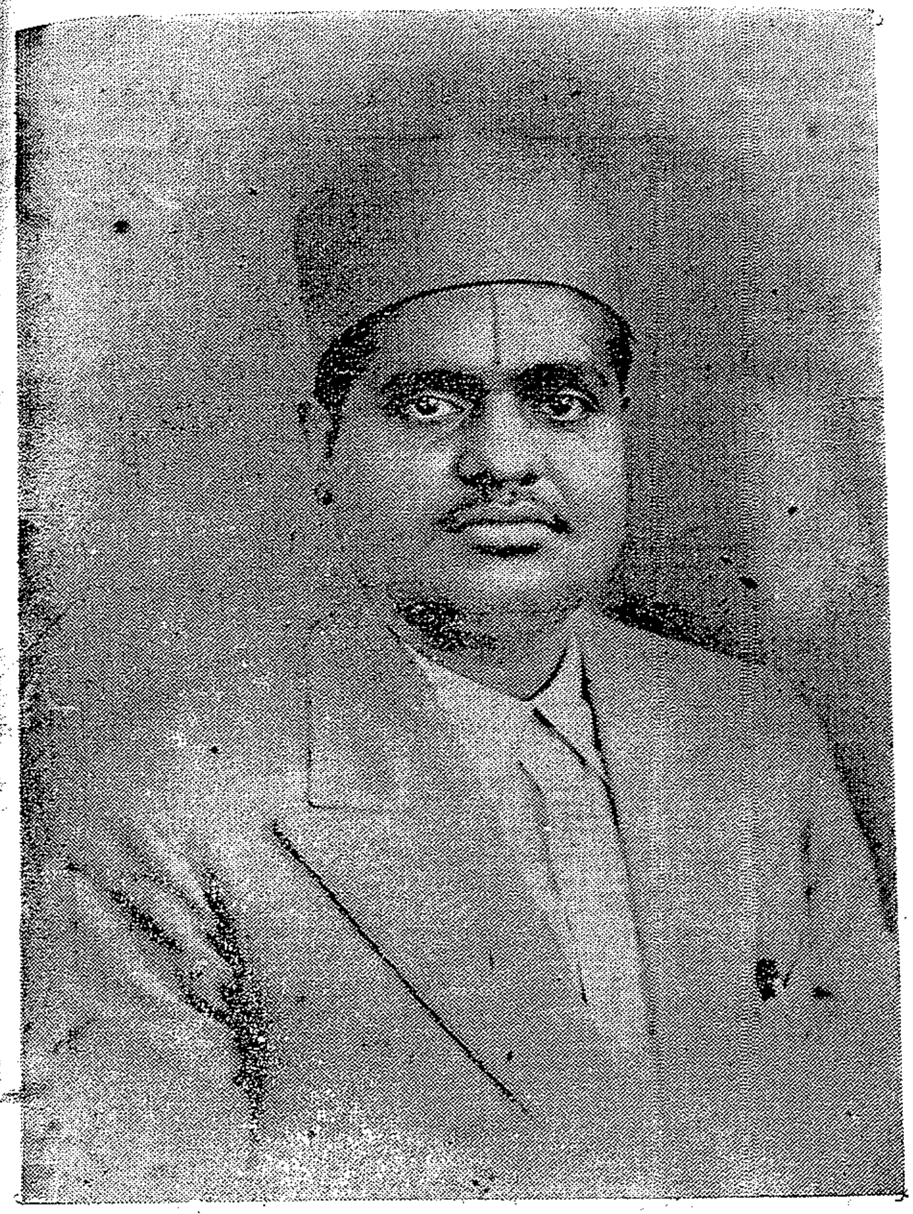
श्री वेणीप्रसाद जी हालवासिया अपने पिता के तुल्य प्रभावशाली मिलनसार उत्साही एवं साहित्य प्रेमी होनहार

नवयुवक हैं। आपकी शिक्षा बी० ए० तक ही हो सकी थी उसी समय आपके पिता जी का स्वर्गवास होगया। पितृ वियोग के कारण आपने अपने पितृव्य के साथ व्यापार में सहयोग देना ही उचित समझा। अब आप अपनी फर्म—गणेशदास रामगोपाल का कार्य बहुत योग्यता पूर्वक देख रहे हैं। आपके पिता के सभी स्नेही व ईष्ट मित्र आपकी सौजन्यता के कारण आपसे वैसा ही व्यवहार एवं स्नेह करते हैं, जैसा हालवासिया जी से करते थे।

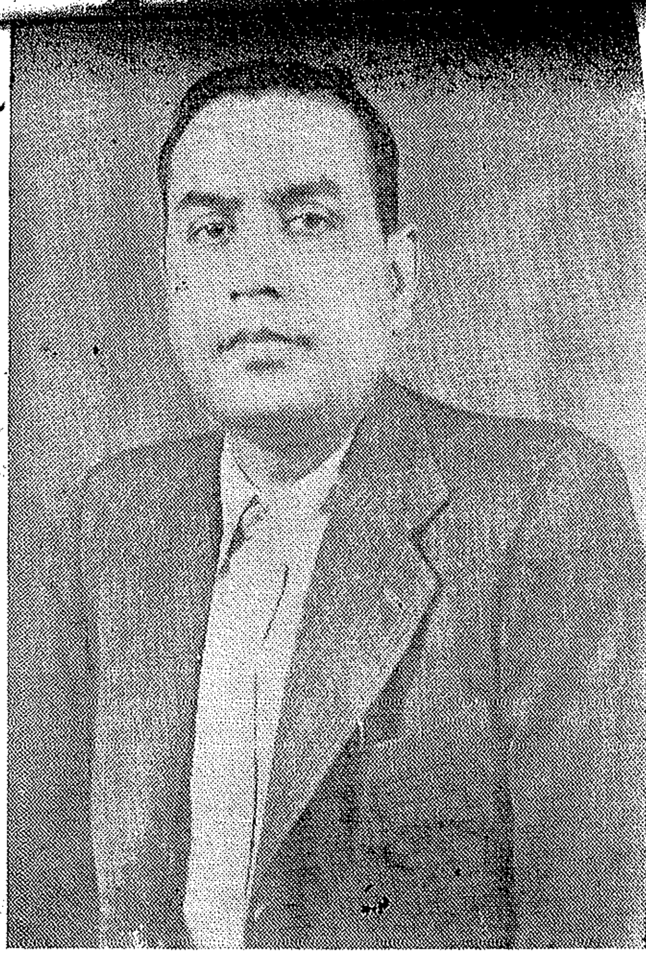
आपका विवाह श्री हजारीमल कन्हीराम फर्म के प्रोप्राईटर श्री ईश्वरीचन्द जी केजड़ीवाल की सौभाग्यवती सुपुत्री से हुआ है, जो बहुत ही सुशीला पतिपरायणा उदार व उच्च विचारों की सौम्यमूर्ति गृह-लक्ष्मी है। आप वैसे सीधे साधे स्व-भाव के होनहार नवयुवक हैं।

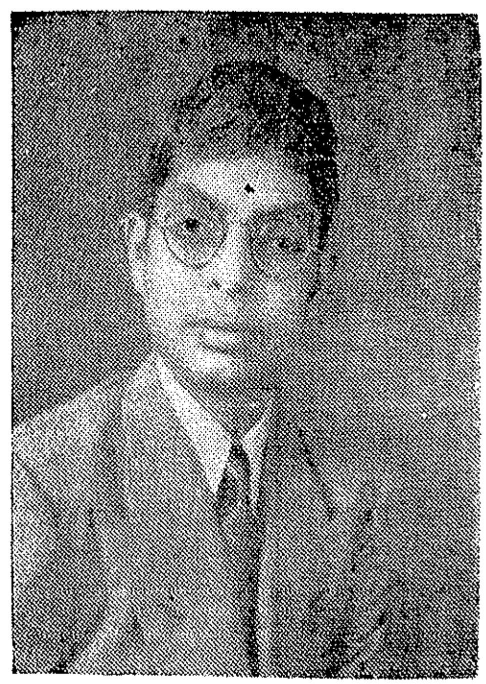
— श्री रामकुमार जी हालवासिया —

इस प्रान्त के महान् यशस्वी धर्मप्राण संस्कृत शास्त्रों के ज्ञाता "चारित्र चक्रवर्ती" सनातन जगत के नेता वयोवृद्ध स्व० सेठ जयरामदास जी हालुवासिया के पुत्र स्व० श्री फूलचन्दजी हालुवासिया के श्री रामकुमार जी सुयोग्य पुत्र हैं, आपके पिता श्री फूलचन्द जी कलकत्ता एवं भिवानी की अनेकों संस्थाओं के संस्थापक हिन्दी साहित्य सम्मेलन के जन्मदाता, महान्



श्री रामकुमार जी हलवासिया
(श्री गणेशदास जयरामदास भिवानी)





श्री वेणीप्रसाद जी हलवासिया

श्री भगवती प्रसाद जी हलवासिया

साहित्य प्रेमी धर्मप्रिय महानुभाव थे। आज आप हालुवासिया कुल की मर्यादा के अनुकूल अपना आदर्श जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

आपका जीवन पूर्ण संयमी लोकोपयोगी जीवन है, आपके विशुद्ध अन्तःकरण में अपने पूर्वजों के प्रति अगाध श्रद्धा एवं उनके महान् गुणों का स्थान है। आपकी सज्जनता व मधुर मुस्कान का प्रत्येक व्यक्ति पर उसी तरह प्रभाव पड़ता है जैसे आपके महान पुरुषों का पड़ता था। आपकी सनातन धर्म में अगाध निष्ठा व विश्वास बड़ा ही दृढ, एवं अनुकरणीय है। आप मारवाड़ी समाजके भीष्म श्री सेठरामजीदास जी बाजोरिया एवं पुण्यश्लोकः– श्री बलदेवदास जी बाजोरिया के सम्पर्क में रहने के कारण सनातन धर्मानुकूल आचरणों पर चलकर अपने जीवन को पवित्र बनाये हुए हैं।

आप मित्रों के महान् हितचिन्तक एवं मित्र धर्म के सच्चे ज्ञाता हैं, आप उदारमना सहिष्णु व दयावान होनेके कारण यह प्रगट करते हैं कि आपके प्रतिभा सम्पन्न शरीर में उन महापुरुषों का शुद्ध रक्त है जिनकी कथाएं हालुवासिया कुलको उज्वल बनाये हुए हैं, विशेष क्या, आप हालुवासिया वंश के गौरवरूप भिवानी जन्म-भूमि के लाल, तथा सौभाग्यशाली व्यक्ति हैं। आपहीके सद्प्रयत्नों द्वारा, प्रोत्साहन के कारण, भिवानीइतिहास का अतीत खण्ड प्रकाशित होकर, भिवानीकी स्वर्गस्थ आत्माओं को अमर कर चुका है, जिसके परिणाम स्वरूप यह वर्तमान

खण्ड छपकर आज जनता के हाथों में विद्यमान है। आपका हिन्दी साहित्य में महान प्रेम है, और आप हिन्दी साहित्य के अच्छे विद्वान तथा पूर्ण दिलचस्पी रखनेवाले सुयोग्य व्यक्ति हैं। आपके विशाल हृदय में प्रेम युक्त व्यवहार और प्रत्येक मित्र के प्रति आत्मियता ही आपका सर्वश्रेष्ठ गुण और प्रशंसा का कारण है।

आपकी पतिपरायणा सौभाग्यवती धर्मपत्नि बहुत ही शुभ लक्षण सम्पन्ना गृहलक्ष्मी है जिनके कारण आपका गृहस्थ-जीवन स्वर्गमय सुखद जीवन बना हुआ है। आप के चि० गंगाशंकर, गौरीशंकर, गिरजाशंकर होनहार सुन्दर व प्रतिभा सम्पन्न बालक हैं भगवान इन्हें चिरायु करें।

श्री पुरुषोत्तम दास जी हालवासिया

भारत प्रसिद्ध स्वर्गीय वैष्णव रत्न राय बहादुर श्री विश्वेश्वरलाल जी हलवासिया के अनुज स्व० श्री मोतीलाल जी हलवासिया के आप सुयोग्य सुपुत्र हैं। जिनकी पुन्य स्मृति में रा० ब०जी ने भ्रातृ स्नेह तथा उनके नामको अमर रखने के लिए भगवान श्री रंगनाथ प्रभु का सुविशाल मन्दिर ७० तुल्लापट्टी कलकत्ता में स्थापित कर, अपनी धार्मिकता का परिचय दिया और आप भी स्वर्ग वासी होगये। आज इस मन्दिर की सेवा का विशेष भार आपके ही सुदृढ कन्धों

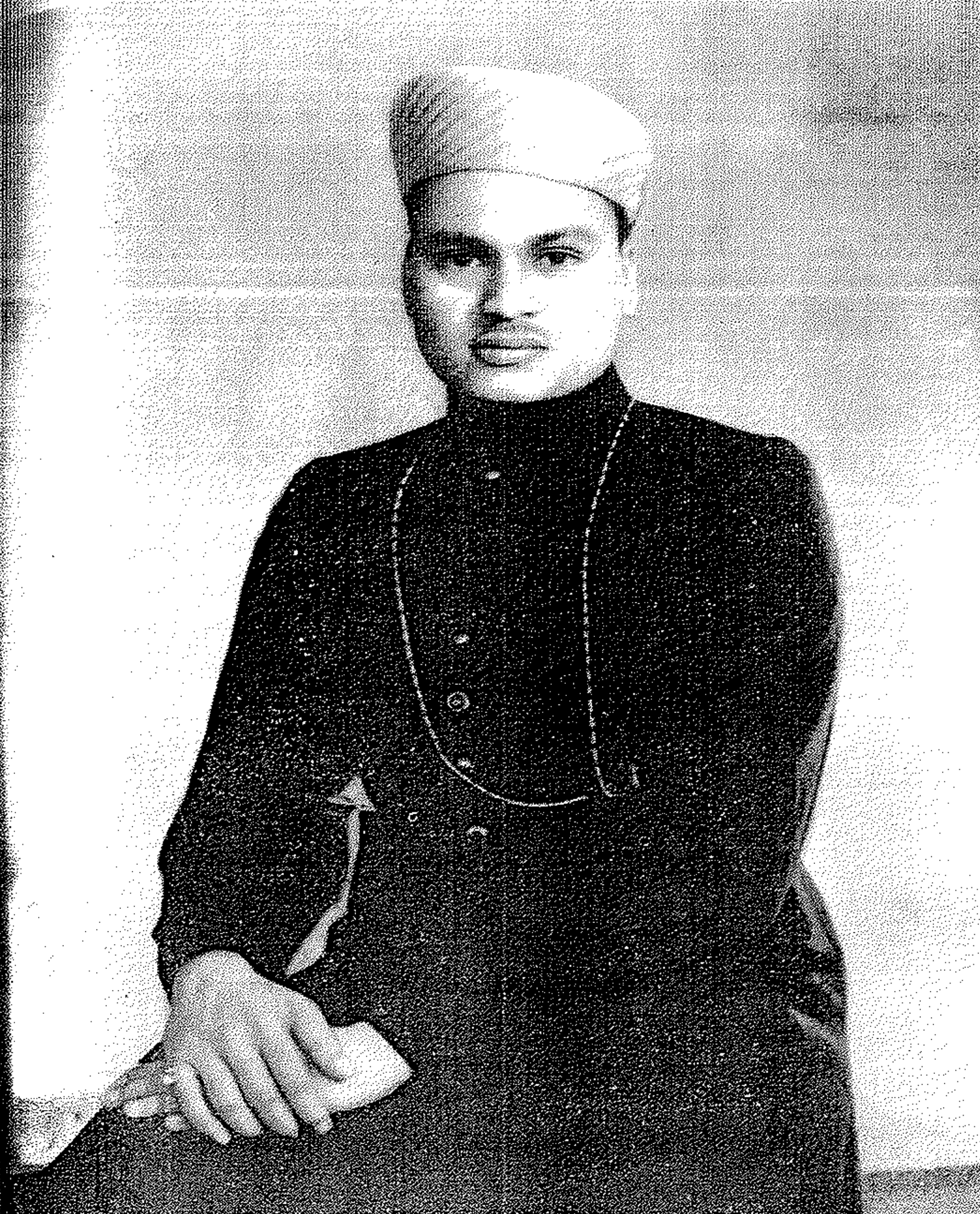
पर है। जिसे अपने पूज्य पिता जी की स्मृति समझ योग्यता पूर्वक निभा रहे हैं। शिक्षा व साहित्य परिशीलन आपके जीवन का एक आवश्यक भाग बना हुआ है, फलस्वरूप भारत-भाग्य विधाता प्रधान मन्त्री श्री पं० जवाहरलाल जी नेहरू का अभिनन्दन-ग्रन्थ जो समाज गौरव व्यापार महारथी श्री सेठ रामसहाय जी मोर के उत्साही सपूत श्री विश्वनाथ जी मोर द्वारा प्रकाशित होकर नेहरू जी के समर्पित हुआ उसमें विशेष हाथ व सहयोग आपका भी था, यहां तक कि डा० राजेन्द्रप्रसाद जी श्री टण्डन महोदय एवं श्री के० एम० मुन्शी आदि देश के उच्च कोटि के विद्वानों ने नेहरू-ग्रन्थ का जहां सम्पादन किया वहां आपने भी अपनी योग्यता व साहित्य प्रेमी के नाते सहयोग देकर साहित्य जगत में अपने नाम को अमर करलिया। नेहरू-ग्रन्थ और श्री नेहरूजी का शुभनाम संसार में जब तक है तब तक श्री हलवासिया जी तथा मोर-बन्धुओं का नाम भी अमर है।

आपके विशाल हृदय में दया, देशसेवा, समाजोपयोगी भावना की सच्ची लगन है जिसमें आपका बहुत समय व्यतीत होता है भारतोन्नति के उद्देश्यको लेकर ग्रामीण जीवन को आप बहुत पसन्द करते हैं। वैसे बड़े परिश्रमी, उद्योगी, साहसी, कार्य कुशल, उदारमना, सौम्य स्वभाव के प्रतिभा-सम्पन्न, महानुभाव हैं।

लाखों की सम्पत्ति के मालिक होते हुए भी सीधा सादा जीवन बनाए हुए हैं, यही आपमें विशेष गुण है। आपके निवास स्थान पर देश के बड़े २ पूज्य नेता महान विद्वान साधु सन्त महात्मा और कोट्याधीश लक्ष्मी पुत्र पधारते रहते हैं। आप अपनी उदारता सरलता एवं निस्वार्थभाव से सभी का सम्मान पूर्वक आदर करते हुए आतिथ्य सत्कार करते हैं।

व्यापारिक, सामाजिक, सभ्य एवं सार्वजनिक कार्यकर्ताओं में आपका स्थान आपके व्यक्तित्व की वजह से सम्मान्नित है। आप में विशुद्ध खद्दर धारण की भावना इस लिए है कि देशोत्थान की योजना में पूज्य गांधी जी द्वारा मनुष्य कर्तव्य का इस में समावेश है। दूसरे सार्वजनिक और सच्चे नेताओं में जो गुण होने चाहिए वह प्रायः गुण श्री पुरुषोत्तम दास जी हालवासिया में आज विद्यमान हैं।

इस चकाचौंध, ऐसोआराम के बहते हुवे युग में अपका पवित्र जीवन संयम पूर्ण सदाचार युक्त साहसी दृढव्रती बना हुआ है, जिसके कारण आपका मस्तिष्क सजग और शरीर हृष्ट पुष्ट सुडोल सर्वांग सुन्दर बना हुआ है। आप के सद्व्यवहार एवं विनम्रता और सम्भाषण में मन्त्र शक्ति हैं, जिसके कारण आबाल वृद्ध सभी आपमें विशुध्द प्रेम हार्दिक शुभाशीर्वाद श्रध्दा स्नेह रखते हैं। आप अपने पूर्वजों द्वारा ६० लाख की सम्पत्ति जो उन्हों ने अन्तिम समय में श्री हरि



श्री पुरुषोत्तमदासजी हलवासिया
(राय बहादुर बिशेश्वरलाल मोतीलाल हलवासिया)

के चरणों में अर्पित की थी उस महान ट्रष्ट के आप सम्मानित ट्रष्टी हैं, और धर्म कार्य एवं समाज सुधार, शिक्षा एवं लोकोपयोगी सभी कार्यों में उदारता पूर्वक ट्रष्ट से दान दिलाने में अग्रसर होकर अपने पूर्वजों की हार्दिक इच्छाओं को पूर्ण कर अपने उत्तरदायित्व को निभाते हुए अपने आपको उनका उत्तराधिकारी कहलाने का हक रखते हैं। आप पुण्यात्मा, उदारमना, स्वधर्मपरायण, महापुरुषों के स्मृति स्वरूप इस समय हालवासिया वंश परम्परा में कर्मनिष्ठ, परमभागवत, उज्वल रत्न, उच्चादर्श, भाग्यशाली, सर्वप्रिय महानुभाव हैं।

भगवान श्री रंगनाथ आपसे उत्तरोत्तर विशेष सेवा लें इस लिए आप—जीवेत् शरदः शतम्

श्री श्यामसुन्दर जी हालवासिया

आप उस वीरात्मा, धर्मात्मा, पुन्यात्मा, लोकोपकारी, श्री वैष्णव रत्न दानवीर रायबहादुर स्व० श्री सेठ विश्वेश्वरलाल जी हालुवासिया के दत्तक पुत्र हैं जिन्होने अपने जीवन की गाढी कमाई का बहुत सा हिस्सा अपने अंतिम जीवन में चराचर के स्वामी अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड नायक श्रीहरि के श्रीचरणों में श्रद्धा प्रेम के साथ ६० लाख की सम्पत्ति अर्पित की और भगवान के श्री चरणों में सदा के लिये स्थान प्राप्त किया। आप हैसियन शेयर आदि २ कई तरहके व्यापार करते हैं और समयानुसार अपने कार्य में पूरे चतुर कुशल कार्य कर्ता हैं हालिवासिया ट्रस्ट के आप ट्रस्टी हैं।

श्री जोधराज जी हालवासिया

आप स्व० श्री गीताराम जी के सुयोग्य सुपुत्र हैं आप बड़े व्यापार कुशल, साहसी, उद्योगी, परिश्रमी और शुद्ध व्यवहार के प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति हैं। आपकी कार्य कुशलता पर प्रसन्न होकर श्री नन्दकिशोर जी बाजोरिया ने बड़ोदा के स्टार कैमीकल वर्क्स का सारा कार्य भार आप के ही उपर छोड़ दिया इस से पहले आप स्टार पेपर मिल्स सहारनपुर के आधीन जयपुर बड़ोदा आदि २ कागज क्षेत्र में बहुत कुशलता पूर्वक कार्य कर चुके हैं, आजकल आप अपना स्वतन्त्र व्यापार बम्बई में बहुत सम्मान पूर्वक कर रहे हैं और आपका कलकत्ता भिवानी बम्बई आदि व्यापारिक समाज में महान स्थान है आप बड़े सुयोग्य बुद्धिमान तथा प्रतिभा शाली उदारमना मिलनसार व्यक्ति हैं आप जो कार्य करते हैं वह बड़ी जुम्मेवारी के साथ उत्तमता पूर्वक उसे सम्भालते हैं यही आपमें एक महान गुण और विशेषता है आपके चि० पुन्यमचन्द रामप्रकाश आदि उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

श्री भगवतीप्रसाद जी हालवासिया

आप श्री ला० जयरामदासजीके पोत्र और जुगलकिशोरजी के पुत्र है, आपका ज्यदातर कलकत्ते में ही रहना हुआ है आप शेयरों का कारोबार करते हैं बहुत सुयोग्य मिलनसार सरल स्व-

भाव के साहित्य प्रेमी और उदारचित्त महानुभाव हैं वैसे बड़े परिश्रमी उद्योगी व्यापारी कुल के हितचिन्तक दूसरों के दुःख सुख के हृदय से साथी हैं। आपके चि० मदनलाल कालेज में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं और छोटे पढाई में संलग्न हैं।

श्री मुरारीलाल जी हालवासिया



आप की आयु लगभग ५५ वर्ष है आप बड़े मिष्ट भाषी बहुत मिलनसार स्व० श्री चिरंजीलाल जी के द्वितीय सुयोग्य सुपुत्र हैं आपका भारत प्रसिद्ध गनेड़ीवाला परिवारकी सौभाग्यवती लड़की से विवाह हुआ है आप अपनी वंश परम्परानुसार रईस तबियत के उदारमना सुप्रतिष्ठित सज्जन हैं। आप पहिले लखनऊ और बम्बई तथा कलकत्ते में अपना कारोबार करते

रहे हैं अब आप सुख शान्ति का जीवन भिवानी में अपने भव्य हालुवासिया भवन में ईश्वरोपासना भजन आदि में सम्मान पूर्वक व्यतीत करते हैं, आप के चि० राधेश्याम सुयोग्य मिलनसार व्यक्ति हैं।

श्री मदनलाल जी कसेरा—आप वीर वैष्णव उदारमना स्व० कन्हैयालाल जी कसेरा के लघु भ्राता है। बड़े सौम्य-स्वभाव के मिलनसार कार्य कुशल व्यक्ति हैं।

श्री सत्यनारायण जी हालुवासिया:—बड़े मिलनसार व्यवहार कुशल और समझदार अपने वंश के अनुरूप बम्बई में व्यापार करते हैं और प्रसन्नचित्त प्रेमी व्यक्ति हैं।

श्री बालमुकन्द जी हालुवासिया:—आप श्री मुरलीधर जी हालुवासिया के सुपुत्र हैं, लखनऊ में अपना निजी कारोबार योग्यता पूर्वक बुद्धिमानी से करते हैं।

श्री बाबूलाल जी हालुवसिया:—आप श्री गजानन्द जी हालुवासिया के पुत्र हैं ज्यादातर कलकत्ते में ही रहते हैं और इमारती लकड़ी आदि का कार्य अपना निजी रूप में करते हैं।

श्रीरामनिवास जी हालुवासिया:—आप स्व० जगन्नाथ जी के पुत्र हैं और लखनऊ में अपना कार्य करते हैं।

श्री रामजीदास जी बंशीधर जी हालुवासिया

इस वंश में बड़े २ ख्यातिवान प्रतिष्ठित महानुभाव हो चुके हैं अब श्री रामकुमार जी श्री जगन्नाथ जी श्री रामकिशन जी श्री बृजलाल जी आदि २ हैं अपना कार्य स्वतन्त्र रूप में कुशलता पूर्वक कर रहे हैं।

वैद परिवार

वैद परिवार भिवानी का सब से प्राचीन और प्रतिष्ठित परिवार है। इस परिवार में बड़े २ प्रतिष्ठा सम्पन्न एवं सार्वजनिक कार्य कर्ता व्यक्ति होचुके हैं। जिनके विषय में भिवानी इतिहास अतीत खण्ड में काफी लिखा गया है इस समय इस परिवार में सब से बड़े:—

श्री रामचन्द्र जी वैद

आपका बांसल गौत्र है, आप भिवानी के सुप्रतिष्ठित एवं सार्वजनिक कार्यकर्ता व्यक्ति मानेजाते हैं आपने अपने जीवन में भिवानी नगर की जो सेवा की है वह स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य है। आपके जीवन का केवल व्यापार से ही विशेष सम्बन्ध नहीं है बल्कि आपने अपने कीमती जीवन को जनता जनार्दन की महान सेवा में लगाते हुए भिवानी के इतिहास में स्थाई गौरव प्राप्त किया है।

जहां आपका हिन्दी में अच्छा ज्ञान है वहां अंग्रेजी की भी बी० ए० तक शिक्षा प्राप्तकर आपने अपने भारतीय आदर्श को नहीं छोड़ा।

युवावस्था में आपकी धर्मपत्नी का स्वर्गवास हो जाने पर आपने दूसरा विवाह नहीं करवाया यद्यपि आपकी अवस्था उस समय केवल ३४ ही वर्ष की थी किन्तु आप पत्नी व्रत

धारी होने के कारण आप के कुटुम्बियों और मित्रों के पूरा दवाव देने पर भी दूसरी पत्नी को स्वीकार नहीं किया। इससे बढकर आपका क्या आदर्श हो सकता है। जिस दिन से आप की धर्मपत्नी का स्वर्ग वास हुआ है उस दिन से आज तक आपका संयमी जीवन अत्यन्त पवित्र और आदर्श रूप में निष्कलंक है।

राष्ट्रीय आन्दोलनों में आप दो वार जेल यात्रा भी कर चुके हैं तथा स्वतन्त्रता संग्राम में आप आजीवन एक वीर-महारथी की भांति विदेशी सरकार से लड़ते रहे। आपका समस्त जीवन लोकोपयोगी कार्यों से इतना परिपूर्ण है कि जिनके विषय में लेखनी लिख नहीं सकती, किन्तु साथ ही आप अपनी मान व प्रशंसा सुनने के भी आदि नहीं हैं।
आप आस्तिक विचारों के सहृदय महानुभाव हैं, आपके विशाल अन्तः करण में दया एवं परोपकारी भावना कूट कूट कर भरी हुई है। आप परमहंस स्वामी रामकृष्ण जी व श्री विवेकानन्द जी क परमभक्त तथा उनके सिद्धान्तों को माननेवाले धार्मिक वृत्ति के व्यक्ति है।

भिवनी के प्रत्येक सार्वजनिक कार्य में आपका प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप में पूर्ण सहयोग रहता है, सन् १९५० के भीषण कहत में आपने जनता जनार्दन की जो सेवा की है वह आपके जीवन का सबसेबड़ा अश्वमेधयज्ञ समझा जाता है।



श्री रामचन्द्रजी वैद
(रामचन्द्र सत्यनारायण कलकत्ता)

आप की प्रतिष्ठित फर्म पहले करांचो में बहुत सम्मान युक्त थीं, किन्तु अब करांची पाकिस्तान का भाग बन जाने के कारण आपकी फर्म ने कलकत्ता में ही कार्य करना आरम्भ कर दिया, इस फर्म का संचालन आपके सुपुत्र चि० सत्यनारायण बहुत ही योग्यता पूर्वक कर रहे हैं। सत्यनरायण जी कलकत्ता में आपकी भांति लोकप्रियता प्राप्त करते हुए फर्म के नाम को चमका रहे है। आपकी फर्म का नाम "रामचन्द्र सत्यनारायण" पड़ता है। जिसमें कमीशन ऐजेन्शी का थोक कार्य होता है। आपका जीवन महान् आदर्श युक्त है और आज आप भिवानी के नर रत्न एवं कुशल कार्य कर्ता माने जाते हैं।

श्री रामसिंह जी बैद

आप सर्वप्रिय स्व० श्री फूलचन्द जी वैद के पुत्र हैं और भिवानी में ही रह कर अपना निजी कार्य भार संभाले हुए हैं। आप भी अपने पिता के तुल्य मिलनसार, प्रेमी और योग्य व्यक्ति हैं। आप पहले भारत प्रसिद्ध खेतान कम्पनी के विवाहे थे। दुबारे देश भक्त श्री प्रमुदयाल जी हिम्मतसिंह जी के यहां विवाहे हैं। आप शहर में सम्मानित, मित्रों के मित्र रईसी तबियत के नवयुवक हैं।

आज कल आप भिवानी म्युनिस्पिल कमेटी के सुयोग्य मेम्बर हैं भिवानी की जनता ने आपको निर्विरोध चुना है यह आपके प्रेम एवं हर व्यक्ति के सम्मान का फल है। आपके

चि० कीर्तिकुमार आदि शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं ।

श्री बैजनाथ जी के पुत्र श्री राधाकृष्ण जी, जनार्दन दोनो भाई अपना २ कामकरतेहैं । और विशेषकर भिवानीही रहतेहैं

श्री छाजुराम जी बैद

आप स्व० देवीसहाय जी के पुत्र हैं स्वतन्त्र विचारों के तथा कांग्रेसी सज्जन हैं । राष्ट्रीय आन्दोलन में आप जेल यात्रा भी कर चुके हैं वैसे आप बड़े मिलनसार कुशलकार्यकर्ता ख्याति प्राप्त व्यक्ति हैं सार्वजनिक कार्यों में आपका सहयोग रहता है । आपके पुत्र चि० विजयकुमार उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहा है

श्री रणछोड़लालः—आप अपना कारोबार बम्बई में करते हैं आप स्व० श्री गजाधर जी बैद के बड़े लड़के हैं, आपसे छोटे श्री हृषीकेश जी बैद है जो बढ़े ही प्रभुभक्त और नन्दबाबा के परमोपासक, पवित्र विचारों के सीधे सादे; बहुत विश्वास पात्र और सन्त स्वभाव के व्यक्ति हैं । बालगोबिन्द बम्बई में कारोबार करते हैं ।

श्री तेजराम जीः—आप श्री जोधराज जी के पुत्र हैं। कलकत्ते में कारोबार करते हैं आपसे छोटे भी आप के ही सहयोग में काम करते हैं और छोटे सब, पढते हैं और कारोबार भी करते हैं ।

श्री किशनलाल जीः—स्व० आत्माराम जी बैद के सुपुत्र



श्रीमोहनलालजी बैद (रामप्रताप भीमसैन कलकत्ता)



श्री राधाकृष्ण जी झुनझुनवाला

हैं। बड़े उदारमना, मिलनसार, व्यापार कुशल, सुयोग्य व्यक्ति हैं। बम्बई में कारोबार करते हैं, भिवानी म्युनिस्पिल कमेटी के चेयरमेन श्री शीतल प्रसाद जी की सौभाग्यवती कन्या से आपका विवाह हुआ है, आपके छोटे भ्राता आपके साथ काम करते हैं।

श्री भीमसैन जी वैद

आप उस व्यापार महारथी और प्रभु भक्त धर्मपरायण स्व० श्री रामप्रताप जी वैद के द्वितीय सुपुत्र हैं, जिनकी धाक से करांची के व्यापारिक क्षेत्र में उथल पुथल मच जाती थी उस प्रांत में रामप्रताप श्री रामचन्द्र फर्म की जो प्रतिष्ठा और सम्मान था वह व्यापारिक समाज से छिपा नहीं है। दुःख की बात है आज वह वीर पुरुष भी नहीं है, और वह करांची भी हमारी नहीं है। अस्तु श्री भीमसैन जी बड़े होनहार मिलनसार प्रतिभा सम्पन्न सरल स्वभाव के नवयुवक हैं और आज कल कलकत्ते में रामप्रताप भीमसैन नामसे चाय, लकड़ी तथा इम्पोर्ट एक्सपोर्ट आदि के अनेकों कार्यों का संचालन बड़ी बुद्धिमता और सुयोग्यता के साथ कर रहे हैं। आप भारत प्रसिद्ध खेतान एण्ड संस कलकत्ता के श्री गोरीशंकर जी की सुपुत्री से विवाहे हैं। आपका जीवन सार्वजनिक जीवन भी है। हिन्दुस्तान स्काउट एसोसिएसन के वाईस प्रेजीडेन्ट, भिवानी सेवासमिति के सेक्रेटरी, नेशनल स्पोर्ट क्लब आदि के सदस्य, धार्मिक

कार्यों में भी आपकी बहुत रुचि एवं सहयोग रहता है बनारस में आश्रम, श्री नन्दग्राम बृज में बगीचा, जो नन्दबाबा के ही अर्पण किया हुआ है, श्री मथुरापुरी में अन्नक्षेत्र आदि २ चल रहे हैं, करांची में ५० वर्ष आपकी फर्म द्वारा गौरव के साथ व्यापारिक कार्य बहुत उच्च पैमाने पर हुए हैं आप स्वभाव से ही हंसमुख प्रसन्नचित्त और बड़े उत्साही शिक्षित सज्जन हैं आप के सब से बड़े पुत्र बिहारीलाल स्व० नत्थुराम जी बैद के गोद है, जो आपके बड़े भ्राता थे, आपके चि० रतनलाल शील-कुमार आदि पढते हैं।

श्री स्व० नत्थुराम जी बैद

आप श्री बंशीधर जी बैद जो मारवाड़ी समाज में गौरव-स्वरूप हुए और बड़े आस्तिक विचारों के प्रभु भक्त महानत्मा के सुपुत्र थे, दुःख की बात है आप बहुत छोटी अवस्था में ही प्रभु चरणों में लीन होगये, आप की प्रतिभा ने सार्वजनिक क्षेत्र के अन्तर्गत आपका खास स्थान प्राप्त कर रक्खा था, भिवानी की प्राय संस्थाओं में आपका स्थान महत्वप्रद सम्मानित था, आपके विशाल हृदय में दीन दुखियों के प्रति प्रेम तथा उनकी सेवा करना यह भावना हर समय बनीरहती थी, आप नन्दबाबा जी के परमोपासक थे फलस्वरूप वह बृजभूमि जिसके लिये देवतागण भी वन्दना करते हैं उस में आप का दिव्य शरीर श्री नन्दबाबा जी की संनधी में समाप्त होगया और आप को

देवता तुल्य गति प्राप्त हुई यह सब आप के शुभ कर्मों का फल है। आपकी साध्वी धर्मपत्नी एवं धर्मपरायणा, आपकी पूज्य माताजी प्रभु भजन, प्रभु सेवा में अहर्निस रत हैं। और आप के वियोग से आप के भाई भीमसैन आदि सभी दुःखी हैं, पर भगवान की अनन्त लीला के सामने सिवाय सन्तोष के और क्या चारा चल सकता है। आपके चि० शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं

श्री प्रहलादराय जी बैद

पहले आप का अपने बड़े भाई सेठ बनारसीदास जी के साझे में बनारसीदास प्रहलादराय नाम से कार्य होता था। अब आपका कारोबार अलग रामेश्वरदास प्रहलादराय नाम से बम्बई में होता है। और प्रहलादराय आयल मिल के नाम से कानपुर में तैल की मिल सुचारु रूप से चल रही है। वैसे श्री प्रहलाद-राय जी कुशल कार्य कर्ता एवं समझदार व्यक्ति है और अपनी फर्मों का उच्च पैमाने पर संचालन कर, व्यापारिक वर्ग में पूर्ण प्रतिष्ठा बनाए हुए हैं।

आप सरल स्वभाव के धैर्यवान प्रतिभा सम्पन्न मधुरभाषी सुयोग्य व्यक्ति हैं। आपके लड़के श्री श्यामलाल जी श्री सोहनलाल जी, माधोप्रसाद जी, कन्हैयालाल आदि सुयोग्य एवं कुशल व्यापारी और प्रतिभा सम्पन्न हैं, जो अपनी फर्मों पर कार्य कर, फर्मों को ख्यातिवान बना रहे हैं।

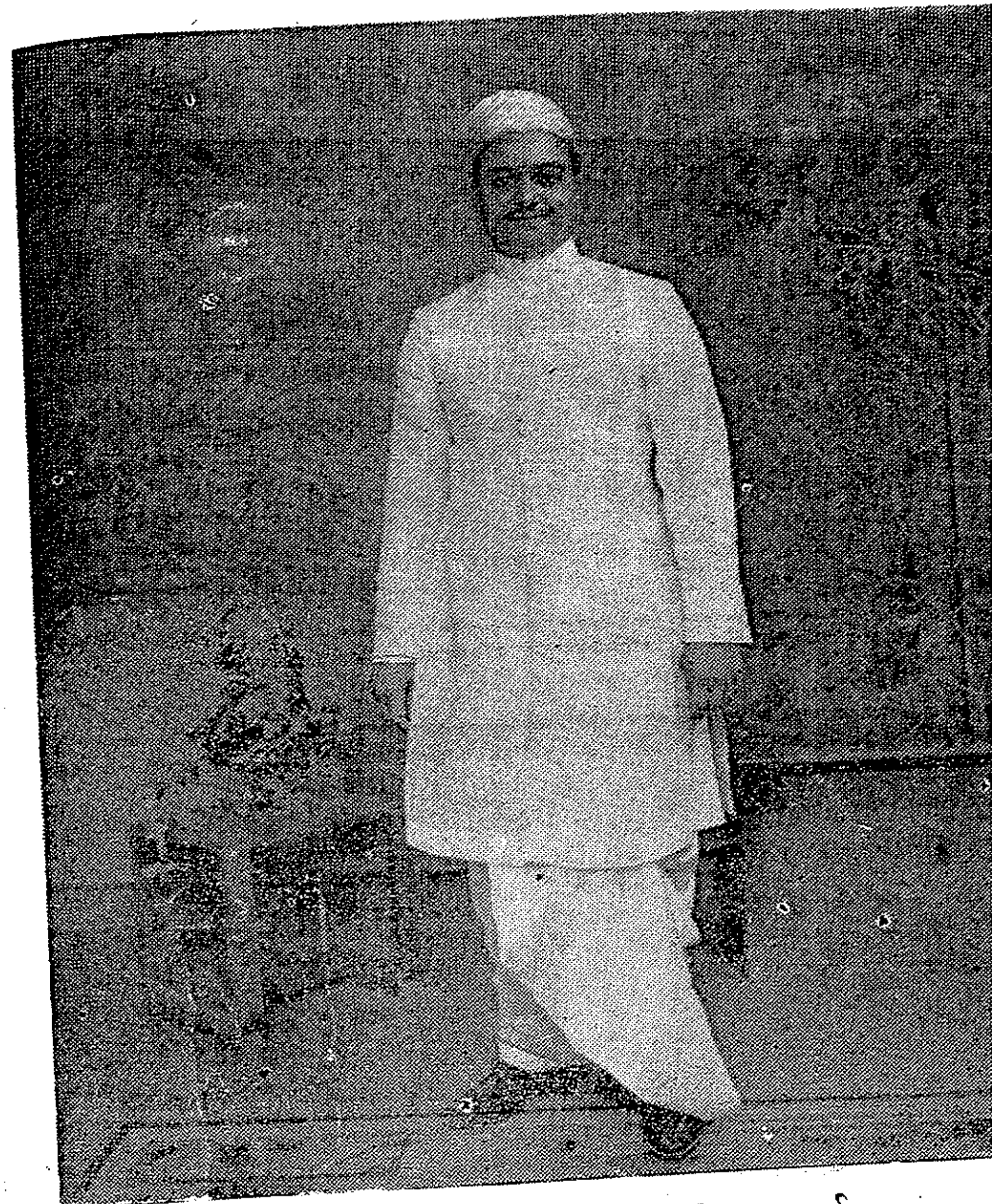
श्री हरिचरण जी वैद

आप श्री बनारसीदास जी वैद के सबसे बड़े सुयोग्य सुपुत्र हैं। सेठ बनारसीदास जी वैद उन इने गिने महा पुरुषों में से थे जिन्हों ने अपने बाहुबल द्वारा धैर्यता और साहस के बल पर बुद्धिमत्ता के साथ २ धनोंपार्जन भी किया और ख्याति यश भी प्राप्त किया। व्यापारिक एवं सभ्य और उच्च कोटि के कर्मशील व्यक्तियों में उनका नाम आज भी आदरणीय दृष्टि से सम्मानित है। इनके जीवन काल में बहुत से परिवर्तन आए पर इनकी व्यापार निपुणता और मष्तिस्क शक्ति ने उन्हें सर्व प्रकार से वैभवशाली बनाए रक्खा, वह बड़े मधुर भाषि सर्व-प्रिय आत्मा के एवं आदर्श व्यापार महारथी थे। उन्ही के सदृस व्यापार कुशल, मिलनसार, प्रतिष्ठा सम्पन्न मित्रों के सच्चे मित्र श्री हरिचरण जी वैद अपनी फर्म का योग्यता पूर्वक संचालन कर रहे हैं। छोटी ही आयु में सेठ जी के सामने ही सब कारोबार आपने सम्भाल लिया था फलस्वरूप उन्हें अपने जीवन काल में आपसे महान सन्तोष प्राप्त था। बम्बई में अनाज रूई, चांदी आदि के अनेक व्यापार आपकी सुप्रसिद्ध फर्म-बनारसीदास रामगोपाल के आधीन होता है। आपके चि० कमल उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहा है। आपके अनुज—

❀—❀



स्वर्गीय श्री बनारसीदास जी वैद
(बनारसीदास रामगोपाल बम्बई)



श्री दीनानाथ जी वैद, जे० पी० बम्बई
[फर्म बनारसीदास रामगोपाल]

श्री दीनानाथ जी वैद जे० पी०

भक्तवर श्री दीनानाथ जी वैद=साधु सन्त महात्मा और देश की महान विभूतियों के हृदय से दास हैं और इनके ऊपर सन्तों का शुभ आशीर्वाद है, श्री बृन्दावन बिहारी जी के आप अनन्य सेवक और परमोपासक हैं।

बड़े सौभाग्य की बात हैं कि भिवानी के इतिहास में सर्वप्रथम श्री दीनानाथजी वैद भारत सरकार द्वारा जे० पी० के पद से विभूषित किए गए हैं। राष्ट्रीय आंदोलन में इन्हें राष्ट्र भक्त के नाते जेल यात्रा भी करनी पड़ी थी। आजकल आप विशेष कर प्रभु चिन्तन में शान्त जीवन बनाए हुए हैं। तथा जनता जनार्दन की सेवा में रत हैं। वैसे आप व्यापार कुशल, उद्यमी, और बहुत मिलनसार महानुभाव हैं। आप महान दानी भी हैं, जो प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप में बहुत तरह से दान करते रहते हैं। आपने मन्दिर श्री बिहारी जी महाराज में नल लगवाकर अक्षय पुण्य प्राप्त किया है। बृज भूमि में आप के द्वारा साधु सन्तों की बड़ी २ महान् सेवायें होती रहती है जिन्हें आप जानते हैं या श्री बिहारी जी महाराज जाने ! आपके चि० घनश्याम उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहा है।

श्री केशवदेव जी वैद—आप लखनऊ में अपनी फ्लोर मिल का काम योग्यता पूर्वक देखते हैं और ज्यादातर उधर ही रहते हैं।

श्री रामनिवास जी वैद—आप भी श्री बनारसीदास जी के सुपुत्र हैं। बड़े प्रेमी मिलनसार उदार हृदय सद्विचारों के महानुभाव हैं।

श्री गणपतरात जी वैद—आप लखनऊ में ही मिल के कार्य को देखते हुए अपनी योग्यता का परिचय दे रहे हैं। योग्य मिलनसार, प्रतिभा सम्पन्न, नव युवक हैं।

श्री रामगोपाल जी वैद—आप लखनऊ में अपने भाई श्री केशवदेव जी के सहयोग में बुद्धिमता और उद्योग के साथ कार्य कर रहे हैं।

श्री सजनकुमार जी वैद—आप स्वनाम धन्य श्री बनारसीदास जी के सबसे छोटे प्रिय पुत्र हैं। आप सच मुच एक राजकुमार की भांति कान्तिवान सुन्दर स्वरूप प्रसन्न चित्त सरल स्वभाव के हंस मुख प्रकृति के भाग्य शाली नवयुवक हैं। आपमें उदारता प्रेम और मिलनशारिता, तथा बड़ों का सम्मान करने की परम्परागत भावना है। अंग्रेजी तथा हिन्दी साहित्य के अच्छे ज्ञाता एवं शिक्षित सुधार प्रिय चिरंजीव. हैं।

आप भिवानी का प्रसिद्ध मौड़ा परिवार के सम्मानित व्यक्ति श्री पुरुषोत्तमदास जी मौड़ा की सौभाग्यवती सुपुत्री–तथा भिवानी के नर केशरी दानवीर श्री सेठ किरोड़ीमल जी लुहारीवाले की सुशीला सौभाग्यवती दौहित्री से विवाहे हैं।



श्री गणपतराय जी वैद
[फर्म बनारसीदास रामगोपाल, बम्बई]

आपका प्रेम व्यवहार हर व्यक्ति के साथ ऐसा है जो आपके गुणों के कारण वह आपका शुभ चिंतक सदा के लिए बन जाता है। आज कल आप बम्बई में ही अपनी फर्म का चतुरता पूर्वक कार्य कर रहे हैं। यह बहुत बड़ा परिवार है।

श्री राधाकृष्ण जी केजड़ीवाल

आप उस कर्मवीर साहित्य प्रेमी श्री केदारनाथ जी के सुयोग्य सुपुत्र हैं जिन्होंने अपने जीवन काल में बहुत से सार्वजनिक काम जैसे, युवकमण्डली पुस्तकालय आदि की स्थापना तथा संस्मरणीय कार्य किये यह फर्म भूरामल नरसिंहदास भिवानी व नरसिंहदास मातुराम कलकत्ता के नाम से प्रसिद्ध है, आपका विवाह श्रीमति सौभाग्यवती सावत्री देवी के साथ हुआ है। यह सेठ मंगतराम जी आशाराम के सुपुत्री है, आप का हिन्दी साहित्य से बहुत प्रेम है और कुछ रचना भी करते हैं। आपका ध्यान सार्वजनिक कार्यों की ओर विशेष तौर पर है। जब आप भिवानी में रहते थे युवक मण्डली पुस्तकालय के कई वर्ष सभापति रहे और पुस्तकालय को आपके सभापतित्व से बहुत लाभ हुआ है। आप सुधारवादि विचारों के सच्चे एवं निःस्वार्थ भाव से सेवा कर्ता व्यक्ति हैं।

कहत के दिनों में आपने भिवानी की देहातों में तथा हस्पतालों में जनता की काफी सेवा की है।

आप बड़े मिलनसार, व्यवहार कुशल, प्रतिष्ठा सम्पन्न महानुभाव है। आपने अपने व्यापार को विजय ट्रेडिंग कम्पनी के नाम से उन्नतिशील बनाए हुए हैं।

आपका भिवानी में भव्य भवन तथा रेलवे रोड़ पर विशाल बागीचा शिवालय आदि है। आपके दो पुत्र— चि० विजयकुमार जो उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहा है, द्वितीय कमल कुमार और दो कन्याएं भी हैं, जो शिक्षा प्राप्त कर रही हैं।

श्री मातुराम जी केजड़ीवाल—आप श्री नरसिंहदास के छोटे भ्राता हैं। बहुत ही मिलनसार प्रभुभक्त सुयोग्य महानुभाव हैं। आप युवावस्था में इतनी तेजी से चलते थे कि देखनेवाले चकित रहजाते थे, यह अभ्यास आपका मामूली नहीं था। आपने अपनी फर्म नरसिंहदास मातूराम कलकत्ता द्वारा बहुत कारोबार किया है। अब आप शान्ति के साथ भजन, स्मरण, और नित्य गंगा स्नान कर सुखी जीवन व्यतीत कर रहे हैं। आपके सुयोग्य सुपुत्र श्री रामकुमार जी केजड़ीवाल अपना स्वतन्त्र व्यापार करते हैं।

श्री मनोहरलाल जी देहली

आपके यहां कपड़े की चलानी का काम थोक रूप में अच्छे स्तर पर होता है। क्लोथ मार्केट कृष्णा बाजार देहली में मनोहरलाल गजानन्द नाम से बहुत पुरानी और ख्याति प्राप्त

फर्म है। आपके सभी पुत्र सुयोग्य एवं व्यापार कुशल महानुभाव हैं, श्री गजानन्द जी जो व्यापारिक क्षेत्र में प्रतिष्ठा सम्पन्न और समझदार व्यक्तियों की श्रेणी में हैं। दूसरे श्री फतेचन्द जी, बैजनाथ जी, बाबुलाल जी, आदि सभी परिश्रमी उद्योगी मारवाड़ी समाज में गौरवशाली सम्मानप्रद स्थान प्राप्त है। श्री गजानन्द जी हिन्दुस्तान मर्कन्टाइल ऐसोसियेशन के सदस्य भी हैं। आपका गौत्र सिगंल है।

राय साहब श्री राधाकृष्ण जी आलमाल

आपका गौत्र एरन है। आपका जन्म १९३२ माघ शु० ११ को हुआ था। आपके पिता श्री मुखरामदास जो बड़े उच्च विचार, धर्मभावना युक्त महा पुरुष थे। आपने बड़ी बुद्धिमानी से अपनी फर्म का योग्यता से संचालन कर कलकत्ते के मारवाड़ी व व्यापारिक समाज में बहुत उन्नतिशील बनाया। इस समय आप आलमाल परिवार में मुख्य एवं वयोवृद्ध महानुभाव हैं। वंश परम्परानुसार आप सनातन विचारों के व्यापार—कुशल समाज प्रतिष्ठित व्यक्तियों में हैं। भिवानी पंचायत के कलकत्ते में आप एक महान स्थान पर पंच मुखिया हैं। आबाल, वृध्द सभी आप में सन्मान भावना इसलिए रखते हैं कि श्रीमान् जी हर व्यक्ति के दुःख सुख के हृदय से साथी और हर समय साथ देते हैं। आपका भव्य भवन बड़तल्ला

स्ट्रीट ३५ नं० में है। कलकत्ते की प्रायः सार्वजनिक संस्थाओं में आपका मान्य एवं उनमें आपकी सदस्यता है। भिवानी वैश्य कालेज में आपका सहयोग चिर स्मरणीय है। भिवानी में मन्दिर, बाग, कूऐं, शिवालय, संस्कृत पाठशाला आदि २ आपकी श्रध्दा एवं धर्मभावना के द्योतक हैं। आजकल आप प्रायः देश सेवा, जाति सेवा, धर्मसेवा, लोकसेवा के कार्योंमें विशेष समय लगा रहे हैं। आप के चि० प्रहलादराय आपकी फर्म का कार्य बहुत योग्यता और सम्मान के साथ करते हैं। आप अपना जीवन सुखमय बिता रहे हैं। आप स्व० रायबहादुर श्री सेठ विश्वेश्वरलाल जी मोतीलाल जी हालुवासिया ट्रष्ट के सम्मानित ट्रष्टी हैं। आपके विशेष उद्योग से वैश्य कालेज का छात्रावास ट्रष्ट द्वारा बना है जिसमें लगभग १ लाख रुपया व्यय हुआ है। आप बड़े उच्च विचार वाले सर्व प्रिय महानुभाव हैं जिन्हें मारवाड़ी समाज श्रध्दा एवं प्रेम की निगाह से देखता है।

आपका रहन सहन वेष भूषा प्राचीन सभ्यता युक्त समाज के लिए गौरवशाली आदर्श स्वरुप है। रायसाहेब जी का जीवन लोकोपयोगी सफल जीवन है।

श्री महादेव प्रशाद जी आलमाल

भिवानी के सुप्रसिध्द आलमाल परिवार में आपके श्री पूज्य पिता श्री स्व० नरसिंह दास जी एक महान पुरुष होचुके हैं।



रायसाहेब - श्री राधाकृष्ण जी आलमाल
भिवानी।

जो बडे ही तीच्रण बुध्दि वाले सनातन धर्मावलम्बी कुशल महा पुरुष थे। आप भी उन्ही के समान सौम्य स्वभाव, मिलन सार, समाज में गोरवशाली, ब्यापारचतुर, व्यवहार में कुशल, उन्नती-शील अपनी योग्यता पूर्वक आलमाल बादर्स कलकत्ते का प्रतिष्ठा के साथ संचालन कर रहे हैं। आपका सुविशाल भवन ३५ बड़तल्ला स्ट्रीट में है। आपका जन्म श्रावण कृष्णा १३ सम्वत् १९७२ में हुआ। इतनी छोटी आयु में आपका अदम्य साहस कार्य शेली मृदुल स्वभाव परिवार को यशस्वी बनाये हुए है। वैसे आप बड़े अमीर तवियत के सच्चे रईस व दानी हैं। आपका सद्व्यवहार निर्मल और जीवन पवित्र है निस्वार्थभावना के कारण आप में हर व्यक्ति श्रद्धा स्नेह प्रेम रखता हुआ, आपका अन्तःकरण से शुभचिन्तक हो जाता है। वैसे आप बड़े उत्साही कार्य कर्ता हैं। और आपका बहु मूल्य जीवन केवल व्यापार से ही सम्बन्ध नहीं रखता बल्कि सार्वजनिक सेवाओं में इष्ट मित्र भाई बान्धवों के सुख दुःख के सहयोग में विशेष व्यतीत होता है। जिससे आपका मानव जीवन सर्व प्रकार से सफल एवं ख्यातिवान है।

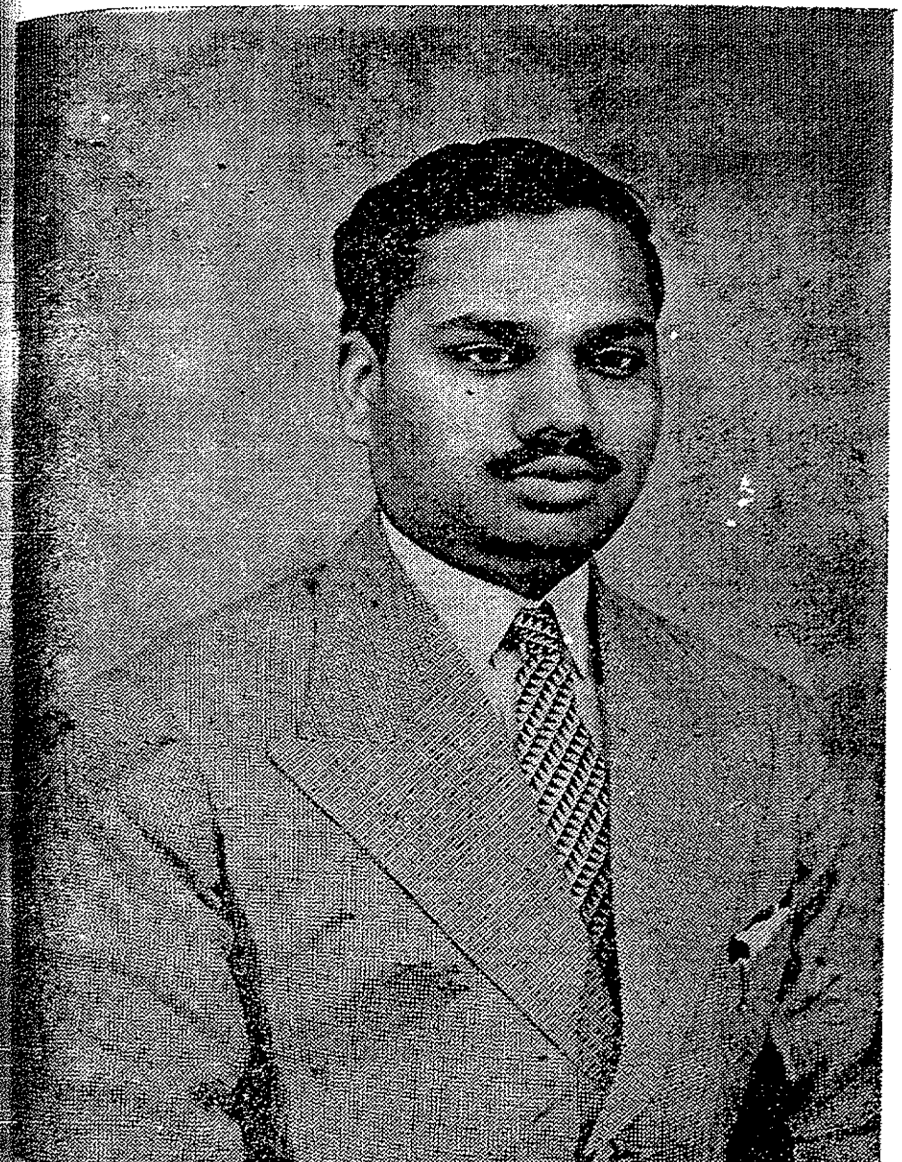
आपके मन में अपनी जन्मभूमि भिवानी की हार्दिक ममता एवं सेवा करने की भावना अहर्निस बनी रहती है, और समय २ पर आपने अपनी जन्म भूमि की अत्यधिक सेवा कर मातृ ऋण से मुक्त होने का प्रयास भी किया है। पिछले हिन्दू

मुस्लिम दंगे में जब भिवानी नगर धधकते हुए अंगारों के बीच था, उस भयानक समय में "हिन्दूसहायता समिति" का स्थापना कर आपने अपने प्राणों को उस अग्नि में झोंक दिया और घर २ अपनी जननी की रक्षार्थ भाइयों की सेवा के लिये भिक्षा मांगी, और स्वयं महान सहायता देकर उस महासंकट समय को अपनी योग्यता एवं त्याग के बल से हटाया।

भिवानी की सर्वमान्य व्यापारिक संस्था ट्रेड एसोसियेशन जिसमें हजारों व्यक्ति कार्य करते हैं। आपके व्यक्तित्व और सत्य व्यवहार उदारता पर अधिकारियों ने आपको सम्मान पूर्वक ऐसोसियेशन का प्रेसीडेन्ट बनाया। फलस्वरूप उस समय आपके नेतत्व में इस संस्था ने जो व्यापारिक उन्नति को वह उन्नती यह संस्था आज तक नहीं करसकी।

सौभाग्य की बात है जो सार्वजनिक गुण एक सज्जन में होने चाहिए वह सब आज श्री महादेव प्रसाद जी आलमाल में विद्यमान हैं। इन्ही सब गुणों को लेकर आज सर्व समाज में आपकी गणना और आदरणीय स्थान है।

आपके सुयोग्य चि० गोरीशंकर आलमाल अपनी फर्म गोरीशंकर कम्पनी के नाम से कार्य बहुत सावधानी से योग्यता पूर्वक करता है। छोटे शिवशंकर उमाशंकर रमाशंकर शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।



श्री महादेवप्रसाद जी आलमाल
[नरसिंहदास महादेवप्रसाद कलकत्ता]

श्री सागरमलजी आलमाल

आप धर्म पुरुष—प्रभु भक्त श्री रूड़मलजी आलमाल के सुयोग्य सुपुत्र हैं। आप बड़े योग्य एवं व्यापार कुशल प्रतिष्ठा सम्पन्न महानुभाव हैं।

वैसे आपने अपनी प्रसिद्ध फर्म को व्यापार निपुणता, मिलनसारी, बुद्धिमता का पूर्ण परिचय देते हुए फर्म को सर्व प्रकार उन्नतिशील वैभवशाली बनाया है। और आप धर्म और शुभ कार्यों में उदारता पूर्वक दान देकर अपने पूर्वजों का यश बढ़ा रहे हैं। भिवानी गौशाला को आपने सैंकड़ों बीघे जमीन देकर गौमाताओं की अमर सेवा की है।

व्यापारिक तथा मारवाड़ी एवं आलमाल परिवार में आपका महत्व प्रद स्थान है। आपके चि० रघुनाथ प्रसाद आलमाल सौम्य स्वभाव के हैं।

श्री रामनारायण जी आलमाल

आप विशेष कर कलकत्ते ही में अपना हैसियन बोरा आदि के अनेक व्यापार कुशलता पूर्वक करते हैं। अच्छे स्वभाव के हैं। विशेषकर व्यापार की तरफ ही आपका ध्यान रहता है।

आपके चि० सत्यनारायण मुरलीधर विजयकुमार आदि आदि बड़े सौम्य स्वभाव के मिलनसार प्रतिभा सम्पन्न सुपुत्र हैं।

श्री मंगतराय धर्मचन्द आलमाल

आप उस प्रतापी पुरुष श्री कालुरामजी आलमाल के सुपुत्र हैं। जिन्हें भिवानी नगर का अबालवृद्ध जानता है और जो लोहड़ बाजार के सबसे प्रतिष्ठित व्यक्ति एवं चलती वाले महानुभाव हो चुके हैं।

बम्बई में श्री कालुरामजी का बहुत बड़ा प्रभाव था और प्रत्येक कार्यों में भिवानी वालों की तरफ से ला० कालुरामजी आगे रहते थे। भिवानी गौशाला की लाला जी द्वारा जो सेवा हुई है वह स्वर्ण अक्षरों में लिखने योग्य है।

आज श्री मगतरायजी और धर्मचन्दजी बम्बई एवं अहमदाबाद में बहुत प्रतिष्ठा से कपड़े का कार्य करते हुए अपनी फर्म राजेराम कालुराम ··· को उन्नतीशील बनाए हुए है। आपकीफर्म का सम्मान आज बम्बई के व्यापारी समाज में बहुत आदर युक्त है।

दोनों भाई शील स्वभाव के मिलनसार व्यापार कुशल तथा बुद्धिमान सौम्य व्यक्ति हैं। योग्यता पूर्वक कार्य करते हुए सुखी जीवन बनाए हुए हैं।

श्री गणपतराय जी आलमाल

आप बड़े मिलनसार कार्य कर्ता—मेहनती भिवानी के प्राय सभी कार्यों में भाग लेकर यश प्राप्त किये हुए हैं। आपके चि० केशोराम योग्यता से कार्य कर रहे हैं सौम्य स्वभाव के हैं।

श्री सागरमल जी आलमाल

आप बहुत हुशियार सभा चतुर योग्य व्यक्ति हैं। भिवानी की लोहड़ बाजार स्थित पंचायत के आप सर्व मान्य पंच नियुक्त हैं परिश्रमी उद्योगी मिलनसार प्राय सभीसंस्थाओं के मेम्बर हैं।

श्री वेणीप्रसाद जी आलमाम—बड़े उदार स्वभाव के आस्तिक विचारों युक्त सज्जन प्रभु भक्त हैं और कलकत्ते में सम्मान पूर्वक कार्य करते हैं। आपके पुनमचन्द गोटे आदि का कामकरते हैं। दूसरे रोशनलाल शिक्षा प्राप्त करते हैं।

श्री गूगनराम जी–व्यापार कुशल प्रेमी महानुभाव हैं।

श्री नत्थुराम जी आलमाल—आप बड़ी योग्यता पूर्वक कलकत्ते में ही कार्य करते हैं। आपका चि० बुद्धराम शिक्षा प्राप्त कर रहा है।

श्री किशोरीलाल मोहरसिंह आदि भिवानी में ही अपना व्यापार का काम कर हैं।

श्री बनारसीदास जी कलकत्ते में ही कार्य कर सुख मय जीवन बनाए हुए हैं। चि० केशोराम ओमप्रकाश शिवलाल आदि शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

श्री ज्ञानीराम जी चिड़ीपाल

आपका गौत्र गर्ग है। आप स्व० श्री रघुनाथदास जी चिड़ीपाल जो बड़े आस्तिक प्रभु भक्त और बहुत मिलनसार महानुभाव थे उनके सबसे बड़े सुयोग्य सुपुत्र हैं।

श्री ज्ञानोराम जी व्यापारिक समाज के अत्यन्त गौरव-शाली व्यक्तियों में से हैं जिनके जीवन संग्राम में बहुत कुछ संघर्ष रहा है, और साराही जीवन उत्थान पतन के विचित्र घटना चक्र में से होकर अपना विकास करता रहा है। सुख दुख सम्पत्ति विपत्ति की भंयकर हिलोरों के बीच इनकी जीवन नैया डगमगाती हुई भी आगे बढती रही है। मगर इनका व्य-क्तित्व, साहस, ईश्वरीय विश्वास, इमानदारी, एवं सद् बृत्तियों का ही यह फल है, जो आज इनका मानव जीवन सर्वोत्तम बन गया है। युवावस्था से ही आप बड़े चतुर एवं व्यापार कुशल, महान परिश्रमी और प्रतिभा सम्पन्न महानुभाव हैं जो अपनी योग्यता और निपुणता के कारण अपने हाथों से लाखों रुपयों की सम्पत्ति उपार्जित कर अपने पूर्वजों का तथा अपने परिवार का नाम बढाए हुए हैं। आज साधारण तथा गौरवशाली समाज में श्री ज्ञानीराम जी चिड़ीपाल नाम सम्मान पूर्वक आदर की दृष्टी से लिया जाता है। आप श्री वैष्णव सम्प्रदाय के अनुयायी एवं दीक्षित हैं।

कुछ समय पूर्व आप अपनी फर्म की अभिवृद्धि के लिए अमेरिका आदि विदेशों का आचार निष्ठता के साथ भ्रमण कर अपनी योग्यता का परिचय दे चुके हैं। आप बहुत मिलन-सार, शान्तिप्रिय महानुभाव चिड़ीपाल वंश में उज्वल रत्न हैं।



— श्री ज्ञानीराम जी चिड़ोपाल —
(रघुनाथ एण्ड सन्स कलकत्ता)



स्वर्गीयः—श्री मुकुन्दलाल जी चिड़ीपाल

आपके चि० धनराज पुरुषोत्तमदास आपके साथ कार्य करते हैं और छोटे शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं आपके भ्राता—

श्री बनारसीदास जी चिड़ीपाल—आप युवा वस्था में भिवानी की सार्वजनिक संस्थाओं में कांफी सेवा कर चुके हैं। आप बहुत सुयोग्य मिलनसार धर्मनिष्ठ महानुभाव हैं। आपके चि० बाबुलाल आदि सभी कार्यकुशल व्यक्ति हैं। तृतीय—श्री किरोड़ीमल जी आपही की फर्म में योग्यता पूर्वक कार्य करते हैं।

श्री मुकन्दलाल जी चिड़ीपाल

भिवानी में सर्व प्रथम आप ही ने वकीलत पास की थी, योग्यता पूर्वक कुछ समय वकालत करके आप कलकत्ता में व्यापारार्थ चले गए; वहां पर आपने अपनी योग्यता और व्यक्तित्व एवं सार्वजनिक समाज में ख्याति के साथ २ अपनी फर्म को बहुत उन्नतिशील वैभवशाली बनाया। भिवानी में आपके द्वारा संस्थापित श्री मुकुन्दलाल पुत्री पाठशाला है। आपकी भिवानी कलकत्ते में बहुत मान प्रतिष्ठा थी।

श्री विश्वेश्वरलाल चिड़ीपाल

आप स्व० श्री मुकुन्दलाल जी चिड़ीपाल के सबसे बड़े सुयोग्य सुपुत्र हैं। आप व्यापार चतुर समाज में ख्यातिवान मिलनसार व्यक्ति हैं। आपकी प्रतिष्ठित फर्म विश्वेश्वरलाल

एण्ड संस कलकत्ता द्वारा शेयरों का तथा और भी कई प्रकार के कार्य बड़े पैमाने पर होते हैं। सत्यता और शुध्द व्यवहार के कारण आपकीप्राचीन फर्म व्यापारिक वर्गमें बहुत प्रसिध्द प्राप्त किये हुवे है आपके विचार ऊच्चतम उदारमना हैं। आपकी व्यवसाय निपुणता और बुध्दिमत्ता के कारण फर्म ने मान-प्रतिष्ठा के साथ २ धनोपार्जन भी किया है फलस्वरूप धनिक वर्ग में श्रीमान् जी का नाम बहुत आदर की दृष्टि से देखा जाता है। आपने अपने महानतम जीवन को सब प्रकार से उन्नत एवं प्रभावशाली बनाया है जिसके कारण व्यापारिक सामाजिक और सभ्य समाज में आपके प्रति हर व्यक्ति की आदरणीय प्रेम मयी भावना एवं गौरवशाली स्थान हैं। वैसे आप बड़े विनम्र उदार एवं सज्जन प्रकृति के व्यक्ति हैं। आपके ज्येष्ठ पुत्र ओंकारमल बहुत पहिले से ही आपकी फर्म तथा आपसे बिलकुल अलग है। आपके सुयोग्य शिक्षित सुपुत्र श्री गोपीराम जी बी. ए. बद्रीप्रसाद बी. ए. आपके सहयोग में बड़ी सावधानी एवं उत्तमता के साथ कार्य कर समाज में प्रभावशाली स्थान बनाए हुए हैं। श्रवणकुमार, महेन्द्रकुमार आदि शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

लखपतराय जी चिड़ीपाल

स्व० सेठ मुकुन्दलाल जी चिड़ीपाल के द्वितीय पुत्र हैं। आपका जीवन सार्वजनिक जीवन हैं। आप तीक्ष्ण बुद्धि वाले

अनुभवी सज्जन हैं। आपकी स्त्री का देहान्त होजाने पर आपने दूसरी शादी नहीं करवाई यद्यपि उस समय आप की अवस्था युवा ही थी. यह आपका महान त्याग एक आदर्श है। आपके स्वर्गीय पिता जी आपसे बहुत स्नेह करते थे, आपने भी उनकी काफी सेवा सुश्रुषा की है। हिन्दी साहित्य पठन पाठन में आपकी सदा से ही रुचि है। कलकत्ते की कई एक सार्वजनिक संस्थाओं के आप सम्मानित सदस्य एवं पदाधिकारी हैं। आपने अपने पूज्य पिता जी की पूण्य स्मृति में कई एक धार्मिक कार्य किए हैं और बहुत कुछ करने के मानसिक संकल्प भी है।

श्री हरचन्दराय जी चिड़ीपाल

आप स्व० सेठ मुकुन्दलालजी चिड़ीपाल के तृतीय सुपुत्र हैं। बड़े ईश्वर भक्त, परम सन्तोषी. व्यवहार कुशल, भाग्यवान पुरुष है। आपने अपने कलकत्ते का व्यापार जिससे आपको बहुत अच्छी आय थी बन्द कर दिया है क्यों कि—वहांका व्यापारिक जीवन अशान्ति मय है, आपने अपने जीवन को शान्ति प्रिय रखने के लिए भिचनांबाद में एक बड़ी जमीदारी खरीदी, उसमें बहुत अच्छी उपज के साथ २ आपका उधर सम्मान भी बढा। दैवगति बलवान प्रभु के भरोसे पर रहने वाले की प्रभु ही रक्षा करते हैं। इस उक्ति के अनुसार

पाकिस्तान बनने से पूर्व आपने वह सब जमीदारी अच्छी रकम में देदी। फलस्वरूप आज आप उस पश्चाताप में नहीं है।

आप तुलसीकृत रामायण के बड़े अच्छे ज्ञाता एवं भक्त हैं। भिवानी गौशाला के आप प्रधान प्रबन्धक एवं गौशाला के सच्चे सेवक हैं। आपके विचार दृढ एवं सनातन धर्मावलम्बी हैं। आपका जीवन सार्वजनिक उत्साही और साहसी एवं उपकारमय जीवन है। श्रीरामलीला आदि महोत्सव को हरसाल सम्पन्न करने में श्रीमान् जी का विशेष हाथ रहता है। आपका विशाल हृदय दीन दुखियों की सेवा करने के लिये हमेशा प्रस्तुत रहता है और उनके दुःख के आप सच्चे साथी हैं, यही आप में एक विशेषता और महान गुण है। जो मानव धर्म का प्रतीक कहा जाता है। शहर में आपका बहुत महत्व पूर्ण, ख्याति प्राप्त और परमादरणीय स्थान है।

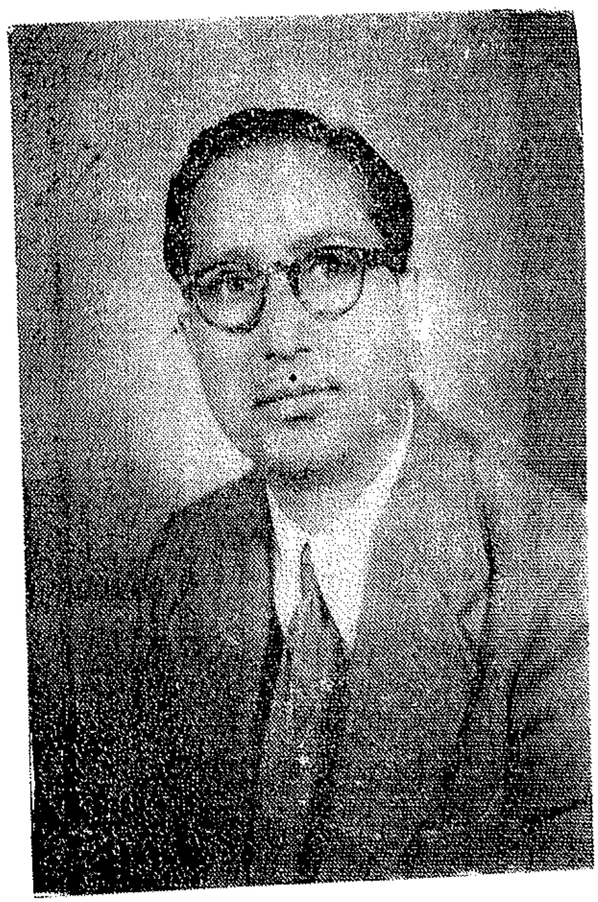
आपके सुयोग्य सुपुत्र श्री ओमप्रकाश जी देहली में अपनी निजि बिस्कुट फैक्ट्री का संचालन कर रहे हैं। आपने देहली-श्रीराम रोड पर निज का मकान खरीद लिया है। वैसे ओमप्रकाश बड़े मिलनसार, व्यवसाय चतुर, सम्मानित नवयुवक हैं। छोटे रामकिशन, गोपालकिशन, बालकिशन आदि उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।



श्री हरचन्दराय जी चिड़ोपाल
(हरचन्दराय ओमप्रकाश भिवानी)



B. A. L. L. B



श्री रंगीलाल जी जैन वकील

श्री बाबु मोतीराम जी चिड़ीपाल

आप स्व० श्री बाबु शिवरामदास जी चिड़ीपाल जो एक महान पुरुष, कर्तव्यपरायण, शिक्षाप्रेमी, बड़े प्रतिभासम्पन्न व्यक्ति थे और उनका सार्वजनिक जीवन बहुत विशालथा उनके सबसे बड़े सुयोग्य सुपुत्र हैं।

आप भी अपने पिता के तुल्य ही बड़े अनुभवी और मिलनसार कई एक संस्थाओंके सम्माननीय सदस्य एवं भिवानी सनातनधर्म पाठशाला के सभापति हैं। यहां के जन समाज में आपका महत्वप्रद स्थान है। आज कल आप भारत प्रसिध्द बिड़ला आदर्श के यहां भिवानी T. I. T. में कानूनी सलाहकार एवं पूर्ण विश्वस्त महानुभाव हैं। आपसे छोटे—

श्री माधवप्रसाद जी-बहुत मिलनसार खुश मिजाज, व्यापार कुशल, परिश्रमी व उद्योगी हैं और रायगढ में श्री पालूराम जी धनानिया की सुप्रसिध्द फर्म में योग्यता पूर्वक कार्य कर बुध्दिमानी का परिचय दे रहे हैं। इनसे छोटे—नित्यानन्द आदि शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

वैसे यह परिवार बहुत बड़ा परिवार है:—

श्री लक्ष्मणदास जी लोहिया—आप सार्वजनिक कार्य कर्ता मिलनसार सुयोग्य व्यक्ति हैं, आपके लड़के श्री दुर्गाप्रसाद जी बहुत योग्य एवं कुशल व्यापारी समझदार हिन्दु विचारों के

साहसी युवक हैं।

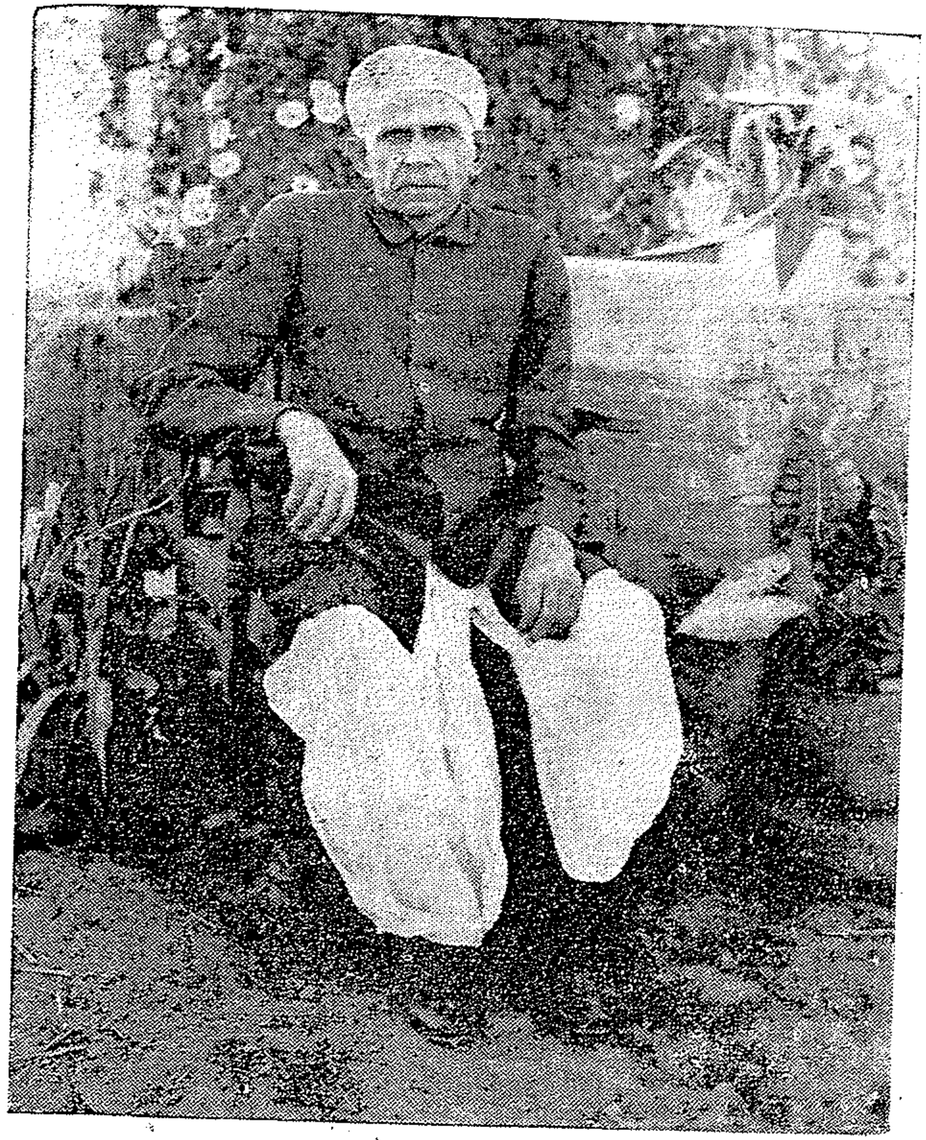
श्री रंगीलाल जी बी. ए एल एल. बी.

आपका आदि निवास तोषाम गांव है। आपका जन्म सन् १६११–८ अक्टूबर का है। वैसे आप बहुत प्रतिभासम्पन्न एवं सफल इनकम टैक्स वकील हैं। आप पहिले जिलाधीश हिसार के कार्यालय में उच्च पद पर काय कर चुके हैं। आपके पिता श्री गुरुप्रसादजी बहुत योग्य एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति माने जाते थे।

अब आप भिवानी में इनकम टैक्स की वकालत कर अपनी बुद्धिमानी का परिचय दे रहे हैं। आपका यहां बहुत सन्मान है और अनेको संस्थाओं के सदस्य एवं सभापति हैं। आप निर्भीमानी अत्यन्त परिश्रमी, हंसमुख, सरलप्रकृति के सज्जन, व्यवहारकुशल व्यक्ति हैं। आपका आफिस हालुबाजार में है।

मंगतराय जी आसारामके

आप आसाराम परिवार में गौरवशाली महापुरुष हैं, और इस युग के प्राचीन आस्तिक विचारों युक्त आदर्श साधुस्वभाव के प्रतिभा सम्पन्न समाज और जाति के भूषण हैं। आपका बहुत समय कलकत्ते में व्यतीत हुआ और ख्याति के साथ अपने फर्म को उन्नतिशील बनाया। दानवीर सेठ किरोड़ीमल जी लुहारीवाले जो फर्म में पाटनर थे, वह आज भी आपमें



श्री मंगतराय जी आसारामके
(मंगतराय पुरुषोत्तमदास कलकत्ता)

प्रेम एवं श्रद्धा तथा आदर की भवना रखते हैं। यह आपके व्यक्तित्व और सद्प्रेम का फल है। आप महानुभाओं की फर्म जितने दिन भी साथ रही दोनों तरफ से उदारता सभ्यता और विशुध्द प्रेम के साथ संचालन हुआ, रायगढ, भिवानी, कलकत्ता आदि में आपके भव्य भवन और काफी समृध्दि युक्त स्थान है। आजकल आप व्यापारादि से उपरामलेकर हरिस्मरण में समय बिताते हैं। आपके सुयोग्य पुत्र श्री पुरुषोत्तम दास अपनी फर्म का बहुत योग्यता और बड़ी सावधानी पूर्वक सचालन करते हैं।

श्री पुन्नमचन्द जी गुप्ता

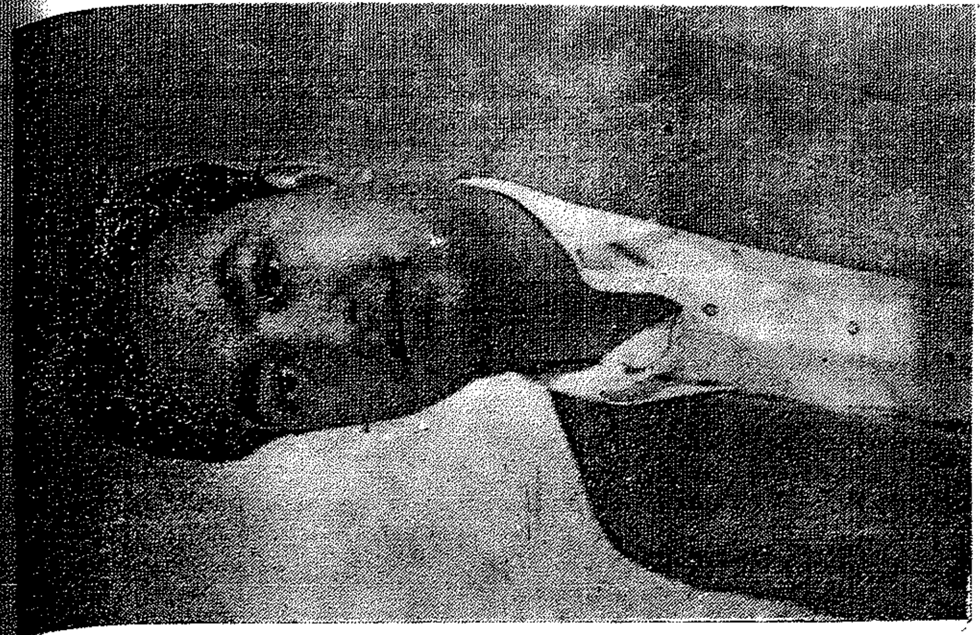
आप स्वर्गीय श्री गिरधारीलाल के दत्तक सुपुत्र हैं। आप मिलनसार उच्च विचारों के हिन्दी साहित्य के प्रेमी और प्रभावशाली सज्जन हैं। आपके चि० देवकीनन्दन निपुणता पूर्वक व्यापारिक क्षेत्र में कार्य करते हैं।

कन्हैयालाल जी आसारामके

आपका गौत्र गोयल है युनाईटेड ट्रेडर्ज कटला नील देहली में कपड़े का ब्यापार करते हैं। आप देहली के कपड़ा समाज में उन्नतिशील व्यक्ति हैं। आपके पुत्र जगदीशप्रसाद महाबीरप्रसाद, गोपालप्रसाद आदि हैं जो सुचारु रूप से कार्य कर रहे हैं।

श्री बृजमोहन जी सहजावाले

आपका गोत्र गोयल है आप स्व० नत्थुराम जी प्रहलाद के जो एक सत्पुरुष ईश्वर भक्त प्रतिभावान मित्रों के सच्चे मित्र थे और बहुत अल्पायु में ही शान्त होगए उस पुन्यात्मा के प्यारे सपूत श्री वजमोहनलाल प्रहलाद के हैं। आप कानपुर की अपनी विख्यात सूरजमल मोतीलाल फर्म के प्रोप्राईटर हैं। आप सरल उच्चत्तम विचारवान व्यापार में पूर्ण कुशल हर व्यक्ति में सात्विक प्रेम रखनेवाले मिलनसार, होनहार नवयुवक हैं। इस समय आप बड़ी सावधानी एवं योग्यता से अपनी फर्म का संचाल कर रहे हैं। वैसे आप श्री मोतीलाल के दत्तक पुत्र हैं और उद्योग महारथी व्यापार केशरी स्व० श्री बनारसीदास जी वैद के दोहित्र एव भिवानी की प्रसिद्ध फर्म श्री घड़सीराम वेगराज के मालिक गजानन्द जी रईस की सौभाग्यवती सुपुत्री से विवाहे हैं। आपकी फर्म कानपुर, नया गंजमें करीव १५ २० वर्ष से अपना सुचारु रूप से व्यापारिक क्षेत्र में हेसियन वारदाने का कार्य कर यश और कीर्ति प्राप्त किए हुए हैं। आपके लघुभ्राता दुलीचन्द उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहा है बहुत योग्य एवं मिलनसार उत्साही युवक हैं। भिवानी में आका निवास स्थान बाड़ी हालुबाजार में है।



❀ श्री बृजमोहन जी प्रहलादके ❀



❀ श्री पुनमचन्द जी गुप्ता ❀

श्री बिलासराय जी रतेरिया

आपका गोत्र एरन है। आप रतेरा ग्राम के आदिवासी हैं अतः आपके नाम का भान रतेरिया शब्द से ही हो जाता है। आपका जन्म १६४६ श्रावण मास में हुआ। आपकी शिक्षा विशेषकर अंग्रेजी की हुई फलस्वरूप आप अंग्रेजी के अच्छे ज्ञाता एवं विद्वान हैं।

कलकत्ते के व्यापारिक वर्ग में आपके व्यक्तित्व का बहुत प्रभाव है, और समझदार व्यक्ति आपकी बात का वजन मानते हैं। इन्हीं सब कारणों को लेकर आपकी प्रसिद्ध फर्म बिलासराय एन्ड कम्पनी कलकत्ते में श्लाघायुक्त प्रशंसित फर्म है। हैसियन बोरा आदि के काम बहुत बड़े पैमाने पर आपके यहां होते हैं।

आप इस समय के कुशल व्यापारी हैं और व्यापारिक क्षेत्र में महत्वप्रद स्थान प्राप्त किये हुए हैं। अतः श्रीमान्जी की वजनदार राय एवं परामर्श लेने व्यवसाय कुशल व्यक्ति आते हैं। क्योंकि आपकी व्यवसायिक प्रतिभा बहुत उच्च श्रेणी की है।

वैसे आप बड़े ही मिलनसार मृदु भाषी–हर व्यक्ति के प्रति सदभावना पूर्वक प्रेम रखने वाले चतुर और पूर्ण व्यवहारज्ञ हैं। जो मनुष्य जीवन का खास अंग है।

आपने अपने बाहुबल और उद्योग के कारण कलकत्ते में कई एक भव्य भवन निर्माण करवा कर अपने बड़ों के नाम को उज्जवल किया है।

भिवानी में बहुत सुन्दर विशाल बगीचा उसी में भव्य-कोठी-शिवालय कूप तथा सदावर्त जारी है। आप धर्म प्रेमी बड़ों के किये गए कार्यों को पूर्ण तोर से संचालित कर रहे हैं।

कलकत्ते की कई एक महत्वपूर्ण संस्थाओं के आप सम्मानित सदस्य व अधिकारी है।

आपकी सौजन्यता के कारण आपमें हर व्यक्ति हार्दिक प्रेम और आपके प्रति अपना शुभचिन्तन बनाए हुए हैं। आपके मदनलाल बबुलाल सहयोग में योग्यता पूर्वक काम करते हैं। और छोटे चि० निर्मलकुमार प्रेमकुमार और प्रकाश आदि पुत्र शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

श्री बिलासरायजी रतेरिया का जीवन लोकोपयोगी सफल जीवन है।

श्री जुगलकिशोरजी रतेरिया

आप स्व० कन्हैयालाल जी के जेष्ठ पुत्र एवं जैन सम्प्रदायनुयायि महानुभाव हैं। आचार्य श्री तुलसीगणी जी के आप अनन्य भक्त हैं। आपकी फर्म रामलाल कन्हैयालाल कलकत्ता में हेसियन बोरा का काम होता है। आपकी फर्म व्यापारिक वर्ग में प्रसिद्ध और प्रमाणिक फर्म है।

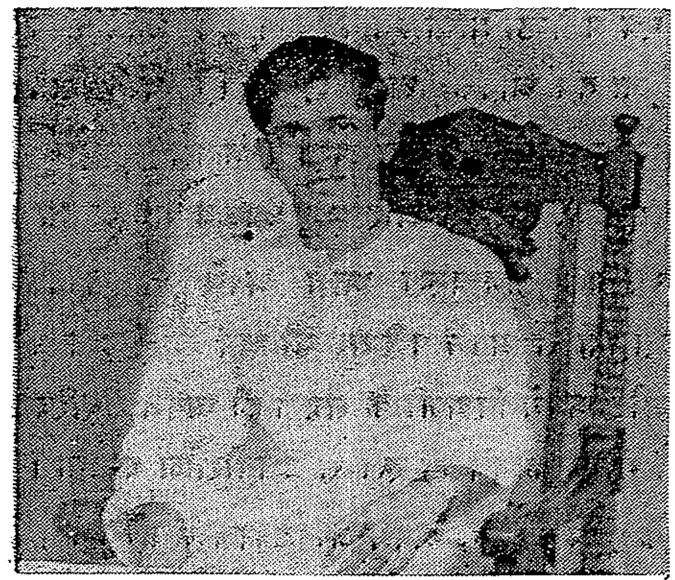


श्री बिलासराय जी रतेरिया
(बिलासराय एण्ड कम्पनी कलकत्ता)

इस समय आपका व्यापारिक एवं जैन समाज में बहुत महत्वप्रद स्थान हैं। आपके चि० रामनिरंजन लाल गोविन्दराम बृजमोहन बड़े उत्साही सरल स्वभाव मिलनसार व्यक्ति हैं।

श्री रामनिरंजनलाल फर्म का कार्य बहुत योग्यता पूर्वक बुद्धिमता के साथ कर अपनी फर्म को उन्नतिशील बनाए हुए है।

श्री सत्यनारायणजी रतेरिया



आप स्व० अनन्तरामजी के सुपुत्र हैं। उनकी मृत्यु के बाद कार्यभार आपको ही संभालना पड़ा। आप रईस तबियत के मित्रों को सच्चे मित्र एवं उदार हृदयके समझदारतथा मिलनसार प्रेमी महानुभाव हैं। इसी परिवार में, बालमुकन्द महादेवप्रसाद

जी आदि आदि महानुभाव अपना कारोबार सम्मान पूर्वक कलकत्ते में ही करते हैं।

श्री घनश्यामदास जी जालान

आप उस वीर पुरुष जनता जनार्दन के सेवक स्व० राय साहिब श्री किशनलालजी जालान के जेष्ठ सुपुत्र श्री घनश्याम दास जी जालान हैं जिनके यश की दुन्दुभि देश देशान्तरों में गूंज रही है। आप इस परिवार में महा मान्यवर, चतुर, बुद्धिमान एवं प्रतिष्ठा प्राप्त व्यक्ति हैं। जब आपके पिताका शरीरान्त हुआ तब आपका आयु छोटी ही थी। सब काम आपके कन्धों पर एकदम आ पड़ा। आपने दूरदर्शिता एवं सौजन्यता, उद्योग, परिश्रम और प्रभु आश्रय पर अपना कारोबार जारी रक्खा। फलस्वरूप आज अपने अध्यवसाय एवं व्यापार कौशलता से अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को बहुत दृढ किया और अपने पिताजी के सदृश ही अपने परिवार के सम्मान एवं गौरव को विशेष रूप से उन्नतीशील बनाया।

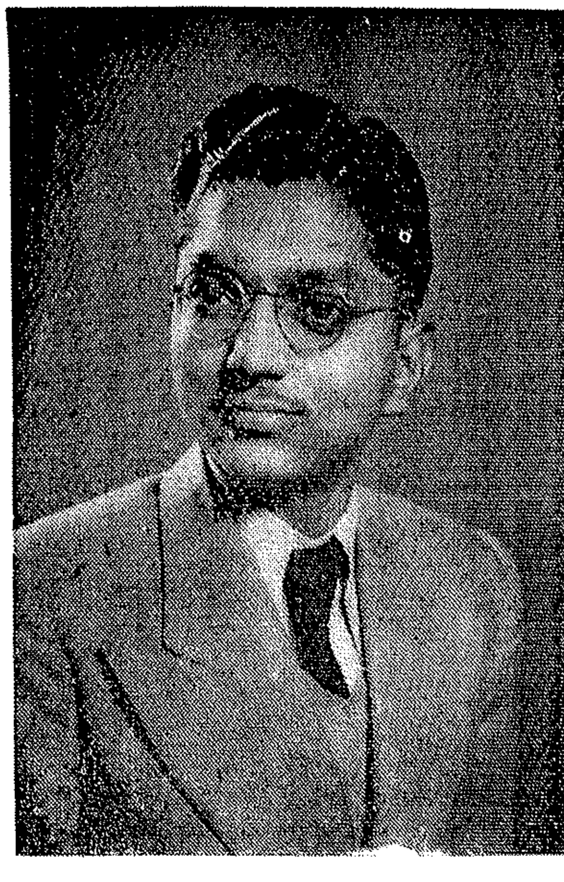
आपके पूज्य पिताजी अपने जीवनकाल में ही भिवानी में श्री किशनलाल जालान फ्री आई. हास्पिटल (नेत्र चिकित्सालय) की स्थापना कर गये थे। कहना होगा कि आपने अपने पिताजी की समृति स्वरूप हस्पताल को बड़ी ही निपुणता से इसका भावी जीवन मजबूत और सुन्दरतम बना कर श्री किशन



श्री घनश्यामदास जी "जालाण"
(श्री जगन्नाथ किशनलाल बम्बई)



श्री नन्दकिशोर जी जालाण (जगन्नाथ किशनलाल जालाण बम्बई)



श्री मुरलीधर जी जालाण बी० ए०
(जगन्नाथ किशनलाल)

लालजी की स्मृति को अमर कर दिया है। एक सुविशाल भवन जो हस्पताल से लगता था वह भी खरीद कर हस्पताल के अधिकार में दे दिया है। और भी संस्था में आगन्तुक महानुभावों के निवासनार्थ सुन्दर कमरे जिनमें सभी तरह का पूर्ण आराम शुलभ है। ऐसे हस्पताल में कई एक कमरे हैं।

इस हस्पताल की बहुत कुछ उन्नति एवं वृद्धि हुई है। आज यह संस्था भारत वर्ष में अपना स्थान महत्वशाली रखती है। भिवानी का नाम इस हस्पताल के कारण विख्यात हुआ है। आपने अपने पिताजी की समृति स्वरूप बागकोठी का द्वार बनवाया जिस द्वार के बन जाने से समस्त बागकोठी किले की भांति सुरक्षित है। इस द्वार पर घन्टाघर एवं जालानजी का भव्य स्टेचू बना हुआ है। मालाड़ में भी आपने अपने पिताजी श्री किशनलाल आयुर्वेदिक धर्मार्थ औषधालय की स्थापना कर मालाड़ निवासियों की बहुत बड़ी सेवा की है। आप वैसे मित भाषी योग्य एवं अनुभवी मृदु स्वभाव, व्यवहार कुशल, उच्च–चारित्रायुक्त महानुभाव है।

आपके छोटे भाई श्री मुरलीधर जी जालान बी. कोम हैं। आप अपनी फर्म का काम बड़ी उत्तमता के साथ श्री घनश्याम दास जी की आज्ञानुसार व्यवसायिक चातुरी एवं होशियारी के साथ सफलता पूर्वक करते हैं। तृतीय चि० नन्दकिशोर जालाण बहुत साधु स्वभाव प्रेमी और बड़े होनहार तथा स्वभाव से ही

तीक्षण बुद्धिवाले और उत्साही नवयुवक है। अभी छोटी ही आयु में भाग लेकर व्यापारिक अनुभव प्राप्त करना शुरु कर दिया है। श्रीघनश्यामदासजीके कोमल हृदयमें स्नेह की भावना विशेष रूप से है हरेक व्यक्ति आपके मिलने के बाद प्रेम में बन्ध कर आपका ही स्नेही बनजाता है। आप तीनोंभाई अपनी माता जी की आज्ञा को शिरोधार्य मानते है यही आपकी उन्नति का शुभ लक्षण हैं।

श्री नारायणदास डालमिया

आप स्व० रायबहादुर ला० सेढमलजी डालमिया के सुयोग्य सुपुत्र नारायणदास जी डालमियां हैं। आपका जन्म आश्विन शुक्ला ८ संम्वत १९८२ कलकत्ता में हुआ। आपके ऊपर रा० ब० का अत्यन्त स्नेह एवं प्रेम था। आपभी उन्हीं की तरह बड़े मिलनसार तथा उदार स्वभाव के व्यक्ति हैं। आपका विवाह रंगूनवासी सेठ बलदेवसहाय शोभाराम के यहां हुआ है। आप तुल्लापट्टी कलकत्ता में आपकी फर्म नारायणदास लोकनाथ के नाम से काफी प्रसिद्धि प्राप्त किए हुए है। आपने अपने जीवन को सुखमय और पूर्ण स्वतन्त्र बना रक्खा है। वैसे आप बड़े होशियार और व्यापार कुशल महानुभाव हैं और कलकत्ते में आपकी बहुत बड़ी इज्जत है और आप अपनी माता जी के पूरे आज्ञाकारी हैं आपके सुविशाल भवन एवं बाग बगीचे आदि



श्री नारायण दास जी ड़ालयिमां

[फर्म नारायणदास लोकनाथ कलकत्ता]

हैं। दुवराज पुरमें आपकी तरफ से एक हाईस्कूल भी जारी है। आप कलकत्ता की कई सार्वजनिक संस्थाओं के मैम्बर एवं पदाधिकारी हैं। वैसे आप हर आदमी से सच्चा प्रेम व सद्-भावना रखते हैं, ।

श्री रामजीदास जी डालमिया

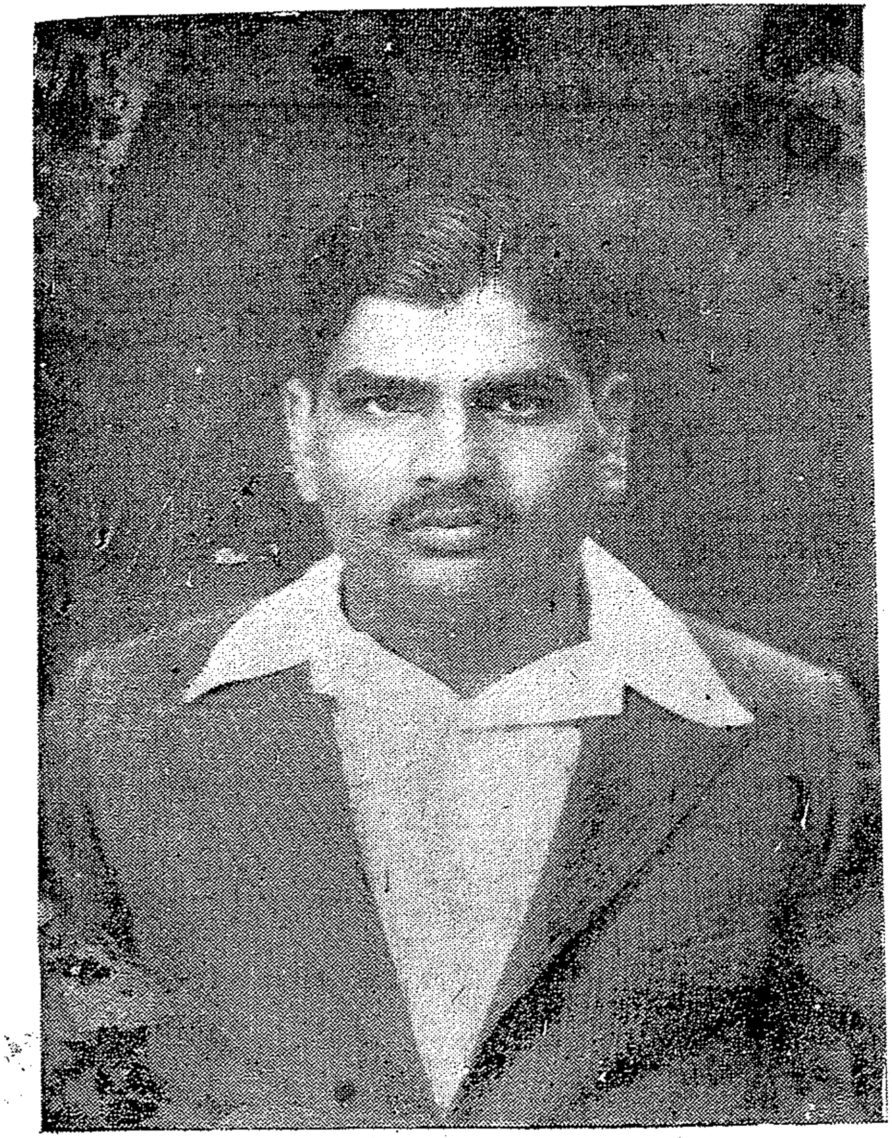
आप रा० ब० ला० सेढमल जी के द्वितीय सुपुत्र श्री राम-जीदास जी डालमियां हैं। आप अपनी फर्म का शेयर बाजार का कार्य देखते हैं। व्यापारिक वर्ग में आपका काफी सम्मान है। नं० १३३ तुल्लापट्टी में आप सबका पहिले से ही निवास स्थान है। आपका विवाह राजस्थान एवं कलकत्ता के प्रसिद्ध सार्वजनिक कार्यकर्ता सम्मानप्रद महानुभाव श्री सेठ रामेश्वर दास जी टाटिया के यहां सम्पन्न हुआ है। आप बड़े मृदुभाषी और उदार प्रकृति के मिलनसार व्यक्ति हैं। कई एक संस्थाओं के मैम्बर आलइण्डिया सेवा सम्मिति इलाहाबाद के भी सदस्य हैं। आपके फर्म की ओर से भुवनेश्वर में धर्मशाला, श्राद्ध-घाट तथा विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय तथा हस्पताल में कमरे हैं। आप अपने भाई नारायणदास जी तथा अपनी माताजी में पूर्ण प्रेम एवं श्रद्धा रखते हैं। आपका भिवानी वालों की पंचायत में सम्मान प्रद स्थान है।

श्री देवकीनन्दन जी डालमिया

आप स्व० प्रभुभक्त श्री हरगोबिन्द जी डालमियां के पौत्र तथा श्री गूगनमल जी के सुयोग्य सुपुत्र हैं। आप सरल स्वभाव के मिलनसार व्यक्ति हैं। आपकी फर्म नारायणदास लोकनाथ तुल्लापट्टी में बहुत प्रतिष्ठित एवं सभ्यता के साथ हेसियन बोरे का थोक व्यवसाय करती है। आपके पिताजी का जब देहान्त हुआ उस समय आपकी आयु छोटी ही थी, पर आज आप अपनी योग्यता, मिलनसारी एवं सौजन्यता के कारण काफी ख्याति प्राप्त किए हुए हैं। आपका पवित्र जीवन संयमी उच्चविचार, सदाचार युक्त, तथा निर्भीमानी, ईश्वरभक्ति से पूर्ण है। आपका चि० लोकनाथ सुयोग्य है।

श्री कुन्दनलाल जी डालमिया

आपका गौत्र गर्ग है। आप स्व० सेठ श्री भोलाराम जी डालमियां के जेष्ठ पुत्र हैं। आपका जीवन सदा से ही सन्तोषी एवं सादा और सरल एवं धार्मिक मनोवृति का रहा पर जनता में बिरादरी में आपका बहुत सम्मान है। आपकी फर्म भोलाराम कुन्दनलाल के नाम से बहुत सम्मान पूर्वक अथाह कार्य कर चुकी है और व्यापारिक कार्य महान रूप में हो रहा है। आपके सुयोग्य सुपुत्र श्री पूर्णमल जी डालमियां ने व्यापारिक



श्री देवकीनन्दनजी डालमियां
(नारायणदास लोकनाथ कलकत्ता)



श्री कुन्दनलाल जी डालमियां
(भोलाराम कुन्दनलाल कलकत्ता)

क्षेत्र में काफी उन्नति कर अपनी फर्म को बहुत उन्नत बनाया है आपके यहां हेसियन बोरा शेयर आदि का विपुल रूप में व्यवसाय कार्य होता है। १३७ नम्बर तुल्लापट्टी में आप अपने निज के मकान में ही निवास करते हैं। आप साधु स्वभाव के भोले भाले महापुरुष हैं।

श्री मुसद्दीलाल जी डालमिया

आप स्व० श्री भोलाराम जी डालमियां के द्वितीय सुपुत्र हैं। आपने प्रभु-कृपा से अपने बाहुबल द्वारा काफी धनोपार्जन कर अपनी फर्म की मारवाड़ी समाज में बहुत प्रतिष्ठा बढाई है। आपके जीवन में कईबार व्यापार के सम्बन्ध में हेर फेर हुए पर आपकी विनम्रता एवं नेक नीयति और सत्यता के कारण कभी भी व्यापारिक क्षेत्र में आपके सम्मान में किसी भी समय कोई न्यूनता न आई, यह आपकी सौजन्यता एवं निस्वार्थ भाव हर एक के प्रति सद्‌भावना और पूर्ण इमानदारी का फल है। जो आज आपकी फर्म सर्व प्रकार से सफल और प्रतिष्ठित है। आप प्रसन्नचित, दयालु हृदय, श्री वैष्णव सम्प्रदायके अनुयायी एवं समाश्रित हैं वैसे आपबड़े मिलनसार, दूसरों के सुख दुःख के साथी, उपकारी, व्यवहार कुशल, मित्रों के मित्र महापुरुष हैं।

आपके बड़े पुत्र श्री राधाकृष्ण जी बम्बई में बहुत

सम्मान पूर्वक अपनी प्रतिष्ठित फर्म का संचालन कर रहे हैं।

श्री बनारसीदास व मोतीराम—आपके सहयोग में ही बहुत योग्यता एवं सावधानी के साथ अपनी फर्म को बहुत उन्नत व प्रतिभाशाली बनाए हुए कार्य कर रहे हैं।

श्री बगड़मल जी:—आप इसी वंश में हैं और कलकत्ते में ही अधिकतर रहते हैं। हैसियन बोरा आदि का कार्य करते हैं और भी इस परिवार में बहुत सभ्य महानुभाव हैं जो जगह जगह अपना कारोबार कर आनन्द से अपना समय व्यतीत कर रहे हैं।

स्व० सत्य नारायण जी डालमिया

आप श्री हरगोबिन्द जी के पौत्र हैं और बहुत छोटी आयु में ही शान्त होगए। आप बड़े मिलनसार व्यापार निपुण और सर्व प्रिय सज्जन व्यक्ति थे आपके दिल में देश जाति उपकार की बड़ी भावना थी। सार्वजनिक कामों में आप बड़ा भाग लेते थे आपके कई एक मानसिक संकल्प थे जो आपके साथही पूर्ण होगये।

श्री मदनलाल जी केडिया

आप व्यापार कुशल अमीर तबियत के महानुभाव हैं। भिवानी, बरेली, कलकत्ता आदि शहरों में आपके भव्य भवन बाग और जायदादें हैं। आपके यहां कत्थे का कारोबार बहुत



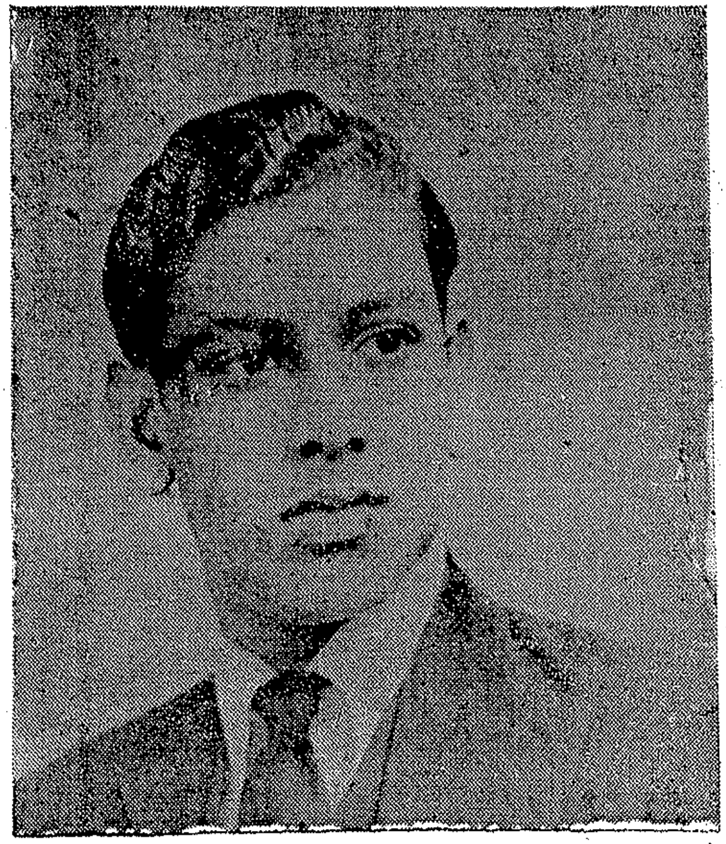
श्री मुसद्दीलाल जी डालमिया



स्व० श्री सत्यनारायण जी डालमियां
कलकत्ता



श्री भीमसैन जी केडिया,
[रामेश्वरदास राधाकृष्ण कलकत्ता]



श्री रामजीदास जी डालमिया
(नारायणदास लोकनाथ कलकत्ता)

बड़े पैमाने पर होता है। वैसे आप मृदुभाषी जवाहरात के पूर्णज्ञाता समझदार व्यक्तियों में हैं, और विशेष कर कलकत्ते में अपनी प्रसिद्ध फर्म रामेश्वरदास राधाकृष्ण कलकत्ता का पूर्ण तोर से संचालन कर ख्याति प्राप्त किए हुए हैं। आपके चि० केशवदेव बहुत सुयोग्य मिलनसार प्रतिभा सम्पन्न प्रेमी सज्जन हैं, और छोटा शिवशंकर उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहा है।

श्री भीमसैन जी केडिया

आप स्व० रामेश्वरदास जी जो आस्तिक विचारों के महा पुरुष थे सुपुत्र हैं। आप साहित्य प्रेमी व समाज में ख्याति प्राप्त व्यक्ति हैं। 'दादर' नामक पत्र का सम्पादन कर सनीमा संसार में तथा २ ३ ग्रन्थों का प्रकाशन कर हिन्दी क्षेत्र में प्रसिध्दि प्राप्त की है। वैसे भीमसैन उद्योगी, साहसी, प्रेमी सज्जन है।

श्री दुर्गाप्रसाद जी केडिया

आप स्व० राधाकृष्ण जी के सुपुत्र हैं जिन्हों ने भिवानी की सार्वजनिक संस्थाओं में काफी कार्य कर अपनी सेवाओं का परिचय दिया है। आप भी बड़े परिश्रमी, व्यापार निपुण, समझदार, व्यक्ति प्रभावशाली और मिलनसार श्री मदनलाल जी के आज्ञा पालक तथा सौम्य स्वभाव कार्य कुशव महानुभाव हैं।

श्री ओमप्रकाश जी केडिया

आप भिवानी के सिंह पुरुष सार्वजनिक कार्य कर्ता हर

व्यक्ति के सुख दुःख के साथी उदारात्मा सर्वप्रिय महानुभाव श्री बन्शीधर जी केडिया के सुपुत्र है, जिनके नाम से भिवानी का आबाल वृद्ध पूर्ण परिचित हैं। आपभी सुयोग्य कार्य कुशल तेजस्वी और मिलनसार अपनी फर्म का योग्यता पूर्वक कार्य कर रहे हैं। इस वंश का गौत्र गर्ग है।

सर्राफ परिवार

यह परिबार प्रभुभक्त धर्मभक्त और निराभिमानी रहा हैं। इनको सिहांनियां के नाम से भी पुकारा जाता है। इस परिवार में श्री मनीराम जी श्रीराम जी बहुत प्रभावशाली और सम्मानित महापुरुष हो चुके हैं। अब श्री बनवारीलाल जी बड़ों में है जो सीधे साधे और सन्तोषमय जीवन के साथ २ सब व्यापारिक कार्यों से दूर हैं। श्री छांगाराम जी एक उद्योगी और व्यापारिक क्षेत्र में सुलझे हुए व्यक्ति थे जो शान्त हो गये। अब श्री मुंगाराम जी माईधन जी नोरंगराय अपना चांदी सोने का थोक व्यापार करते हैं। व्यापारिक वर्ग में आपकी फर्न का अच्छा नाम है। बम्बई में चतुर्भुज ज्ञानीराम फर्म से बहुत बड़ा कारोबार जारी है। सराफे की व्यापारिक जनता में आपकी पर्याप्त ख्याति है। वैसे आप बड़े अच्छे स्वभाव युक्त आस्तिक विचारों के महानुभाव हैं। भिवानी, देहली, बम्बई

आदि में आपकी फर्म बड़ी नेक नियति से सम्मान के साथ कार्य कर रही है। श्री मुंगाराम जी के सुयोग्य पुत्र प्रहलादराय तथा ज्ञानीराम बड़े कार्य कर्या हैं, और योग्यता पूर्वक फर्म में ही कार्य कर रहे हैं।

श्री नन्दकिशोर जी सर्राफ

आप श्री वेङ्कटेश्वर भक्त, धर्मप्रिय साधु स्वभाव के महा पुरुष जिनके शुभ कर्मों के कारण अन्तिम समय श्री द्वारकापुरी में बैकुण्ठवास हुआ उन पुन्यात्मा श्री गोबिन्दराम जी सर्राफ के आप जेष्ठ सुयोग्य सुपुत्र हैं, आपकी आस्था भी उसी तरह परम्परागत भगवान श्री रङ्गनाथ में बनी हुई है।

आप कुशाग्रबुद्धि व्यापार कुशल और सर्वप्रिय महानुभाव हैं आपने अपने हाथों से कई एक फर्मों का स्थापन बम्बई, देहली मथुरा, मुजफ्फरनगर कलकत्ता आदि २ व्यापारिक शहरों में कर व्यापार महारथी होनेका परिचय दिया है। आप राष्ट्रप्रेमी उच्च विचारों के तथा शुद्ध खद्दर धारी व्यक्ति हैं। व्यापारिक क्षेत्र में आपके व्यक्तित्व का महत्वप्रद स्थान हैं। आप कई एक संस्थाओं के मैम्बर तथा चम्बरों के डाईरेक्टर हैं। आपने देहली और मुजफ्फरनगर में अच्छी जायदाद निर्माण करवाई है। बम्बई तथा देहली में गजानन्द गोबिन्दराम फर्म से बहुत बड़ा व्यापार होता रहा है और हो रहा है।

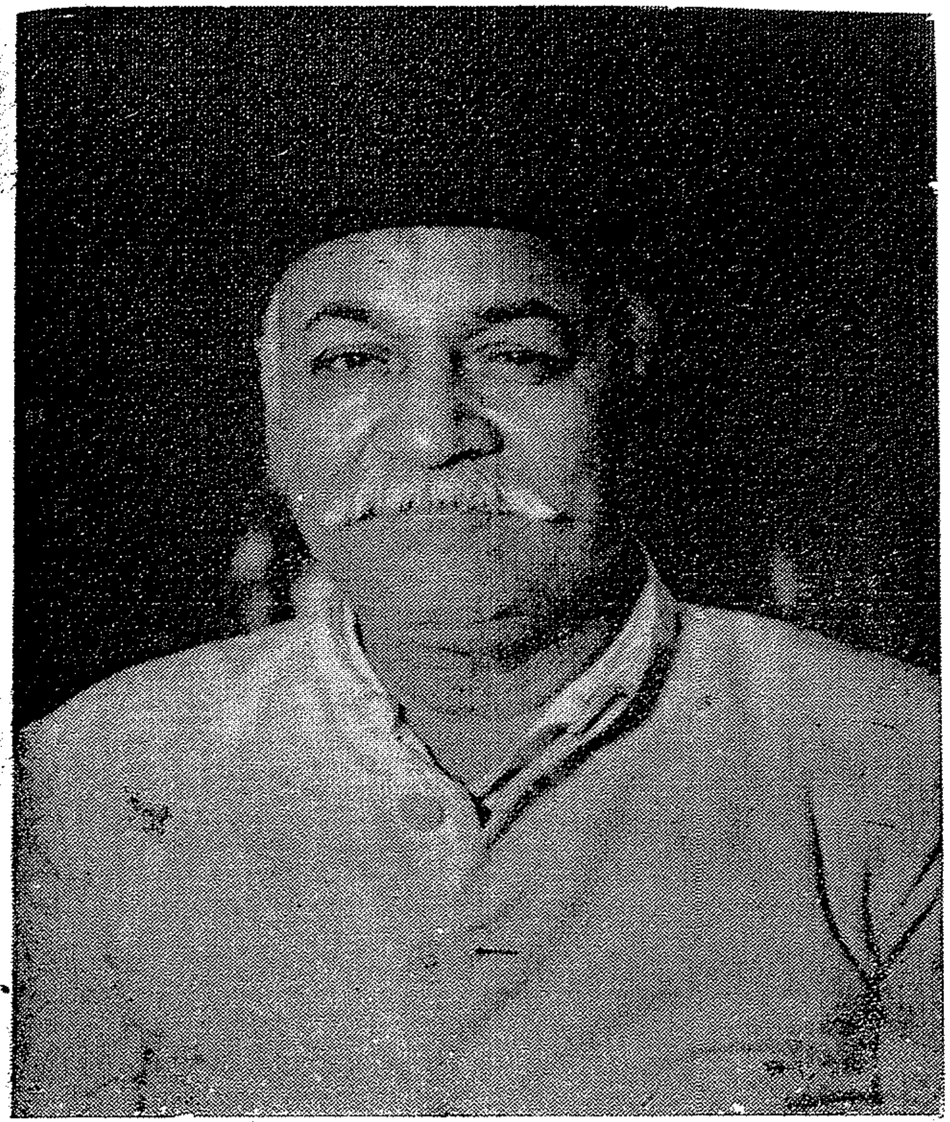
आप इस परिवार में बड़े भाग्यवान, सुप्रसिद्ध, व्यवसाय कुशल एवं अपने व्यापार व फर्म को बहुत उन्नत बनाने वाले हैं। आपके छोटे भाई पूर्णचन्द्र अपना स्वतन्त्र कार्य करते हैं जो बहुत सीधे सादे सरल स्वभाव के हैं आपका सबसे बड़ा चि० रोशनलाल जो B. A. L L B. की शिक्षा प्राप्त कर रहा है बहुत होनहार उच्च विचारों का समझदार गुरुजनों में श्रद्धा रखनेवाला नवयुवक हैं।

श्रीबाबूलाल जी—आप स्व० छांगारामजी के बड़े पुत्र हैं अपने पिता जी के सामने ही व्यापारिक क्षेत्र में कार्य करने लग गये थे। बड़े अच्छे विचारों के तथा व्यापार में ही विशेष रुचि रखनेवाले व्यक्ति है। आपसे छोटा बालकृष्ण है जो पढरहा है।

श्री महावीर प्रसाद जी श्री हजारीमल जीयोग्य व्यक्ति हैं सोने चान्दी का काम करते है।

उदयचन्द जी—आप इसी फर्म में काम करते हैं। मिल नसार अच्छे विचारों के व्यक्ति हैं।

छोटूराम—इस परिवार में यह महात्मा एवं सिद्ध पुरुष है। श्री मुन्शीराम जी स्व० श्री सीताराम जी के सुपुत्र हैं। आप परम सन्तोषी धर्मप्रिय सरल स्वभाव के प्रभुभक्त हैं। आपका लड़का उपेन्द्र सुयोग्य एवं समयानुसार कार्य करने वाला है।



श्री कासीराम जी मुकीम
(रामेश्वरदास जी कासीराम मुकीम देहली)

मुकीम परिवार

यह परिवार शहरका धनी परिवार है। इयका गोत्र गोयल है। इस परिवार में स्व० श्री देवीसहाय जी बड़े ही सिद्ध हस्त और विख्यात वैद्य हो चुके है। आप बड़े सरल स्वभाव दयावान, प्रभावशाली वैद्य थे।

श्री रामेश्वरदास जी मुकीम

श्री रामेश्वरदास जी बड़े बुद्धिमान, विचार शील, प्रभावशाली कर्मशील व्यक्ति हैं। आप का अनुभव आयुर्वेदीय चिकित्सा में पूर्ण हैं। आप दीन दुखियों का इलाज अब भी करते रहते हैं। अपनी युवावस्था में व्यापारिक क्षेत्र में काफी काम कर धनोंपार्जन किया है। आप डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के शानदार मैम्बर भी रहचुके हैं। अब आप भिवानी में ही विशेष रूप से निवास करते हैं और व्यापारिक उद्योग धन्धों से अलग ही हैं। आपके चि० शिवशंकर व्यापारिक क्षेत्र में काम करते है, चि० भोलानाथ शिक्षा प्राप्त कर रहा है।

श्री काशीराम जी—जो बहुत ही व्यवहार कुशल, व्यापार चतुर, महान पुरुषार्थी, उद्योगी, परिश्रमी एवं साहसी व अपने ध्येय के एक ही व्यक्ति हैं। देहली, अहमदाबाद, बम्बई आदि शहरों में कपड़ा मार्केट में आपकी बड़ी धाक एवं

प्रतिष्ठा और गौरव हैं। आपने अपनी चतुराई एवं व्यापारिक प्रतिभा के बल पर अच्छी सम्पत्ति उपार्जित की और समाज में अपनी फ़र्म का नाम उन्नत किया है। आप देहली मे कई संस्थाओं तथा कमेटियों के सम्माननीन मेम्बर एवं पदाधिकारी हैं। आपकी समाज में पड़ी प्रतिष्ठा एवं इज्जत है। आप बड़े मिलनसार, प्रसन्नचित रहने बाले बड़े मितव्यय हैं। आपके चि० गौरीशंकर, उमाशंकर फर्मों में बड़ी सावधानी से कार्य [illegible]। इन से छोटे शिक्षा प्राप्त करते हैं

श्री गजानन्द जी बड़े:- साधुस्वभाव, देशभक्त, निर्मल-विचार युक्त संयमी और आचार निष्ठ हैं। आपका अधिक समय धार्मिक ग्रन्थों के स्वाध्याय एवं एकान्त सेवी, पारलौकिक विचारवान व्यक्ति हैं। देहली में जमुना जी के निकट एकान्त स्थान में आत्मोत्थान के लिए प्रभु भक्ति उपासना में निमग्न रहकर अपना जीवन व्यतीत करते हैं।

स्व० मोहनलाल जी मुकीम--श्री अमरनाथ जी इनके सुयोग्य सुपुत्र हैं जो देहली में गल्ले का थोक व्यापार करते हैं आप मित्तभाषी सरल स्वभाव के विचारवान नवयुवक हैं आप का श्री मनोहरलाल जी घनश्याम की सौभाग्यवती सुपुत्री के साथ विवाह हुआ है।



श्री मंगतराय जी जैन (फर्म परसराम द्वारका दास)

श्री जुगलकिशोर जी जैन

आपकी फर्म परसराम जुगलकिशोर नामसे प्रसिद्ध है आप ला० द्वारकादास जी जैन के छोटे भाई हैं और अपनी फर्म का कार्य बहुत योग्यता के साथ संभाले हुए हैं। आप गंभीर विचारों के तथा व्यापार कुशल और जैन सम्प्रदाय में प्रेम रखने वाले सुप्रतिष्ठित महानुभाव हैं। आपकी फर्म में कपड़ेका काफी मात्रा में व्यापार होता है। आपके सुयोग्य लड़के सर्वप्रिय व्यक्ति हैं मदनलाल जी अपना कारोबार अलग करते हैं। बम्बई और अहमदाबाद में आपकी कपड़े की फर्म प्रसिद्ध एवं अच्छे रूपमें व्यापार कर रही है। प्यारेलाल तथा रामचन्द्र आपके सहयग से कुशलताके साथ काम करते हैं। श्रीपीरुमलजी अलग कार्य करते हैं।

श्री मंगतरायजी जैन

आप उत्साही और वीरात्मा सार्वजनिक कार्यकर्ता, कर्तव्य परायण, जैन सम्प्रदाय के सच्चे अनुयायी, मारवाड़ी समाज में ही नहीं बल्कि ओसवाल समाज में प्रतिष्ठा सम्पन्न व्यापार निपुण सुयोग्य एवं मिलनसार प्रेमी महानुभाव हैं। स्व० श्री द्वारकादास जी जैन के बड़े सुपुत्र हैं जिन्हें जैन समुदाय और व्यापारिक वर्ग बहुत सम्मान और आदर की दृष्टि से देखता था।

आप भी अपने पूज्य पिता के सदृश ही अनेकों गुणों से विभूषित, कार्य कुशल और सर्व प्रिय व्यक्ति हैं। इतनी छोटी आयु में आपकी जैन संप्रदाय में भक्ति और जो निष्ठा है वह अकथनीय है। आचार्य श्री १०८ श्री तुलसी गणीजी महाराज की पंजाब यात्रा जो सन् १९५१ में हुई आचार्य सेवामें अहर्निस रह कर पूर्ण सेवा-भाव निभाते रहे। आपने अपने विचारों पर दृढ रहने और प्रतिज्ञाओं को निभाने के लिए व्यापार में भी हानि सही, और अपनी प्रतिज्ञाएं निभाई। जो आचार्य श्री तुलसी के साथ में रहने की की थी। आप श्री तुलसी गणीजी में अपार श्रद्धा और उनकी प्रेम से आज्ञा पालन करने में ही जीवनादर्श समझते हैं। वैसे आप वड़े सौम्य स्वभाव के गण-मान्य तथा सुप्रतिष्ठित सज्जन हैं।

आपके ही उद्योग, त्याग एवं परिश्रम से भिवानीका माघ महोत्सव सं० १९५१ में बडे अपूर्व ढंग से पूर्ण हुआ। और चतुर्मास भारतकी राजधानी देहली में सन् १९५२ बड़े विशाल रूप में सम्पन्न हुआ। यह कहना पड़ेगा कि आपने अपने जैन समाज तथा व्यापारिक समाज में जो यश एवं सम्मान प्राप्त किया है वह आदरणीय श्री द्वारकादास जी से किसी भी तरह कम नहीं है। इस तरह आपने उन्नति प्राप्त कर अपने बड़ों के नाम को रोशन किया है। आपके छोटे भाई नैनसुखदास

भिवानी ही रहते हैं। वैसे आपकी सुप्रतिष्ठित फर्म बम्बई में परसराम हुन्नामल के नाम से और भिवानी में परसराम द्वारकादास के नाम से प्रसिद्ध हैं। देहली में परसराम द्वारकादास जैन के नाम से संचालित हैं जिनका कार्य-संचालन आपकी ही देख रेख में होता है आपके चि० पुनमचन्द आदि शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

श्री मीरूमल जैन

स्व० श्री हुन्नामलजी के बड़े सुपुत्र हैं व्यापारिक कार्यों में कुशल मिलनसार अच्छे स्वभाव के व्यक्ति हैं। आपकी फर्म द्वारा बम्बई, अहमदाबाद में अच्छे पैमाने पर कपड़े का व्यापार होता है। आप अधिकतर भिवानी में परसराम हुन्नामल नाम से काम करते हैं। आपके छोटे भाई बाबूलालजी घड़सीराम आपके सहयोग में ही कार्य करते हैं। आप सरल स्वभाव वाले मिलनसार, प्रतिभायुक्त व्यक्ति हैं।

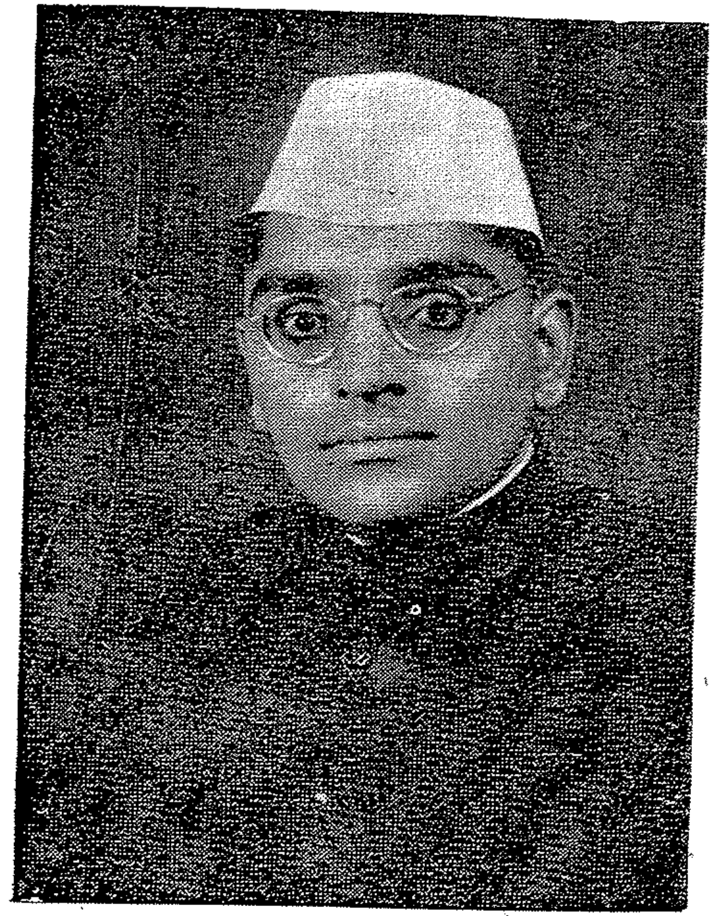
श्री दुलीचन्द जी जैन

स्व० श्री बद्रीप्रसादजी के सुयोग्य और शिक्षित कर्म-शील सुपुत्र हैं। आप सर्वांग सुन्दर शरीर हृष्ट पुष्ट और सुसज्जित परमोत्साही नवयुवक हैं। आप सार्वजनिक कार्यों में बहुत भाग लेते हैं और उदारता पूर्वक हर संस्था, हर धार्मिक

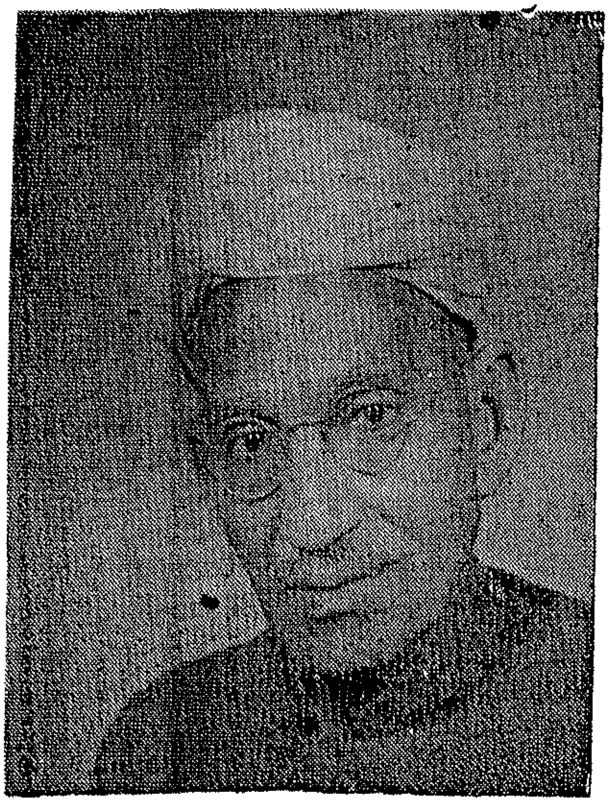
कार्यो में अपना सहयोग देते रहते हैं। वैसे बड़े सरल स्वभाव के मिलनसार साहित्य प्रेमी प्रतिष्ठा सम्पन्न व्यक्ति हैं। आप ने आचार्य श्री तुलसी गणी जी महाराज की आज्ञा शिरोधार्य कर जैन ग्रन्थों का भी मनन किया है क्योंकि आपका जीवन हिन्दी साहित्य से प्रेम व सम्बन्ध रखता है। आप सच्चे जैन धर्म को मानने वाले पवित्र हृदय के विचारवान होनहार व्यक्ति हैं। आप वैसे व्यापार कुशल शुद्ध चरित्रवान व्यवहार निपुण हैं। आपकी फर्म देहली, अहमदाबाद, बम्बई, और भिवानी में बहुत प्रसिद्धि प्राप्त और व्यापारिक क्षेत्र में मानी हुई फर्म है जिनका सभी संचालन आपके हाथ में है। और निपुणता पूर्वक गौरव के साथ होता है।

श्री रामसरूप जी बजाज

आप शहर के नवयुवक समाज में सम्माननीय व्यक्ति हैं। आपके यहां कपड़े का बड़े अच्छे रूप में काम होता है। भिवानी की सार्वजनिक संस्थाओं तथा सेवा कार्यों में आपका सहयोग हर प्रकार सें रहता हैं। आप सनातन विचारों के मिलनसार, प्रतिभा सम्पन्न महानुभाव हैं। श्री दुलिचन्द जी जैन से आपका निस्वार्थ विशुद्ध सच्चा प्रेम व स्नेह है। आप कार्य-कुशल हर व्यक्ति के शुभ चिन्तक हैं। शहर में आपकी मान प्रतिष्ठा एवं बहुत सम्मान है।



श्री दुलीचन्द जी जैन
(परसराम दुलीचन्द)



श्री जुगलकिशोर जी जैन
[परसराम जुगलकिशोर, भिवानी]



श्री मीरूमल जी जैन
(परसराम हुन्नामल भिवानी)

श्री प्रसादीलालजी जैन





प्रसादीलाल भगवानदास पाटनी

आपका गौत्र पाटनी है देहली में आप स्वतन्त्रता पूर्वक कपड़े का कार्य करते हैं। आप अ० भा० व० दिगम्बर जैन महा सभा के महा मन्त्री हैं आपका दिगम्बर जैन समाज में बहुत मान प्रतिष्ठा है। आप अपने धर्म के पक्के अनुयायी एवं पूर्ण रूप से नियमों को निभाने वाले सदाचार युक्त आचार्य श्री के भक्त हैं आपही आप नही आपका सर्व परिवार बाल वृद्ध पवित्र भावना को लिए अपने आचार्यों मुनियों में अपूर्व श्रद्धा रखते हुए सम्प्रदाय के विधि विधान को पूर्ण रूप से ध्यान

पूर्वक निभाने में एक आदर्श रूप हैं। आपने अपनी पूर्ण श्रद्धा के फलस्वरूप दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के महान आचार्य पूज्य श्री १०८ आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज का अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित कर अपनी योग्यता एवं गुरु भक्ति और मानवता का परिचय देकर हमारी जन्म भूमि भिवानी का समस्त जैन समाज में ही नहीं बल्कि व्यापारिक, सामाजिक धार्मिक एवं शिक्षित समाज में भी सिर ऊंचा किया है। जो वास्तव में एक महानतम कीर्तिवान आदर्श है।

इस तरह आपने राव राजा जगत विख्यात श्रीमान् सर सेठ हुकमचन्द जी इन्दौर वाले जिन्होंने संसार के सभी भोगों को त्याग संसार से विरक्त हो आजकल अपना शान्ति का जीवन बनाए हुए जैनधर्म के आर्ष ग्रन्थों का अध्ययन कर रहे हैं उन महात्यागी श्रीहुकमचन्दजी का आप द्वारा प्रकाशित हीरकजयन्ति अंक आपकी श्रद्धा और घनिष्ठता का परिचायक है। आपके लघु भ्राता श्री भगवानदास जी भी आपही के समान सभी तरह के गुणों से युक्त एवं प्रभावशाली व्यक्ति है।

देशभक्त श्री लक्ष्मीनारायण जी गाड़ोदिया

सेठ लक्ष्मीनारायण जी का निवास स्थान हालुबाजार बाड़ी में है। यह बहुत दिनों से देहली रहने लगे और वहीं प[...] इन्हों ने लाखों रुपयों की जायदाद गाड़ोदिया मार्केट खार[...]



देशभक्त-श्री लक्ष्मीनारायण जी गाड़ोदिया देहली।

बावली में बनाई। इस पर सेठ जी के साथ वर्षों ही झगड़े व उत्पात हुए पर अन्तिम विजय गाड़ोदिया जी की हुई।

आप राष्ट्रभक्त एवं महात्मा गांधीजी के परम स्नेही हैं पहिले जब महात्मा गांधी देहली आते थे तो आपके ही भव्य भवन में निवास करते थे, जो नटवे कूचे में है। आप बड़े उदार दृढ साहसी, व्यापार कुशल, एवं उद्योगपति हैं। स्वदेशी प्रचार के लिए आपका धर्मार्थ गाड़ोदिया स्टोर देहली में प्रसिद्ध है। आपने कांग्रेस की प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप में तन मन धन से काफी सेवाएं की हैं। गाड़ोदिया बैंक आपके द्वारा संस्थापित है। बम्बई, अहमदाबाद, कानपुर, कलकत्ता आदि में आपकी फर्म बहुत प्रतिष्ठा सम्पन्न है। और व्यापारिक क्षेत्र में श्री- गाड़ोदिया जी का महत्व पूर्ण स्थान है। आपके चि० रामगो- पाल एक प्रतिभा सम्पन्न, मिलनसार, व्यवहार कुशल, सुयोग्य सुपुत्र है।

श्रीमति सरस्वती देवी गाड़ोदिया

आप धर्म प्राण देश भक्त श्री लक्ष्मीनरायण जी गाड़ो- दिया की सौभाग्यवती धर्मपत्नी हैं।

आपका अधिक समय पूज्य श्री महात्मा गांधी जी के सम्पर्क में रहने के कारण उनके सद्गुणों का आपकी पवित्र आत्मा पर बहुत बड़ा देश भक्ति का प्रभाव पड़ा है। इसी लिये आपने राष्ट्रीय आंदोलनों में भाग लेकरविदेशी कपड़ाबहि

ष्कार के समय सत्याग्रह योजना के अन्तर्गत श्री कृष्ण जन्म स्थान में भी निवास करना पड़ा है, वहां पर भी आपने उद्योग धन्धों से विश्वप्रसिद्ध श्रीविठ्ठलभाई पटेल जैसे महान् यशस्वी को चर्खे पर सूत कातना सिखाकर एवं जेल में देश भक्त नेताओं की अपने हाथों से महान सेवा कर राष्ट्रीय इतिहास में श्रीमति गाड़ोदिया नाम को स्वर्णाक्षरों में अंकित कर लिया है। भारत के प्राय बड़े २ नेता आपमें श्रद्धा रखते हुए आपका हृदय से पूर्ण सम्मान करते हैं। क्यों कि स्वतन्त्रता संग्राम में आपका महान त्याग देश के बड़े २ नेताओं से किसी कदर भी कम नहीं है। आपके व्यक्तित्व एवं सेवाभाव से मारवाड़ी समाज ही नहीं बल्कि भारत का सभ्य समाज भी भलि भांति परिचित है और आपका हृदय से आदर करता है।

आप भारत की वह नारी रत्न हैं जिस पर कांग्रेस को ही नहीं बल्कि समूचे नारी जगत को अभिमान है। आप धार्मिक विचार धारा की सनातन धर्मावलम्बी पुण्यात्मा देवी हैं। प्रति दिन जमुना स्नान कर आप धार्मिक होने का आदर्श प्रकट करती हैं।

आप सुयोग्य वक्ता एवं सुन्दर लेखिका भी हैं। आपकी सौभाग्यवती सुपुत्री केसरबाई का विवाह भारत प्रसिद्ध उद्योग पति श्री गिरधारीलाल जी बजाज से हुआ है और आपके



श्रीमति सरस्वतीदेवी जी गाड़ोदिया
धर्मपत्नी—एल० एन० गाड़ोदिया देहली।

चि० रामगोपाल गाड़ोदिया सुयोग्य सुपुत्र है। जिनका शुभ-विवाह पित्ती परिवार के वैश्य रत्न श्री गोबिन्दराम जी की कन्या के साथ हुआ है। यह सब आपके सुकृत्यों का फल है जो यह योग्य परिवार आपको प्राप्त हुए है। प्राकृतिक चिकित्सा में आपका बहुत बड़ा विश्वास है और आपने इस इलाज द्वारा ऐसे २ व्यक्तियों का इलाज किया है जिनकी आशा ही छूट चुकी थी।

आपक का दयालु हृदय गरीबों के हित के लिए और यशस्वी हस्त हर प्रकार के शुभ कार्य करने के लिए उद्यत रहते हैं। आप देश की महान विभूति हैं। आपके द्वारा न जाने कितने ही राष्ट्रहित कार्य प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष हो रहे हैं। आपका सुखी जीवन सभी तरह प्रतिष्ठा युक्त सम्पन्न है और गौत्र बंसल है।

श्री महादेवप्रसाद जी गाड़ोदिया—आपकी दुकान पत राम दरवाजे के बाहर है। आपका कारोबार लुहारु स्टेट में भी है। वैसे आप कई भाई हैं। बड़े सुयोग्य, मिलनसार, व्यवहार कुशल प्रभु भक्त, आस्तिक विचारों के सर्वप्रिय व्यक्ति हैं।

ख्याली का परिवार

यह कानोड ग्रामके आदि वासी हैं इनका गौत्र कुन्छल है

श्री गोकुलचन्द जी ख्यालीका

आप का अधिकतर भिवानी ही रहना हुआ है। आप ला० भैरवप्रसाद, जिन्हें बाबा भी कह कर पुकारा जाता था उनके सगे छोटे भ्राता है। आप अपने स्वभाव के निराले ही व्यक्ति हैं। आज कल आप देहली में अधिकतर रहते हैं। प्रायः साधु सन्तों का सत्संग करते है। वैसे आपकी कई एक प्रसिद्ध फर्म प्रतिष्ठा के साथ काम कर रही है। आपके सुयोग्य सुपुत्र श्री कुन्दनलाल जी बड़े मिलनसार, व्यवहार कुशल, प्रेमी महानुभाव हैं। और सदा प्रसन्नचित्त हंस मुख रईसी तबियत के सर्वप्रिय नवयुवक हैं।

श्री गिरधारीलालजी ख्यालीका

आप स्व० सेठ सरदारमल जी के जेष्ठ सुपुत्र हैं और आपके यहां देहली में रामनरायण गोकुलचन्द कलकत्ते में रामनरायण सरदारमल और भिवानी में रामनरायण सरदारमल नाम से कपड़ा एवं चाय का थोक कारोबार होता है।

श्रीगिरधारीलालजी ख्यालीकाअग्रवाल समाजमें एक प्रतिभा सम्पन्न, कुशलव्यापारी, समाज सेवक, उदारमना व्यक्ति हैं। इतनी छोटी अवस्था में आपका देहली क्लोथ मार्केट में बड़ा

सम्मान एवं प्रतिष्ठा है। आप राजा दिल के बड़े योग्य बुद्धिमान तथा प्रतिभाशाली होनहार युवक हैं।

इस समय आपके चि० पद्मपत बृजलाल आदि लड़के हैं जो शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

आपके छोटे भाई श्री रघुनाथ प्रसादजी जो कानपुर में जगन्नाथ महादेवप्रसाद के प्रोपराइटर हैं। बड़े सौम्य स्वभाव मिलनसार व्यवसाय निपुण आप में पूर्ण श्रद्धा रखते हैं। आपका चि० विजयकुमार इनकी गोद है।

इनसे छोटे श्री गजाधर जी देहली में बड़ी योग्यता पूर्वक और प्रतिष्ठा के साथ विमल जनरल स्टोर द्वारा विविध प्रकार का कार्य करते हैं। चाय का विशेष कार्य है। आपके विमलकुमार आदि बालक है।

इसी वंश में श्री बनारसीदास लीलूराम आदि २ जो अपना कारोबार करते हैं।

श्री मानूराम जी ख्यालीका

आप श्री स्वर्गीय जगन्नाथ जी ख्यालीका जो कट्टर सनातन धर्मी विचारों के महापुरुष थे उनके सुयोग्य पुत्र हैं। आप भी अपने पिता के समान सनातन धर्मी एवं उच्च विचारों के हैं आप प्रभु भक्त एवं सार्वजनिक कार्य कर्ता भी हैं। धार्मिक समारोह में आपका हर समय सहयोग प्राप्त होता

रहता है आप उदार स्वभाव के मिलनसार, सत्यप्रिय, संयमी एवं अपने ध्येय के पक्के महानुभाव हैं। आपके छोटे भ्राता श्री झावरमल आप के सहयोग में ही कार्य करते हैं। पहले भिवानी में कपड़े का बहुत अच्छा कारोबार होता रहा है आज कल आप कलकत्ते में अपना स्वतन्त्र कार्य करते हैं।

केशान परिवार

इस परिवार का गोत्र बांसल है और आदिनिवासी शेखावाटी के हैं। इनका अधिकतर रहना कलकत्ते में ही होता है और वहीं पर बड़े प्रमाण में व्यापार करते हैं। बड़े कुशल व्यापारी हैं। कपड़े के व्यापार के साथ कई मीलों के आप सोल एजेन्ट भी हैं। पहले इस परिवार में अच्छे २ सुयोग्य कर्मशील धर्म शील महानुभाव हो चुके हैं।

श्री बैजनाथजी केशान भिवानी वाले

आप बहुत समझदार धार्मिक विचारों के और सार्वजनिक कार्यकर्ता एवं प्रतिष्ठा सम्पन्न आदरणीय महानुभाव हैं।

आपका जन्म वि० १६५५ में हुआ था। जब से इस परिवार में आपका जन्म हुआ है तभी से यह परिवार दिनों दिन वैभव युक्त और पूर्ण अभ्युदय को प्राप्त हो रहा है। इस लिये इस परिवार में आप परम भाग्यशाली एवं प्रतिभावान है।

भिवानी शहर में आपका धमार्थ आशाराम दातब्य औष-धालय, मन्दिर. कूप, शिवालय आदि हैं, जिनसे जनसाधारण



श्री बैजनाथ जी केशान भिवानी वाला

को सर्व प्रकार के कल्याणकारी सुख प्राप्त हैं। वैसे भिवानी में समय २ पर अन्नदान वस्त्रदान प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष में विविध सेवाएं जनता जनार्दन की इस फर्म से बनती रहती है।

कलकत्ते में एक वृहद् हस्पताल एवं देवघर (बैजनाथ धाम) में आशाराम सेनेटोरियम का निर्माण करवा कर आपने अपनी भावनाओं का जो परिचय दिया है वह चिरस्मरण होगा, युद्ध के समय कलकत्ते में जनता की भगदड़ पड़ी और सब वस्तुओं का अभाव हो गया तब आपके दयालु एवं पवित्र और विशाल हृदय में सेवा की भावना जगी फल स्वरूप आपने अपनी फर्म की तरफ से पुड़ी साग की दुकान चालू की जो ८ आने सेर के भाव से बिक्री होने लगी। व्यापारी वर्ग के लिये जगह २ भोजनालय खुलवा कर उस भयानक समय में आपके द्वारा की गई महान सेवाएं कलकत्ते के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित है।

आप सुयोग्य, मिलनसार, शिक्षित, व्यापार एवं व्यवहार कुशल प्रभावशाली महानुभाव हैं।

आप कलकत्ते की सार्वजनिक तथा व्यापारिक कई एक लोकोपयोगी सस्थाओं के प्रेजीडेन्ट, सेक्रेटरी तथा पोषक एवं सहायक रह चुके हैं और अब भी हैं।

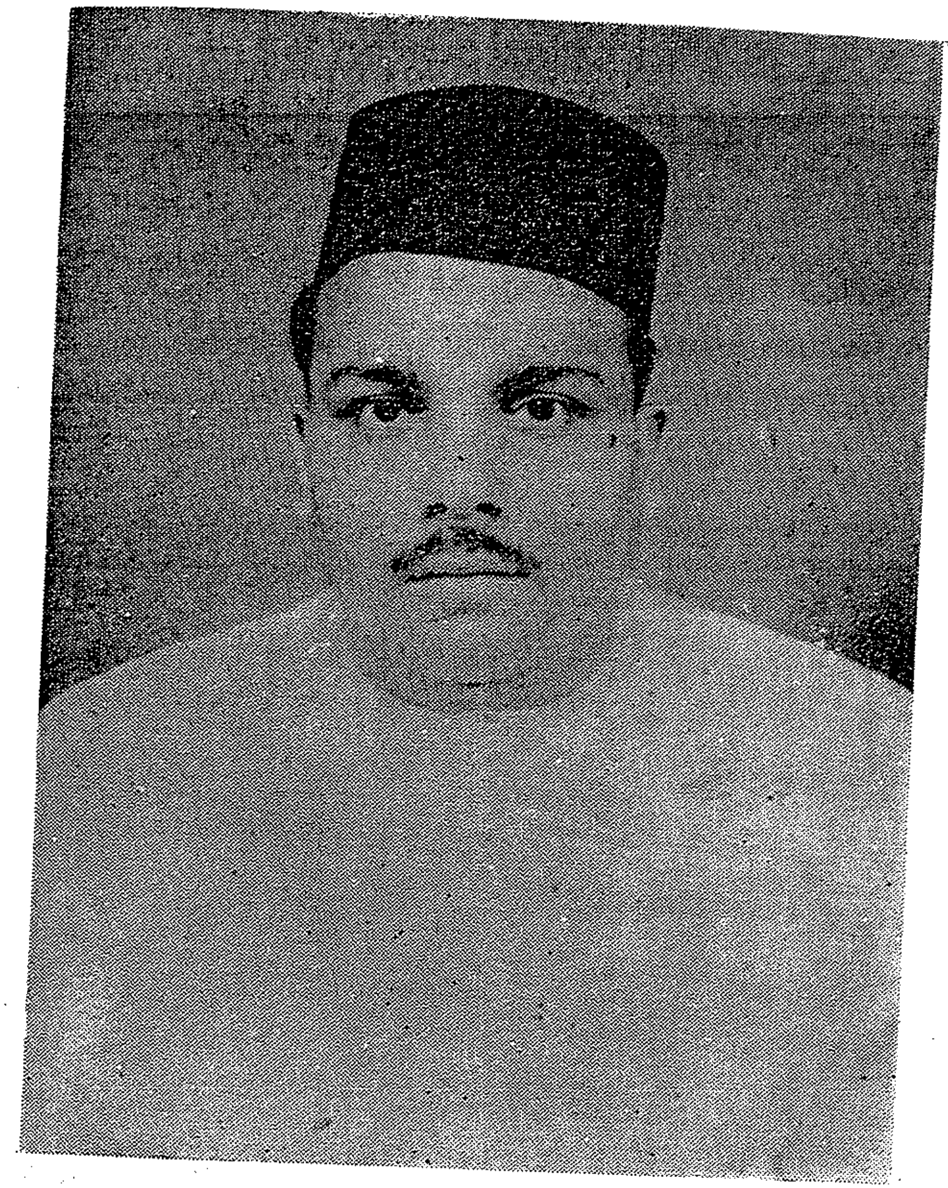
आप बड़े नीतिज्ञ सभाचतुर, उन्नतीशील, मृदुभाषी, सत्य प्रेमी, गणमान्य तेजस्वी सज्जन हैं। आपकेचि० श्री राजेराम,

श्री किशनलाल बहुत सुशीक्षित एवं सभ्य और व्यापार कुशल प्रतिभायुक्त आपके सहयोग में रह कर कार्य कर रहे हैं।

श्री महाबीरप्रसादजी केशान

आप स्व० श्री गजानन्द के सुयोग्य सुपुत्र श्री महाबीरप्रसाद जी बड़े ही उत्साही उद्योगी, मिलनसार, भाग्यशाली, कर्मनिष्ठ, सच्चरित्र, उन्नतिशील महानुभाव हैं। आपकी रुचि विशेषकर सार्वजनिक कार्यों की तरफ विशेष रूप से रहती है। आप प्रसन्न-चित होनहार, सोम्य स्वभाव के युवक हैं। और बड़ों की प्रतिभा आप में झलकती है। समय २ पर भिवानी में आकर सार्वजनिक संस्थाओं तथा जनता जनार्दन की सेवा में अपना कीमती समय देकर धार्मिकता का परिचय देते रहते हैं। आपकी स्नेह मुद्रा एवं सौजन्यता और विनम्रता तथा दयालुता पर हर व्यक्ति मुग्ध होकर आपके व्यक्तित्व से प्रेम रखता है। वैसे आप चतुर एवं समझदार व्यवहार कुशल प्रेमी महानुभाव हैं।

बैजनाथ धाम में आपका प्रभाव वहां के अधिकारियों और जनता पर आपके प्रेम युक्त व्यवहार के कारण है, समस्त बैजनाथ धाम में आपकी प्रसिद्धि आपके व्यक्तित्व एवं सेवा के कारण है। आपके चि० ओमप्रकाश सोमप्रकाश विमलप्रकाश आदि आदि पढ़ रहे हैं।



श्री महावीरप्रसाद जी "केशान"
[श्री लक्ष्मीचन्द बैजनाथ कलकत्ता]

श्री श्यामलाल जी

आप स्व० श्री लखमीचन्दजी के सुयोग्य सुपुत्र हैं। जिन लखमीचन्दजी ने भिवानी वालों की महान सेवा कर अपने वंश का नाम उज्ज्वल किया है और उनकी हार्दिक इच्छा अपनी जन्मभूमि भिवानी की सेवा के लिये ही हर समय लालाइत रहती थी। आप भी उन्हीं के समान समझदार व्यापार कुशल एवं सद् विचारों के सुयोग्य महानुभाव हैं और अपनी फर्म का कार्य श्री बैजनाथ जी की आज्ञा में रह कर कुशलता से करते हैं।

श्री पन्नालालजी गोविन्दरामजी

आप दोनों ओंकारमलजी के सुयोग्य सुपुत्र हैं श्री बाबू ओंकारमलजी सब भाइयों में बड़े और बहुत व्यवसाय निपुण व्यक्ति थे। आप भी अपनी फर्म लखमीचन्द बैजनाथ को उन्नतिशील बनाने के लिये बहुत परिश्रम तथा बुद्धिमता से कार्य कर सफलता प्राप्त कर रहे हैं। दोनों ही मिलनसार अपने वंश के अनुसार व्यवहार करने वाले चतुर व्यक्ति हैं।

श्री कालीचरणजी

आप श्री मदनलालजी के सुयोग्य दत्तक पुत्र हैं और श्री बैजनाथ जी की आज्ञामें रह कर कुशलता पूर्वक कार्य कर अपनी योग्यता का परिचय दे रहे हैं। बहुत सज्जन मृदुभाषी कर्मशील कार्यशील युवक हैं।

इस परिवार की महान सेवाएं भिवानी के नाम को जगह २ यशस्वी बनाए हुए है यह परिवार इसी तरह दिनों दिन सेवा करता हुआ वर्द्धतामपि वर्द्धताम् ।

एम० आर० ब्रादर्स

अर्जुनदास जी सोरेवाले द्वारा यह फर्म क्लोथ मार्केट में सन् १६३६ से स्थापित है इसकी शाखा कैलास ब्रादर्स देहली एवं बम्बई में है। अर्जुनदास योग्य तथा मिलनसार व्यापार कुशल व्यक्ति हैं। देहली में आपकी फर्म ने अच्छी जायदाद बनाली है। यहां की टोपिया सुन्दर एवं प्रसिद्ध हैं। आपके अन्य भाई इसी फर्म में योग्यता पूर्वक कार्य करते हैं। आपके चि० पशुपतिनाथ बी० ए० सुयोग्य कार्य कर्ता हैं कैलाशपति उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहा है छोटे भा। शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं आप स्व० गीगराज सोरेवाले के सुपुत्र हैं।

सेवारामजी का परिवार

इस परिवार में श्री सेठ रामबिलास जी, चौधरी प्रभु भक्त धर्मपरायण और बड़े सदाचारी, उच्च विचार वाले महानुभाव हुए हैं। उन्हीं के पुत्र श्री दुर्गाप्रसाद जी चौधरी कर्तव्यपरायण, सर्व प्रिय व्यक्ति हैं। मुजफ्फर नगर में मायाराम दुर्गाप्रसाद फर्म के नामसे बहुतबड़ा और थोक आढ़त का व्यापार करते हैं और यू० पी० प्रान्त में इस फर्म की



श्री अर्जुनदास जी सोरेवाले
देहली



श्री गजाधर जी ख्याली वाले
(विमल ब्रादर्स देहली)

बड़ी प्रतिष्ठा एवं मान है। मुजफ्फरनगर में धर्मशाला शिवालय आदि धर्म कार्य फर्म द्वारा हुए हैं। आपके पौत्र श्री गोरधनदास जी फर्म का योग्यता पूर्वक कार्य कर रहे हैं। और सत्यनारायण आदि शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

श्री मायाराम जी चोधरी

आप पहिले ज्यादातर भिवानी ही रहतेथे पर अब देहली में रहते हैं। कारोबार से विश्राम लेकर शान्त जीवन व्यतीत करते हैं। आप के पुत्र त्रिलोकचन्द कार्य भार संभाले हुए हैं।

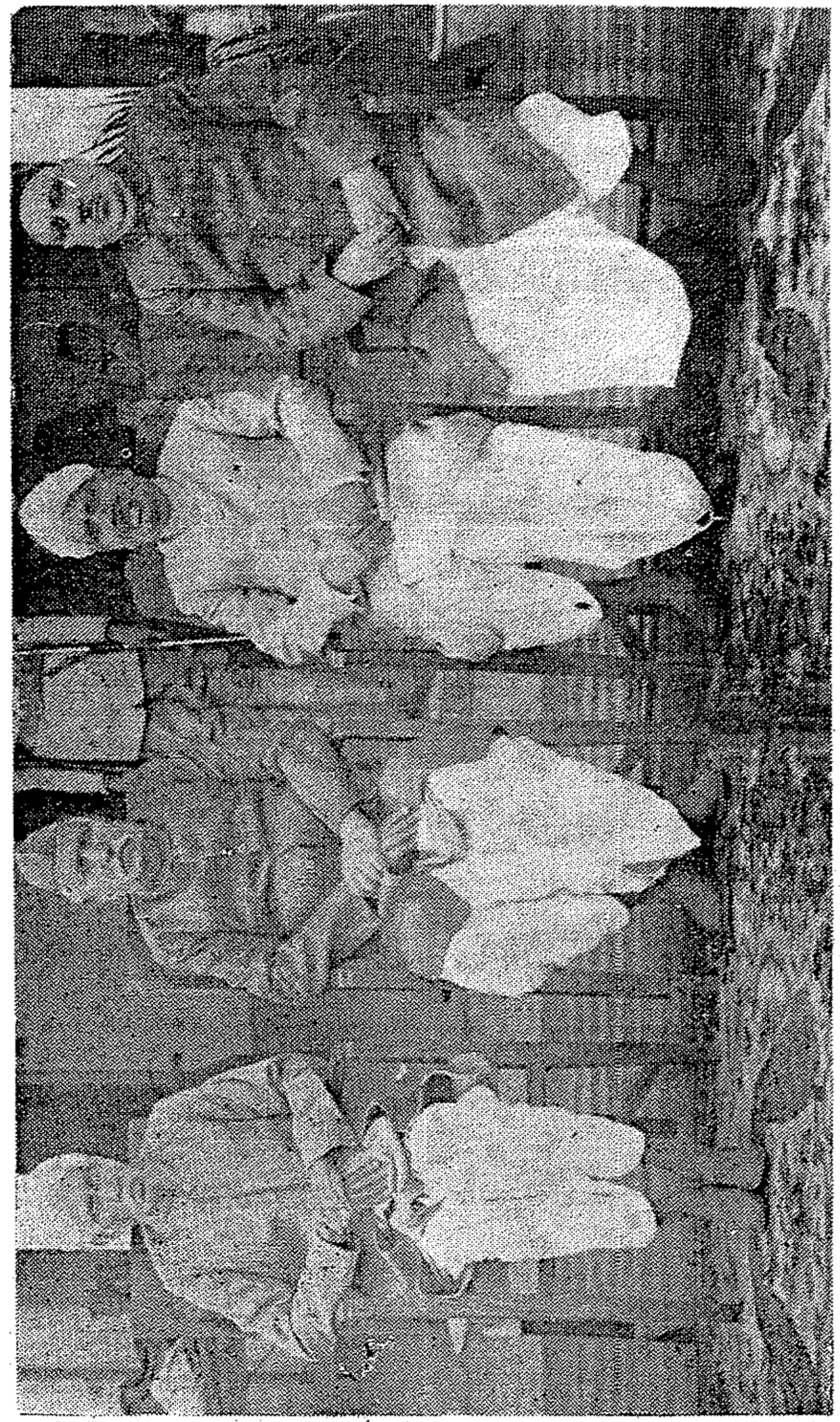
श्री ला० भालाराम जी चोधरी

यह बहुत ही मिलनसार उदार चित्त एवं वीर पुरुष हैं। सामली मन्डी में आपकी सुप्रतिष्ठित फर्म श्री काशीराम बैजनाथ के नाम से संचालित है। आप पहले आनरेरी मजिस्ट्रेट रह चुके हैं आप श्री तुलसीकृत रामायण के अच्छे ज्ञाता एवं पूर्ण अनुभवी भक्त प्रेमी हैं और तुलसीकृत रामायण के विषय में अच्छी सूझ देते हैं। यू० पी० प्रान्त में आप बड़े प्रभाव शाली, वैभवशाली, दानशील पुरुषों में गिने जाते हैं व्यवसाय कुशल, प्रतिभा सम्पन्न व्यवहारज्ञ महानुभाव हैं। वास्तव में इस परिवार में लाला भालाराम ने आर्थिक, धार्मिक एवं सामाजिक व्यवस्था में अपने परिवार एवं फर्म की महान

उन्नति एवं सर्वत्र इसका सन्मान गौरव बढाकर अपनी कीर्ति अमर कर रक्खी है। आपके सुपुत्र चि० गिरधारीलाल बहुत सुयोग्य पितृ भक्त एवं सुशिक्षित व्यापार कुशल चिरंजीवी है। भाग्यवान भालाराम जी का पवित्र जीवन सफल है।

श्री ज्ञानचन्द जी चौधरी

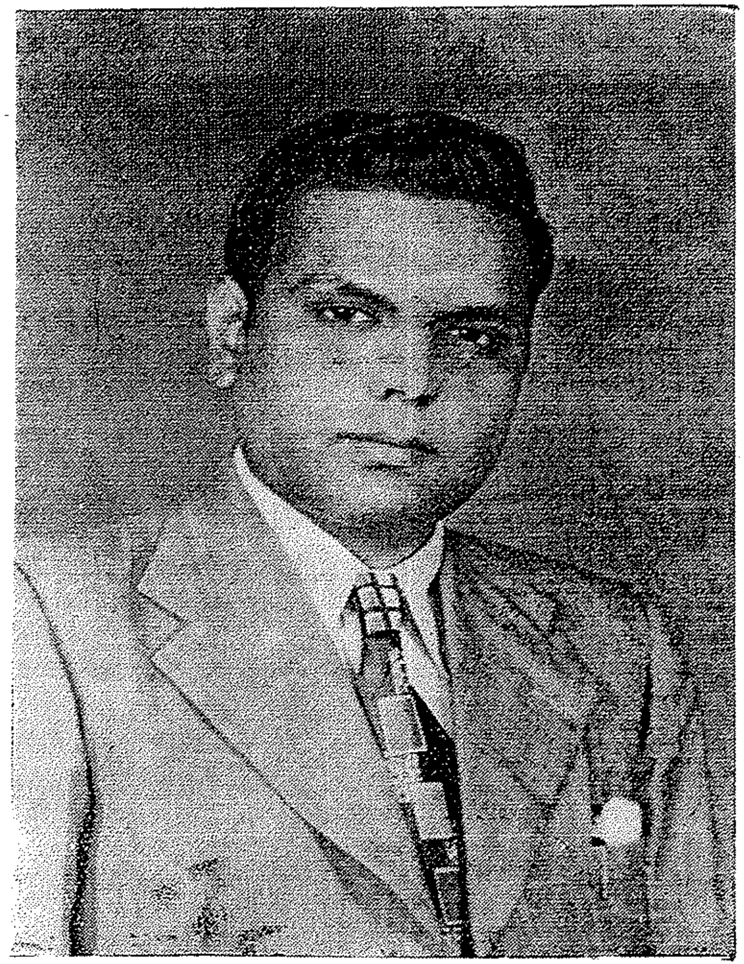
आपके पिताजी श्री काशीरामजी महान् धर्मात्मा व देहली शहर के माननीय पुरुष थे जिन्होंने बड़ी योग्यता और शुद्ध व्यवहार के कारण अपनी फर्म दयाराम रामबिलास देहली को विपुल सम्पत्ति युक्त व ऐश्वर्यशाली बनाया आप उन्ही के सुयोग्य सुपुत्र हैं। आप भी अपने पिता के समान सुयोग्य व्यवहार कुशल व्यक्ति हैं। आपका जन्म १९८२ में हुआ आप की फर्मसे कपड़ा अनाज तथा गुड़ आदि का बहुत बड़े थोक रूप में काम होता है और व्यापारिक समाज में आपकी फर्म बहुत विख्यात एवं ईमानदारीसे काम करनेसे प्रसिद्धि प्राप्त किये हुये है। वैसे भी आपने अपने प्रेमभाव द्वारा अपने व्यक्तित्व को सम्मान प्रद बना रक्खा है। आपका विवाह अहमदाबाद की सुप्रसिद्ध फर्म सेठ हुकमचन्द जी हरीराम जी के यहां हुआ है। आपके चि० किशनकुमार बृजमोहन प्रकाशचन्द्र आदि सुपुत्र हैं। आप देहली की बहुत सी संस्था एवं कमेटियों के सम्मानित सदस्य व पदाधिकारी हैं।



श्री मायाराम जी — श्री दुर्गाप्रसाद, जी — श्री भालाराम जी — श्री काशीराम जी, चौधरी



रा० सा० श्री सेठ भालाराम जी चौधरी
भू० पू० ऑनरेरी मजीस्ट्रेट शामली



श्री ज्ञानचन्द जी चौधरी
(दयाराम रामविलास)

देहली हिन्दुस्तानी मर्कन्टाईल एसोसिएसन के मेम्बर हैं आप स्वभाव से बड़े विनम्र बुद्धिमान एवं कार्य दक्ष हैं। अपने पिताजी के बाद योग्यता पूर्वक अपनी फर्म का संचालन कर रहे हैं। आपके छोटे भाई श्री सत्यनरायण उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं इससे छोटा प्रेमचन्द पढ रहा है।

श्री जयदयाल जी चोधरी

आपका गौत्र गोयल है आपका जन्म १९६० मिती आसोज सुदी १२ को हुआ। आप अपना स्वतन्त्र व्यापारिक कार्य करते हैं आपके चि० सत्यनरायण मामनचन्द शिवकुमार हैं जो सभी योग्यता पूर्वक कार्य करते हैं। आपसे छोटे श्री जयकरणदास जी, ऋषीनेश, राधाकृष्ण आदि हैं जो सभी कारोबार में भाग लेते हैं। इस समय डालमिया सीमेंट के आप एजेन्ट हैं आप की शहर में बहुत अच्छे मोकों पर जायदादें हैं। आपके पूर्वजों के महान अनेक स्मार्क बनेहुये हैं जो इस वंश की यशोपताका भिवानी में लहरा रहे हैं।

जयरामदास जी श्री निवास जी नवल किशोर सीताराम पढ रहे हैं।

श्री दुलीचन्द जी

आप स्व० राजेराम जी के सुपुत्र हैं और देहली में कपड़े का कार्य बहुत सन्मान एवं मान प्रतिष्ठा के साथ कर

रहे हैं आपके सुपुत्र श्री रामकुमार जी M.A. वकील देहली में ही वकालत का कार्य सफलता पूर्वक करते हैं आपका जीवन सार्वजनिक है बड़े मिलनसार, उत्साही, बुद्धिमान ख्याति प्राप्त महानुभाव हैं। देहली के व्यापारिक, सामाजिक, एवं धार्मिक क्षेत्रों में आपका बहुत सन्मान है। चान्दनी चौक कोतवाली के सामने आपका दफ्तर है, देहली के वकील वर्ग में भी आपका स्थान महत्व प्रद है, सौम्य स्वभाव विचारशील सुयोग्य महानुभाव हैं।

नोरंगराय जी:—आप देहली कपड़े का ही कार्य करते हैं बहुत सुयोग्य एवं बुद्धिमान व्यवहार कुशल व्यक्ति हैं।

स्व० माधोप्रसाद जी के:-छन्मूमल सालगराम आदि २ भी देहली में ही अपना कारोबार योग्यता पूर्वक कर रहे हैं।

चौधरी परिवार

यह परिवार शहर का पुराना एवं ख्यातिवान धर्मवान तथा लोकोपकारी परिवार सिद्ध हुआ है। इसमें बड़े २ पुण्यात्मा धर्मात्मा साधु स्वभाव के महापुरुष हो चुके हैं। श्री निरभाराम जी छाजुराम जी अपने समय के प्रतापी और सर्व प्रिय महानुभाव हुए हैं। धर्मशाला, पाठशाला अच्छी सम्पत्ति का एक विशाल ट्रस्ट जनता जनार्दन की सेवार्थ बना गये हैं जिसके द्वारा धर्म के कई एक कार्य संचालित हैं।



श्री निरभाराम जी बुवानीवाले
(श्री मुथरादास निरभाराम रायगढ़)

अब इसी परिवार में श्री काशीराम बुढ़िया एक मिलनसार उद्योगी परिश्रमी व्यापारकुशल व्यक्ति हैं जो बड़ी योग्यता के साथ अपने बड़ों नाम अमर बनाये हुये है। आपका समाज में व्यापारिक केन्द्रों में नाम व प्रतिष्ठा है बहुत से धर्म कार्य आपके द्वारा हो रहे हैं आप उदार स्वभाव के आस्तिक विचारों के व्यक्ति हैं आपके चि० विश्वनाथ कृष्णकुमार पुत्र हैं जो शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। इसी परिवार में गुलाबराय जी हैं जो आढ़त का कार्य करते हैं।

श्री सेठ निरभारामजी बुवानी वाले

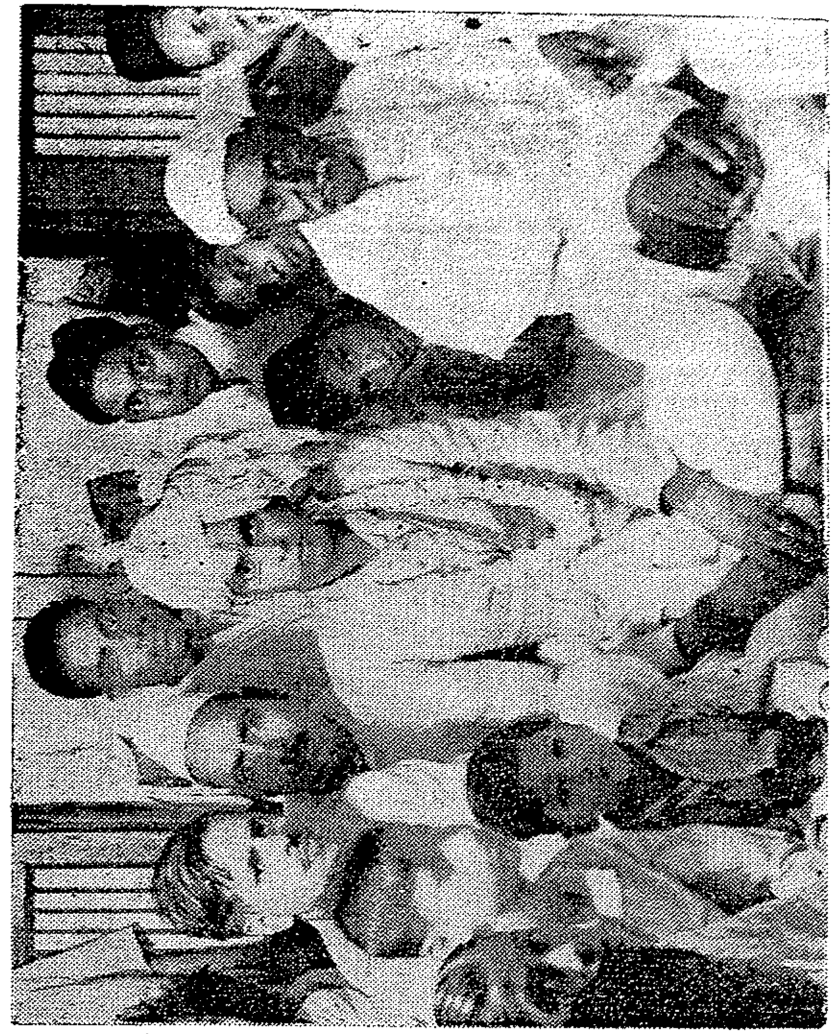
इस प्रतिष्ठित और सम्माननीय परिवार का आदिनिवास स्थान भिवानी से कुछ मील की दूरी पर बुवानी खेड़ा के नाम से है। और गर्ग गोत्र है इसी लिये यह परिवार बुवानी वालों के नाम से सुप्रसिद्ध हैं।

श्री निरभाराम जी बुवानी वाले का जन्म १९५२ का है। आप बालकाल से बड़े परिश्रमी उद्योगी एवं विचारवान उत्साही गंभीर स्वभाव के व्यक्ति हैं। शहर भिवानी में आपकी जायदाद बाग कूप और निवास के कई एक स्थान हैं। आपकी कोठी बिचले बाज़ार के चोपटे में भव्य और सुविशाल बनी हुई है। जिस पर श्री मथुरादास निरभाराम फर्म के नाम से कारोबार होता है पर अब कुछ वर्षों से आप सी.पी. प्रान्त के

रायगढ में आढ़त का काम करने लगे हैं, और वहां भी मथुरादास निरभाराम रायगढ के नाम से अच्छे पैमाने पर काम होता है। और उस प्रान्त में भी आपके सद्गुणों और मिलनसारी की वजह से बहुत नाम व फर्म की महान प्रतिष्ठा है। वहां की प्राय धार्मिक संस्थाओं के आप सन्मानीय सदस्य एवं पदाधिकारी है। भारत प्रसिद्ध श्री सेठ किरोड़ीमलजी लुहारीवाला चेरिटी ट्रष्ट्र के आप प्रतिष्ठा सम्पन्न ट्रष्ट्री हैं। वैसे आप दानबीर श्री किरोड़ीमल जी के लघु भ्राता हैं, आप बड़े सौम्य स्वभाव के व्यापार कुशल उन्नतिशील धार्मिक परोपकारी सज्जन हैं।

आपकी आजदिन सर्वप्रियता और उदारत्मा के नाते सर्वत्र ख्याति व इज्जत है। आपके ज्येष्ठ सुपुत्र श्री नत्थूराम जी जो आपकी फर्म का काम बहुत सुयोग्यता और न्याय प्रियता के साथ करते हैं। दूसरे श्री पुरुषोत्तम दास जी बी. ए. बम्बईमें वकालत की शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। उनसे छोटे घनश्यामदास दास कारोबार में हिस्सा लेकर सम्मान पूर्वक आपकी आज्ञा में रह कर कार्य करते हैं। चि० बाबूराम रामवतार राजेन्द्रप्रसाद पढ़ रहे हैं।

श्री निरभाराम जी का समाज, जाति, एवं व्यापारिक और धार्मिक समाज में भगवान की दया से आदर्श एवं प्रभावशाली स्थान है आपका व्यक्तित्व महान है,



अपने परिवार सहित–श्री ला० रामस्वरूपदासजी बुवानी वाले

श्री लाला रामस्वरूपदासजी बुवानी वाले

आप शहर के एक सम्मानित, प्रभावशाली, प्रमुख कार्य-कर्ता निर्भीक प्रकृति के, प्रेमियों के प्रेमी, व्यवहार कुशल, सर्व-प्रिय, सज्जन स्वभाव के महानुभाव हैं। आपकी फर्म श्रीराम रामस्वरूपदास के नाम से संचालित है। परन्तु आजकल आपका जीवन सार्वजनिक एवं लोक सेवार्थ शान्तिमय जीवन बना हुआ है। शहर की हर भलाई एवं हर एक काम में आपकी उदारता एवं कार्य करने की शक्ति प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष में बनी रहती हैं। आप बड़े सभाचतुर विवेकशील, बुद्धिमान समय के साथ चलने वाले, आस्तिक विचारों के धर्म प्रिय, गौ–ब्राह्मण भक्त, उदार विचारों के कर्मठी एवं अध्ययनशील व्यक्ति है। आपके बाग, मन्दिर, कूप एवं रहने के मकान दुकान आदि २ बहुत भव्य एवं मौके पर हैं। आपके पुत्र श्री मुरलीधर श्री श्रीभानाराम श्रीशंकर आदि २ हैं जो सभी व्यापारिक क्षेत्रों में काम करते हैं।

श्री लोकराम जी बुवानी वाले

आप स्व० श्री केशोराम जी के सुपुत्र हैं और बिचला बाजार में स्वतंन्त्र कारोबार करते हैं। बहुत समझदार, व्यवहार निपुण, भारतीय विचार धारा के बुद्धिमान आस्तिक व्यक्ति हैं। १६४७ में हिन्दु मुस्लिम दंगे के समय आप द्वारा भिवानी

नगर की महान् सेवा हुई है जो चिरस्मरणीय है। आपके चि० पुनमचन्द आपकी आज्ञा में रह कर फर्म का कार्य करते हैं। बहुत सौम्य स्वभाव के और सुयोग्य लड़के हैं।

श्री नागरमल जी—आपकी फर्म का रामरतन श्री राम नाम पड़ता है। और आप रायगढ में कुशलता पूर्वक कार्य करते हैं। बहुत समझदार एवं बुद्धिमान व्यक्ति हैं। आपके चि० ओंप्रकाश निरंजनलाल आत्माराम आदि २ योग्यता से कार्य कर रहे हैं।

श्री बैजनाथजी—आप इस परिवार में प्रतिष्ठत व्यक्ति हैं। व्यापार से उपराम लेकर आप भजन करते हैं।

श्री गजानन्दजी

आप स्व० नैनसुखदास जी बुवानी वाले के सुपुत्र हैं। आपके पिताजी का सम्मान बुवानी वाले परिवार में बहुत आदर युक्त था। आप भी अपने पिता के समान बहुत आस्तिक सीधे सादे सरल स्वभाव के दयालु व्यक्ति हैं।। प्रत्येक व्यक्ति के दुख सुख में साथ देने वाले परोपकारी सज्जन हैं। व्यापारिक समाज में भी आपका पूर्ण सम्मान है, और आप धर्म में श्रद्धा भावना रखने वाले आस्तिक विचारों के सत्यनिष्ट, चरित्रवान व्यक्ति हैं। आपके चि० मामराजजी कुशल व्यापारी तथा आपही की तरह से धर्मनिष्ट एवं श्रद्धालु और व्यापारिक वर्ग में सम्मान युक्त व्यक्ति हैं।



श्री भागीरथमल जी बुवानीवाले



श्री सत्यनारायण जी नलवेवाले

श्री श्यामलाल जी खजान्ची

श्री रामरिछपाल जी

आप स्व० श्री नैनसुखदास जी के पुत्र है। पहले सरसा में सम्मानयुक्त सर्राफे का कार्य करते थे अब भिवानी में ही शान्ति पूर्वक निवास करते हैं। आपके सुयोग्य सुपुत्र श्री भागीरथमल जी भिवानी में प्रतिष्ठा सम्पन्न एवं चलती वाले व्यक्ति हैं। भिवानी ट्रेड एसोसियेशन में आपका प्रभाव पूर्ण रूप से देखा जाता है। आप शहर के प्रत्येक सार्वजनिक कार्यों में हिस्सा लेकर अपने व्यक्तित्व को प्रशंसायुक्त बनाए हुए हैं। शहर की अनेकों संस्थाओं में आपका किसी न किसी रूप में अवश्य सहयोग रहता है। आप उच्च विचारों के प्रतिभावान, मिलनसार, व्यवहार कुशल सुलझे हुए व्यक्ति हैं। प्रत्येक व्यक्ति के दुःख सुख में साथ देने वाले अपने वंश को ख्यातिवान बनाए हुए हैं आपके चि० राधेश्याम पवनकुमार पढ रहे हैं।

श्री महावीरप्रसाद जी:—आप स्व० श्रीजमनादास जी के सुपुत्र हैं। और चान्दी के गोल में प्रमुख दलालों में से हैं। श्रद्धावान व धार्मिक व्यक्ति हैं। अपने वंश के अनुकूल सद्-व्यवहार करने वाले आस्तिक महानुभाव हैं, आपके चि० पूर्ण चन्द्र, रमेशकुमार आदि २ पढ रहे हैं।

श्री भक्त प्रवर ला० अर्जुनदास जी बुवानी वाले

इस बुवानी वाले परिवार में आप वयोवृद्ध भजनानन्दी

धर्म प्रिय महानुभाव हैं। आप अपने जीवन को सफल बनाने के लिए इस समय देवदुर्लभ व्रजधाम श्रीबृन्दावन में बिहारीजी की शरण में शान्ति मय समय बिता रहे हैं।

श्री रामकिशोर जी–आप कलकत्ते में रामकिशोर हीरालाल नाम से हैसियन बोरे आदि का कार्य करते हैं। आपकी फर्म कलकत्ते में प्रतिष्ठा सम्पन्न एवं ख्यातिवान फर्म हैं इस फर्म द्वारा अनेकों धर्म कार्य प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष में होते रहते हैं। श्री रामकिशोर जी व्यापारिक समाज में सम्मान युक्त एवं व्यवहार कुशल महानुभाव है। प्रत्येक व्यक्ति से प्रेम युक्त व्यवहार के कारण आपका व्यक्तित्व कलकत्ते में विशेष महत्व युक्त सम्मान प्राप्त किए हुए हैं।

आप गम्भीर प्रकृति के व्यापार कुशल प्रतिभावान सच्चरित्र उदार हृदय के दयावान व्यक्ति है आज कलकत्ता के मारवाड़ी समाज में आपका बहुत बड़ा सम्मान है आपके चि० परमेश्वरीदास श्रीनिवास आपके सम्पर्क मे कुशलता पूर्वक कार्य कर रहे हैं और गिरधारीलाल, राधाबल्लभ पढ रहे हैं।

श्री हीरालाल जी–आप भी अपने ज्येष्ट भ्राता श्री रामकिशोर जी के ही साझे में रामकिशोर हीरालाल नाम से कलकत्ता में कार्य करते हैं और महान परिश्रमी एवं उद्योगी होने के कारण अपनी फर्म को वैभवशाली बनाए हुए हैं। आपका



श्री रामकिशोरजी बुबानी वाले
(रामकिशोर हीरालाल कलकत्ता)



श्री हीरालालजी बुवानी वाले
(रामकिशोर हीरालाल कलकत्ता)

सन्मान भी रामकिशोर जी की तरह ही प्रशंसनीय है। प्रत्येक शुभ कार्य में आप भी उदारता पूर्वक विशाल हृदय से दान देने में संकोच नहीं करते। आप बुद्धिमान प्रतिभाशाली एवं अपने वंश के अनुकूल सद्व्यवहार करने वाले समझदार महानुभाव हैं। आपके चि० राधामोहन, श्रीगोपाल पढ रहे हैं।

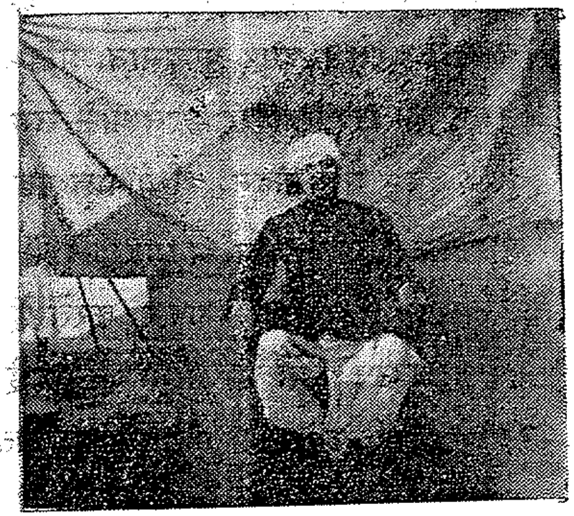
श्री जगदीशप्रसाद जी:-आप अहमदाबाद में अर्जुनदास जगदीशप्रसाद नाम से कपड़े का व्यापार करते हैं और वहां पर आपकी फर्म प्रतिष्ठित फर्मों में गिनी जाती है। आपके द्वारा कपड़े का बहुत अधिक मात्रा में व्यापार होता है और आप व्यापार कुशल अहमदाबाद में प्रतिष्ठा युक्त व्यक्ति माने जाते हैं।

श्री हरगोबिन्द जी-आप शान्त प्रकृति के साहित्य प्रेमी बुवानी वाले परिवार में प्रतिष्ठा युक्त व्यक्ति है और भिवानी में ही ईश्वर भजन द्वारा अपना समय व्यतीत कररहे हैं। बहुत सन्तोषी एवं सीधे सादे धार्मिक वृत्ति के व्यक्ति हैं। आपका चि० रामदेव पढ रहा है।

श्री बनवारीलाल जी—आप भिवानी में शान्ति पूर्वक निवास करते है और सरल प्रकृति के धर्मभीरू मानव हैं।

श्री हरिराम जी:-आप टी० आई० टी० मिल में योग्यता पूर्वक कार्य कर रहे हैं समझदार उद्योगी व्यक्ति हैं।

श्री किशनलाल जी बुवानी वाले



आप देहली में किशनलाल रामगोपाल नाम से कपड़े का व्यापार करते हैं और देहली कपड़ा समाज में आपकी बड़ी इज्जत है। आप बहुत उद्योगी, निर्भीक एवं उत्साह सम्पन्न कर्मनिष्ठ समझदार व्यक्ति हैं। आपके सुयोग्य सुपुत्र श्री रामगोपाल जी बहुत समझदार एवं प्रतिष्ठा सम्पन्न, प्रभावशाली, मिलनसार, महानुभाव हैं। देहली में आपने अपनी फर्म को पूर्ण रूप से वैभवशाली बना कर महान ख्याति प्राप्त की है। आपके छोटे भाई श्री सत्यनारायण जो आपकी आज्ञा मे रह कर सुचारु रूप से योग्यता पूर्वक व्यापार का कार्य सम्भाले हुए हैं। इनकी एक फर्म अहमदाबाद में भी कपड़े का थोक काम कर पूर्ण सम्मान प्राप्त किये हुए हैं।

श्री ललिताप्रसाद जी बुवानीवाले

आप पहिले भिवानी ही अपना स्वतन्त्र कारोबार करते थे आपके पिता श्री मामनराम जी बड़े अच्छे विचारों के पवित्र हृदय के सम्पन्न महानुभाव थे। आपने अपने विशेष गुणों के कारण ग्वालियर में ललिताप्रसाद नन्दकिशोर के नाम से अपनी फर्म का संचालन किया, जो नया बाजार लश्कर ग्वालियर में ख्याति प्राप्त एवं प्रसिद्ध अपनी ईमानदारी एवं शुद्ध व्यवहार के कारण लोकप्रिय और व्यापार में समृद्धता को प्राप्त है। कपड़ा, सूत, ऊनीकपड़ा, बनियान आदि का काम बड़े पैमाने पर होता है। आप सदा से ही बड़े मिलनसार सरल स्वभाव के परिश्रमी उद्योगी व्यापार कुशल महानुभाव रहे हैं। उसी का यह फल है जो आपका जीवन आज सर्व प्रकार से सुखी व उच्च जीवन बना हुआ है। आपके आज्ञाकारी सुपुत्र चि० नन्दकिशोर कुन्दनलाल बड़े होनहार व्यवहार कुशल चिरंजीवी हैं। आप वहां की कई एक संस्थाओं के मैम्बर एवं पोषक व सहायक सदस्य हैं आपने अपनेबाहुबल एवं अच्छी कमाई के बल पर अपना निजी बिशाल भवन नया बाजार लश्कर में निर्माण करवाया है आप उदार सर्व प्रिय महानुभावहैं

श्री रामकुमार जी

आप देहली क्लोथ मारकेट में नोरंगराय सुरेषचन्द्र नाम

से कपड़े का व्यापार करते हैं बहुत उदार प्रकृति के मिलनसार निभिमानी मनोरंजन प्रिय हस मुख व्यक्ति हैं।

आप अपने हितैषियों की तनमन से पूर्ण सहायया करते रहते हैं आप देहली डाक्टर समाज के विशेषज्ञ माने जाते हैं आपके सुयोग्य पुत्र नारंगराय शंकरलाल योग्यता पूवक कपड़े का काय करते हैं इनसे छाटे पढते है।

श्री जालीराम जी:—आप बुवानी वाले परिवार में सुयोग्य व्यक्ति माने जाते हैं, विशेषकर भिवानी में शान्ति युक्त जीवन बनाकर ईश्वर चिन्तन करते हैं।

श्री ठाकुरदास जी:—आप बिचला बाजार में बर्तनों की दुकान करते है और अपने कार्य में रत रहने वाले व्यक्ति हैं। आपके पुत्र श्यामलाल जो भारतीय विचार धारा के सुयोग्य हैं

अमरोधिया परिवार

इस परिवार में श्री सेठ रामस्वरूपदास जी एक महान पुण्यात्मा और साधु स्वभाव के पुरुष हुए। इनका गोत्र मंगल है इनके सुपुत्र श्री सेठ गजानन्द जी रईस हैं। जो प्रभावशाली विचारशील तथा योग्यत्तम व्यक्ति हैं पहिले आपकी फर्म घड़सीराम वेगराज भिवानी पर देसी खांड का बहुत बड़ा व्यापार होता था आपके शुद्धव्यवहार के कारण तमाम देहातवाले आप के यहां से ही खांड खरीदते थे, अब उम्भानी में आपका

कपड़े का बहुत अच्छा कार्य है और आपकी जायदाद भिवानी उम्भानी में बहुत बड़ी है आप बड़े मिलनसार भोरु स्वभाव के और मित्रों के सच्चे मित्र हैं आप भिवानी को कई एक सावजनिक संस्थाओं के सदस्य एवं भिवानी म्युनिस्पिल कमेटी के मेम्बर भी रह चुके हैं। आपको पशु धनसे बहुत प्रेम तथा इनकी पहचान आदि का काफी ज्ञान भी है। आप भिवानी के प्रसिद्ध मोड़ा परिवार में स्व० नानूराय जी की सौभाग्यवती लड़की से विवाहे है। आपके छोटे भाई श्री रामकुमारजी आप के ही सहयोग में कार्य करते हैं विनम्र स्वभाव शान्त प्रकृति के हैं।

श्री नोरंगराय जी

नोरंगराय जी:—आपभी इसी परिवार में है और गाजियाबाद में आढ़त चालानी का अच्छे पैमाने पर कारोबार करते हैं, आप बड़े सरलस्वभाव मिलनसार सादे जीवन के व्यक्ति हैं। गाजियाबाद में आपकी फर्म प्रसिद्ध है।

भूत परिवार

यह परिवार भिवानी का सुप्रसिद्ध परिवार है। इनका गौत्र मित्तल है। इसमें अच्छे २ पुरुष होचुके हैं। अब भक्त श्री जयरामदास जी साधु स्वभाव, सरलात्मा, भगवत भागवत सेवा परायण श्री वैष्णव सम्प्रदाय के पूर्ण अनुयायी एवं श्री रंगनाथ महाप्रभु के अनन्य भक्त हैं। पहिले रावलपिण्डी में

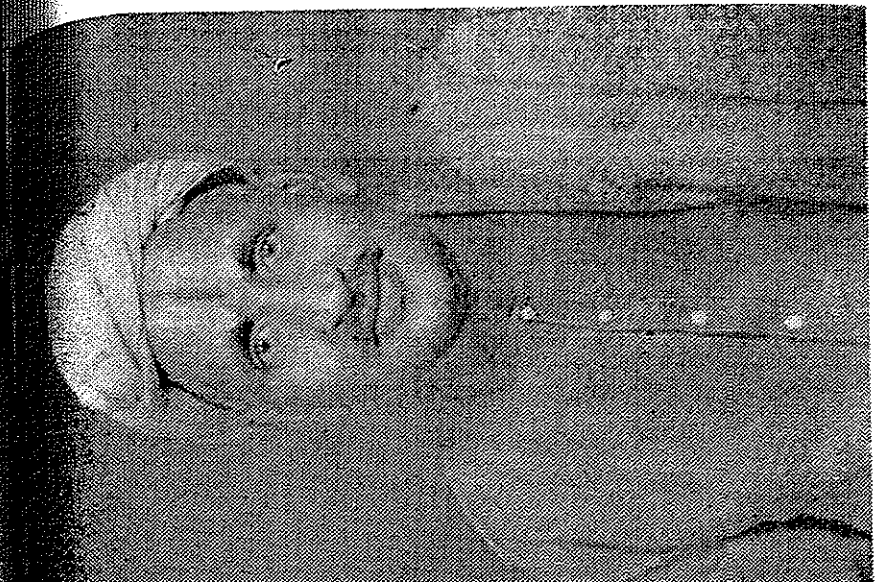
कपड़े का बहुत बड़ा कारोंबार इनकी फर्म से होता था। भारत विभाजन के पश्चात यह सब महानुभाव अपना २ कार्य यहीं पर करते हैं। श्री जयरामदास जी का पवित्र जीवन भगवद् भजन और अधिकतर साधु सेवा करते हुए श्री वृन्दावनधाम में ही व्यतीत हुआ है।

आप बड़े विचारशील, समझदार, दूसरों के दुःख सुख के पूरे साथी हैं। आपका सम्मान सार्वजनिक जीवन के साथ साथ जनता में पूर्ण रूप से स्थापित हैं। आप बड़े उदार स्वभाव के सत्यवादी, सदाचार युक्त, प्रभुभक्त हैं। आपके चि० श्रीगोपाल बम्बई, अहमदाबाद में कपड़े का कार्य सुयोग्यता पूर्वक करते हैं। दूसरे पुरुषोत्तमदास बी० ए० कलकत्ते में योग्यता पूर्वक कार्य करते हैं और वकालत में पढ रहे हैं।

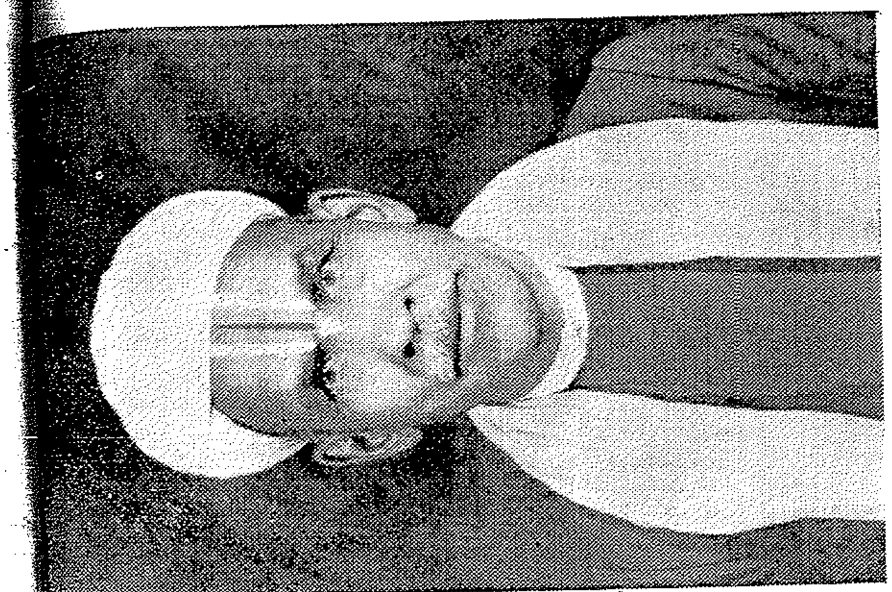
श्री शिवलाल जी—आजकल आप शान्त जीवन व्यतीत करते हुए प्रभु भजन में ही लीन रहते हैं। आपके पुत्र गोबिन्द राम जी फर्म-गोबिन्दराम रामनरायण कलकत्ते में अच्छे ढंग पर सम्मान पूर्वक कार्य कर रहे हैं और बहुत ही सरल प्रकृत के सज्जन व्यक्ति हैं।

श्री मुरलीधर जी भूत

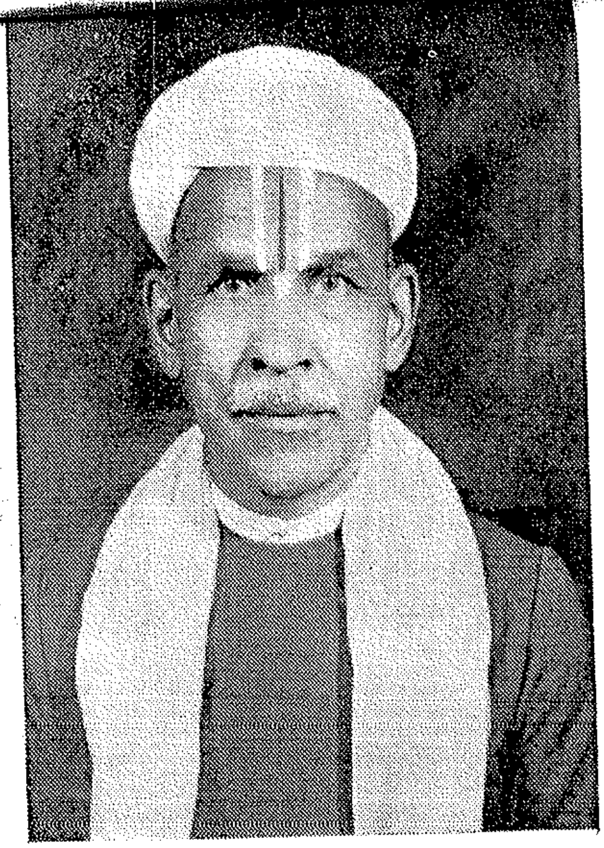
आपकी सुप्रतिष्ठित फर्म का नाम द्वारकादास मुरलीधर क्लोथ मार्केट देहली पड़ता है। देहली में व्यापारिक एवं सभ्य समाज का कौन ऐसा व्यक्ति है जो मुरलीधर जी भूत के नाम



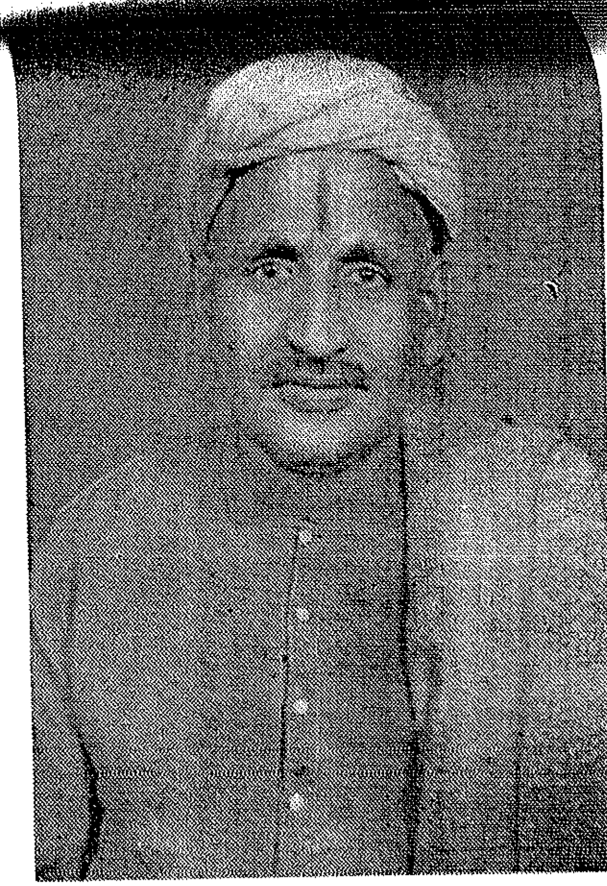
ला० माईधनदास जी सर्राफ



श्री जयरामदास जी भूत



श्री जयरामदास जी भूत



ला० माईधनदास जी सर्राफ



श्री मुरलीधर जी भूत
(श्री द्वारकादास मुरलीधर भूत)



श्री मुरलीधर जी भूत
(श्री द्वारकादास मुरलीधर भूत)

सद्‌गुणों से प्रभावित न हो। देहली व्यापारी वर्ग में आपकी फर्म का बहुत महत्वपूर्ण स्थान एवं सुप्रसिद्ध है और इस फर्म पर कपड़े का कार्य बहुत बड़े परिमाण में होता है। आप मिलनसार कर्मनिष्ठ, उद्योगी एवं साहसी व्यक्ति हैं। धर्म में भी आपकी बहुत श्रद्धा एवं भावना बनी रहती है। भिवानी में आपकी सुविशाल धर्मशाला भूतों की धर्मशाला के नाम से विख्यात है और भी कई जगह आपकी फर्म द्वारा धर्म कार्य संचालित हैं। आपकी एक दुकान अहमदाबाद में केदारनाथ द्वारकादास के नाम से सफलता पूर्वक उच्च पैमाने पर व्यापार कर रही है। आपके चि० कृष्णकुमार शीलकुमार आदि २ हैं।

मुरलीधरजी भूत मित्रों के सच्चे मित्र उदार दिल के समझदार, प्रतिभा सम्पन्न हंसमुख व्यक्ति हैं।

श्री बृजलालजी भूत—आप स्व० कृपारामजी के सुयोग्य पुत्र हैं देहली में कपड़े का कार्य बहुत योग्यता पूर्वक कर रहे हैं। आपके चि० मोहनलाल, रोशनलाल, मायाराम आदि आपके सहयोगमें कुशलता पूर्वक कार्य करते हुए प्रतिष्ठा सम्पन्न जीवन बीता रहे हैं।

श्री केशोराम जी भूत

आपका पहले रावलपिण्डी में कपड़े का बहुत उच्च परिमाण में काये होता था अब रावलपिन्डी पाकिस्तान का अंग

बन जाने से आप कलकत्ते में कार्य कर रहे हैं। आप श्री वैष्णव सम्प्रदाय के अनुयायी एवं व्यापार कुशल, समझदार व्यक्ति हैं। आपके पुत्र श्री रामदेवजी दौलतरामजी बम्बई में कपड़े का कार्य योग्यता पूर्वक कर अपने वंश प्रतिष्ठा के अनुकूल ससम्मान निवास करते हैं।

श्री नन्दलालजी भूत

आपकी भिवानी भग्गनपुरी में कपड़े की प्रतिष्ठित दुकान है। इन्दार में आपकी दुकान का नाम किशनलाल रमेशकुमार पड़ता है। आप बहुत योग्य व्यवसाय निपुण, उद्योगी, कर्मशील व्यक्ति हैं। आपके पुत्र चेलारामजी, उजागरमलजी, कृष्णलाल बी. ए. कीर्तिकुमार आदि २ सुयोग्य लड़के हैं। जो सम्मान पूर्वक फर्मों का कार्य कर रहे हैं।

श्री गोकलचन्दजी—कलकत्तेमें बुद्धिमत्ता पूर्ण व्यापार कर रहे हैं और बहुत ही सरल स्वभाव के सुयोग्य मिलनसार महानुभाव हैं आपके चि० जगदीश भी आपके साथ में कार्य कर रहे हैं।

श्री शम्भूनाथ जी भूत

आप स्व० श्री जगन्नाथ जी भूत के पौत्र हैं। देहली में आपके यहां इन्डिया फायर कम्पनी एवं रामलाल हरिशंकर नाम से कपड़े का कारोबार होता है। कमला नगर में आपने अपने परिश्रम एवं व्यापार कुशलता के कारण निजी मकान

बनवाया है।

आपके लघु भ्राता गौरीशंकर आपके साथ ही काम करते हैं। वैसे आप सादे स्वभाव के मिलनसार महानुभाव हैं।

श्री रामकुमार रामजीदास भूत—आप स्व० श्री जगन्नाथ भूत के पौत्र एवं श्री पुन्नमचन्दजी भूत के पुत्र हैं। कानपुर में बारदाना आदि का कार्य करते हैं। आपकी फर्म का नाम रामकुमार रामजीदास पड़ता है दोनों भाई मिलनसार व्यवसाई एवं सार्वजनिक कार्यों में भाग लेने वाले चतुर व्यक्ति हैं।

श्री चान्दमलजी गोयनका

आप हरदेवदास श्रीराम फर्म के मालिक हैं। आपका बहुत सा कारोबार दार्जलिङ्ग, सिलीगुड़ी, कुर्सियांग में है। आपके पिता श्री जौहरीमलजी एक बहुत प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति थे। आपके यहां एक गोयनका ट्रष्ट है जिससे बहुत से धर्म कार्य समय समय पर होते रहते हैं। आपकी फर्म द्वारा उस प्रान्त में काफी सार्वजनिक कार्य स्थापित किये गये हैं जैसेः-धर्मशाला स्कूल, लायब्ररी, हस्पताल आदि २ हैं। आपकी वहां पर बहुत बड़ी जमींदारी है। आप एक सभ्य महानुभाव, सुयोग्य मिलनसार व्यक्ति हैं। आपके छोटे भ्राता श्री कृष्ण गोपाल बहुत समझदार शिक्षित और उदारमना स्वभाव वाले हैं। अपनी फर्म का काम योग्यता पूर्वक देखते हैं। भिवानी में भी इस फर्म द्वारा अन्नक्षेत्र तथा और भी कई काम हो चुके हैं और हो रहे हैं।

स्व० श्री नागरमलजी गोयनका

मारवाडी समाज के आप एक बहुत प्रसिद्ध और ख्याति प्राप्त व्यक्ति थे। उन्होंने थोड़ी आयु में ही व्यापारिक उन्नति के साथ २ सार्वजनिक कार्य भी बहुत किये। आपकी एकमात्र कन्या का विवाह भिवानी के सुप्रसिद्ध सेठ ज्ञानीराम जी चिड़ीमार के सुपुत्र श्री धन्नुराम जी से हुआ आपकी फर्म आपके पश्चात् भी व्यापारिक क्षेत्र में बहुत उत्तमता पूर्वक कार्य कर रही है।

आज आपकी पतिपरायण धर्मपत्नी अपनी समझदारी एवं सुयोग्यता के कारण पूर्ण मान प्रतिष्ठा के साथ अपने बंश को ख्यातिबान बनाए हुए हैं और धर्म प्रिय होने के कारण समय २ पर दान देकर अपने पतिदेव की पवित्र आत्मा को शान्ति प्रदान कर रही है।

श्री नत्थूराम जी गोयल

भिवानी और हरियाणे की प्रभावशाली कीर्ति का डंका देश विदेशों में दूरदूर तक बजाने वाले सैनिकों में श्री नत्थूराम जी गोयल का नाम भी उल्लेखनीय है इनका जन्म वि० सं० १९६१ में ता० २ जनवरी सन् १९०५ को हुआ। समाज में उस समय की प्रचलित प्रथा के अनुसार ८-९ वर्ष की अवस्था में ही इनको पाठशाला छुड़ा कर व्यवसाय कार्य में लगा दिया गया। किन्तु निजि परिश्रम और योग्यता के बलपर जितना स्वाध्याय देशाटन और व्यवसाव आदि आपने किया वह असाधारण है। आप



श्री भागचन्द जी जैन (नोपा ग्राय श्रीराम मुजफ्फर नगर)





श्री नात्थुराम जी गोयल, कलकत्ता



श्री शम्भुनाथ जी भूत, देहली

व्यापार विशेषज्ञ होने के अतिरिक्त एक प्रसंशनीय सुलेखक, सुकवि और सच्चे समाज सुधारक भी हैं। आपने बड़े बड़े व्यवसायों के संचालन में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की है। आपके आधीन हजारों कर्मचारी व श्रमिक रहते रहे हैं और अब भी हैं जिनमें उच्च कोटि के अंग्रेज, इन्जिनियर, वैज्ञानिक भी शामिल हैं। भारत के प्रायः सभी बड़े बड़े उद्योगों का आपने सर्वोच्च पद से संचालन किया है जिनमें तेलमिल, फिल्म कम्पनी, जूटमील, काटनमिल, शूगरमिल, लोहे व इन्जिनियरिंग के कारखाने वृहत कृषि क्षेत्र, खानों का काम आदि उल्लेखनीय है। सन् १९४१-४३ में आप स्थानीय पंजाब क्लाथ मिल्स लिमिटेड के भी मैनेजर व सेक्रेटरी थे। भारत की चारों दिशाओं—सिंध, पंजाब, दिल्ली, बंगाल, मद्रास, बम्बई आदि– में रहने के अतिरिक्त आप इंगलैंड, जर्मनी, फ्रांस, इटली आदि यूरोप के देशों का भ्रमण भी कर आये हैं अपने सभी पुत्र पुत्रियों के विवाह बहुत सुधार रीति से किये हैं। पुत्री के विवाह की बरात में सन् १९३५ में श्री घनश्यामदास जी बिड़ला, और दुसरी के विवाह में श्री गूजरमल जी मोदी जैसे उद्योगपति भी भिवानी में पधार चुके हैं। अब दस वर्ष से असाध्य गठिया रोग से पिड़ित होते हुए भी आप अपने कर्तव्य को कुशल सैनिक की तरह निभा रहे हैं। इनके छोटे भाई श्री संतलाल जी गोयल बम्बई में निजी उद्योग व्यवसाय करते हैं और उनसे छोटे श्री मदनलाल जी गोयल, बिड़लाब्रादर्स के यहां किसी प्रतिष्ठित पद पर नियुक्त हैं। आपके चारों पुत्र विनम्र, मिलनसार और सुशिक्षित हैं। सबसे बड़े श्री प्रेमरत्न

गोयल एक स्टील फैक्ट्री में उच्च पद पर नियुक्त हैं। दूसरे
श्री हरिरत्न गोयल भारत सरकार के हवाई जहाज विभागमें हैं।
तीसरे श्री बृजरत्न गोयल व चौथे श्री राजरत्न गोयल पढ रहे
हैं। श्री राजरत्न बी.ए. और प्रभाकर पास कर अब एम. ए.
आई. ए.एस. और जूट टेकनोलोजी की तैयारी कर रहे हैं।
श्री नत्थूराम जी गोयल द्वारा समाज साहित्य एवं देश की जो
सेवाएं हुई है वह इनके विशाल व्यक्तित्व को चिरः स्मरणीय
बनाए हुए है।

भरथिया परिवार भिवानी

इस परिबार में श्री चन्दुलाल जी भरथिया बहुत ही प्रता
पी व तेजस्वी व्यक्ति हुए हैं। भिवानी के भरथिया वंश की उत्पत्ति
इन्हीं महापुरुष से है। श्री चन्दुलाल के पांच पुत्र हुए
श्री सूरजमल जी, श्री बंशीधरजी, श्री लालचन्दजी, श्री रामेश्वर
दास जी, श्री हरिबंशजी इनमें श्री रामेश्वरदासजी विद्यमान हैं
बाकी चार व्यक्तियों का स्वर्गवास हो गया है। इनमें सबसे
बड़े श्री सूरजमलजी के द्वारकादासजी पुत्र हुए, इनका भी स्व–
र्गवास हो गया है। इनके चार पुत्र रामजीदासजी, जगदीश
प्रसादजी, गिरधारीलालजी, श्री प्यारेलालजी हैं इनमें श्री रामजी
दासजी का स्वर्गवास हो गया है बाकी तीनों भाई कानपुर एवं
पीलीभीत आदि में आधुनिक ढंग से कृषि कर्म द्वारा खेती
बाड़ी का अनुसन्धान कररहे हैं, कानपुर में भी कपड़ेकी दुकान
है। इस दुकान पर सूरजमल प्यारेलाल नाम से कपड़े का
कार्य होता है। रामजीदासजी का स्वर्गवास अल्पायु में ही हो
गया था। इनके श्री ओमप्रकाश जी भरथिया विद्यमान है।

श्री ओमप्रकाश जी भरथिया कानपुर

इस भरथिया परिवार का गोत्र बांसल है। श्री
ओमप्रकाशजी का जन्म १६७७ कार्तिक शुक्ला (देवउठनी)
एकादशी के दिन हुआ। यह प्रारम्भ से ही प्रतिभाशाली
होने के कारण व्यापार कुशल हैं। कानपुर में इन की
बहुत बड़ी प्रतिष्ठा है। भिवानी वालों के प्रत्येक कार्य में आगे
होकर सहयोग देते हैं हर तरह की पंच पंचायती में इनका
बहुत बड़ा सहयोग रहताहै। मधुर भाषी और सात्विक प्रकृति
ही इनकी सबसे बड़ी प्रशंसा का कारण है। कानपुर में रामजी
दास ओमप्रकाश नाम से इनकी फर्म काफी प्रसिद्ध है
यह फर्म काऊकोठी में अपनी ईमानदारी के कारण विशेष
सम्मान बनाए हुए है। कई मीलों के आप एजेन्ट भी हैं।
श्री ओमप्रकाशजी ने अपने उद्योग बल से एक बहुत बड़ा
विशाल भवन भी बनवाया है जो कानपुर के प्रसिद्ध बाजार में
विद्यमान है। इनके पुत्र चि० श्रीकृष्ण पढ रहे हैं। ओमप्रकाश
जी के दूसरे फर्म का नाम चन्दुलाल ओमकुमार है। यहां पर
भी कपड़े का कार्य होता है।

स्वर्गीय श्री बंशीधर जी भरथिया का परिवार

स्व० श्री बंशीधरजी के पुत्र श्री बद्रीप्रसाद जी विद्यमान
हैं। यह प्रभु भक्त और आस्तिक विचारों के धर्मात्मा पुरुष हैं।
बहुत ही समझदारो से व्यापार करने के कारण मुजफ्फर

नगर में इनका चन्दुलाल घनश्यामदास फर्म प्रतिष्ठित फर्मों में गिनी जाती है।

श्री बद्रीप्रसाद जी के चारों पुत्र पितृ भक्त और साझे में ही कार्य कर रहे हैं, बड़े पुत्र श्री घनश्यामदास जो का कानपुर में अच्छा सम्मान है और यह बहुत ही योग्य तथा मिलनसार व्यक्ति हैं घनश्यामदास जी से छोटे श्री सत्य नारायणजी, श्री सीतारामजी, श्री राधेश्यामजी बहुत मेहनत से अपनी फर्मों का संचालन कर रहे हैं। श्री बद्रीप्रसादजी का एक बहुत सुन्दर बगीचा तथा विशाल भवन मुजफ्फर नगर में स्थित है।

श्री लालचन्द जी भरथिया का परिवार

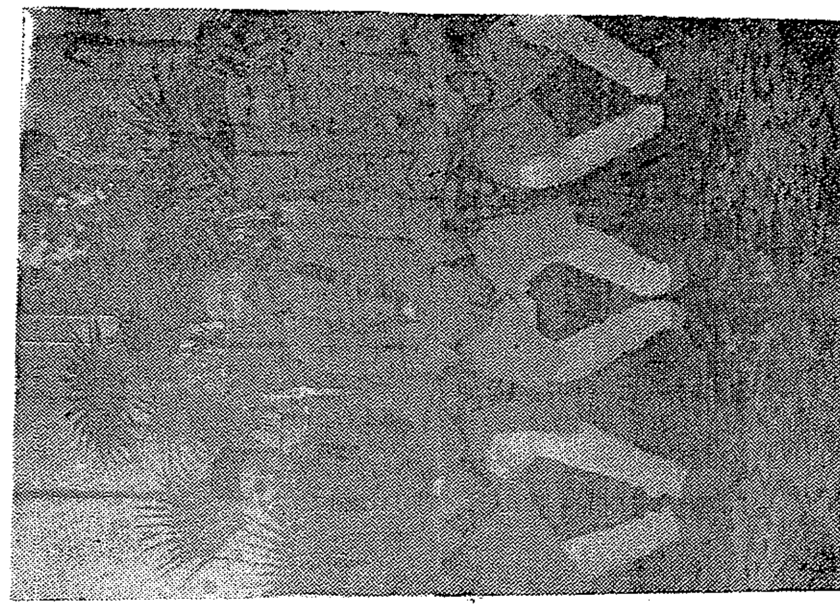
श्री लालचन्द जी के पुत्र श्री फूलचन्द जी भरथिया हुए इनका भी स्वर्गवास होचुका है इनके इस समय श्रीनागरमल जी भरथिया विद्यमान हैं यह सीतापुर (यु. पी) में चन्दुलाल नागरमल नाम से कार्य करते हैं और इनका एक विशाल भवन सीतापुर में विद्यमान है यह भी अच्छे विचारों के योग्य महानुभाव हैं सीतापुर में प्रतिष्ठा के साथ अपने व्यापार का सचालन कर यश प्राप्त कर रहे हैं।

श्री रामेश्वरदासजी भरथिया का परिवार

इस परिवार में सब से वृद्ध और अपने पूर्वजों की मान मर्यादा जानने वाले श्री रामेश्वरदास जी विद्यमान हैं। यह इस समय मुजफ्फर नगर में बैठे ईश्वर चिन्तन करते हैं।



श्री रामेश्वरदास जी श्री बदरीदास जी



श्री घनश्यामदास जी श्री नागरमल जी

इनके दो पुत्र श्री मदनलाल जी व श्री शिवशंकर जी फर्म का कार्य संचालन कर रहे हैं यह दोनो सज्जन बहुत ही सीधे सादे व्यापार कुशल महानुभाव हैं। श्री शिवशंकर जी मुजफ्फर नगर के प्रत्येक कार्य में आगे रहकर शहर की हर तरह से भलाई करते हैं, इस लिए मन्डी में इनकी बहुत बड़ी इज्जत हैं इनकी फर्म का नाम चन्दुलाल रामेश्वरदास पड़ता है मुजफ्फर नगर की यह फर्म इलाके भर में सुप्रसिद्ध है।

स्व० हरिवंश जी भरथिया का परिवार

श्री स्व० हरिवंश जी के श्री श्यामसुन्दर जी विद्यमान है यह चन्दुलाल रामेश्वरदास फर्म में साझे से कार्य करते हैं। श्री श्यामसुन्दर जी बहुत सरल स्वभाव के व्यापार कुशल महानुभाव हैं, इन दोनों परिवारों की सन्तान बहुत ही प्रेम पूर्वक परस्पर सहयोग से बम्बई तथा मुजफ्फरनगर में व्यापार कर रही हैं। बम्बई में यह बहुतबड़े कमीशनएजेन्ट हैं। इनके यहां कपड़े का ही अधिक कार्य होता है।

इस परिवार द्वारा बड़े २ धर्म कार्य हुए हैं आज भी भिवानी में इनका विशाल बागीचा और उस में बना गऊघाट इस परिवार की बहुत बड़ी धार्मिकता का परिचय दे रहा है। मुजफ्फरनगर में एक बहुत बड़ी धर्मशाला और धर्मार्थ औषधालय जनता जनार्दन की महान सेवा कर रहे हैं, मुजफ्फरनगर सीतापुर, कानपुर आदि में बने विशाल भवन इनकी सम्पन्नता

का परिचय दे रहे हैं। आज मुजफ्फर नगर का कोई भी ऐसा धार्मिक कृत्य नहीं जिसमें किसी न किसी तरह इस परिवार का रुपया न लग रहा हो। इस परिवार के सभी महानुभाव सनातन विचारों के धार्मिक व्यक्ति हैं। उद्योग द्वारा सम्मान प्राप्तकर अपने व्यापार का जगह २ सफल बना, अपने परिवार का सर्वत्र यश फैलाए हुए हैं।

प्रभुभक्त श्री विष्णुदयाल जी पोद्दार

स्व० श्री जुगलकिशोर जी पोद्दार जो बड़े सत्यवक्ता निर्भीक, सीधे सादे और दयालु हृदय, उच्चकोटि के श्री रङ्गनाथ महाप्रभु के परमोपासक, उदारात्मा परम सन्तोषी पुरुष थे। उन्हीं के सुपुत्र श्री बिष्णुदयाल जी पोद्दार अपने पिता के तुल्य आदर्शवान व्यक्ति हैं। जिन्हें सन्त समाज, व्यापारिक समाज और सभ्य समाज के सभी महानुभाव बहुत आदर की दृष्टि से देखते हैं, और स्नेह भरे हृदय से अपनाते हैं। आपने प्रथम कलकत्ता शेयर बाजार में बहुत सम्मान पूर्वक कार्य कियाहै आप की मिलनसारी के विषय में क्या कहा जा सकता है, एक बार भी जो व्यक्ति आप से मिला वह सदा के लिये आपका होगया यही आप में सबसे बड़ा वशीकरण है। आपका प्रभु के चरणों में दृढ अनुराग अनुकरणीय है। वह कुल धन्य है जिसमें भगवान के प्यारे भक्त प्रकट होते हैं। पोद्दार परिवार में वैसे तो बड़े बड़े धनी और विख्यात पुरुष हुए और अब भी हैं

परन्तु जो सुहृदयता एवं विशुद्ध प्रेम प्रभुके श्रीचरणोंमें विष्णु-दयाल में पायागया है वह अकथनीय हैं। जिस समय आप भगवान श्री कृष्ण के विरह में उन्मत्त होकर कीर्तन करने लगते हैं उस समय आपके सुमधुर स्वर और गायन पर अच्छे अच्छे संगीत प्रेमी तथा प्रभु भक्त मुग्ध हो जाते हैं। अब आपके पवित्र जीवन का मुख्य लक्ष्य प्रभु सेवा. प्रभुकीर्तन और तीर्थाटन ही विशेष तौर पर है। जिसे वास्तव में सफल जीवन कहा जा सकता है। आपने श्री वृन्दावन धाम में एक निजी कुटिया ज्ञान गुदड़ी में लालाबाबूमन्दिर के पास निर्माण करवा स्थाई रूप से श्री धाम में ही निवास करने का शुभ संकल्प सा कर लिया है। श्री विष्णुदयाल जी पोद्दार बहुत बड़े अनुभवी उच्चकोटि के छुपे हुए सन्त तथा महान् ईश्वर विश्वासी और प्रत्येक व्यक्ति के सुख दुःख को अपना समझ कर पूर्ण रूप से साथ देनेवाले सज्जन प्रकृतिके मनुष्य नहीं बल्कि देवता हैं। महान् पितृभक्त आपके सुयोग्य सुपुत्र श्री बनवारीलाल अपना निजी कारोबार कर अपनी प्रतिष्ठा को उन्नत कर रहे हैं।

श्री निवास जी पोद्दार

आप श्री जुगलकिशोरजी के छोटे भ्राता हैं आपका जीवन सादा और संयमी जीवन है। आपका विशेष रहना कलकत्ते में ही हुआ है। आप वैसे प्रभु भक्त, व्यापार कुशल सुयोग्य

व्यक्ति हैं। आप अपना कारोबार सदा से ही अलग शान्ति व सन्तोष के साथ करते हैं। श्री रंगमन्दिर कलकत्ता के आप सन्मानीय ट्रस्टी और अपने गुरु परिवार में पूर्ण श्रद्धा रखते हैं आपका जीवन आदर्श युक्त जीवन है बहुत गम्भीर प्रकृति के प्रत्येक व्यक्ति का हित चिन्तन करने वाले सज्जन व्यक्ति हैं। आपका चि० नारायणदास पढ रहा है।

श्री नन्दकिशोर जी पोदार

आपका निवास अधिकतर कलकत्ते का ही रहा है। वहां सभी वर्णों के व्यक्ति आपको स्नेह एवं श्रद्धा की दृष्टी से देखते हैं। आप मोती भोरे के मारवाड़ी समाज में माने हुए समझदार एवं जानकार व्यक्तियों में से हैं। बहुत सरल और दयालु हृदय के अनुभवी वैद्य हैं। एक बार जो भी रोगी दुखिया आपको बुलाने, वक्त बे वक्त भी आजावे तो आप सभी कार्यों को छोड़ तुरन्त उसके साथ रोगी के घर जाकर उस को सभी प्रकार से सन्तोष दिला कर औषधि आदि से पूर्ण उपचार करते हैं। वैसे आप बड़े मिलनसार, व्यपार कुशल, प्रतिभा सम्पन्न, महानुभाव हैं।

आपके पुत्र सम्मान पूर्वक व्यापारादि करते हैं।

श्री नथमल जी बी. ए.

आप श्री गोपीराम जी पोद्दार के सुयोग्य सुपुत्र हैं। आपकी फर्म—गोपीराम एण्डको० रूई के व्यापारिक क्षेत्र में अच्छी प्रसिद्धि प्राप्त किए हुए है जिसके द्वारा रुई का बहुत बड़ा व्यापार होकर काफी धनोपार्जन एवं प्रतिष्ठा प्राप्त हुई



श्री मनोहरलालाल घनश्यामका
(रा० ब० ताराचन्द मुरलीधर भिवानी)

है। वैसे बड़े बुद्धिमान, तथा प्रतिभाशाली, व्यापार कुशल महानुभाव हैं। आपके छोटे भ्राता श्री ताराचन्द जी आपके ही सहयोग में कुशलतापूर्वक कार्यकरते हैं। ताराचन्दजी भी विनम्र स्वभाव के पर दुख हरता, परिश्रमी, दूर्दर्शी, गंभीर प्रकृति के व्यक्ति हैं। आप दोनों भाइयों ने फर्म को व्यवसाई क्षेत्र में महान उन्नति की यहां तक कि रुई के सम्बन्ध में अच्छे २ व्यापारी सलाह लेकर कार्य करते हैं। आपके चि० सांवललाल जी योग्य सुपुत्र हैं।

श्री मनोहरलाल जी घनश्यामका

पंजाब प्रान्त के महान उद्योगपति रा० ब० सेठ ताराचन्द जी के आप पौत्र एवं श्री मुरलीधर जी के आप सुपुत्र हैं।

आप राजनैतिक क्षेत्र के एक तपे हुए चतुर कार्य कर्ता हैं, और पहिले भिवानी म्युनिस्पिल कमेटी के चैयरमैन भी रह चुके हैं। वैसे बड़े उद्योगी, परमोत्साही एवं पूर्ण साहसी और कार्य कुशल व्यक्ति हैं।

आपका मेल प्रायः भारतीय नेताओं एवं लोकसभा के सदस्यों से है और वह लोग आपका हृदय से बहुत सम्मान करते हैं। आप कानून के बहुत अच्छे ज्ञाता समझे जाते है जिस कानूनी नुक्ते को एक वकील भी जल्दी से नही बता सके उस नुक्ते को आपका मस्तिष्क सेकिंडों में हल कर देता है यही आपकी सबसे बड़ी विशेषता है।। आप हर एक कार्य

को बड़ी योग्यता के साथ सहज में हीं हल करलेते हैं। आप के पूर्वजों द्वारा भिवानी में मिल की स्थापना हुई जो आज बिड़ला बन्धुओं द्वारा चलाई जारही है और हजारों ही व्यक्ति अपना जीवन निर्वाह कर रहे हैं। आपका-घण्टाघर, बाग, धर्मशाला, मन्दिर, छत्रियें आदि २ सभी धर्म कार्य इस शहर की शोभा को बढाए हुए और आपके गौरव को यशस्वी बनाए हुए हैं।

आपका व्यापार सतना, बम्बई, कलकत्ता एवं कानपुर आदि प्रमुख शहरों में है। आप बहुत मिलनसार, निभिमानी, सुशिक्षित, प्रभावशाली व्यक्ति हैं। आपके चि० रामानिजदास ओमप्रकाश, लखपतराय, शिवकुमार आदि सुशिक्षित एवं योग्य कार्यकर्ता और मिलनसार स्वभाव के उत्साही लड़के हैं।

इसी परिवार में श्री किशोरीलाल जी सर्राफ बहुत अच्छे व्यापार कुशल आस्तिक विचारों के महानुभाव हैं।

श्रीसागरमल घनश्यामका

आपका कारोबार मुजफ्फरनगर में चन्दुलाल फूलचन्द फर्म के नाम से होता है। आपने अपने कारोबार को बहुत बुद्धिमता और योग्यता एवं ईमानदारी को लेकर खूब बढाया है। आप बड़े मिलनसार भिवानी से प्रेम रखने वाले व्यक्ति हैं। आपके पुत्र छबीलदास, मदनलाल, हरिशंकर, रामगोपाल, श्रीगोपाल, कुन्दनलाल आदि हैं प्रायः सभी शिक्षा प्राप्त कररहे हैं। यह फर्म २५ वर्ष से प्रतिष्ठा पूर्वक कार्य करती है।

चि० छबीलदास कुशाग्रबुध्दि का होनहार सुशील बालक है उच्चशिक्षा प्राप्त कर कालेज मे विशेष सन्मान बनाए हुए हैं।

बलियाली वाला बंश

इस वंश में पहिले बड़े २ महान पुरुष हो चुके हैं। श्री रामनरायण जी श्री वृजलाल जी श्री बालमुकुन्द जी परम भागवत श्री जानकीदास जी तथा श्री दीनानाथ जी और श्री किशनलाल जी भिवानी म्युनिस्पिल कमेटी के प्रेजीडेण्ट रह चुके थे। अब उन्हों की सन्तान कलकत्ता में दलाली आदि का काम करती हैं।

श्रीद्वारकादासजी—इस परिवारमें प्रभुभक्त और समझदार सम्मान प्राप्त व्यक्ति हैं। आजकल आप व्यापारिक कार्यों से विराम लेकर अहर्निस भगवान का भजन साधु सन्तों की सेवा शान्ति का जीवन बनाए हुए हैं। आपके सुयोग्य सुपुत्र श्रीकृष्ण दास, महाबीरप्रसाद, श्रीनिवासआदि बड़े सम्मान और योग्यता पूर्वक कलकत्ता में अपना स्वतन्त्र कारोबार कर ख्याति प्राप्त किए हुए हैं।

श्रीफतेचन्द जी—आप कलकत्ते में दलाली का कार्य करते हैं।

श्रीराधाकृष्ण जी—आप भी अपने पुत्रों सहित कलकत्ते में दलाली का कार्य करते हैं

श्री दामोदरदास जी—श्रीबनवारीलाल जी प्रथम यू० पी० में कपड़े का कार्य बहुत बड़े पैमाने पर करते थे। अब कलकत्ते में बड़ी सवधानी एवं प्रतिष्ठा के साथ व्यापार करते हैं।

श्री श्यामलाल जी सर्राफ—आप स्व० बृजलाल जी के सुयोग्य सुपुत्र हैं। आपका भिवानी व्यापारिक वर्ग में बड़ा सम्मान है। हालू बाजार में आप सर्राफि की दुकान करते हैं आपकी फर्म भिवानी में ईमानदारी तथा सत्यता के कारण ही ख्यातिवान है। वैसे आप बड़े समझदार, कार्यकुशल, व्यवहारज्ञ, मिलनसार, भाग्यशाली महानुभाव हैं।

आपके चि० आत्माराम, पीताम्बरदास योग्यता पूर्वक व्यापारिक क्षेत्र में कार्य करते हैं और छोटे हनुमानप्रसाद शिक्षाध्ययन कर रहे हैं।

श्री रामकुमार जीः—आप अपना स्वतन्त्र करोबार करते हैं और आजकल काला नमक तयार करवाते हैं।

श्री राधेश्याम जी—ईश्वर भक्त व्यापर कुशल देहली में कपड़े की दुकान का योग्यता पूर्वक कार्य कर रहे हैं। इनके बड़े भ्राता विरक्त स्वभाव के महानुभाव हैं।

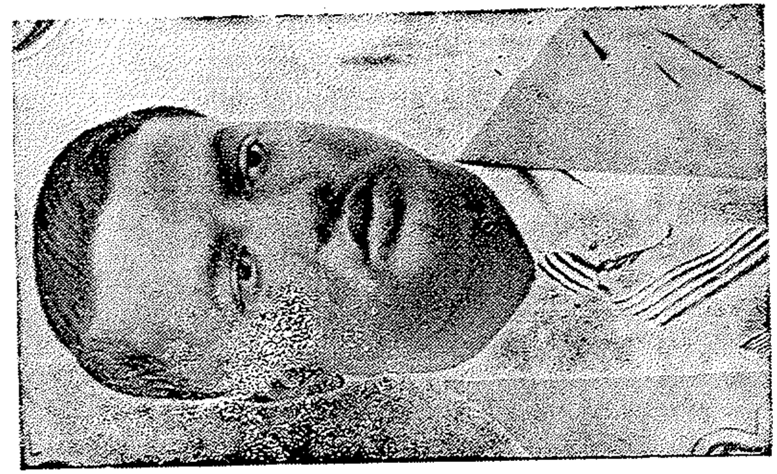
श्री दौलतराम जी—व्यापारिक वर्ग में पहिले आप काफी कार्य कर अपनी योग्यता का परिचय दे चुके हैं आप परिवार में ख्यति प्राप्त व्यक्ति हैं। श्री गोपाराम जी नन्दकिशोर जी कलकत्ते में कारोबार करते हैं। दोनों भाई बड़े सौम्य स्वभाव के सत्यप्रिय प्रभुभक्त हैं इस परिवारका गौत्र गर्ग है।

श्री शिवलाल जी सर्राफ

आपका परिवार बहुत बड़ा परिवार है आप भिवानी में सर्राफि का कार्य करते हैं, एक भाई कलकत्ता में दलाली आदि कराते हैं। सर्वप्रिय और सुयोग्य महानुभाव हैं। आप सर्राफ वर्ग के पंच भी कहलाते हैं।



ला० डूंगरमल जी जैन



श्री सेठ गजानन्द जी रईस

सरावगी–परिवार

श्री डूंगरमल जी जैन

इस परिवार में पहिले बहुत योग्य, व्यापार कुशल व्यक्ति होचुके हैं। अब श्री डूंगरमल जी जैन बहुत समझदार, व्यापार कुशल, ख्याति प्राप्त महानुभाव हैं। आपका बहुत सा जीवन भिवानी में ही व्यतीत हुआ है। यहां आपने रेलवे रोड पर बहुत सुन्दर धर्मशाला का निर्माण करवाया है। आपकी यहां पर बहुत सी जमीन जायदाद भी है। यू० पी० प्रान्त के चन्दोसी, सामली, मुरादाबाद, मुजफ्फरनगर, आदि आदि शहरों में आपकी फर्म सम्मान पूर्वक काम कर रही है, सभी फर्मों का काम आप बड़ी सावधानी के साथ देखते हैं और आज कल जैपुर में एक अपना निजी भवन निर्माण करवा कर वहां निवास करते हैं। वैसे आप बड़े साहसी, उत्साही, परिश्रमी और उद्योगी पुरुष हैं। आप विचारशील और अपने व्यापार का प्रबन्ध करने की जुम्मेवरी रखते हैं।

आपके भाई गुलाब चन्द जी के लड़के–श्री कपूरचन्द जी जैन बी० ए० बहुत सुयोग्य और बड़े मिलनसार, प्रभावशाली, होनहार व्यक्ति हैं जो चन्दोसी फर्म का कार्य संभाले हुए हैं।

स्व० रामस्वरूपजी जैन के लड़के महाबीरप्रसाद जी आदि २ योग्यता पूर्वक काम कर रहे हैं।

श्री फूलचन्द जी बैजनाथ जी जैन

आपकी प्रसिद्ध फर्म–मुजफ्फरनगर यू० पी० में माधोलाल चिरंजीलाल के नाम से एवं माधोलाल सुत्रालालनाम से मेरठ में माधोलाल बैजनाथ नाम से सामली में कैलाशचन्द ताराचन्द नाम से खातोली आदि व्यापारिक क्षेत्र में सुविख्यात और वजनदार फर्म हैं जहां आड़त का काम बहुत बड़े परिमाण एवं थोक रूप में होता है। यू० पी० प्रान्त में आपकी फर्म की बड़ी धाक व प्रतिष्ठा है। आप लोग वैसे व्यापार कुशल बुद्धिमान सरल प्रकृति के मानव हैं।

भिवानी में भी आपकी बहुत सी जायदाद एवं रहने के भव्य भवन विद्यमान हैं जो बुजर्गो के नाम की शोभा बढाये हुए हैं। मुजफ्फरनगर मन्डी में जहां आप व्यापार करते हैं वहां सुविशाल अट्टालिकांए आपकी सम्पन्नता का परिचय दे रहो ह। आप सब परस्पर में प्रेम भावना पूर्वक सुन्दर जीवन बनाए हुए हैं। वैसे आप सार्व जनिक सस्थाओं में भाग ले कर यशस्वीता प्राप्त किये हुए हैं। जैन सभा कन्यापाठशाला आदि संस्थाओं के आप सम्मान्नित प्रधान हैं। आपके चि० सुपुत्र श्री धनकुमार ताराचन्द बी० ए० बिजयकुमार, कमल कुमार योग्य सुशिक्षित मिलनसार चिरंजीव हैं।

श्री बैजनाथ जी के चि० कैलाशचन्द बी० ए० एल० एल० बी० राजकुमार व सन्तकुमार सब योग्य प्रतिभाशाली उन्नतिशील होनहार सुपुत्र हैं।

श्री भागचन्द जी जैन बी० ए०

आप बहुत सुयोग्य मिलनसार उन्नतिशील शिक्षित वर्ग के उदारमना नवयुवक हैं आप की सुप्रसिद्ध फर्म गोपालराय श्रीराम मुजफ्फरनगर में ख्याति प्राप्त फर्म है जहां बहुत बड़े रूप में एवं कमीशन एजेन्टी का कारोबार सन्मान पूर्वक होता है आपने अच्छी सफलता प्राप्तकर फर्मके नामको सम्मानित किया और बढाया है वैसे आपका सार्वजनिक जीवन है मुजफ्फरनगर की जैन कन्या पाठशाला के आप सन्माननीय सेक्रेटरी हैं।

जैन समाज में ही नहीं अपितु मारवाड़ी व्यापारी समाज में भी आपका गौरवशाली स्थान है। आप उदार और समाज वादी उच्चादर्श के प्रतिभा सम्पन्न सौभाग्यशाली सज्जन हैं आप का चि० विनोदकुमार सुपुत्र है जो शिक्षा प्राप्त कर रहा है। भिवानी बाग कोठों में आपका जैन भवन स्थापित है जो बहुत विशाल देखने योग्य है आप उस के मालिक हैं। आपके भ्रात बासुदेव जी भी सज्जन प्रकृति के मिलनसार व्यक्ति हैं।

श्री सूवालाल जी जैन पाटनी

आप भिवानी सरावगी परिवार में वयोबृद्ध एवं प्रतिष्ठा सम्पन्न व्यक्ति हैं। आप का जन्म सन १९३९ में हुआ, मेरठ में आपकी सुप्रसिद्ध फर्म माधोलाल सूवालाल के नाम से ख्याति वान है जहां पर आढत एवं कमीशन एजेन्टी का काम होता है

पहिले से भिवानी में इसी परिवार की बहुत जायदाद एवं धर्म-शाला मन्दिर आदि हैं, इस परिवार में बहुत से प्रतिभाशाली महानुभाव हो चुके हैं जिन्होंने व्यापारिक मन्डियों में अच्छे सम्मान पुर्वक फर्मों का संचालन कर रक्खा है। वैसे आप सरल स्वभाव के मिलनसार मेरठ समाज के एक सम्माननीय महानुभाव हैं करीब ८० वर्ष से यह फर्म मेरठमें ही कार्यकर सफलता प्राप्त किये हुए है। आपके पुत्र सुपार्शलाल जैनारायण आदि बहुत योग्य हैं।

भग्गन का परिवार

इस परिवारका गौत्र गोयल है स्व० श्रीशिवनाथजी भग्गन का एक महान प्रभावशाली सत्य प्रिय समाज में माने हुए पुरुष थे। आपका बम्बई एवं भिवानी हर व्यक्ति के साथ बहुत प्रेम एवं समता का शुद्ध व्यवहार था। इसी तरह श्री हरलाल जी भग्गन का भी धार्मिक विचारों के सीधे सादे सरल स्वभाव के निर्भिमानी एवं ब्यापार कुशल व्यक्तिथे बम्बईके किराना बाजार में आपकी बड़ी इज्जत प्रतिभा व धाक थी।

श्री रामजीलाल जी भग्गन का

आप बड़े मिलनसार प्रभावशाली प्रभु और सन्त भक्त हैं बड़ी मर्यादा और सन्तोष के साथ मानव धर्म का पालन करते हुए संयमी और कुशल व्यापारी हैं। आपकी फर्म श्री हरलाल

रामजीलाल बम्बई जिसमें किराना कपड़ा आदि का काम बहुत उत्तमता शुद्ध व्यवहार के साथ बड़े पैमाने पर होता है।

भिवानी में आप के निवासके स्थान बड़े मोके पर विशाल एवं भव्य बने हुए हैं। आप श्री मोहनलाल रोशनलाल के यहां विवाहे हैं। आप साधु स्वभाव के सरल हृदय के बुद्धिमान व्यक्ति हैं, आपका बम्बई के व्यापारी समाज में बहुत अच्छा सम्मान है।

श्री परमेश्वरीदास जी भग्गनका

आप स्व· श्री शिवनाथराय जी भग्गनकाके सुपुत्र है आपके यहां किराने का बहुत बड़े पैमाने पर काम होता है आपकी फर्म बम्बई में श्री शिवनरायण परमेश्वरीदास के नाम से सुप्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित फर्म है आपने अपनी फर्म को उद्योग, एवं साहस तथा व्यापार कुशलता के कारण समृद्धिशाली और ख्यातिवान बनाया है। बम्बई के व्यापारिक समाज में आपकी बहुत बड़ी इज्जत तथा सम्मान है। भिवानी में भी आपकी जमीन जायदाद काफी है। और यहां इस परिवार की बहुत सुप्रतिष्ठा है। और नगर के उच्चव्यक्तियों में आपका स्थान है।

आप खाखी बाबा जी के अनन्य भक्त हैं इसी कारण महात्मा खाखी जी की आप पर पूर्ण कृपा है इसी कृपा एवं आशीर्वाद के कारण आप पूर्ण समृद्धिशाली बने हुए

हैं। आप बड़े सहिष्णु मिलनसार सौम्य स्वभाव के सीधे सादे व्यवहारकुशल व्यक्ति हैं। आपके चि० रामकुमार, उपेन्द्रकुमार आदि २ पढ रहे हैं।

श्री गोकुलचन्द भग्गनका

आप देहली में ही विशेष तौर से सर्राफे एवं कपड़े का कार्य करते हैं। आपके यहां महाबीरप्रसाद गोपीराम असर्फी कटले में कपड़ा कमीशन एजेन्टी का कारोबार अच्छे पैमाने पर होता है। आप वैसे मधुरभाषी मिलनसार सुन्दर आवृत्ति के प्रसिद्ध व्यक्ति हैं आपके रामावतार, बृजकिशोर आदि हैं।

आपके भाई भी मिश्रित व्यापारको उन्नत करने में संलग्न हैं, आप बहुत योग्य मिलनसार एवं व्यापार कुशलसमझदार मस्तिष्क वान मानव हैं।

इसी परिवार में श्री कालुराम जी तथा गौभक्त गीगराज जी विद्यमान हैं और आज कल मौन धारण किए हुए हैं। श्री शिवलाल जी भी बहुत मेहनती उद्योगी एवं सीधे सादे व्यक्ति हैं। इस परिवारमें औरभी अन्यान्य कार्यकुशल सुयोग्य महानुभाव हैं।

डरोलिया बंश

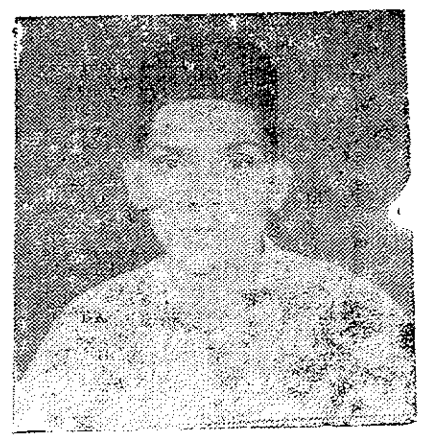
इस परिवार के मकान व दुकान लोहड़ बाजार में हैं।

ला० बिलासराय जी योग्य और कार्य कुशल व्यक्ति हैं। इनके श्री शीतलप्रसाद जी आजाद हैं जो इमारती लकड़ियों का काम करते हैं। श्री लाधूराम जी एक बड़े सभ्य और व्यापारकुशल, महानुभाव हैं। श्री इन्द्रमल जी अपने स्वभाव के एक ही व्यक्ति है शान्ति पूर्वक अपना कारोबार करते है। इसी वंश में स्व० श्री भीखराज जी के पुत्र बुलरमल जी है जो कांग्रेसी विचारों के व्यक्ति हैं।

पिचलियेः—

यह परिवार बहुत पुराना है। अब इसमें वृजलाल, छोटे लाल देहली, मथुरा आदि स्थानों में अपना व्यापार करते है।

दारुका परिवार



हीरालाल दारुका

श्री हीरालाल जी दारु का—आप शिक्षा प्रेमी, उद्योगी, परिश्रमी श्री बैंकटेश्वर विद्यालय भिवानी के संस्थापक ला०—

परमेश्वरीदास जी दारुका के सुयोग्य सुपुत्र है। आप देहली मैं कपड़े का व्यवसाय करते हैं कपड़ा बाजार में आपकी अच्छी प्रतिष्ठा है। वैसे आप अपने पिता की भांति सज्जन प्रिय प्रेमी उत्साही और व्यापारकुशल महानुभाव हैं।

बाघला परिवार

श्री मुन्नालाल जी बाघला-विशेषकर देहली ही रहते हैं। आपके पूर्वज बड़े धार्मिक लोकोपकारी सन्मानप्रद व्यक्ति हुए है। आपके पुत्र श्री महाबीरप्रसाद जी फर्म का कार्य देखते हैं योग्य और सर्वजन प्रिय व्यक्ति हे।

बेरीवाला परिवार

श्री मोतीराम जी बेरीवाले श्री गंगादत्त जी रामस्वरूश जी मुजफ्फरनगर नई मन्डी में कमीशन एजेन्टी का कारोबार करते है। आप विजय व्यापार चैम्बर तथा सनातन, सिख, ग्रेन चैम्बरों के डायरेक्टर भी हैं। बम्बई में भी आपका कारोबार है आपके बाबुराम, मुरारीलाल, रामस्वरुप सुरजभान, खुशी राम, रामचन्द्र, भगवानदास आदि २ सभी काम कर रहे हैं और शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

खानकिया बंश

श्री परमानन्द जी पन्नालाल जी अच्छे स्वभाव के मिलन सार व्यक्ति हैं। मस्तों की गली में इनका रहने का मकान

है [illegible]ड के चोपटे में विजय-निवास नाम से एक अच्छी बैठ[illegible] दुकान का निर्माण करवाया गया है। कलकत्ते में शेयरों की दलाली करवाते हैं।

श्री मथुराप्रसाद जी गुप्ता



[illegible]का जन्म वि० १९६८ फाल्गुन शु० ६ का भिवानी में हुआ, आपका गौत्र मित्तल है। कलकत्ता सुत्तापट्टी ६६ नं० में आपकी कपड़े की फर्म-मथुराप्रसाद श्यामसुन्दर के नाम से प्रतिष्ठित फर्म है और इस पर कपड़े का कार्य होता है। आप

उच्च विचारों के राष्ट्र भक्त महानुभाव हैं ३० वर्ष से शुद्ध खद्दर धारण कर स्वतन्त्रा संग्राम में पूर्ण सहयोग दिया है आप साहित्य के ज्ञाता तथा साहित्यमार्तण्ड श्री तुलसीराम जी शर्म्मा दिनेशके अनन्य भक्त व उनके साथियों मेंसे हैं भिवानी ब्रह्मचर्याश्रम को आप द्वारा बहुत सी सेवांए हुई हैं और होती ही रहती है। देवघर आरोग्य भवन में सहायता प्रदान कर आपने जनता जनार्दन की महान सेवा की है। आप धार्मिक विचारों के व्यवसाय कुशल बुद्धिमान महानुभाव हैं। कलकत्ता व्यापारिक समाज में आपका बहुत अधिक सम्मान है। सार्व जनिक कार्यों में भी आप बड़ी दिलचस्पी से भाग लेते हैं।

आपके भाई श्री अयुध्याप्रसादजी सिल्लीगोड़ी में मथुरा प्रसाद दीनानाथ नाम से लकड़ी का कार्य करते हैं। यह भी बहुत सज्जन व मिलनसार महानुभाव हैं। आपके चि० पुत्र बन्शीधर, रामावतार और आपके भ्राता श्री अयुध्याप्रसाद जी के दीनानाथ, सत्यनारायण, रतनलाल सज्जन प्रकृति के नव युवक है।

श्री वृद्धिचन्दजी झाड़ली वाले (रेखान)

आपका जन्म आषाढ शु० ६ सम्वत् १६४४ में हुआ। आप सीधे सादे स्वभावके व्यापार निपुण, हैसियन बोरा के कार्य में अच्छे प्रतिष्ठ व्यवसायी हैं। और कलकत्ते के व्यापारिक



द्धिचन्द जी झाड़ली वाले, फर्म—प्रेमसुखदास जमनादास भिवानी ।

समाज में माने हुए व्यक्ति हैं। वि० १९६५ में अपने अपना कारोबार कलकत्ता में शुरु किया, और यहां तक उन्नति की कि आज आपका एक विशाल मकान तुल्लापट्टी में एक हंस पोहकरिया में विद्यमान है और साथ ही काफी धन की अभी-वृद्धि कर धनिक वर्ग में आप एक माने हुए प्रतिष्ठित और सम्पन्न गौरवशाली महानुभाव हैं। आपने अपनी उदारता का का एवं गौ भक्ति का परिचय देते हुए भिवानी की बीड़ वाली गौशाला का सुन्दर दरवाजा निर्माण करवाकर अपने जीवन को सफल और अमर जीवन बनाया है। झाड़ली के पास धर्म-शाला और कूप तथा मन्दिर का जीर्णोद्धार भी आपके द्वारा हुआ है।

आपके मदनलाल, जगन्नाथ, चिमनलाल रामपाल, नन्द किशोर आदि २ सब चतुरता पूर्वक व्यापारी वर्ग में काम करते हैं।

श्री जोहरीमलजी गुप्ता गुमानीवाले

आपका परिवार गुमानी वाला कहलाता है। आप पहिले कलकत्ते में हैसियन बौरा आदिका कार्य करते रहे। बाद में ढुलीचन्द रामकृष्ण फर्म में पार्टनर रहे और इस फर्म ने व्यापारिक क्षेत्र में सम्मान व प्रतिष्ठा प्राप्त की एवं धनो-पार्जन भी किया। कलकत्ते के सभ्य समाज में आपकी फर्म का नाम अच्छे फर्मों की गणना में था। रेलवे एक्सीडेन्ट

(दुर्घटना) में आपके पैर में एक बार चोट आई और आप भिवानी आ गये। फिर आपने अपना जीवम सुखशाली और सन्तोषप्रद बनाया। तब से आप यहीं पर स्वतन्त्र रूप से यथोचित रूप में कार्य करते हैं। आपने अपनी सौजन्यता के कारण शहर में अच्छी मान और प्रतिष्ठा स्थापित कर रक्खी है आपके निवास स्थान हालू बाजार बाजारी में है आप विनम्र और सरल स्वभाव के मिलनसार ख्यातिप्राप्त महानुभाव है। आपके सबसे बडे लडके चि० रामकृष्ण ब्यावर शहर में बारदाने का अच्छे रूप में कार्य करते है और आज के दिन सभी प्रकार का प्रभु की कृपा से आनन्द है। आपका कार्य ब्यावर में स्वतन्त्रता पूर्वक अच्छे पैमाने पर चल रहा हैं। छोटे सब शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

महमिया परिवार

यह परिवार बाजारी में निवास करता है श्री भक्तराम जी योग्य और ख्याति प्राप्त व्यक्ति है। आपका परिवार कपड़े का व्यवसाय करता है। आपका बड़ा पुत्र कशमीरीलाल अहमदाबाद में कपड़े का अच्छे रूप में व्यवसाय करता है और भी हाऊलाल, बाबुलाल, हीरालाल आदि कपड़े का ब्यापार करते हैं।

भोड़ का परिवार

इस परिवार का निकास तिगड़ाना ग्राम होने के कारण



श्री जौहरीमल जी गुप्ता ※ श्री कशमीरीलाल जी महमिया



श्री रामप्रताप जी भोड़का

तिगड़ानिये कहलाते हैं इस वंश के पूर्व पुरुष श्री भोड़मलजी बड़े धर्मात्मा व्यक्ति हुए हैं उन्हीं के नाम से यह परिवार भोड़का परिवार कहलाता है पहले इस परिवार में बहुत बलिष्ट तथा चलती वाले व्यापार निपुण व्यक्ति हो चुके हैं।

भोड़ का परिवार

स्व० श्री हंसराज जी एक बहुत बड़े धर्मात्मा व प्रतापी

हुए हैं उनके श्री सूरजभान जी श्री बेजनाथ जी श्री इन्द्रसैन जी श्री खुशीराम जी आदि बहुत सुयोग्य एवं मिलनसार और सीधे सादे धार्मिक विचारो के सज्जन व्यक्ति बम्बई एवं भिवानी में सन्मान पूर्वक कार्य कर अपने वंश को ख्यातिवान एवं समृद्धि शाली बनाए हुए हैं।

श्री निरंजनलालजी तिगड़ानिया

आपका गोत्र गोयल है। और आपका आदि निवास स्थान तिगड़ाना ग्राम है। आपके पिता श्री रघुनाथराय बहुत प्रभु भक्त और सादे स्वभाव के महान पुरुष थे।

आपका जीवन सदा से ही व्यापारिक जीवन रहा है। आपने सर्व प्रथम कलकत्ते में दुलीचन्द रामकृष्ण फर्म में साझीदार होकर बहुत काम किया और काफी धनोपार्जन के साथ २ फर्म की तथा अपने व्यक्तिगत व मिलनसारी की वजह से प्रतिष्ठा प्राप्त की, भिवानी वाली फर्मों में आपका नाम गौरव युक्त है। अब आप कलकत्ते में हैसियन बोरे का बड़े पैमाने पर कारोबार करते हैं। और व्यापारिक वर्ग में आपकी निरंजनलाल एन्ड कम्पनी कलकत्ता की बड़ी मान प्रतिष्ठा व इज्जत है। आप बड़े प्रेमी स्वभाव के मिलनसार उदारमना व्यक्ति हैं। आपके दीनानाथ जी भिवानी में चान्दी आदि का दक्षता पूर्वक काम करते है और नगर के सार्वजनिक कार्यों में भाग लेकर प्रतिष्ठा सम्पन्न व्यक्ति माने जाते है श्री बृन्दावन के प्रेमी हैं

बाबुलाल जी आप की फर्म से अलग होकर कलकत्ते में ही लोहे के कारखाने को स्थापित कर बाल्टी आदि तैयार कर निजी कार्य करते है। आप भी एक प्रभावशाली मिलनसार सुयोग्य व्यक्ति हैं।

आपसे छोटे घनश्यामदास जी हैं जो कलकत्ते में ही अपना हैसियन बोरा और दलाली का अच्छे ढंग से कार्य कर रहे हैं।

स्व० श्री रामगोपालजी

यह वास्तव में साधु पुरुष और तिगड़ानियों में सम्मान्नित व्यक्ति थे। उनके श्री रामस्वरुपदास, जी श्रीरामलाल जी, श्री रामचन्द्र जी आदि २ सुयोग्य पुत्र हैं। कलकत्ता, बम्बई, भिवानी में सम्मान पूर्वक व्यापार कर अपना जीवन सुखी बनाए हुए हैं और बहुत सम्मान युक्त व्यक्ति माने जाते हैं।

श्री रामलाल जी के सुपुत्र बाबु भैरवप्रसाद जी बम्बई श्री डीडवानिया फर्ममें उच्च पद पर सम्मान पूर्वक कार्य कर अपनी योग्यता का परिचय देरहे हैं। आप सत्यवक्ता उच्च विचारों के महानुभाव हैं। आपके कैलाशचन्द्र, निर्मलकुमार आदि २ उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

रामधनदास जी

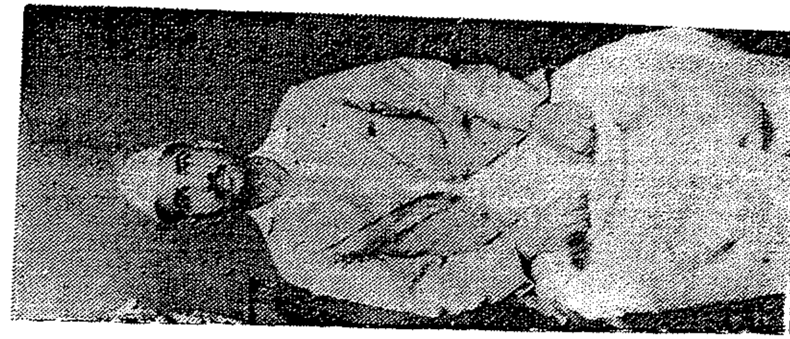
आप इसी परिवार में हैं। आप एक माने हुए चतुर पुरुष हैं। आपसे छोटे श्री गंगारामजी है जो सार्वजनिक कार्यों

में भाग लेते रहते हैं। सुधारवादी, स्वतन्त्र विचारों के निर्भी‌क प्रकृति के कार्यशील व्यक्ति हैं।

श्री सीसरामजी—अपना कारोबार भिवानी में तथा कई मन्डियों में करते हैं। और भी कई सज्जन अपना २ कार्य कर सुखी जीवन बनाए हुए हैं।

श्री रामप्रतापजी बी. ए कोम जी. डी ए.

आप स्व० श्री घनश्यामदास भोडुका के पुत्र हैं। आपके बड़े भ्राता श्री उग्रसैनजी वकील तथा आप दोनों महानुभावों ने कलकत्ते में अपना कारोबार बहुत योग्यता और बुद्धिमानी के साथ प्रारम्भ किया फलस्वरूप आपकी फर्म की व्यापारिक क्षेत्र में काफी ख्याति हुई और साथ में फर्म को अच्छा लाभ हुआ और बहुत समय तक आर. के. पुनमचन्द के नाम से ७० तुल्लापट्टी में कमिशन एजेन्ट और हैसियन बोरा आदि २ कई एक कार्य चल रह हैं। बाद में आपके फर्म २६ बांसतल्ला में उग्रसैन पिताम्बरलाल के नाम से तेल लोहा आदि के कार्य और बढ़ाये गये और बहुत प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। बहुत समय तक यह फर्म सम्मानित रूप में चल रही थी बाद में आप और श्री उग्रसैन जी बड़े प्रेम भाव के साथ अलग २ काम करने लगे। अब आपकी फर्म रामप्रताप पिताम्बरलाल २६ सर हरिराम गोयनका स्ट्रीट में इम्पोर्ट एक्सपोर्ट एन्ड कमीशन एजेन्टस का व्यापार बड़े सम्मान के साथ हो रहा है। देखे



श्री सूरजभानजी बगड़िया



श्री रामगोपाल जी कानोडिया



श्री मनीरामजी भोड़का

आप सदैव से ही बड़े मिलनसार हुशियार व्यापार निपुण व्यक्ति हैं। भिवानी तथा तिगड़ाने में आपकी काफी जायदाद व ज़मीन है। आपकी प्रवृत्ति सार्वजनिक कामों में रहती है। हर व्यक्ति के आप प्रेमी हैं। भिवानी वैश्य कालेज में विज्ञान का एक कमरा आपकी फर्म द्वारा निर्माणित है। तिगड़ाना हाई स्कूल में श्री भोड़का ब्लाक याने तीन कमरे बने हुए हैं। आपके द्वारा परिवार की काफी प्रसिद्धि हुई है। आपके चि० मधुसूदन जी पीताम्बरलाल, सुशीलकुमार आदि हैं।

श्री उग्रसैन जी B. A LL. B.

आप भोड़का वंश में अत्यन्त प्रतिष्ठित एवं व्यापार कुशल, ख्यातिवान महानुभाव हैं। आपने अपने उद्योग एवं परिश्रम से अपनी सुप्रतिष्ठित फर्म को कलकत्ता के मारवाड़ी समाज में ही नहीं बल्कि भारत–व्यापारी समाज में सम्मानित बनाकर समृद्धिशाली बनाया है। आप मिलनसार. कुशाग्रबुद्धि के प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति हैं। आपके व्यक्तित्व के कारण कलकत्ता में भोड़का परिवार एक सम्मानित परिवार बन चुका है। आप कलकत्ता की कई एक संस्थाओं के सदस्य व अधिकारी तथा पोषक हैं।

पहिले आपकी फर्म का उग्रसैन पीताम्बरदास नाम पड़ता था अब आप स्वतन्त्रता पूर्वक व्यापार कर सफलता प्राप्त कररहे हैं।

श्री मनीराम जी भोड़का

आप वैदिक विचारों के सुयोग्य व्यक्ति हैं, बम्बई में व्यापारिक वर्ग में आपका अच्छा सम्मान है। भिवानी आर्य

समाज के आप उच्च अधिकारी हैं। और आर्य समाज पुस्त-
कालय के आप संस्थापक एवं संचालक हैं ।। आप बहुत
उद्योगी, परिश्रमी, मिलनसार तथा सार्वजनिक कार्य कर्ता
बुद्धिमान व्यक्ति हैं।

श्री घासीराम जी—आप निर्भमानी, सज्जन प्रकृति के
मिलनसार, सुयोग्य व्यक्ति हैं। बम्बई में अपनी फर्म पर
बुद्धिमत्ता से कार्यकर अपने जीवन को सफल बना रहे हैं आप
मित्रों के सच्चे मित्र और उत्साही युवक हैं।

श्री पुनमचन्द जी—आपने पहिले भिवानी के सार्वजनिक
कार्यों में भाग लेकर बहुत से जनहित कार्य किए हैं, साथ ही
समाज सुधार के लिए भी काफी परिश्रम कर आर्यवीर दल को
दृढ़ एवं सजीव बनाया है। अब कलकत्ता में कुशलता पूर्वक
कार्य कर अपने व्यापार को उन्नत बनाए हुए हैं।

श्री नन्दराम जी का परिवार

मारवाड़ी समाज ही नहीं बल्कि समस्त भारत जानता
है कि भिवानी एक धर्म प्रधान नगरी है और यह आज भी
श्री नन्दराम जी की भिवानी कही जाती है क्योंकि श्री नन्द-
राम जी एक बहुत बड़े धर्मात्मा, पुण्यात्मा, साधुभक्त गौ-
ब्राह्मण प्रतिपालक हुए हैं। उन्हीं महापुरुषों के नाम से यह
नगरी आजतक। धर्म नगरी कहलाती है। प्रभु कृपा से आज
उनका वंश बहुत विस्तृत एवं ख्यातिवान है।

श्री मनसाराम जी

आप श्रीमद्भगवद्गीता के अनन्य भक्त एवं अठारह
अध्याय कण्ठस्थ रखने वाले धार्मिक वृत्ति के सुयोग्य महानु
भाव हैं आप द्वारा गीता का भिवानी में बहुत अधिक प्रचार
हुआ है

आप तेल के प्रमुख एजेन्ट एवं व्यापार कुशल तथा
धर्म के मानने वाले सुयोग्य व्यक्ति हैं। भिवानी में आपकी
काफी मान प्रतिष्ठा है। आपके भाई—

श्री मोहनलाल जी—आपने वकालत बंद कर व्यापार की
तरफ ही विशेष ध्यान रक्खा। आप प्रत्येक को कानून सम्बन्धि
उचित राय देकर उनका हर तरह भला करते हैं। मिलनसार,
सात्विक विचारों के सुयोग्य व्यक्ति हैं।

श्री हरस्वरूप जी—आप [illegible] चिकित्सा के माने हुए डाक्टर
हैं। हालु बाजार में आपकी [illegible] है। बहुत मेहनती
उद्योग शील, कार्य कुशल निरभिमानी व्यक्ति हैं।

श्री हरस्वरूप जी—आप भी दन्त चिकित्सा के सफल
डाक्टर है। शहर में आपकी अच्छी मान प्रतिष्ठा है आप
सुयोग्य उच्चाधिकारी के आदर्श पुरुष हैं।

श्री लक्खीराम जी—आप कलकत्ते में कपड़े का व्यापार
करते हैं। कुशल व्यापारी उद्योगी और कर्मशील व्यक्ति हैं,
समयानुसार मिलकर अपने कर्तव्य का पालन करते हैं। आपके
अन्य भाई विविध कार्य कर रहे हैं।

श्री तोताराम जी—आप अपने जीवन को शान्ति पूर्ण बनाए हुए हैं और सादगी से रहकर अपने बंश की मर्यादा के अनुकूल कार्य करते हैं। आप सुयोग्य धर्मशील तथा प्रत्ये क शुभ कार्य में सहयोग देनेवाले अच्छे महानुभाव हैं।

श्री मोतीराम जी—आप शहर के प्रत्येक कार्य में भाग लेने वाले सर्वप्रिय व्यक्ति हैं। शहर का चन्दा चिट्ठा इन्ही से आरम्भ होता है और सेठ नन्दराम जी की गद्दी पर इस समय आप ही विराजमान हैं। योग्य कार्य कुशल सज्जन है।

इस परिवार में वृद्धिचन्द जी (कर्मचन्द जी(साधुस्वभावा नुसार शान्ति मय जीवन बनाए हुए हैं। आप निर्भीक वक्ता एवं सुयोग्य लेखक और पहिले भिवानी के सार्वजनिक कार्यों में भाग लेते रहे हैं।

रामजीदास जी—अपना प्राईवेट कार्य कर रहे हैं।

श्री मदनलाल जी—सिमेंट एजेन्ट है। आयु लगभग ४५ वर्ष की है। अधिकतर भिवानी में ही निवास करते हैं। आपके ५ पुत्र हैं। जो अपने व्यापार को बहुत अच्छी तरह से सम्भाले हुए हैं

निम्नलिखित महानुभाव भारत के विभिन्न शहरों में कुशलता से व्यापार करते है—

श्री दीनदयालु जी, श्री हरिराम जी, विष्णुदयाल, श्री प्रहलादराय जी, गिरधारीलाल जी, श्री कुंजलाल जी, श्री बना



श्री नन्दकिशोर जी हरजी का



श्री गोपीराम जी भीमराज का

(गोपीराम नन्दकिशोर भिवानी)

रसीदास जी, श्री राधाकृष्ण जी, श्री शिवनरायण जी, श्री देव करण जी, लक्ष्मीनरायण जी, बी० ए० बहुत सीधेसादे स्वभाव के व्यक्ति हैं। श्री जगदीशप्रसाद जी, श्री विश्वम्भर दयाल जी, श्री हरिराम जी आदि २ हैं यह परिवार बहुत बड़ा है। उपरोक्त सभी व्यक्ति परिवार के स्वरूपानुसार कार्य कर भिवानी के मान को बनाए हुए हैं।

श्री गोपीराम जी भीमराज का

आप फर्म-गोपीराम नन्दकिशोर के प्रोप्राईटर हैं आप की प्रसिद्ध फर्म भिवानी में ख्याति वान एवं सम्मान युक्त फर्म है।

आप सर्वमान्य समाज सुधारक हैं और पहिले ही दिन से शिक्षा प्रेमी होने के नाते सुयोग्य लेखक एवं सुवक्ता भी हैं। भिवानी की अनेको संस्थाओं के आप संचालक व प्रमुख पदाधिकारी एवं सम्माननीय सदस्य हैं।

आप अपने काम में विशेष ध्यान देकर अपनी तथा अपने समाज की उन्नति में दत्तचित्त रहते हैं। सार्वजनिक कार्यों में आप अग्रगण्य रहते हैं और ऊंचे दर्जे के व्यापारी तथा भिवानी चैम्बर के सर्व सर्वा हैं। आपके पुत्र—

श्री वेदप्रकाश जी—आपने पंजाब युनिवर्सिटी की प्रभाकर परिक्षा में रिकार्ड रख कर पूर्ण योग्यता का परिचय दिया है। इसी तरह एम. ए. पास कर आई. सी. एस. की परिक्षा देकर अपनी जन्म भूमि भिवानी का शिक्षा समाज में सर ऊंचा किया है। आप भिवानी के वह सर्व प्रथम छात्र हैं जो आई. सी. एस. की परिक्षा में बैठ कर पूर्ण योग्यता का परिचय दे चुके हैं।

इस परिवार के अनेकों व्यक्ति भारत के विभिन्न भागों में व्यापार कर कुशलता एवं व्यवसाय निपुणताका परिचय देरहे हैं

श्री हरकरनदास केशोराम

यह फर्म बनारस में साडियों का बहुत बड़े परिणाम में व्यापार कर ख्यतिवान बनी हुई है। बनारस के व्यापारिक समाज में इसका बहुत सम्मान है।

श्री मातुराम जी डालमिया

आप स्व० श्री जालीराम जी डालमियां के सुपुत्र हैं जो बड़े व्यापार कुशल प्रभु भक्त थे। मातुराम जी का जीवन महान एवं उद्योगी है। जब आपका साराही समय व्यापारिक क्षेत्र में व्यतीत होता था और व्यापारिक समाज में आपकी बड़ी धाक थी, आप हर व्यक्ति के कारोबार में पूर्ण सहयोग देते थे। अब आप प्राय: सभी सांसारिक झंझटों से विराम लेकर प्रभु चिंतन और भगवान के कीर्तन में ही विशेष समय लगाते हैं। कलकत्ता में जो मैदान की कथा प्रातः होती है उसका श्रेय आपको ही है। वैसे आपकी मारवाड़ी समाज में बहुत प्रतिष्ठा व मान है। आपके सुपुत्र गुगनराम जी हैं जो गुगनराम डालमियां २१ बी. कैनिंग स्ट्रीट कलकत्ता में हैसियन बोरे का व्यापार करते हैं।

श्री ताराचन्द जी दुल्हेड़ी वाला

आपका जन्म १६७२ में दुल्हेड़ी गांव में हुआ था वर्तमान समय में आपका व्यापार सिल्लीगोड़ी में गुगनराम ताराचन्द के नाम से सुविख्यात है। आपके फर्म में चाय, लकड़ी, मोटर आदि का प्रमुख कार्य होता हैं। आप बहुत मेहनत

एवं ईमानदारी के साथ अपने व्यापार को उन्नत बनाए हुए हैं। आप की फर्म की शाखाए कलकत्ता, कालिंगपोंग, दार्जलिंग आदि अनेकों नगरों में बहुत मान प्रतिष्ठा के साथ कार्य कर रही है। श्री ताराचन्द जी अत्यन्त विमम्र स्वभाव के मिलनसार, उत्साही, व्यक्ति हैं। इनकी व्यापार कुशलता की सराहना समस्त दार्जलिंग इलाके में प्रसिद्ध है। आपके लड़के श्री भागीरथमल एवं चन्द्रप्रकाश पढ रहे हैं और बहुत ही सौम्य तथा उत्साही युवक है। आपका गौत्र गर्ग है।

श्री नागरमल जी

आप गोयल गौत्रीय वैश्य हैं। आप पहिले ही दिन से सरल स्वभाव विनम्र तबियत के मिलनसार, उद्योगी, परिश्रमी महानुभाव है, बम्बई में परसराम जुगलकिशोर कालबादेवी रोड़ पर कार्य कर रहे हैं। आपका व्यापारिक क्षेत्र में नाम है। आपके चि० रघुनन्दनप्रसाद शिक्षा प्राप्त कर रहा है।

आपके भ्राता श्री तुलसीरामजी नूनकरणदास जी अत्यन्य सरल स्वभाव के मिलनसार परोपकारी, एवं सर्वप्रिय महानुभाव हैं। और बम्बई में सम्मान पूर्वक कार्य कार्य करते हैं।

श्री जगदीशप्रसाद जी चौधरी

आप स्व० श्री लक्ष्मीनरायण जी के सुपुत्र हैं आपके पिता श्री लक्ष्मीनरायण जी शहर के प्रतिष्ठित एवं सार्वजनिक कार्य कर्ता और म्युनिस्पिल कमेटी के मैम्बर थे।

आप अपनी फर्म मंगतराय लक्ष्मीनरायण का कुशलता पूर्वक संचालन कर अपनी योग्यता का परिचय दे रहे हैं। वैसे

श्री जगदीशप्रसाद जी बहुत सुशील विनम्र तथा सार्वजनिक कार्यकर्ता और सनातनधर्म पाठशाला के कौषाध्यक्ष तथा उत्साही, युवक हैं।

श्री अमरनाथ जी चोधरी

आप स्व० श्री लक्ष्मीनरायण जो के सुयोग्य सुपुत्र हैं। आपकी भिवानी में काफी जमीन जायदाद है और मिलनसार प्रकृति होने के कारण सर्वप्रिय महानुभाव हैं। आपकी फर्म हरलाल लक्ष्मीनरायण प्रसिद्ध फर्म है। पहिले इस फर्म द्वारा कपड़े का व्यापार बहुत बड़े रूप में होता रहा है। अब इसका संचाल अमरनाथ जी बहुत सतर्कता पूर्वक कर रहे हैं।

आपके परम मित्र श्री शिवकुमार जी चौधरी सुयोग्य एवं मिलनसार विनम्र नवयुवक हैं।

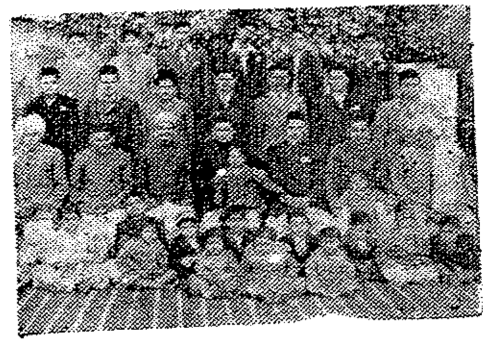
श्री माणकलाल जी

आप स्व० श्रीभज्जुराम जी चोधरी के सुयोग्य सुपुत्र हैं। देहली चान्दनी चौंक में श्री वैणीप्रसाद माणकचन्द नाम से कपड़े के काम का प्रसिद्ध फर्म है।

आप दोनों महानुभाव बहुत मिलनसार, योग्य और विशाल हृदय के व्यक्ति हैं। बम्बई में भी आपका कपड़े का थोक व्यापार होता है। कपड़े के व्यापारिक समाज में आपके फर्म की बड़ी इज्जत व धाक है। वैसे आप बड़े प्रतिष्ठाशाली प्रेमी स्वभाव के सज्जन व्यक्ति हैं।

करांची वाला परिवार

स्व० श्री रामरिक्षपाल जी बुद्धराम जी अपने समय के एक बहुत ख्यातिवान एवं मिलनसार महानुभाव हो चुके हैं



पत्थरवाला परिवार



श्री रामसिंह जी वैद म्यु० क



श्री लक्ष्मीनरायण जी बगड़िया



श्री द्वारकादास जी हु

आपके यहां कपड़े का बहुत बड़े रूप में कारोबार होता है। बम्बई में भी आपके कपड़े का काम थोक रूप में होता है।

अब आपके सुयोग्य सुपुत्र अपनी फर्मों का सुयोग्यता पूर्वक संचालन कर रहे हैं। श्री रामगोपाल जी, जगदीशप्रसाद जी. रामप्रकाश जी, श्री महावीरप्रसाद जी आदि सभी सभ्य एवं सुयोग्य कार्य कुशल, मिलनसार प्रेमी बन्धु हैं।

श्री पेसीराम जी बजाज

आप आदिवासी कलानौर के हैं आप पहले दिन से ही कपड़े का काम करते हैं। आपका प्रेम व स्नेह स्व० द्वारकादास जी जैन से बहुत रहा है। आप कपड़ेके कारोबारमें बहुत निपुण व समझदार हैं। आप जैन समुदाय के भक्त हैं। पेसीराम जी का जीवन सार्वजनिक जीवन है। हर व्यक्ति के आप सुख दुःख के साथी रहते हैं। वैसे आप बड़े विनम्र स्वभाव के समझदार मिलनसार प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। कपड़े के व्यापारिक क्षेत्र में आपकी फर्म शहर में महान स्थान प्राप्त किये हुए है। आप कपड़ा कमेटी आदिके उच्च पदाधिकारी हैं। शहर में आप मान प्रतिष्ठा सम्पन्न सुयोग्य माने हुए सज्जन हैं आप के सब से बड़े पुत्र मातुराम हैं जो कपड़े की दुकान का कार्य करते हैं छोटे शिक्षा प्राप्त करते हैं।

पत्थरवाला परिवार

आपका गोत्र सिंगल है भिवानी में रघुनाथराय जमनादास पत्थरवाला फर्म के नामसे पत्थर विक्री का बहुत काम होता है। रोहतक में बैजनाथ मित्रसैन के नाम से फर्म है। इस फर्म में बैजनाथ विशेष रूप से कार्य भार सम्भाले हुए है और बहुत

योग्यता के साथ सम्मान प्रद कार्य कर फर्म को उन्नत और प्रभावशाली बनाए हुए हैं।

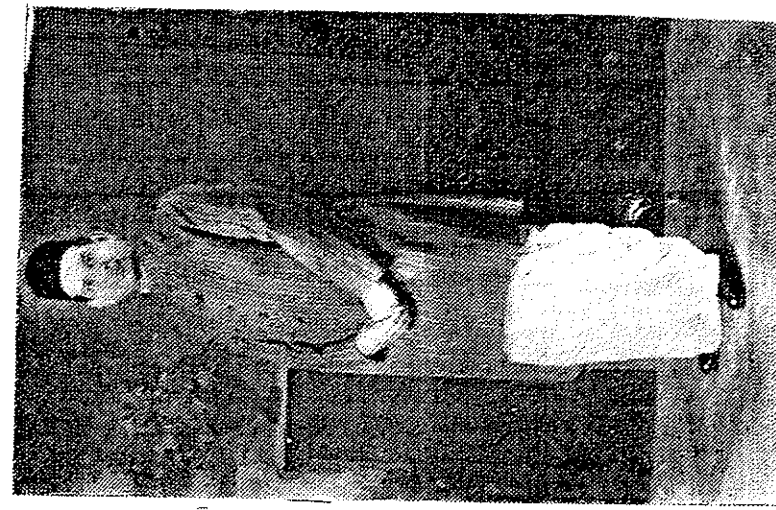
जमुनादास जुगलकिशोर दादरी में इसी नामसे काम होताहै ग्वालियर में जमुनादास ठेकेदार के नाम से पत्थर की खानो के ठेके लेकर विशाल रूप में पत्थर का महान कार्य होता है। केदारनाथ जी ने नया बांस देहली में एक बृहद्‌रूप में अचार मुरब्बा आदि की दुकान जारी की हुई है इस परिवार में बहुत से इन्ही महानुभावों के सुपुत्र भी योग्यता पूर्वक फर्म में कार्य करते हैं। जमुनादासजी का जीवन सार्वजनिक सेवा कार्य में भी है युवक मण्डली पुस्तकालय के आप बहुत समय से अवैतनिक मन्त्री हैं।

बागड़ी परिवार

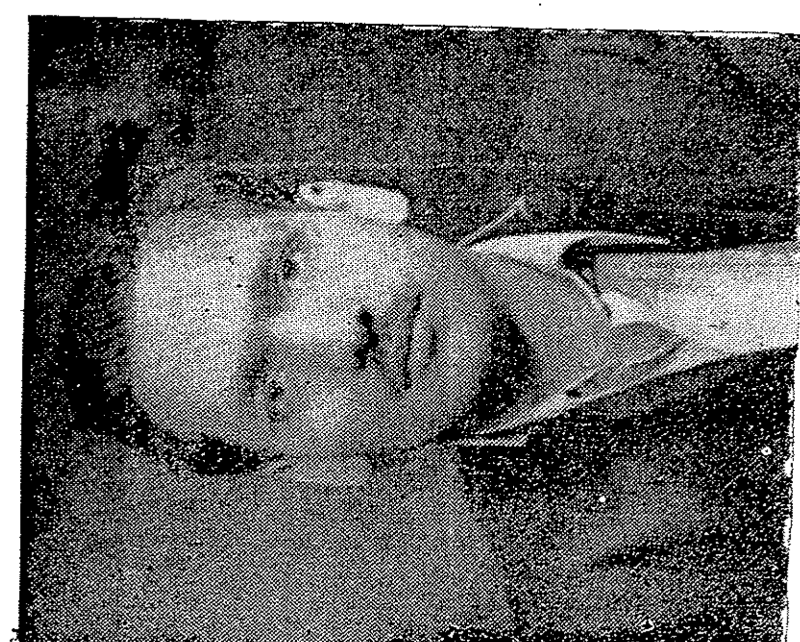
श्री रामकिशनदास केजड़ीवाल;—आप का गोत्र बांसल है आपको प्रसिद्ध फर्म रामकिशनदास मामनचन्द कम्पनी १६१ कालबा देवी रोड़ बम्बई में कपड़े एवं कमीशन एजेन्टी का काम बहुत सन्मान पूर्वक होता है। यह फर्म बम्बई की पुरानी फर्मों में मानी हुई है।

आप के स्व० पिता श्री गुरुसहायमल जी बड़े धर्मनिष्ठ और दयालु स्वभाव के सत्यप्रिय महानुभाव थे आप भी अपने स्व० पिता के तुल्य ही धर्म प्रिय मिलनसार साधु स्वभाव के आचार निष्ठ व्यक्ति हैं।

आपके सुपुत्र चि० माधोप्रसाद दीनानाथ ओमप्रकाश आदि सभी व्यापारिक क्षेत्र में योग्यता पूर्वक पितृ आज्ञा पालन कर समाज में होनहार प्रतीत हुए हैं और व्यापार कुशलता आप सभी को प्राप्त है।



श्री माणकचन्द जी
(बेणोप्रसाद माणकचन्द देहली)



श्री निहालचन्द जी भरांथया
[डुंगरमल लच्छीराम देहली]

श्री निहालचन्द जी भरथिया

आप उस महापुरुष के सुपुत्र हैं जिन्होंने देहलीके व्यापारिक वर्ग में नाम ऊंचा कर नेक नियतके साथ धनोपर्जन किया वह स्व० श्री लच्छीराम जीं दलाल के नाम से व्यापारिक समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति थे।

आपभी अपने पिता के समानही कार्यकुशल और उद्योगी परिश्रमी मिलनसार योग्य महानुभाव हैं। छोटी ही आयु में आपने अपने फर्म को बहुत कुछ ख्यातिवान उन्नतिशील बना कर कपड़े के व्यापारिक वर्गमें धाक जमा रक्खी है आपका एक निजी कटला भी है जो कटला लच्छीराम के नाम से प्रसिद्ध है आपके यहां पर कपड़े का काम बहुत बड़े पैमाने पर डूंगरमल लच्छीराम मोती कटला फर्म से होता है।

ला० गोबर्धनदास जी भरथिया

आप भारत प्रसिद्ध केशवराम काटन मिल्स कलकत्ता में उच्चपद पर ससन्मान कार्य कर रहे हैं। केशवराम काटन मिल में मामूली कर्मचारी के तौर पर प्रविष्ठ हुए थे किन्तु आपमे अपने उद्योग एवं परिश्रम बल से उन्नति कर आज केशोराम काटन मिल में जो उच्चपद प्राप्त किया है वह आपकी बुद्धिमता कार्य कुशलता एवं सद्व्यवहार का ही कारण है।

आप बहुत सुयोग्य प्रतिभा सम्पन्न कार्य कुशल सुशिक्षित एवं उच्चादर्श युक्त व्यक्ति हैं। कलकत्ता के सभ्य समाज में आपका पूर्ण सन्मान एवं प्रतिष्ठा है आपका चि० निरंजनलाल पढ रहा है।

सुरेका परिवार

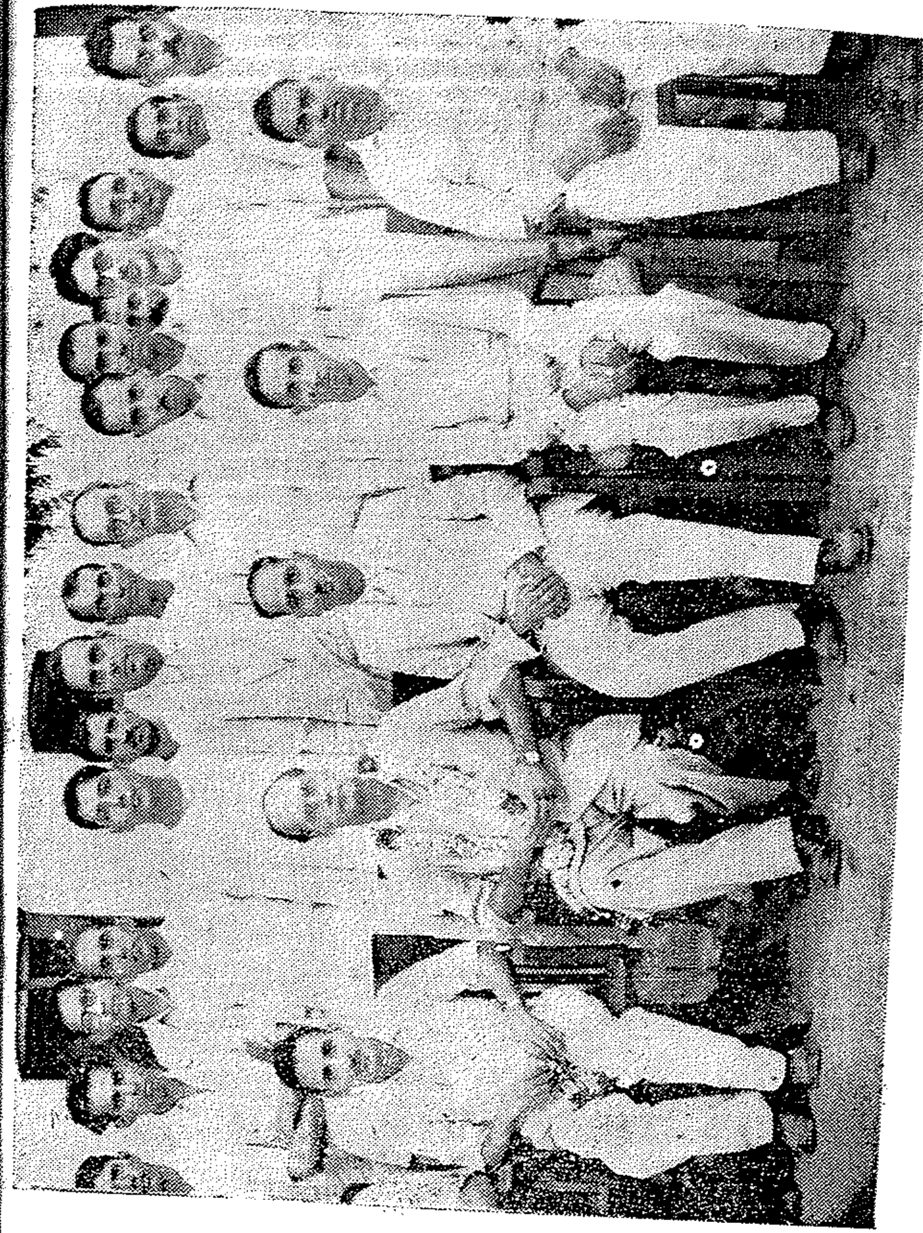
यह परिवार एक प्रसिद्ध परिवार है इनके मकान सोरे वालों की गली में सुरेका निवास के नाम से प्रसिद्ध है। श्री चिरंजीलाल जी सुरेका एक सभ्य व योग्य व्यक्ति हैं। श्रीसांवल राम जी सुरेका सर्व जन प्रिय कार्य कुशल व्यवहार कुशल एवं प्रेमी महानुभाव हैं इनसे छोटे हरीराम व्यापारिक कार्य करते हैं और आज कल भागलपुर में रहते हैं।

चौखानी परिवार

यह शहर का प्रसिद्ध और पुराना परिवार है तुलसीराम बलदेवदास के नाम से फर्म विख्यात है। ला० रामस्वरूप जी खरे स्वभाव के पंच पंचायती व्यक्ति हैं। इन के पुत्र प्रहलाद राय जगन्नाथ मदनलाल आदि सभी बम्बई में सुचारु रूप से कार्य करतेहुए सफलता प्राप्त कररहे हैं और इनको फर्म बम्बई में प्रतिष्ठित फर्मों में गिनी जाती है।

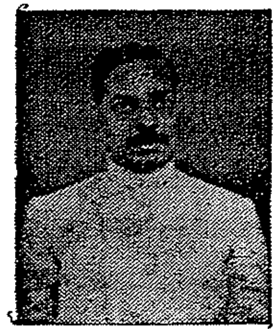
भावसिंह का परिवार

श्री दोलतराम जी:—आप योग्य कार्य कुशल व्यक्ति हैं। आजकल आप सर्विस कर रहे हैं वैसे व्यापारिक क्षेत्र में आप का बहुमान्य है आप के पुत्र बृजलाल इन्द्रचन्द्र स्वतन्त्र काम करते हैं रत्नलाल पढ रहा है। आपके भाई श्री बंशीधरजी श्री मदनलाल जी श्रीरामगोपाल जी बहुत योग्य प्रभु भक्त व्यवहार कुशल मिलनसार चतुर और धर्म प्रिय हैं आप सब देहली में ही कार्य करते हैं, गोबिंदराम राधेश्याम सब अपना अलग २ काम करते हैं, लक्ष्मीनारायणजी सूरजमलजी अमृतसरमें कपड़े की दुकान करते हैं, यह परिवार सभ्य और प्रतिष्ठा सम्पन्न है।



पंजाब क्लोथ मिल भिवानी।

श्री बजरंगलाल तोदी



आप काजन्म १९५९ का है। भिवानी में कपड़े का काम सदैव से ही करते रहे हैं। आजकल कलकत्त में यातायात का कार्य कर रहे हैं। आप भिवानी कपड़ा कमेटी के सक्रेट्री भी रहचुके हैं।

मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी एवं बालसभा आदि २ के मैम्बर भी रहचुके हैं। इनकी धर्मशाला भिवानी में हलुवास दरवज्जे के पास है। आपके भाई—

श्री किशनलाल जो तोदी—बहुत मिलनसार, कार्य कुशल व्यक्ति हैं। इनके देवशंकर, राजकुकार, रत्नलाल, नन्दलाल आदि सुयोग्य पुत्र हैं।

श्री रामेश्वरदास जी हेतमपुरिया

आप स्व० श्री बल्लूराम जी हेतमपुरिया के पौत्र हैं। जिन्होंने जीवनकाल में मारवाड़ी समाज एवं अपनी विरादरी में बहुत प्रतिष्ठा और ख्याति प्राप्त की अंग्रेजों के शासनकाल में आप शासन की तरफ बड़े मातबर और बहुत कायकर्त्ता एवं राजभक्त मानगये आप आनरेरी मजिस्ट्रेट व राय साहेब भी अपने समय में रहे। आपका सिद्धान्त दोनों फरीकों को प्रसन्न कर राजीनामा ही करवाना था और दोनों ही पार्टी आपके उपर बड़ा ही विश्वास रख कर आपके द्वारा किये गये फैसले को सहर्ष स्वीकार करती थी। अस्तु अब आपके सुयोग्य पौत्र श्री रामेश्वरदासजी बड़े सौम्य स्वभाव के अच्छे समझदार कार्य

कुशल प्रतिष्ठा सम्पन्न व्यक्ति हैं। आपकी फर्म तुल्लापट्टी में बहुत महत्वप्रद स्थान लिये हुए हैं हैसियन बोरे का काफी काम आपकी फर्म में होता है। आपके सरल स्वभाव एवं विनम्रता के कारण व्यापारिक समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा व इज्जत है। आप वैसे उदार स्वभाव के अनुभवी प्रेमी महानुभाव हैं। इन्हीं सब कारणों को लेकर मुखरामदास लक्ष्मीनारायण फर्म में बहुत सम्मान के साथ कारोबार करते हैं।

आपके सहयोग में आपके भाई शिवनारायणजी फर्म का काम देखते हैं यह भी बहुत सुयोग्य विनम्रसार तथा प्रतिभा सम्पन्न बुद्धिमान व्यक्ति हैं। और कलकत्ते में आप लोगों की बहुत बड़ी मान प्रतिष्ठा है।

श्री लच्छूरामजी सूगला

आपका गग गोत्र है। आपके रहने के स्थान हालु बाजार में है। आपका जीवन सार्वजनिक जीवन है। आप सर्व प्रिय महानुभाव हैं आपने कलकत्ता में व्यापारिक क्षेत्र में काफी कार्य किया है आजकल आप शान्ति पूर्वक भजन करते है आपके छोटे भाई श्री हरदत्तरायजी सूगला वकील हैं।

श्री हरदत्तरायजी सुगला

आपका जन्म सन १९०२ में हुआ आपने बड़ी योग्यता से बी. ए. एल. एल. बी. की परीक्षा पास की और भिवानी में अपना वकालत का कार्य प्रारम्भ किया। आपने इस क्षेत्र में अच्छी सफलता प्राप्त की आपका विवाह पंजाब केशरी लाला लाजपतराय की दोहित्री श्री हरिकृष्ण एडवोकेट हिसार की सुपुत्री श्रीमती सत्यदेवी के साथ सम्पन्न हुआ। आप १९३२

से १९३५ तक भिवानी म्युनिसोपल कमेटी के मैम्बर भी रहे उस जीवन में कई एक कार्य जनता के हित के लिये किये भिवानी अनाथालय की भी काफी उन्नति थी। आपका भिवानी का जीवन सार्वजनिक जीवन रहा बाद में आप बिरला बादर्स में आये आप भिवानी टो. आई. टी. के सलाहकार वकील रहे फिर कलकत्ते में भारत एयरवेज के जनरल मैनेजर एवं एयर ट्रान्सपोर्ट एसोसियसन आफ इन्डिया के वाईस प्रेजीडेन्ड पदको सुशोभित करते रहे हैं आप कलकत्ते में कई एकसार्वजनिक संस्थाओं के सम्मानित सदस्य हैं। अब आप भारत प्रसिद्ध श्री बिडलाजी के कानून सलाहकार पद पर योग्यता पूर्वक ससन्मान कार्य कर रहे हैं।

श्री ठाकुरदतजी सूगला



आप कलकत्ते में इनकमटैक्स की वकालत करते हैं। बहुत योग्य मिलनसार एवं कुशल वकील होने के कारण थोड़े ही दिनों में आप कलकत्ता के व्यापारी समाज में विश्वासपात्र व्यक्ति समझे जाने लगे हैं। वैसे आप उद्योगी, परिश्रमी तथा कार्य निपुण व्यक्ति हैं। और आपका आफिस ४०२ अपरचितपुर में है।

श्री मदनलालजी खेचूका

आपका गोत्र जिन्दल है। आप एक सच्चे कांग्रेस भक्त के सुपुत्र हैं जिन्हें कई बार आन्दोलन में जेल यात्री होना पड़ा

था। स्व० कन्हैयालाल जो खेचूका से प्राय सभो भिवानी वाले परिचित हैं। आप बड़े मिलनसार सुख दुख के हर व्यक्ति के साथी बन जाते थे। आपके पुत्र मदनलाल श्यामसुन्दर दोनों ही अपने पिता के समान मिलनसार मृदुल स्वभाव, व्यापार कुशल एवं व्यवहार कुशल महानुभाव हैं। आप दोनों श्री संगत रायजी आशाराम के दोहित्र हैं और कलकत्ते में ही अपना कारोबार करते हैं।

उमरिया परिवार

इस परिवार में श्री सन्तलालजी उमरिया प्रसिद्ध व्यक्ति एवं व्यापार कुशल पुरुष हैं। आपका कारोबार बम्बई में है और तेरा पन्थी सम्प्रदाय के भक्त हैं। आपके चि० अंगुनुमल जगदीशप्रसाद आदि सुपुत्र हैं जो बम्बई में अपनी फर्म में काम करते हैं।

दूसरे श्री विश्वेसरलालजी साधु स्वभाव युक्त धार्मिक विचारों के शंकरभक्त परोपकारी पुरुष हैं। बम्बई के श्री भोले-श्वर महादेव मन्दिर में आपके द्वारा बहुत धार्मिक कार्य समय २ पर निर्माण हो चुके हैं जिससे आपका यश और नाम अमर हैं। आप बड़े सन्तोषी, पवित्रात्मा सादे जीवन के महानुभाव हैं। आपके पुत्र नन्दकिशोरजी उमरिया सार्वजनिक कार्य कर्ता, बहुत मिलनसार प्रेमी स्वभाव और मित्रों के मित्र उदार-मना व्यक्ति हैं। दूसरे पढते हैं।

गोबिन्दराम उमरिया, अच्छे स्वभाव के मिलनसार, व्यक्ति हैं। विशेषकर भिवानी ही रहते हैं और अपना कारोबार अलग ही करते है।



श्री किशोरीलाल जी अग्रवाल
[किशोरीलाल गोबिन्दराम कलकत्ता]

श्री किशोरीलालजी तोला

आपका जन्म माघ कृष्णा ८ सम्वत् १९५६ का है। १३५ तुल्लापट्टी कलकत्ता में आपकी प्रतिष्ठित फर्म पर हैसियन बोरे आदि का काम ईमानदारी और बहुत अच्छे ढंग से बड़े पैमाने पर होता है। आप वैसे अच्छे स्वभाव के व्यापार कुशल और समझदार उदार प्रकृति के व्यापारिक समाज में सुयोग्य व्यक्ति हैं। भिवानी में आपकी काफी जायदाद है। आपके



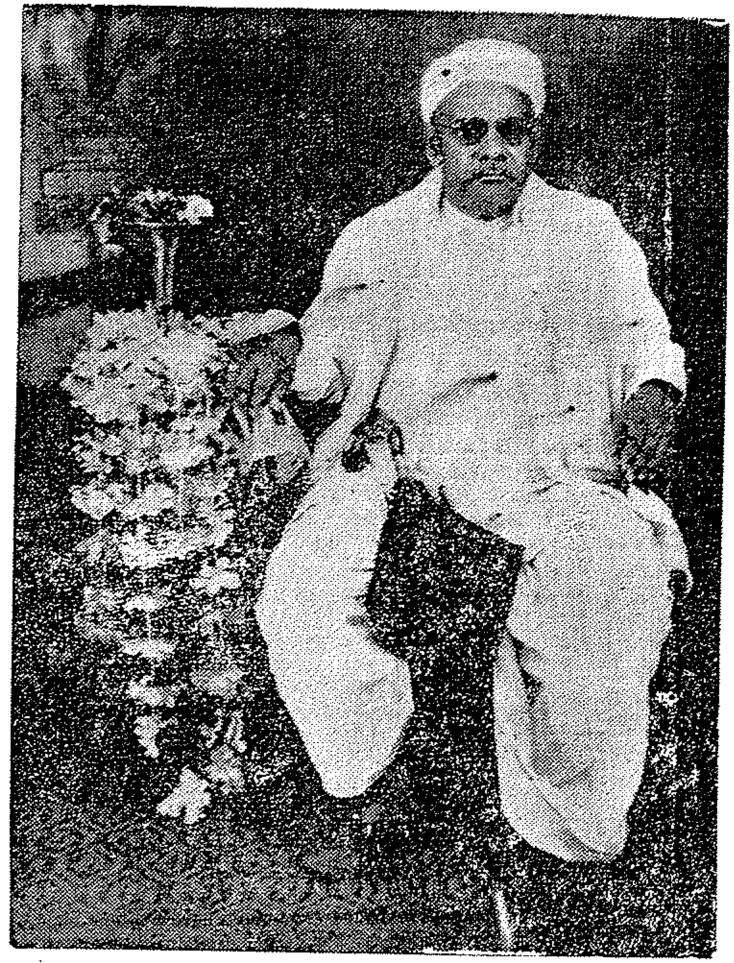
श्री गोविंदराम जी अग्रवाल कलकत्ता

चि० गोविन्दराम जी सुयोग्य और सार्वजनिक कार्य क्षेत्र में काफी भाग लेते हैं और फर्म का कार्य भी देखते हैं। कलकत्ता के व्यापारी समाज में श्री गोबिन्दराम ने बहुत अच्छा सम्मान प्राप्त किया हुआ है। तुल्लापटी में भी आपकी पूर्ण प्रतिष्ठा है।

महादेवप्रसाद तोला—आप विशेषकर रायगढ़ में ही कारोबार करते हैं। पहले आप भिवानी में रह कर काम करते रहे। आपको गायन एवं वाद्य विद्या का शौक भी है। वैसे आप मिलनसार और प्रसन्नचित रहने वाले व्यक्ति हैं।

ठेकेदार परिवार

श्री रामविलास जी ठेकेदार: आपका गोत्र गोयल है आपकी प्रसिद्ध फर्म - कन्हैयालाल रामविलास गाडोदिया मारकेट देहली में बहुत समय से पुरानी किराना की बहुत विशाल रूप में स्थापित है। जहां आप स्वयं बैठ कर कारोबार देखते हैं। वैसे आप किराना कमेटी के सुप्रतिष्ठित सदस्य और सीधे सादे स्वभाव के धर्मप्राण सज्जन हैं। भिवानी में भी आपकी काफी जमीन जायदादे हैं। आपके भाई श्री बनारसीदास जी और सागरमल जी भिवानी में ठेके आदि का काम सम्मान पूर्वक करते हैं आप स्वभाव के सुन्दर मिलन सार कार्य कुशलता प्राप्त किए हुए हैं। आप द्वारा शहर की जो सेवाए हुई है वह वास्तव में सराहनीय है। भजनाश्रम ऋषीकेश के खजांची और कई संस्थाओं के आप सदस्य व पोषक हैं हर काम में आप हिस्सा लेते रहते हैं। आप लोगों का एक बगीचा, कूप, मन्दिर आदि हैं जहां साधु महात्मा निवास करते हैं। आपने



श्री रामविलास जी ठेकेदार
(कन्हैयालाल रामविलास देहली)



श्री शिवमुखराम जी ठेकेदार



श्री गणपतराय जी ठेकेदार

अपनी व्यापार चातुरी के कारण अपने व्यापार को बहुत उन्नत किया है। आपके पुत्र श्री तुलसीराम, गौरीशंकर आदि व्यापार करते हैं सज्जन प्रकृति के सुयोग्य व्यक्ति हैं।

आपके पिता श्री कन्हैयालाल जी बड़े धर्मात्मा थे, उनकी अभिलाषा थी कि–मेरा शरीर गंगातट पर पूरा हो, ऋषीकेश में ही उनका अन्तिम संस्कार हुआ।

श्री जीवनराम गणपतराय ठेकेदार

यह प्रसिद्ध फर्म– ईश्वर भवन खारीबावली देहली में है इस फर्म के प्रोप्राईटर है श्री श्योमुखराय जी गणपतराय जी ठेकेदार बहुत सज्जन धार्मिक विचारों के व्यापार कुशल महानुभाव है। आपके यहां सूत का व्यापार बहुत बड़े परिणाम में होता है। और इनकी प्रतिष्ठित फर्म देहली के व्यापारी समाज में अपना महत्वप्रद स्थान रखती है।

इस फर्म द्वारा समय २ पर अनेकों धर्म कार्य होते रहे हैं अग्रोहा गऊशाला में तथा ऋषिकेश गीता भवन में एक विशाल कमरा बना हुआ है और श्री गणपतराम जी गीता भवन ऋषिकेश के मन्त्री भी हैं कटला काशीनाथ पंचायती क्षेत्रमें आप द्वारा २० वर्ष सेवा होती रही है। आप दोनों भाई बहुत प्रेम सद्भावना एवं बुद्धिमानी के साथ व्यापार कर सफल जीवन बनाये हुए हैं। श्री बंशीलाल ठेकेदार भिवानी के प्रसिद्ध एवं धार्मिक विचारों के महानुभाव हो चुके हैं।

श्री भोलुराम श्यामलाल

इस फर्म के मालिक श्री श्यामलाल जी हैं आपका जन्म १९६२ विक्रमी में हुआ। आपकी प्रसिद्ध दुकान कटला कांशी-

नाथ में बारदाने का काम बहुत उच्च पैमाने पर होता है आप धार्मिक प्रकृति के सुयोग्य व्यक्ति है आप द्वारा निर्माणित एक विशाल कमरा भजनाश्रम बृन्दावन में है जहां सैंकड़ों माइयों द्वारा प्रभु कीर्तन होकर आपका आपके परिवार का सब तरह कल्याण होता है आपके पिता श्री भोलुराम जी बहुत सीधे सादे सज्जन व्यक्ति थे।

श्री हरदेवदास जी मोठलेवाला वंश

श्री पुरुषोत्तमलाल जीः—आपका जन्म १९६२ में हुआ आपका मित्तल गौत्र है। देहली में आपकी सुप्रसिद्ध फर्मः— बैजनाथ बालमुकन्द महावीर बजार कलोथ मार्केट देहली में पुराने समय से है आपके भाई स्वर्गीय बैजनाथजी बड़े सर्व जन प्रिय दूसरे के सुखदुख में सहयोग देनेवाले उदारचित्त व्यापार कुशल महानुभाव थे। आपका परिवार बहुत प्रसिध्द और ख्याति प्राप्त परिवार है। आपके मकान भगसी पाना लौहड़ बाजार में है आपके पुर्वजों ने काफी सम्मान प्राप्त किया आप बड़े मिलनसार ब्यवहार कुशल व्यापारिक वर्ग में ख्याति प्राप्त किये हुए हैं। आपके चि० विमलकुमार सुयोग्य पुत्र है आपके पिता श्री रामेश्वरदासजी तथा भ्राता स्वर्गीय श्री बैजनाथ जी थे।

लुहारीवाला परिवार

भिवानी स्थित लुहारीवाला परिवार दानवीर सेठ किरो-ड़ीमल जी के कारण देश देशान्तरों में बहुत ख्यातिवान है। इस परिवार में जन्म लेकर सेठ जी ने अपना ही नहीं बल्कि इस कुल को उजागर बना दिया हैं।

श्री गणपतराय जी लुहारी वाले

आपकी फर्म कलकत्ते में गणपतराय उमरावसिंह नाम से प्रसिद्ध है। आप बहुत सुयोग्य, मिलनसार तथा व्यापार कुशल थे। १९५३ में आपका स्वर्गवास होगया आपके पुत्र श्री उमराव सिंह, श्रीहरिराम, श्रीधीरजमल आदि २ व्यापार निपुण है और कलकत्ते के मारवाड़ी समाज में सम्मान युक्त व्यक्ति हैं। आपकी फर्म कलकत्ता के व्यापारी समाज में बहुत ख्यातिवान फर्म है।

श्री बेगराज जी लुहारीवाला

आप अधिकतर भिवानी में ही रहते हैं पहिले कलकत्ते में हैसियनबोरे का कार्य करते थे। ग्याराहट्टा लौहड़ बाजार में आपकी विशाल दुकान हैं। आप सीधे सादे सरल प्रकृति के व्यक्ति हैं।

इसी परिवार में श्री दातारामजी, फूलचन्द जी, कुन्जलाल जी, बहादुरमल जी, लखीराम जी, आदि २ हैं। जो अपना योग्यता पूर्वक कार्य करते हैं।

श्री रामकुमार जी लुहारी वाले

आप शान्त प्रकृति के परिश्रमी, व्यवहार कुशल व्यक्ति हैं। श्री सेठ किरोड़ीमल जी के विश्वासपात्र एवं हितैषी हैं। भिवानी सम्बन्धि सभी प्रकार के कार्य कर्ता हैं। सीधे सादे समझदार, गम्भीर स्वभाव के ठोस काम करने वाले अनुभवी सम्मान प्रद सेठजी के अंतरंग कार्य कर्ताओं में से एक है। आपका चि० पुत्र शिक्षा प्राप्त कर रहा है।

ला० हरनामदास जी लुहारीवाले

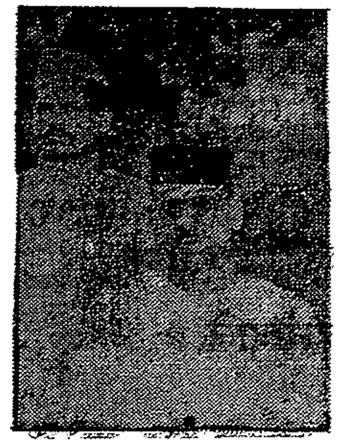
आप गर्ग गौत्री हैं। आदि निवास स्थान लुहारी ग्राम है आप अधिकर लुहारी में ही रहे और वहीं जमींदार व्यवहार करते रहे। आप बडे ख्यातिवान एवं अपनी बिरादरी में माने हुए व्यक्ति हैं अब जब आपके सुयोग्य सुपुत्र श्री बनवारीलाल जी ने कलकत्ते में हैसियन बोरे का काम जोरों पर किया और भिवानी में मकान नोहरे तथा दुकाने बन गई तब से आप भिवानी रहने लगे। आप सादे स्वभाव के तथा मिलनसार प्रभु भक्त महानुभाव हैं। आपके पुत्र श्री बनवारीलाल जी स्वतन्त्र रूप से कलकत्ते में बड़ी नाम प्रतिष्ठा के साथ तुल्लापट्टी में हैसियन बोरे का थोक काम करते है।

बनवारीलाल एण्ड कम्पनी १३४ तुल्लापट्टी में प्रसिद्ध फर्म है। आप बड़े व्यवहार कुशल, मिलनसार, प्रतिष्ठा सम्पन्न व्यक्ति हैं। आपके चि० महावीरप्रसाद विश्वनाथ आदि हैं।

श्री सागरमल जी लुहारीवाले

आप की प्रसिद्ध फर्म तुल्लापट्टी कलकत्ता में बहुत सम्मान की दृष्टि से देखी जाती है। आप धार्मिक विचारों के सुयोग्य एवं मिलनसार महानुभाव हैं। अपके पिता श्री रामनरायण जी सात्विक प्रकृति के सीधे सादे सज्जन व्यक्ति हैं ईश्वर भजन कर शान्ति का जीवन बनाए हुए हैं। आपके पितृव्य—श्री पन्ना लाल जी भी फर्म में ही कार्य करते हैं। आपके भ्राता श्री गजानन्दजो कलकत्ता में बारदाना की चलानीका काम करते हैं।

श्री माधोप्रसाद जी लुहारी वाले



आपका गौत्र गर्ग है। आप बड़े प्रसन्नचित्त, निर्भिमानी कर्मशील, मिलनसार व्यक्ति है। आस्तिक विचारों के सत्य प्रिय कानपुर के व्यापारिक समाज में प्रभावशाली विश्वासनीय समझदार सज्जन है। परिश्रमी व अनुभवी तथा ईमानदार सर्वप्रिय होने के नाते आज आप कानपुर की श्रेष्ठ व प्रसिद्ध फर्म सूरजमल मोतीलाल के पार्टनर हैं। आपने इस फर्म को सफल बनाने में अकथनीय परिश्रम द्वारा महान उत्साह के साथ कार्य किया है।

वास्तव में श्री माधोप्रसाद का समाज में महान व्यक्तित्व है जो सौभाग्य की बात है। इनके सुपुत्र महावीरप्रसाद बी० ए० सुयोग्य उत्तम विचारों का चिरंजीव है। आप के भ्राता श्री कुन्दनलाल जी, लालचन्द जी भिवानी नयाबाजार में फर्म का संचालन करते हैं।

लुहारी वाले

कांशीराम, ज्ञानीराम, हरचन्द परमेश्वरीदास आदि आदि देहली में चलानी का काम करते हैं। आप स्वर्गीय ला० नृसिंह दास जी लुहारीवाले के सुपुत्र हैं।

कटक में लुहारीवाला वंश

यह लुहारीवाला वंश कटक में बहुत प्राचीन समय से निवास करता है, भिवानी से श्री सोजीराम जी लुहारीवाले कटक पहुंचे और कपड़े का व्यापार आरम्भ किया, बहुत मेहनती व नेक नीयत होने के कारण थोड़े ही दिनों में यह कटक के प्रतिष्ठित व्यापारी माने जाने लगे। इस समय—

श्री गुरदयालमल जी लुहारीवाले



आपका गौत्र गर्ग है और जन्म श्रावण रक्षा-बन्धन दिवसपर हुआथा आप बहुत प्रतिभाषाली, व्यवसाय कुशल तथा एक सच्चे जन हितैषी, धर्म प्रिय महानुभाव हैं। कटक में आप की फर्म सोदीराम हंसराज के नाम से प्रतिष्ठित है। इस फर्म पर कपड़े का व्यापार प्रमुख रुप में होता है जिस समय आपके पिता श्री मोतीलाल जी का स्वर्गवास हुआ उस समय आपकी और आपके भाई श्री हरिराम जी की अल्प आयु ही थी आप दोनों भाई बुद्धिमान व चतुर होने के कारण बाल्यावस्था में ही व्यापारिक क्षेत्र में उतर गए फलस्वरूप आज आपकी

कटक में फर्म बहुत प्रतिष्ठा युक्त और आप दोनों भाई सम्मानित व्यक्ति माने जाते हैं। इतनी प्रतिष्ठा प्राप्ति का कारण आपकी सज्जनता व प्रेम मय व्यवहार तथा व्यापार कुशलता ही है। आपके चि० भगवतीप्रसाद, श्यामसुन्दर, निरंजनलाल आदि सुयोग्य पुत्र हैं। श्री हरिराम जी के चि० रामलाल पुत्र हैं। दोनों भाई साझे में ही कारोबार करते हैं।

श्री वासुदेवजी लुहारी वाला

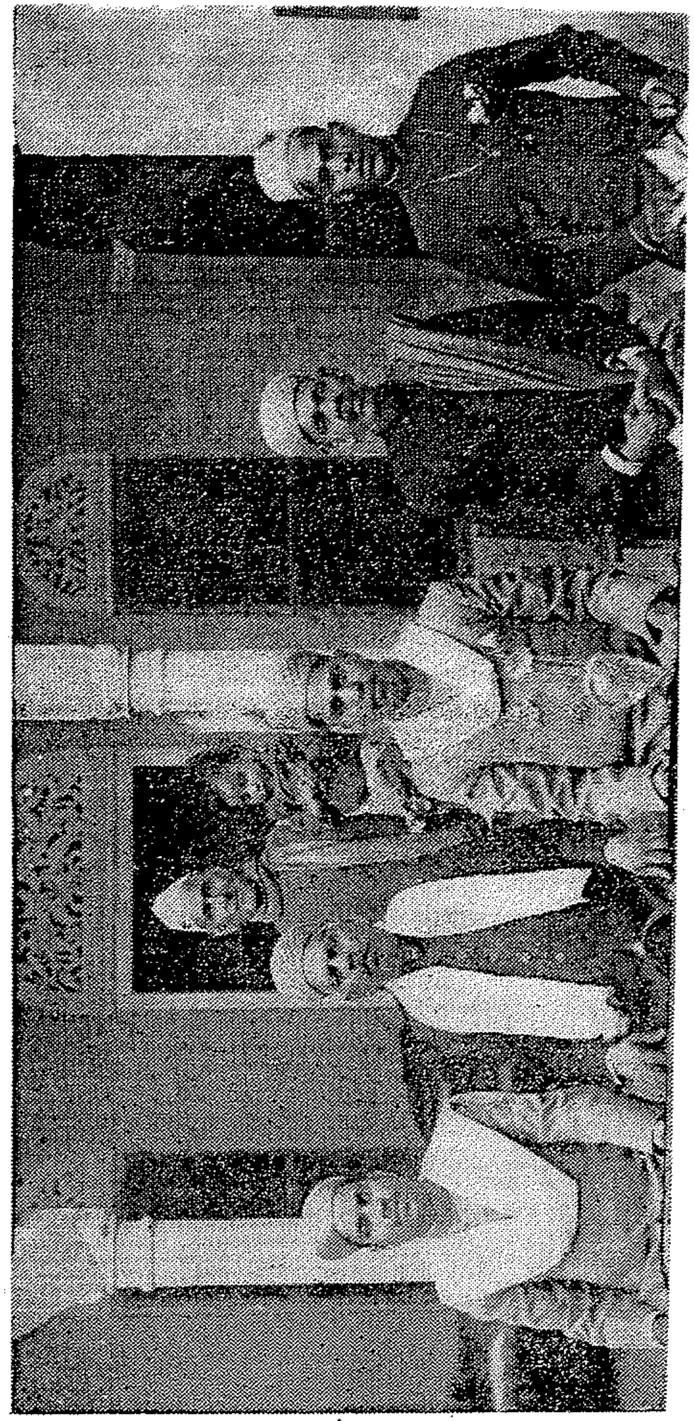
आपकी फर्म—चन्दुराम कालुराम के नाम से श्री जगन्नाथ पुरी में सुप्रसिद्ध है और कपड़े का व्यापार होता है आपके पिता श्री देवनराम जी बहुत धर्मात्मा व सज्जन व्यक्ति हुए हैं। उन्ही के प्रताप से उड़ीसा प्रान्त के व्यापारिक समाज में यह फर्म जगमगा रही है और इस फर्म द्वारा अनेकों धर्म काय जैसे सत्यनारायण मन्दिर कटक का जीर्णोद्धार और श्री जगन्नाथ मन्दिर में भगवान शंकरदेव की स्थापना और गरीब भूखों को प्रतिदिन भोजन होता ही रहता है। श्री वासुदेव जी बहुत सरल स्वभाव के कुशलव्यापारी व सौम्य महानुभाव हैं। मिलनसार एवं सद्व्यवहार ही आपकी विशेषता है। आपके चि० पुत्र श्यामसुन्दरदास, मोहनलाल, ओमप्रकाश सुयोग्य सुपुत्र हैं। आपके बड़े भ्राता श्री रामकुमार जी साधु स्वभाव के सज्जन व्यक्ति हैं। इनके पुत्र का नाम चि० रामकिशोर है।

श्री बाबुलाल जी लुहारीवाला

आप पहिले दिन से ग्यारह हट्ट में पान की दुकान का कार्य करते रहे है। अब देहली में कपड़े की दुकान करते हैं। बड़े मिलनसार अच्छे स्वभाव के सज्जन व्यक्ति हैं।

श्री मोतीराम जी धोना

यह परिवार भिवानी के प्रसिद्ध परिवारों में है पहले इस में अच्छे २ महानुभाव हो चुके हैं वर्तमान समय में श्री मोतीराम जी धोना कलकत्ते में हैसियन बोरे का कार्य करते हैं, इन का बांसल गोत्र है ७२ नं० तुल्लापट्टी में इनकी बहुत पुरानी दुकान है। श्री मोतीराम जी बहुत सरल स्वभाव के सज्जन व्यक्ति हैं तुलसीकृत रामायण के आप बहुत ही रसिक हैं। सत्य व्यवहार सादाजीवन आपका विशेष गुण है सनातन विचारों के आस्तिक व्यक्ति हैं। प्रत्येक धर्मकार्य में आप की बहुत ही रुचि रहती हैं, धार्मिक कार्य को देख कर आप में उत्साह जागृति हो जाता है। जहां भी तुलसीकृत रामायण का पारायण हो रहा हो वहीं आप हनुमान जी की तरह आगे बैठे मिलते हैं। आप ईश्वर पर पूरा भरोषा रखतेहैं। इस समय भिवानी अनाज मण्डी में आपकी तरफ से एक प्याउ संचालित है। तुल्लापट्टी में आपकी फर्म का नाम 'सीताराम सत्यनारायण' पड़ता है। यह फर्म अपनी ईमानदारी व कम मुनाफे के कारण बहुत सम्मान प्राप्त किये हुए है। आज दिन तुल्लापट्टी में श्री मोतीराम जी की बहुत बड़ी इज्जत है। इनके पुत्र चि० गोकलचन्द, सत्यनरायण, रामजीलाल आदि हैं जो अपने पिता जी की आज्ञा में रहकर कार्य करते हैं। श्री मोतीलाल जी के भाई श्री विलासराय जी साधु प्रकृति के सौम्य महानुभाव हैं। आप व्यापार को हर तरह उन्नत बनाने में संलग्न रहते हैं। दोनों भाई साझे में प्रेम पूर्वक व्यापार करते हैं। श्री विलासराय के पुत्रों का नाम-सेठमल, सीताराम, सांवलराम आदि हैं जो शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।



श्री हरीराम जी खरकिया परिवार सहित

श्री हरीराम जी खर्राकिया

श्री हरिराम जी का जन्म वि० १९५३ में हुआ था। इन का गौत्र गोयल है। तुल्लापट्टी में हैसियन बोरों का कार्य करते, हैं और इनकी फर्म का नाम हरिराम रामकुमार १३२ नं० तुल्लापट्टी पड़ता है। श्री हरिराम जी प्राचीन विचारों के आस्तिक व्यक्ति हैं। व्यापार में रत रहकर अपने फर्म की हर तरह उन्नति में लगे रहते हैं। आप सात्विक प्रकृति के धार्मिक महानुभाव हैं। इनके पुत्र श्री रामकुमार जी एवं रामकिशन जी पूर्ण रूप से पितृ भक्त हैं। हरिराम जी के भाई नरसिंहदास जी भी इन की तरह ही बहुत सीधे सादे व्यक्ति हैं। आजकल की नई रोशनी से यह परिवार बहुत दूर है, समस्त परिवार की धर्म में निष्ठा तथा अपने व्यापारोन्नति की ओर लक्ष रहता है। श्री नरसिंहदास जी के श्रीलालचन्द जी तथा श्रीनिवास जी दो पुत्र हैं यह भी फर्म पर बहुत सावधानी के साथ कार्य करते हैं। कलकत्ता में जैन मन्दिर के पास एक जल-क्षेत्र बारह मास चालू रहता है। इस फर्म द्वारा अनेकों धार्मिक कार्य हुए हैं। खरक में एक विशाल कूप तथा मन्दिर है और स्कूल के लिए एक कमरा भी बनवाया गया है। इनकी एक सुविशाल सुन्दर दुकान लौहड़ चौपटे में विद्यमान हैं।

श्री विश्वेश्वरलाल जी

आपका गोयल गौत्र है। आप बड़े परिश्रमी मिलनसार प्रेमी सज्जन हैं। आपकी फर्म उन्नीकाल एण्ड कम्पनी १३५ तुल्लापट्टी में सम्मानित फर्म है। हैसियन बोरा तथा डिस्पोजल आदि कई तरह का थोक व्यापार होता है। आप ही के उद्योग एवं परिश्रम के कारण फर्म ने बहुत प्रतिष्ठा के

साथ साथ धनोपार्जन काफी रूप में कर व्यापारिक समाज में धाक जमा रखी है। आप के प्रेम बर्ताव के कारण हर व्यक्ति आप में श्रद्धा एवं प्रेम रखता है, प्रथम समय से ही आपकी कार्य करनेकी शक्ति आपकेभाग्यउदय करनेमें सहायक रही है। कलकत्ते में आपने अपने बाहुबल द्वारा व्यापार में सफलता प्राप्त कर बांसतल्ला लैन में निज का मकान निर्माण करवाया है। आप बड़े उदार स्वभाव के मिलनसार प्रेमी सज्जन, हैं। भिवानी में भी आपका निवास स्थान बहुत बड़ा बन सुन्दर बना हुआ है। आपके चि० जगदीशप्रसाद गोपीनाथ, आदि पुत्र शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

श्री भज्जुराम जी का वंश

यह परिवार बहुत पुराना और सम्मानित परिवार रहा इस परिवार में बड़े २ ईश्वर भक्त धर्मात्मा हो चुके हैं, जिन के द्वारा किए गए धर्म कार्य आज भी उनकी स्मृति स्वरुप बने हुए हैं।

श्री मुरलीधरजी बड़े मिलनसार, कार्य कुशल व्यक्ति हैं। इनके ओमप्रकाश, राजेन्द्रप्रसाद पुत्र हैं। श्री लछीराम जी कपड़े का व्यापार करते है। शिवकुमार राजकुमार आदि पुत्रहैं।

भालोठिया—परिवार

यह परिवार भिवानी का प्रतिष्ठित एवं सम्माननीय परिवार है पहिले इस परिवार में बहुत सुयोग्य धर्मनिष्ठ महानुभाव होचुके हैं।

श्री बैजनाथ जी भालोठिया

आप कलकत्ते के शेयर बाजार में सम्मान पूर्वक कार्य करते हैं। आपने अपने व्तक्तित्व के कारण कलकत्ता में अच्छा सम्मन प्राप्त किया है। आप व्यवसाय निपुण समझ व्यक्ति हैं।

श्री बृध्दिचन्दजी भालोठिया

आपकी सुप्रसिद्ध फर्म मन्नालाल भालोठिया नामसे कलकत्ते में ख्यातिवान है। और इस फर्म पर शेयर हैसियन बोरे आदि का कार्य बहुत बडे परिमाण में होता है।

श्री बृद्धिचन्दजी भालोठिया धर्म प्रिय उदार हृदय के कर्मनिष्ट सुयोग्य व्यक्यि हैं। और कलकत्ता मारवाड़ीसमाज में आपका गौरव आपके सत्यव्यवहार एवं कार्यकुशलताके कारण सभ्य समाज में सम्मान प्राप्त किये हुए हैं। आप द्वारा अनेकों धर्म कार्य हुए हैं, और होते ही रहते हैं। आपकी मातृ भक्ति आज के युग में महान आदर्श है आप प्रतिभा सम्पन्न सद् विचारों के व्यापार निपुण वैश्य जाति के होनहार नर रत्न हैं।

आपका विशाल भवन ७ लायरेन्स रोड कलकता में आपके समृद्धिशाली एवं भाग्यशाली होने का परिचय दे रहा है। आपका मारवाड़ी समाज में ही नहीं बल्कि कलकत्ता के समस्त सभ्य समाज में विशिष्ट स्थान है।

आपके चि० सांवलराम जी केशोरामजी महावीरप्रसादजी वासुदेवजी ओमप्रकाश आदि २ सुयोग्य एवं व्यापार निपुण आपकी आज्ञा में रह कर कार्य करने वाले चिरंजीव है।

चमड़िया परिवार

आप की फर्म बम्बई में इन्द्रमल चिरंजीलाल नं० १२ स्वदेशी मारकेट कमिशन एजन्सी के नाम से प्रसिद्ध है और बहुत पुरानी फर्म है। इस फर्म की व्यापारिक क्षेत्र में बहुत ख्याति व नाम है। इस फर्मके मालिक श्री बुद्धरामजी श्री बिलासरायजी और श्री बनारसीदास चमड़िया हैं जो बहुत ही सुयोग्य मिलनसार कार्य कुशल प्रसिद्ध महानुभाव हैं। भिवानी में भी आपकी फर्म है जिसमें कपड़े का ही काम विशेष रूप में होता है। आप सभी के विचार धार्मिक हैं।

श्री बाबुलालजी चमड़िया

आप भिवानी के प्रसिद्ध सार्वजनिक कार्यकर्ता व अनेकों संस्थाओं के सदस्य एवं उच्चपदाधिकारी हैं गौपाल गौशाला की आप द्वारा जो उन्नति हुई है वह आपकी गौ भक्ति का ज्वलन्त उदाहरण है। आप भिवानी ट्रेड एसोसियेसन के प्रधान रह कर इस संस्था की बहुत उन्नति करते रहे हैं।

अब आप कलकत्ता में व्यापार कर वहां के सभ्य समाज में पूर्ण प्रतिष्ठा प्राप्त किए हुए हैं। आप वीर पुरुष, मिलनसार एवं सुख दुख में साथ देने वाले जनहितैषी व्यक्ति हैं।

श्री लीलूरामजी कबाड़ी

इनका गोत्र सिंगल है। आप स्व० हरनारायणजी के द्वितीय पुत्र हैं।

भिवानी में आपकी फर्म लीलूराम गजानन्द और रोहतक में हरनारायण पुरुषोत्तमदास के नाम से प्रसिद्ध हैं। काठ

ईमारती लकड़ी का बहुत पैमाने पर कारोबार होता है। वैसे आप सर्वप्रिय मिलनसार कार्यकुशल प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। शहर के हर एक कार्य में आपका सहयोग रहता है। बगीचा मन्दिर, कूप आदि आपके यहां पर विद्यमान हैं आपके पुत्र ताराचन्द पुरुषोत्तमदास अपनी फर्मों का कार्य कुशलता पूर्वक करते हैं। आपके सबसे सुयोग्य गजानन्दजी का बहुत छोटी आयु में ही शरीर शान्त हो गया था। आपकी रोहतक में बहुत पुरानी दुकान करीब ३२ वर्ष से संथापित है।

आपके छोटे भाई श्री मोहनलालजी भिवानी रोहतक में काठ, ईमारती लकड़ी का कार्य करते हैं। इनके चन्दूलाल आदि पुत्र हैं।

श्री बाबुलालजी कबाड़ी

आप वीरात्मा सरल व साधु स्वभाव के स्व० ईन्द्राजमल कबाड़ी के सब से बड़े सुपुत्र हैं आपकी फर्म इन्द्राजमल बाबूलाल काठ मन्डी रोहतक में करीब ३२ वर्ष से संचालित है। जहां पर ईमारती लकड़ी का बहुत बड़े प्ररिमाण में काठ का कारोबार होता है। आप बड़े साहसी उद्योगी परिश्रमी एवं मिलनसार व्यापार कुशल महानुभाव हैं। काठ के व्यापारिक क्षेत्र में आपकी महान प्रतिष्ठा है। बड़े २ जंगलों के आप ठेके लेकर बड़े सिद्धहस्त व्यापारी हो चुके हैं। भिवानी तथा रोहतक में आपकी काफी जायदाद एवं रहने के मकान आदि हैं। आप उदार स्वभाव के होते हुए भी गुप्त दान को ज्यादा प्रोत्साहन देते रहते हैं। आपके छोटे भाई श्री बनारसीदासजी मोतीराम दीनदयालजी सब कार्य कुशल सज्जन व सुयोग्य है आप सभी

महानुभाओं की व्यापारीवर्गमें इज्जत है। आपके पुत्र महावीरप्रसाद, विष्णुदत्त, बजरंगलाल शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

कागजी परिवार

श्री सेठ नानगराम जी गिरधारीलाल जी जैन बड़े प्रतिष्ठित, समझदार, एवं कागज के व्यापारी हैं। आपका सभी परिवार तेरह पन्थी जैन सम्प्रदाय का माननेवाला है। देहली, कलकत्ता, बम्बई एवं भिवानी में आप महानुभाओं की प्रसिद्ध एवं गौरव पूर्ण सम्पत्तिशाली फर्में हैं जहां पर कागज का बहुत बड़े परिमाण में व्यवसाय होता हे। विदेशों में भी आपकी फर्म की काफी धाक व इज्जत है आपने अपने बाहुबल द्वारा उपार्जित सम्पत्ति से देहली में अपने २ अलग अलग भव्य भवन पूर्ण सुख व आरामप्रद बनवा लिए हैं। आप दोनों भाई बडे उदार और मिलनसार सबका सम्मान करने वाले सज्जन हैं।

श्री नानगराम जी बड़े ही भोले भाले शान्त एवं सरल स्वभाव और गम्भीर व विनम्र स्वभाव के धर्मात्मा हैं और श्री गिरधारीलाल जी बड़े चतुर आफिसरों में अपने प्रभाव को गौरव युक्त बनाए हुए हैं। बड़े सौभाग्यशाली, उच्च विचारों के पुरुष हैं। देहली में होने वाले प्रायः उत्सव समारोह चाहे वह किसी भी समाज सम्प्रदाय के क्यों ने हो, आप पूर्ण सहयोग एवं साथ देते हैं। देहली में जब आचार्य श्री १०८ महाराज श्री तुलसी गणी जी का चतुरमास हुआ उसकी सफलता का बहुत सा श्रेय आप दोनों भाइयों को ही है।

आप दोनों भाइयों का व्यापार अलग २ है। फिर भी आपका परस्पर पर में महान प्रेम एवं स्नेह है। यह एक बड़े



ला० गिरधारीलाल जी कागजी
(वृद्धिचन्द गिरधारीलाल देहली)



ला० जुगलकिशोर जी रतेरिया
(रामलाल कन्हैयालाल कलकत्ता)

सौभाग्य की बात है। बहुत सम्पत्तिशाली होने पर भी आपका रहन सहन बड़ा सादा और जीवन महान है। श्री नानगराम जी के सुयोग्य सुपुत्र पिता की आज्ञा को हर समय मानने वाले श्री बालचन्द जी जैन हैं बड़े मृदुभाषी व्यापारकुशल योग्य हैं।

श्री गिरधारीलाल जी का सुपुत्र श्री सुमेरचन्द जैन उदार स्वभाव साहित्य प्रेमी पितृ–भक्त प्रभावशाली सज्जन हैं। और दूसरे शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

यह परिवार समाज में सभ्य एवं माननीय परिवार हैं।

श्री फूलचन्द जी कागजी

आप सुधारवादी एवं राष्ट्रीय विचारोंके व्यक्ति हैं बम्बई में आपको फूलचन्द डी० एण्ड के नाम से कागजों का अच्छे परमाण पर कारोबार होता है आपके ज्येष्ट भ्राता भक्त लक्ष्मीनरायण जी विशेष समय प्रभु चितन में ही लगाते हैं।

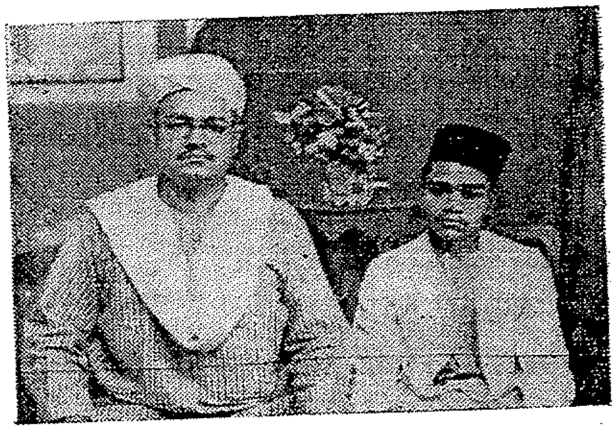
चोखराज कागजी–आपके यहां चिरंजीलाल चोखराज फर्म के नाम से कागज, बहीखाता आदि का काम होता है। आप प्रभु भक्त तथा खाखीबाबा के सेवक है। आपसे छोटे मुन्शीराम जी अपना अलग व्यापार करते हैं। श्री भोजराज जी रायगढ में कागज का काम करते हैं।

गोकलचन्द जी कागजी–स्व० मोहकममल जी कागजी के पुत्र हैं और कागज की दुकान करते हैं।

श्री गुलराज जी–कागज का कार्य करते रहे हैं। बड़े योग्य, और मिलनसार हैं। आजकल आप कानपुर में बारदाने का काम कर रहे हैं।

श्री अंगनामल जी कागजी—आपकी कागज की दुकान बजाजे में शंकरदास अंगनामल कागजी के नाम से प्रसिद्ध है यह दुकान भिवानी में बही बसने का कार्य करीब दोसौ वर्ष से करती आ रही है श्री अंगनामल जी के पुत्र भानाराम ताराचन्द नानगराम सुयोग्य एवं कार्य कुशल है।

श्री रोशनलाल छन्नूमल जी केडिया



आप स्व० मदनलालजीकेडिया जो अपने जीवनके समय में एक सार्वजनिक कार्यकर्ता तथा ख्यातिप्राप्त व्यक्ति हो चुकेहैं उनके पुत्र हैं रोशनलाल जी अपना कारोबार देहली में किराना और आढत का करते हैं। प्रभुभक्त, सनातन विचारों के अच्छे व्यक्ति हैं। आपसे छोटे श्री छन्नूमल जी केडिया अधिकतर भिवानी ही रहते हैं और अपना अलग कार्य करते हैं।

जयनारायण जी केडिया:—आपके यहां टोपियों का कार्य होता है। वैसे यह परिवार बहुत बड़ा परिवार हैं।

श्री जयनारायण जी केडिया:-जिनका मकान हालुबाजार में है और आढत तथा गल्ले आदि का काम करते है।

घाटु का परिवार

यह परिवार भारत प्रसिद्ध परिवार है। इसी वंश में स्व० तेजराम जी एम. ए. हुए हैं जिन्हों ने गणित की बहुत उत्तम और काफी पुस्तके लिखी हैं। जो आज भी कई युनिवर्सिटियों द्वारा पाठ्य-क्रम में नियत हो चुकी हैं। इनके सबसे बड़े लड़के पीताम्बरदास एम. ए. हैं जो पहिले लाहौर में भी पुस्तकों का कार्य ही करते थे। अब देहली में भी पुस्तक प्रकाशन व बिक्री आदि करते हैं। दूसरे—

गौरधनदास जी एम. ए. बहुत ही सुयोग्य, मिलनसार कार्य कुशल, तीव्रबुद्धि और परिश्रमी व्यक्ति हैं। आपने अपने छोटे ही जीवन में महान कार्य किए, बम्बई में एक अंग्रेजी का पत्र निकाला और उसके आप सफल सम्पादक रहे। आज कल सिनेमा लाइन में सामाजिक सुधार वादी और लोकप्रिय फिल्मों का प्रदर्शन कर भिवानी के नाम को रोशन कर रहे है। आपकी फिल्म—डाकबंगला, अफसाना, शोले, साहिल आदि हैं। आप बहुत प्रसन्नचित्त, हंसमुख, पवित्र—विचारों के संयमी, सर्वप्रिय महानुभाव हैं। आपसे छोटे श्री छोटेलाल जी एम. ए. हैं जो आपके ही साथ योग्यता पूर्वक कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य करते हैं। आपका भ्रातृ प्रेम अत्यन्त सराहनीय है। आप दोनों भाई वास्तव में अपने पिता के तुल्य ख्याति प्राप्त महानुभाव है।

आपके भव्य भवन सराय चौपटा में है। आपका जीवन सुखी व मान प्राप्त है।

श्री गोपीराम जी दलाल

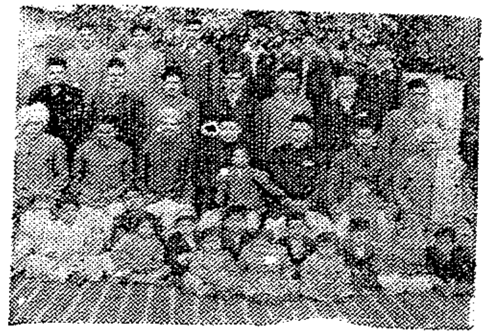


आप बहुत दिनों से दलाली का कार्य करते हैं, और चांदी वाले के नाम से प्रसिद्ध हैं। आपका जन्म १९६१ का है और गौत्र बिन्दल है। आप शर्राफा बाजार के ख्याति प्राप्त समझदार सर्व प्रिय दलाल हैं। आपका व्यक्तिगत ताल्लुक बड़ी २ फर्मों से हैं।

आप आस्तक विचार उदार स्वभाव वाले महानुभाव हैं। आपके भ्राता श्री मनोहरलाल जी सागरमल जी भी दलाली का ही कार्य करते हैं। आपके सुपुत्र पुन्नमचन्द कपड़े का कार्य करते हैं।

सिंघानियां परिवार

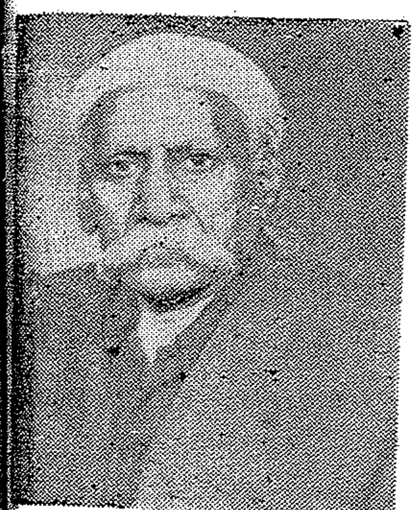
आपका गौत्र सिंगल है, श्री जगन्नाथ जी (जग्गीमल) सिंहानिया जिनकी फर्म देहली में तुलसीराम जुगलकिशोर क्लोथ मार्केट एवं जगन्नाथ राधेश्याम कटला नवाब साहेब जगन्नाथ श्री कृष्णदास नईसड़क में कपड़े का बहुत बड़े पैमाने पर कार्य होता है। आपका सभी परिवार बड़ा आस्तिक और धर्म प्रिय परिवार है आप मारवाड़ी धर्मशाला के प्रधान हैं और देहली की अनेकों संस्थाओं व कमेटियों के सम्मानित सदस्य भी हैं। व्यापारिक समाज एवं धार्मिक वर्ग में आपकी महान ख्याति व मान है। वैसे आप बड़े सरल स्वभाव के सुयोग्य व्यक्ति हैं। कुण्ड स्टेशन जो नारनौल के पास में है वहां आपकी विशाल धर्मशालाहै वृन्दावन ऋषीकेश भजनाश्रम



पत्थरवाला परिवार



श्री रामसिंह जी वैद म्यु० क०



श्री लक्ष्मीनरायण जी बगड़िया



श्री द्वारकादास जी हूणीवाले

के आप बहुत बड़े सहयोगी हैं। राजस्थान में भी आपकी कई एक फर्में हैं। जहां गल्ला आदि का कारोबार होता है।

आप उदार स्वभाव धर्म प्रिय गौरवशाली सज्जन हैं। आप के चि० श्री मुरलीधर जी, श्रीकृष्णदास जी, रामकिशन जी, बहुत योग्यता पूर्वक फर्म का कार्य सम्भाले हुए हैं। श्री राधेश्याम जी, श्री गणपतराय जी के, और बालकृष्ण जी नरसिंहदास जी सिंहानिया के दत्तक पुत्र हैं।

बगड़िया परिवार

इस परिवार के अनेकों व्यक्ति भारत के विभिन्न भागों में व्यापार कर अपनी सुयोग्यता का परिचय दे रहे हैं।

श्री लक्ष्मी नरायण जी बगड़िया

आपका जन्न १६३३ में विक्रमी और गौत्र गर्ग है। सुभाषचन्द्र, रामावतार नाम से आपकी प्रसिद्ध फर्म रामबाजार क्लोथ मार्कट में कपड़े का कार्य बहुत उच्च परिणाम में कर देहली के कपड़ा व्यापारी समाज में ख्यातिवान बनी हुई है। पहिले श्री लक्ष्मीनरायण जी करांची में कपड़े का कार्य करते थे वहां इनकी फर्म बहुत समृद्धिशाली एवं पूर्ण सफल फर्म थी। अब देहली में आकर अपने उद्योग और साहस के बल पर काफी उन्नति की है। श्री लक्ष्मीनरायण जी धार्मिक विचारों के प्रभु भक्त सीधे सादे सरल स्वभाव के सज्जन व्यक्ति हैं। आपके पुत्र श्री लक्ष्मीचन्द जी के श्री जगदीशचन्द्र जी, सुभाषचन्द्र, कैलाशचन्द, रामावतार सभी योग्य व कुशलता पूर्वक कार्य करते हैं।

श्री सूरजभान जी बगड़िया

आप बहुत मिलनसार भारतीय विचारधारा के कर्मशील व्यक्ति हैं। आप अंग्रेजी में भी अच्छा ज्ञान रखते हैं और भिवानी में हिन्दुत्व विचार के प्रसार का श्रेय अधिकतर आप ही को है। आप उत्साही, व्यापार निपुण और समझदार व्यक्ति, हैं।

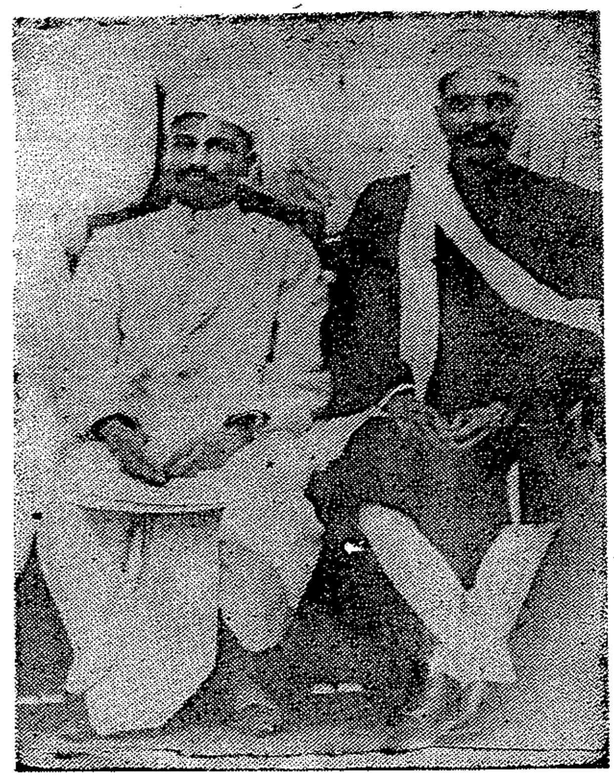
श्री बजरंगलाल जी—आपको चंग पर ख्याल गाने का अच्छा अभ्यास है।

डूणीवाला परिवार

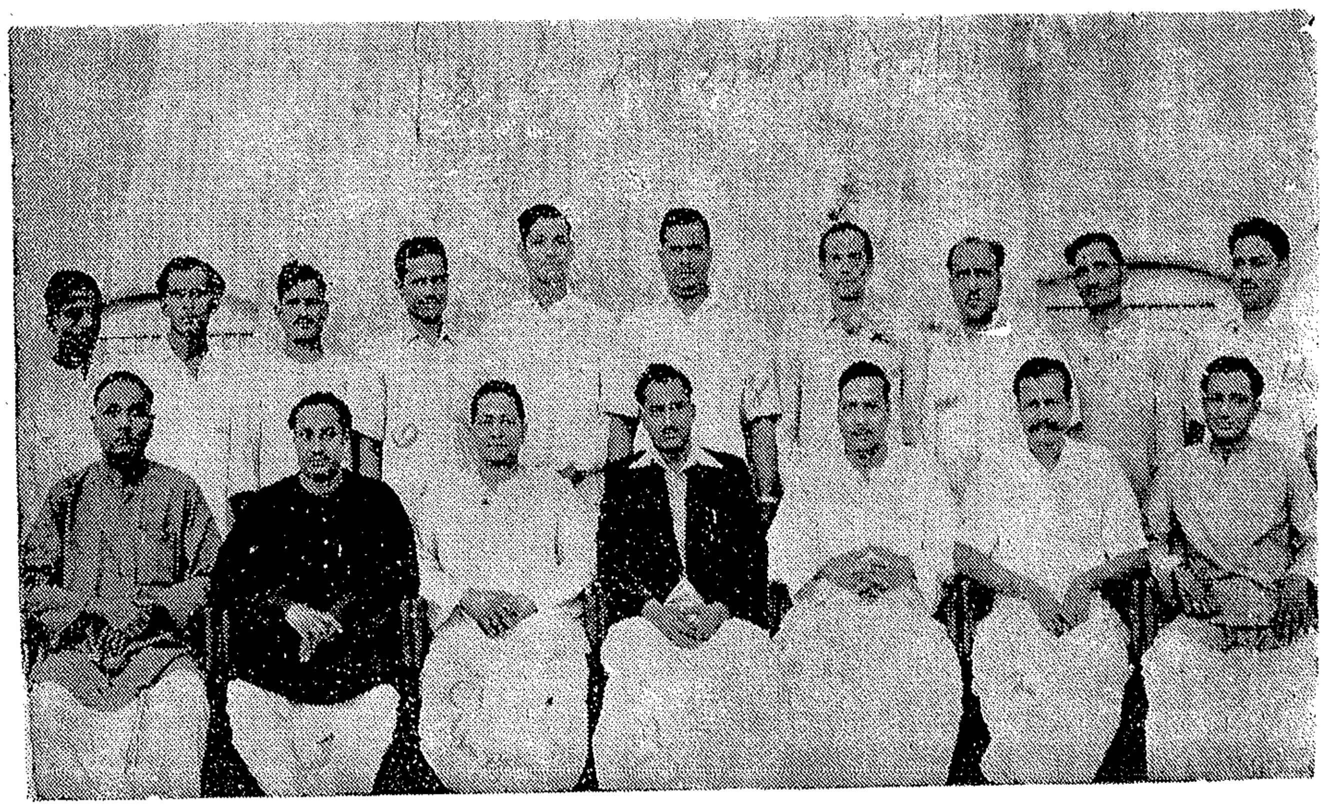
इस परिवार में बहुत प्रतिष्ठित व्यक्ति हो चुके हैं और अहमदाबाद में मन्दिर, शिवालय, आदि अनेकों धार्मिक स्थान स्थापित किए हैं। श्री द्वारकाप्रसाद जी गर्ग बहुत अच्छे सुयोग्य प्रभु भक्त सनातन विचारों के व्यक्ति हैं। आपकी निष्ठा प्रभु के चरणों में, वर्णाश्रम धर्म में पूर्ण रूप से विद्यमान है। आप अच्छे वक्ता मिलनसार, सत्यप्रिय सन्तों के कृपा पात्र है। आपका जीवन अधिकतर सार्वजनिक सेवा में व्यतीत होता है। आप पक्के सनातन धर्मी एवं प्रतिष्टाशाली महानुभाव हैं। आप के छोटे भाई श्री कन्हैयालाल जी आपके ही साथ कार्य करते हैं। इसी परिवार में श्री बजरंगलाल जी श्री जगन्नाथ जो एक सुयोग्य व्यक्ति हैं और रंगून कारोबार करते हैं।

कटक में मोड़ा परिवार

यह भिवानी का सुप्रतिष्ठित मोडा परिवार कटक (उड़ीसा में निवास कररहा है। लगभग सवासौ वर्ष पहले संवत् १८८२ में श्री ला० परशुराम जी मोड़ा व्यापार करने के



रा० सा० श्री गिरधारीलाल जी मौडा,
श्री गोपीराम जी मौडा



हिन्दी साहित्य समाज कटक

लिए भिवानी से पैदल चल कर एक मास में कटक पहुंचे थे। वहां जाकर इनके भाग्य ने अपना प्रसार प्रारम्भ किया जिसके परिणाम स्वरूप इनकी व्यापारिक उन्नति दिनोदिन बढ़ती गई और यह कटक में ही नहीं बल्कि समस्त उड़ीसा में इनका व्यापार सत्यता और इमानदारी के कारण रोशन हो गया। इस परिवार में—

श्री गिरधारीलालजी मोडा

यह तमाम उड़ीसा प्रान्त के माने हुए नर रत्न, देश भक्त जाति सेवक, सुविख्यात महानुभाव हुए। कहा जाता है सरकारी विभाग में ला० गिरधारीलाल जी का इतना सम्मान था कि बड़े २ आफिसर भी इनके पास आकर सर्व प्रथम मिलते थे। इनकी धार्मिकता में उत्कठ भावना होने के कारण कटक में सर्व-प्रथम जनता जनार्दन की महान् सेवा के लिये एक सुविशाल धर्मशाला बनवाकर महान् यश प्राप्त करते हुए मौड़ा कुल को अमर बना दिया। उस समय उड़िसा सरकार ने इनका सम्मान करने के लिए रायसाहब की पदवी से विभूषित किया, कहा जाता है कि ये जबान के इतने सच्चे थे कि जो भी कुछ कह दिया उस पर हर तरह की मुसीबत सह कर भी दृढ रहते थे और पूर्ण किये बिना शांति न लेते थे इसी कारण कटक में यह पुरुष सिंह कहलाते थे और यही उनकी कीर्ति का मुख्य कारण था। बाल्यावस्था से ही प्रखर बुद्धि के होने के कारण आपने अच्छी ख्याति प्राप्त की। मिलनसार तो इतने थे कि जो व्यक्ति एक बार इनसे मिल लिया वह जन्म भर इनको भूल नहीं सकता था यह हर समय प्रसन्नमुख रहते और उप-

कारी बुद्धि रखते थे। प्रत्येक कार्य में आगे होकर कार्य करना ही इनका मुख्य ध्येय था। आपने अपने जीवनकाल में अनेकों धर्ममय-शुभ कार्य किये जो आज भी कटक में आपके उज्जवल यश की साची दे रहे हैं। इनमें सर्व प्रथम श्री सत्य-नारायण मन्दिर है जो कटक के बीच में सुशोभित है इसके निर्माण में आपने हर तरह से सहयोग देकर मन्दिर को सब तरह से सम्पन्न किया। इस मन्दिर के वर्तमान महन्त श्री पं० बुद्धदेव जी शर्मा भिवानी निवासी पूर्ण विधि विधान से आराधना कर निर्माताओं की पवित्र आत्मा को शान्ति पहुँचा रहे हैं। इसके अलावा श्री गिरधारीलाल ने कटक चन्डी मन्दिर का जिर्णोद्धार तथा श्राद्ध घाट का निर्माण कर मारवाड़ी भाइयों के लिये सुविधा प्रदान की। कटक की श्मशान भूमि में भूत-नाथ महादेव का मन्दिर बनवाकर तथा 'मौड़ा' धर्मशाला बनवा कर अनेकों धर्म के कार्य कर अपने जीवन को सफल बनाकर पंचत्व को प्राप्त हो गये कहा जाता है मृत्यु से १५ दिन पहले इन्होंने अपने कुटुम्बियों एवं मित्रों को कह दिया था कि मेरी मृत्यु अमुक समय होगी और ठीक उसी समय उनकी मृत्यु हुई।

श्री गिरधारीयालजी महान् आत्मा वीर पुरुष, मधुरभाषी व्यवशाय कुशल, तीव्र बुद्धि के वैश्य थे। इनके इस समय तीन पुत्र विद्यमान हैं। श्री दुर्गादत्तजी. श्री शिवकुमारजी, श्री देवी प्रसादजी ये तीनों महानुभाव अपने पिताजी की भांति उसी प्रकार मान प्रतिष्ठा बनाए हुए हैं और प्रत्येक धार्मिक कार्य में आगे रहते हैं। श्री दुर्गादत्तजी स्व० श्री गिरधारीलालजी की

की फर्म पर गल्ले का व्यापार होता है। न जाने कितने ही व्य-क्ति इस फर्म के महान् कृतज्ञ हैं क्योंकि यही ठीकाना एक ऐसा जहां अपरिचित जगह पर लोगों को आश्रय मिलता है। श्री रामनारायण जी का विशाल हृदय एवं प्रेम के कारण इनकी दु-कान पर १०-१५ व्यक्ति हर समय रहते हैं और आप उन्हें हर तरह की सुविधा देकर मानव धर्म का सच्चे रुप में पालन करते हैं कटकमें आप चलती वाले पञ्च व्यक्ति मानेजाते हैं प्रत्येक धर्म कार्य में भाग ले कर प्रशंसा के पात्र बने हुए हैं। कटकके सुप्रद्धि सत्यनारायण मन्दिर के आप महान् सेवक व उसकी हर तरह उन्नति चाहने वाले धर्म प्रिय महानुभाव हैं आपके पुत्र श्री फूलचन्द जी अपने ताऊ जी के दत्तक हैं शेष गणपतराम रामावतार शंकरलाल आदि २ आपके सुयोग्य पुत्र हैं जो आपकी आज्ञा में रह कर फर्म का कार्य करते हैं।

कानोडिया परिवार

इस परिवार में श्री बनवारीलाल जी बहुत वीर पुरुष एवं चलती वाले महानुभाव हुए हैं। अब उनके लड़के श्री नोरंग राय, घनश्यामदास, गुलराज कुशलता पूर्वक व्यापार कर रहे हैं, श्री रामगोपाल जी बहुत साधु स्वभाव के सुयोग्य व्यक्ति हैं और भिवानी म्युनिसिपल कमेटी के कई वर्षों तक मैम्बर भी रहे हैं अब अपना शान्ति पूर्वक जीवन बिता रहे हैं। आपके भ्राता श्री बाबुलाल अहमदाबाद फर्म में बहुत योग्यता के साथ व्यापार कर सफल हो रहे हैं।

श्री पालुराम पूनीवाला

आपका गौत्र मंगल है और आप सनातनधर्म पाठशाला के मन्त्री एवं अनेको सार्वजनिक संस्थाओं के सहयोगी हैं।

आपको भिवानी का प्रत्येक आबाल वृद्ध जानता है, आप पक्के सनातन धर्मी हैं और रूई का व्यापार करते हैं। आप धार्मिक वृत्ति के मिलनसार सदा प्रसन्न रहने वाले शहर के माने हुए व्यक्ति हैं। पहिले म्युनिसिपल कमेटी के मैम्बर भी रहचुके हैं।

आपका चि० पुत्र माईधनदास योग्यता पूर्वक कार्य कर रहा है। आपके छोटे भाई–श्री अयुध्याप्रसाद जी, रामचन्द्र जी, गुलजारीमल जी आदि २ सूत पूनी आदि की दुकान करते है यह सब आपकी भांति सीधे सादे व्यवसायी हैं।

छपारियर परिवार

इस परिवार का गौत्र बांसल है। इस परिवार में स्व० श्री खुशीराम जी छपारिया एक बहुत बड़े धर्मात्मा ख्यातिवान एवं शहर के माने हुए व्यक्ति थे और रियासत जीन्द में उन का बहुत बड़ा सम्मान था और उन्हे कुर्सी भी मिली हुई थी अब उनके सुपुत्र—

श्री रामशरणदास जी छपारिया

आपकी सुप्रतिष्ठित फर्म खुशीराम दीपचन्द के नाम से देहली एवं भिवानी में ख्यातिवान है और इस पर कपड़े एव आढ़त का काम होता है। इस फर्म को व्यापारिक केन्द्र में उन्नत करने का श्रेय श्री रामशरणदास जी को ही है। आप सनातनधर्म के अनुयायी एवं व्यापार कुशल समझदार महानुभाव हैं। आपका सम्मान तथा ख्याति आपके प्रेमयुक्त व्यवहार के कारण देहली, भिवानी, अमृतसर आदि में सर्वत्र है।

आपके चि० श्री नागरमल जी, श्री रामप्रसाद, पवनकुमार, रामावतार कुशलता पूर्वक कार्य करते हैं।



ला० पालूराम जी गंगल [पोहकरमल पालूराम भिवानी]



श्री दीपचन्द जी छपारिया

श्री दीपचन्द जी छपारिया

श्री दीपचन्द जी और श्री शंकरलाल जी दोनों भाई बहुत आस्तिक विचारों के सीधे सादे सत्यनिष्ठ महानुभाव हैं और अधिकतर भिवानी में ही शान्ती पूर्वक ईश्वर भजन में समय बिताते हैं।

श्री दीपचन्द जी के सुपुत्र श्री किशोरीलाल जी, बन्शी लाल जी श्री शंकरलाल जी के सुपुत्र पुरुषोत्तमदास, श्री-शिवकुमार सभी सुयोग्य व्यापार कुशल अपनी २ फर्मों में योग्यता पूर्वक कार्य कर रहे हैं। यह परिवार बहुत बड़ा एवं प्रतिष्ठा वान परिवार है इसी परिवार में—

श्री रामगोपाल जी, रामकिशनदास जी, गणेशीलाल जी आदि आदि व्यापार निपुण हैं और कलकत्ता, महेन्द्रगढ, रायगढ में सम्मान पूर्वक कार्य कर अपना और अपने वंश का नाम उजागर कर रहे हैं।

कसेरा परिवार

यह परिवार शहर का बहुत बड़ा परिवार है पहिले इस में अच्छे २ व्यक्ति हो चुके हैं। वर्तमान में—

श्री बनारसीदास जी कसेरा

आप बहुत सीधे सादे सज्जन प्रकृति के व्यापारी महानुभाव हैं। भिवानी में आपकी बहुत अच्छी इज्जत है आपके सुयोग्य सुपुत्र श्री गोबिन्दराम जी बी० ए० बहुत उत्साही सार्वजनिक कार्यकर्ता एवं निर्भीक प्रकृति के साहसी युवक हैं। भारतीय जनसंघ के सम्माननीय मंत्री एवं सच्चे राष्ट्रभक्त तथा उन्नत विचारों के महानुभाव हैं। आप भारतीय संस्कृति

के अनुयायी होने के कारण कई बार श्री कृष्ण जन्म भूमि (कारालय) के भी दर्शन कर आये हैं। आप अच्छे वक्ता एवं उत्तम लेखक भी है। १९४७ में भिवानी नगर की आतता इयों से रक्षा करने में आपका भी बहुत बड़ा हाथ रहा है। आप अपनी फर्म का कुशलता पूर्वक संचालन कररहे हैं।

ज्ञानीराम जी कसेरा:—आप बिचला बाजार में बर्तनों की दुकान करते हैं। वैदिक विचारों के व्यापार कुशल महानुभाव हैं। कसेरा परिवार में आपकी अच्छी इज्जत है।

श्री फूलचन्द जी–आप भी बिचला बाजार में दुकान करते हैं, सुयोग्य व्यापारी हैं।

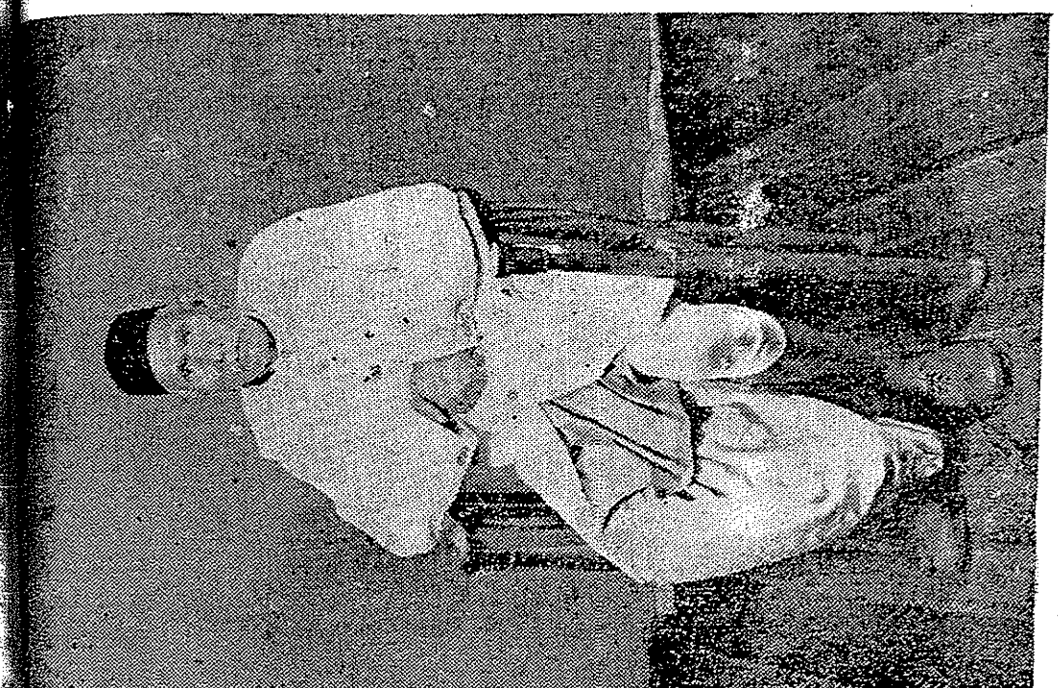
पिंजोखरिया परिवार

यह परिवार पिंजोंखरा ग्राम का होने के कारण पिंजोंखरियों के नाम से प्रसिद्ध है। इस परिवार में श्री जयदेव जी रविदत्त जी नारायणप्रसाद जी बहुत सुयोग्य एवं व्यापार निपुण महानुभाव हैं और कलकत्ता में हैसियन बौरे का कार्य करते हैं। इनकी प्रतिष्ठित फर्म ४०२ अरचितपुर रोड़ में जयदेवप्रसाद हरदत्तराय नाम से प्रसिद्ध है। श्री हरदत्तराय जी वेदप्रकाश जी, प्रकाशचन्द्र जी आदि सुयोग्य एवं व्यापार निपुण कार्य कुशल व्यक्ति हैं।

हर्जीका परिवार

यह परिवार भिवानी नगर का बहुत प्रसिद्ध एवं ख्याति युक्त परिवार है। इसमें पहिले बड़े २ धर्मात्मा, सत्यनिष्ठ महापुरुष हो चुके हैं और इसका गौत्र बांसल हैं। स्व० बाल मुकुन्द जी बड़े ख्यातिबान एवं धर्मात्मा महानुभाव थे।





श्री केशवदेव जी हरजी का
(फर्म शादीराम उदमीराम रोहतक]

इस समय इस परिवार में श्री माधोप्रसाद जी श्री जगन्नाथ जी बहुत ख्यातिवान एवं सहारनपुर में बहुत बड़े सम्मान प्राप्त व्यक्ति हैं। इनकी प्रतिष्ठित फर्म शादीराम बालमुकुन्द पर चावल और तेल एवं कमीशन ऐजेन्सी आदि का कार्य होता है और इनकी फर्म यू० पी० के अनेकों नगरों में व्यापार द्वारा पूर्ण सफलता प्राप्त कर भिवानी के नाम को रोशन कर रही हैं।

श्री माधोप्रसाद जी बहुत सीधे सादे सरल स्वभाव के धर्मप्राण व्यक्ति हैं। इनके भाई श्री जगन्नाथ जी भी बहुत प्रतिभा सम्पन्न एवं व्यापार कुशल महानुभाव हैं। स्व० श्री-लहरीमलजी के सुपुत्र मंगतराय जी, बिहारीलालजी जीवनराम जी, बहुत सुयोग्य एवं अपनी फर्म का कार्य कर रहे हैं। श्री-माधोप्रसाद जी के सुपुत्र-परमानन्द जी, निरंजनलाल जी, बनारसीदास जी सुशिक्षित एवं अपनी अपनी फर्म की उन्नति में दत्तचित्त रहते हैं। श्री जगन्नाथ जी के पुत्र-श्री पीताम्बर दास जी आदि सभी सुयोग्य महानुभाव हैं।

श्री केशोराम जी हर्जीका

आप की फर्म रोहतक में शादीराम उदमीराम नाम से विख्यात हैं। यहां आढ़त का काम बहुत बड़े परिमाण में होता है, जैसे बर्मा सैल्ज आयल कम्पनी के यह बहुत बड़े ऐजेण्ट हैं। आप व्यापार कुशल उदार सज्जन हैं। आपके सुपुत्र—श्री छबीलचन्द जी, श्री रामनाथ जी, आदि २ सुयोग्य व्यापार निपुण व्यक्ति हैं।

रामकिशनदास जी—रोहतक में ही रेलवेरोड़ पर दयाराम, रामकिशन नाम से कपड़े का कार्य से करते हैं।

श्री मांगेराम जी–आप देहली में शादीराम रामस्वरूप नाम से गल्ले का व्यापार करते हैं। बहुत धार्मिक विचारों के सुयोग्य महानुभाव हैं। आपके पुत्र श्री कृष्णदास देवकीनन्दन बहुत समझदार व्यक्ति हैं।

श्री भीमराज जी खण्डेलिया

आपका देहली व्यापारिक एवं धार्मिक समाज में बहुत अच्छा सन्मान है। आपकी पवित्र आत्मा में हर समय दान पुण्य करने की भावना बनी रहती है। आप बड़े उच्च विचारों के व्यापार कुशल गौ ब्राह्मण भक्त साधु स्वभाव के मिलनसार व्यक्ति हैं।

प्रत्येक व्यक्ति के दुःख सुख में सहयोग देने वाले आदर्श पुरुष हैं। भगवती दुर्गा के आप भक्त तथा संसार में रहकर साधु जीवन बनाए हुए हैं। आपके चि० पुत्र महावीरप्रसाद सीधे सादे पितृ भक्त धार्मिक आचरण के सद् चरित्र मिलन सार उत्साही युवक हैं।

गोटेवाला परिवार

इस परिवार का गौत्र बांसल है। देहली में रामचन्द्र–रतीराम नाम से चांदनो चौक में गोटे की प्रसिद्ध दुकान है। श्री हरिचरण जी, गंगाबिशनजी मेलाराम जी रतीराम जी इस फर्म पर बहुत योग्यता पूर्वक कार्य कर अपना और अपनी फर्म का नाम विख्यात बनाए हुए हैं। इनके भाई श्री फूलचन्द जी कलकत्ते में कार्य करते हैं। श्री रतीराम जी देहली की कई सार्वजनिक संस्थाओं के सदस्य व उच्चाधिकारी हैं और यह परिवार बहुत सुयोग्य तथा व्यापारी परिवार है।

मीण्डा परिवार

इस परिवार की फर्म दार्जलिंग, सिल्लीगोड़ी, कलकत्ता में बहुत सम्मान पूर्वक कार्य कर रही है। श्री गजानन्द जी बहुत समझदार एवं व्यापार कुशल महानुभाव हैं।

इस परिवार में श्री कन्हैयालाल जी मीण्डा सन्तेष एक बहुत बड़े सुलेखक प्रतिभावान तथा उच्च विचारों के सुधार वादी महानुभाव हैं और गौरक्षा आन्दोलन में आप द्वारा बहुत अधिक प्रचार हुआ है। भारत के प्रायः सभी पत्रों में आपके लेख छपते रहते हैं। आप मिलनसार सरल स्वभाव सुयोग्य व्यक्ति हैं।

श्री सत्यनारायण दुलीचन्द पत्थरवाले

आप भिवानीमें पत्थरके प्रसिद्ध व्यापारी है और आपकी दुकान का नाम चिम्माराम हरनन्दराय तथा रोहतक में दुलीचन्द ओमप्रकाश पड़ता है। आप दोनों भाई व्यापार कुशल मिलनसार, विनम्र स्वभाव के सुयोग्य एवं साहसी महानुभाव हैं। भिवानी तथा रोहतक में आप लोगों की बहुत मान प्रतिष्ठा, एवं सभ्य व्यक्तियों में स्थान है।

ढग्गा परिवार

इस परिवार में श्री रामजीलाल जी बरनाला मण्डी के प्रतिष्ठा युक्त पंच एवं चलती वाले महानुभाव हैं विशनदास जी, ताराचन्द जी, चान्दनमल जी, रामस्वरूप जी श्यामसुन्दर आदि इनके पुत्र हैं। भिवानी में इनके निवास स्थान इन्हीं के नाम से बनी हुई ढगों की गली में विद्यमान हैं।

श्री चांदनमल जी ढगा अपनी लौकप्रियता के कारण इस बर्ष भिवानी म्युनिस्पिल कमेटी के मैम्बर निर्वाचित हुए हैं जो बहुत योग्य व्यक्ति हैं।

श्री कृष्ण जी धारीवाल

आपकी प्रसिद्ध एवं फैन्सी कपड़े की दुकान जो कि भिवानी में धारीवाल नाम से विख्यात है आप उस के प्रोप्राईटर हैं। भिवानी में आपका बहुत सम्मान है और शहर के माने हुए व्यक्तियों में आपकी गणना की जाती है। आप उच्च विचारों के व्यवसाय निपुण तथा मिलनसार, सुयोग्य व्यक्ति हैं आपके भ्राता श्री शिवनरायण जी, राजकुमार जी क्रमशः व्यापार और शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, दोनों ही योग्य मिलनसार तथा बुद्धिमान महानुभाव हैं।

श्री जीवराज जी का परिवार

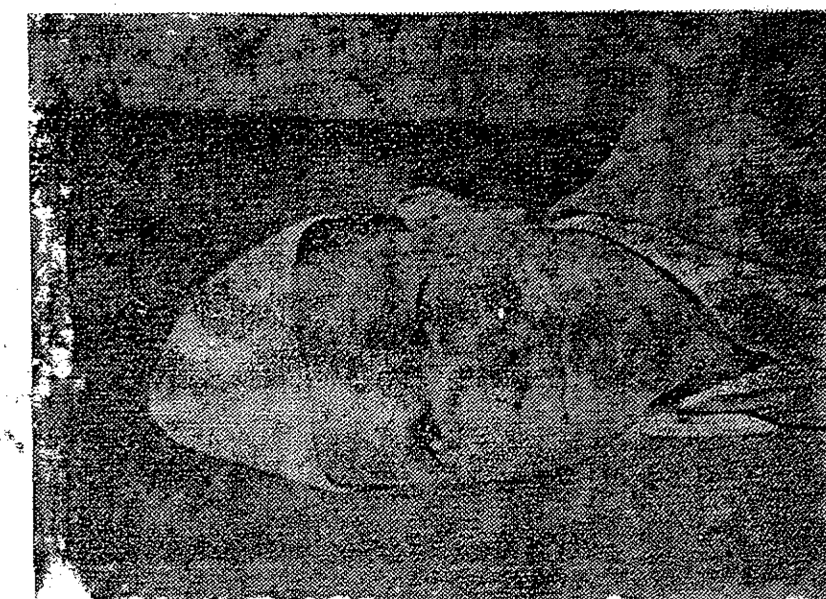
इस परिवार में श्री श्यामसुन्दर जी देहली में आचार मुरब्बे का व्यापार करते हैं और भारत के विभिन्न भागों में इन का आचार मुरब्बा जाता है इनकी फर्म का नाम विश्वेश्वर नाथ श्यामसुन्दरदास पड़ता है। मारीवाड़ा एवं खारीबावड़ी में इनकी प्रसिद्ध दुकान है। श्री श्यामसुन्दरदास जी बहुत योग्य व्यापार निपुण तथा उत्साही व्यक्ति है इनके पुत्र–किशन लाल, राधाकृष्ण, अशोककुमार पढते हैं।

श्री जयन्तीप्रसाद जी नोन्दिया

आप तेरह पंथी जैन सम्प्रदाय के मानने वाले सुयोग्य महानुभाव हैं। भिवानी में आपकी अच्छी प्रतिष्ठा है। मिलनसार व्यवहार कुशल मृदुभाषी सज्जन हैं।



श्री श्यामसुन्दर आचारवाले



श्रीकृष्ण धारीवाल भिवाना

लोहिया परिवार

श्री नैनसुखदास जी लोहिया बहुत उदार हृदय के ख्यातिवान महानुभाव थे उनके सुपुत्र श्री दुर्गादासजी श्रीराधेश्यामजी श्री रघुनन्दनप्रसाद जी शहर के माने हुए सुप्रतिष्ठित व्यक्तियों में गिने जाते हैं। आप की फर्म सीताराम नैनसुखदास नाम से भिवानी एवं कलकत्ते में प्रसिद्ध है। आप तीनों भाई मिलनसार रईसी तबियतके व्यापारकुशल प्रतिभावान तथा मधुरभाषी हैं। आपने अपने उद्योग एवं परिश्रम से अपनी फर्म और अपने पूर्वजों के नाम को बढाया है।

भिवानी के लोहियों में श्री साधुराम मुरारीलाल आदि २ भी सुयोग्य एवं ख्याति युक्त व्यक्ति हैं और लोहे का व्यापार करते हैं।

खेमका परिवार

भिवानी में खेमका परिवार प्रतिष्ठित एवं समृद्धिशाली परिवार है इस परिवार में पहले अच्छे २ व्यक्ति हो चुके हैं स्व० श्री गबदुराम जी बहुत मिलनसार शान्त स्वभाव के सज्जन व्यक्ति थे। अब उनके सुपुत्र श्री बनवारीलाल जी खेमका बहुत सुयोग्य विनम्र तथा व्यापार कुशल एवं मित्रों के सच्चे मित्र महानुभाव हैं भिवानी में आपकी बहुत अच्छी प्रतिष्ठा है।

श्री रामेश्वरदास जी खेमका—यह भी बहुत समझदार कार्य कुशल व्यक्ति हैं भिवानी क्लोथ हाउसके आप प्रोप्राईटर हैं आपके पिता श्री जुगलकिशोर जी बहुत सीधे सादे सज्जन महानुभाव हैं।

श्री लक्ष्मीनारायण जी खेमका:—आप बहुत बड़े साहसी एवं वीर पुरुष हैं भिवानी में आप प्रतिष्ठा युक्त व्यक्तियों में माने जाते हैं। स्वराज कटलो में आपकी विशाल दुकान रईसी ठाठबाट की बनी हुई है। आप मिलनसार सार्वजनिक कार्य में भाग लेने वाले उत्साही महानुभाव हैं, भिवानी रामलीला के करवानेका बहुतसा श्रेय आपही को है। आपके भ्राता श्री जुगलकिशोर जी खेमका बहुत सुयोग्य एवं कार्य कुशल व्यक्ति हैं।

मुन्डु का परिवार

यह मुन्डुका परिवार बहुत विस्तृत परिवार है और अनेकों नाम से इस परिवार के व्यक्तियों का व्यौंक पड़ता है।

श्री नन्दकिशोर जी:— आप गोपीराम नन्दकिशोर फर्म के प्रोप्राईटर हैं बहुत धार्मिक विचारों के कर्तव्य निष्ठ उत्साही व्यक्ति हैं, अपनी फर्म के उत्थान में ही अधिक समय लगाते हैं। आप के धार्मिक विचार एवं व्यापार निपुणता प्रशंसनीय है

इस परिवार में श्री काशीराम जी श्री मीन्हुराम जी मनोहरलाल जी बनवारीलाल जी चन्दुलाल जी सन्तलाल जी आदि आदि व्यवसायी व्यक्ति हैं जो अपना २ कार्य बुद्धिमता से कर रहे हैं श्री रतनलाल गुप्ता अहमदाबाद में बहुत योग्यता पूर्वक कार्य कर रहे हैं जो बहुत सुयोग्य व्यक्ति हैं।

चूड़ी वाला परिवार

पहिले मोहनलाल जी चूड़ी वाले बड़े योग्य व्यक्ति हो चूके हैं। इनके पुत्र श्री हरिकृष्ण जी तथा जुगलकिशोर जी हैं जो अपना व्यपारिक कार्य कलकत्ता देहली और भिवानी में कर रहे हैं।



श्री राधेश्याम जी श्री दुर्गाप्रसाद जी श्री रघुनन्दनप्रसाद जी (फर्म–मोहरसिंह सीताराम लोहिया, भिवानी)

खुर्सानिया वंश कुर्सियांग

इसका गौत्र गर्ग है। करीब १०० वर्ष पहिले जब कि रेल गाड़ी का विशेष प्रचलन नहीं हुआ था उस समय भिवानी से श्री हनुमानदास जी व मुखरामदास जी पैदल चलकर कुर्सियांग पहुँचे थे और वहां प्रारम्भ में कपड़े का कार्य शुरु किया था। इसी वंश में स्वर्गीय श्री डालुराम जी बहुत प्रसिद्ध व कुर्सियांग के माने हुए महानुभाव हो चुके हैं, कुर्सियांग का कोई ही ऐसा आफिसर होगा जिस पर कि श्री डालुराम जी का प्रभाव न हो, आप जुरीसेशन केश में बुलाए जाते थे। राजदरबार में इन्हे कुर्सी मिली हुई थी बहुत ही नेकनीति के प्रभावशाली महानुभाव थे। भिवानी की तरफ का कोई भी व्यक्ति कुर्सियांग पहुंच गया उसका पूर्ण सम्मान किये बिना यह नहीं रहते थे। १९५० में इनका स्वर्गवास होगया इस समय इनके पुत्र श्री जयन्तिप्रसाद जी विद्यमान है और यह अपने पिता श्री डालुराम जी की भांति बहुत ही मिलनसार और व्यापार-कुशल महानुभाव हैं। इनकी कुर्सियांग में अच्छी चलती है।

श्री जयन्तिप्रसाद जी का विवाह भिवानी के सुप्रसिद्ध वैद परिवार में श्री गजाधर जी की सुपुत्री से हुआ हनुमान दास डालुराम के नाम से इनका फर्म बहुत प्रसिद्ध है इस फर्म पर कपड़ा सिमेन्ट किराशनतैल लोहा लकड़ी आदिका कार्यहोता है। दूसरी फर्म नानकचन्द जयन्तिलाल के नाम से भी प्रसिद्ध है और इस फर्म पर भी कपड़े आदि का कार्य ही होता है।

श्री सांवलराम जी अग्रवाल

यह कुर्सियांग के प्रसिद्ध एवं माने हुए व्यक्ति थे। हनु

मानदास सुखरामदास नाम से कार्य करते थे। कुर्सियांग में इनकी बहुत चलती थी। इनके पुत्र श्री नानकचन्द जी, श्री बनवारीलाल जी विद्यमान है और यह दोनों भाई बहुत प्रसन्न मुख और साहसी व्यक्ति हैं। कपड़ा, किराना, किरासन तैल लकड़ी आदि का कार्य करते है। अपने पिता श्री सांवलराम जी की तरह चलतीवाले और बहुत सम्मान प्राप्त व्यक्ति हैं इनकी फर्म पर बहुत ईमानदारी के साथ व्यापार होने के कारण काफी ख्याति रखती है।

श्री राधाकृष्ण जी

यह स्व० पोहकरमल जी के सुपुत्र हैं और कुर्सियांग में कपड़े का कार्य करते हैं ७०–७५ वर्ष से इनका फर्म–पोहकरमल मामनचन्द नाम से कपड़े का व्यापार कर रहा है श्री राधाकृष्ण सज्जन प्रकृति के योग्य महानुभाव हैं।

मोगरा परिवार

इस परिवार में श्री विश्वेश्वरलाल मोगरा बहुत प्रसिद्ध अध्यापक हो चुके हैं। यह श्री वेंकटेश्वर विद्यालय में पढाया करते थे। इस समय इनके पुत्र दार्जलिंग, कुर्सियांग, सिल्ली–गोड़ी आदि में बहुत सम्मान पूर्वक कार्य कर रहे हैं। श्रीरामस्वरूप जी श्री फूलचन्द जी श्री बनारसीदासजी तथा जयनारायण जी यह श्री विश्वेश्वरलाल जी मोगरा के सुपुत्र हैं और बहुत ही नेकनीयति के साथ व्यापार कर रहे हैं। इनमें श्री जयनारायण जी मोगरा भारत विख्यात गोयनका कम्पनी में कुशलता पूर्वक कार्य कर रहे हैं। और इस कम्पनी की उन्नति में इन का पूर्ण हाथ रहा है। यह बहुत मिलनसार प्रकृति के व्यक्ति हैं। इनका उद्योग एवं बुद्धिमत्ता ही इनके जीवन उन्नति का साधन रहा है। आज दार्जलिंग के प्रत्येक स्थान पर आपका नाम सुनाई देरहा है।

रेखान परिवार

इस परिवार में श्री द्वारकादास जी रेखना बहुत सुयोग्य एवं पुरानी विचार धारा के सत्यनिष्ठ मर्यादा युक्त व्यक्ति हैं। आप प्रत्येक व्यक्ति का सच्चे हृदय से साथ देने वाले सीधे सादे आचार निष्ट हैं आप के भ्राता श्री मुसद्दीलाल जी आपकी तरह मिलनसार स्नेही व्यक्ति हैं। आपके सुपुत्र श्री धन्सीरामजी बहुत सुयोग्य प्रतिभावान नगरके माननीय व्यक्तियों में विशिष्ट स्थान प्राप्त किये हुए हैं। आप मित्रोंके सच्चे मित्र एवं निर्भीक प्रकृति के धर्म निष्ट महानुभाव हैं बाबा श्री खाखी जी में आपकी पूर्ण निष्टा है और बाबा खाखी जो भी आप के ऊपर पूर्ण कृपा रखते हैं।

भिवानी की प्रायः सभी प्रतिष्ठित फर्मों में आपकी बहुत बड़ीइज्जतहै इसका कारण आपका प्रेम, स्नेह एवं सद्व्यवहार ही है। आपके भ्राता श्री राधा कृष्ण जो भी आपकी तरह विनम्र स्वभाव के बुद्धिमान व्यक्ति हैं शहर के प्रत्येक कार्य में आपका पूर्ण सहयोग रहता है आप सार्वजनिक कार्यों में पूर्ण रूप से भाग लेकर शहर के ख्यातिवान व्यक्तियों में अपना और अपने परिवार का गौरव बनाये हुए हैं। आपके भ्राता श्री गणपतराय जी श्री मातुराम जी महावीरप्रसाद आदि २ सुयोग्य एवं कार्य कुशल व्यक्ति हैं जो मान प्रतिष्ठा के साथ कार्य कर रहे हैं।

बजाज परिवार

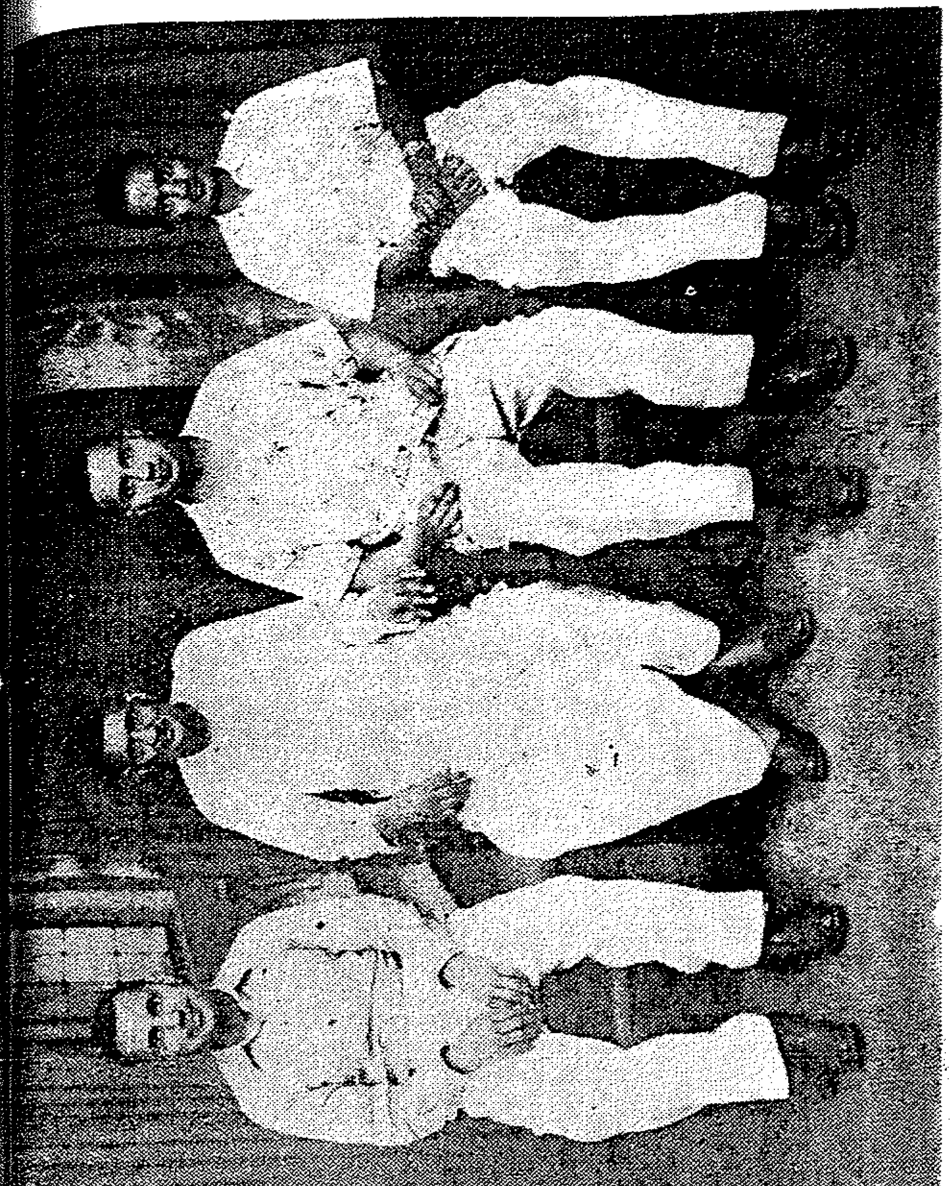
यह बजाज परिवार ग्याराहट्टे में कपड़े का व्यापार करता हैं इनकी अनेकों जगह कपड़े की प्रतिष्ठित फर्मे हैं श्री महाशय राम रक्षपालजी देहली में अपनी फर्मका संचालन कर व्यापारी समाज में पूर्ण प्रतिष्ठा बनाए हुए हैं। आप राष्ट्र भक्त सत्य वादी, उच्च विचारों के वैदिक धर्म के माननेवाले सज्जन व्यक्ति हैं। आपके भ्राता श्री राधाकृष्ण जी बनवारीलाल जी रामस्वरूप जी अपनी फर्म में योग्यता पूर्वक कार्य कर अपनी एवं अपनी फर्म की प्रतिष्ठा बनाए हुए हैं।

श्री बृजलाल जी झुंझनूवाले

भिवानी के सुप्रसिद्ध व्यापार महारथी श्री बृजलाल जी झूंझनू वाले रंगून में बहुत बड़े पैमाने पर कपड़े का कार्य कर रहे हैं।

आपकी प्रसिद्ध फर्म–श्री बृजलाल जी झूंझनूवाला के नाम से रंगून वर्मा (जापान) में ख्याति प्राप्त फर्म है। आप ने व्यापारी समाज में अपनी जन्म भूमि का भारत के अलावा विदेशों में सम्मान स्थापित कर उद्योग कहारथी महलाने का वास्तविक अधिकार प्राप्त किया है। आप निर्भिमानी, सत्यप्रिय, उदार हृदय के सुयोग्य व्यक्ति हैं।

भिवानी एवं रंगून में आपकी बहुत बड़ी सुप्रतिष्ठा आपके सौजन्य एवं विनम्र स्वभाव के कारण है। आपके विशाल हृदय में गरीबों के प्रति महान दया है। आपके पवित्र हाथ दान देकर आपको तथा आपके परिवार को महान



अपने सुपुत्रों सहित श्री बृजलाल जी झूंझनू वाले भिवानी।

यशस्वी बनाए हुए हैं। आपका सुविशाल भवन ख्याली को की गली में विद्यमान है जो आपकी महान समृद्धि को प्रकट कर आपके पूर्वजों का नाम बढा रहा है। आपके सुयोग्य पुत्र श्री छत्रमल जी, श्यामसुन्दर जी, लक्ष्मीनिवास भी आपकी आज्ञा में रहकर आपने फर्म को उन्नतिशील बनाए हुए है। आपका जन्म जुलाई १८६५ ई० का है गौत्र बांसल है।

श्री लक्ष्मीनारायण जी भक्त

भिवानी में श्री लक्ष्मीनरायण जी भक्त द्वारा श्री मद् भगवत गीता का जो प्रचार हुआ है वह इस नगर के लिए बहुत बड़ा सौभाग्य एवं नगर निवासियों के लिए कल्याणकारी मार्ग है। भिवानी नगर में प्रारम्भ से इस नगर के पूण्य स्वरूप कोई न कोई महात्मा प्रकट कर इसके पाप एवं दुष्कर्मों को शान्त करने के लिए विद्यमान रहते है। उन्ही में से एक श्री लक्ष्मीनारायण जी भक्त भी हैं जो घर २ जाकर गीता प्रचार कर वास्तव में जनता का बहुत बड़ा उपकार कर रहे हैं।

आप उच्चकोटि के सन्त गौ ब्राह्मण भक्त दृढ ईश्वर विश्वासी सिद्ध महात्मा हैं।

श्री रामकिशनदास जी मुनीम

आप भिवानी में मुनीम जी के नाम से प्रसिद्ध है। आप एकबार भी जिसके मित्र बनजाते हैं उसके लिए तन मन धन से हर तरह उद्यत रहते हैं। आप वास्तव में एक बहुत बड़े साथी कर्तव्यनिष्ट, व्यापार कुशल तीव्रबुद्धि के सदा प्रसन्न रहने वाले महानुभाव हैं।

भिवानी में आपका सन्मान आपके प्रेम युक्त व्यवहार

विनम्रस्वभाव तथा कार्य कुशलता के कारण है। आप उच्च कोटि के वफादार मुनीम महान परिश्रमी, साहसी तथा कर्मठ मानव हैं। आपमें असीम आकर्षण शक्ति के साथ २ व्यंग शक्ति भी कम नहीं है आपके चि० मांगेराम तथा ओमप्रकाश शिक्षा प्राप्त क रहे हैं।

श्री देवीदत्त जी B. A.

आप इन्कम टैक्स के सफल वकील हैं। हालुबाजार बजाजे में आपका कार्यालय है बहुत समझदार शान्त स्वभाव के प्रत्येक मनुष्य का भला चाहनेवाले हैं। भिवानी में आपकी काफी मान प्रतिष्ठा है अनेकों संस्थाओं के उच्च अधिकारी हैं और सार्वजनिक कार्यों में भागलेते रहते हैं। आपके मित्र एवं विवेक बुद्धि के गुरु श्रीश्यामलाल जी सर्वप्रिय कानून के विद्वान परोपकारी दयालु स्वभावके उच्च आदर्शयुक्त प्रेमी व्यक्ति हैं।

तुलस्यान परिवार

इस परिवार में श्री नरसिंहदास जी बहुत सुयोग्य मिलनसार भारतीय विचारधारा के समझदार व्यक्ति हैं। आपकी भिवानी ट्रेडएसोसियेशन में नरसिंहदास तुलस्यान फर्म बहुत उच्च रूप में व्यापार करती थी। आपकी भिवानी के प्रसिद्ध दलालों में गणना थी अब आप कलकत्ता एवं बम्बई में सम्मान पूर्वक कार्य कर रहे हैं।

आपके चि० हंसमुखराय बहुत सरलस्वभाव के मिलनसार उत्साही एवं कार्यकुशल युवक हैं। आप जिससे एकबार भी मिल लेते हैं वह आपका ही बनजाता है। यही आपमें





सबसे बड़ी विशेता है । आप हिन्दी साहित्य के अच्छे ज्ञाता एवं उच्च विचारों के गुरु भक्त आदर्श महानुभाव हैं । आपके चाचा—श्री मुरारीलाल जी बहुत सज्जन एवं कार्यकुशल व्यक्ति हैं और बम्बई में कार्य करते हैं । इसी परिवार में—

श्री खेतसीदास जी बहुत सुलझे हुए उन्नत विचारों के सत्य वादी व्यक्ति है और बम्बई के व्यापारी समाज में अच्छा मान रखते हैं ।

श्री रामस्वरूपजी नलवे वाले

आप श्री सेठ किरोड़ीमल जी लुहारी वाले के विश्वास पात्र एवं उनके मुख्य कार्य कर्ता हैं । भिवानी में आपकी प्रत्येक वर्ग एवं समाज में बहुत प्रतिष्ठा है । आप बहुत निर्भीक प्रकृति के बुद्धिमान कार्य कुशल चतुर व्यक्ति हैं । सेठ किरोड़ीमल जी के अन्तरंग व्यक्तियों में सम्मान प्राप्त महानुभाव हैं । और सेठ जी के आप महान शुभचिन्तक तथा श्री किोरड़ीमल ट्रस्ट द्वारा निर्माणित सम्मति के प्रबन्धक एवं इसकी हर तरह अभिबृद्धि करने वाले उत्साह सम्पन्न धार्मिक व्यक्ति हैं । आफिसर वर्ग में आपको बहुत बड़ी इज्जत तथा प्रतिष्ठा है ।

श्री विश्वनाथ जी नलवे वाले

श्री विश्वनाथ जी नलवेवाले बौदिक विचारों के सुधार वादी महानुभाव हैं । यह नलवा ग्राम से भिवानी आकर आबाद हुए, इसी लिए नलवे वाले कहलाते हैं । कलकत्ता सलकिया में इनके अनेकों व्यापार है बान्दाघाट पर इनका प्रधान कार्यलय है कलकत्ता में इनके आर्य बर्तन भण्डार के बने बर्तन

काफी प्रसिद्धि रखते हैं। इनकी प्रधान कम्पनी का नाम ओंकार कम्पनी है। हैसियन बोरे, बर्तन आदि के कार्य इनके यहां होते हैं।

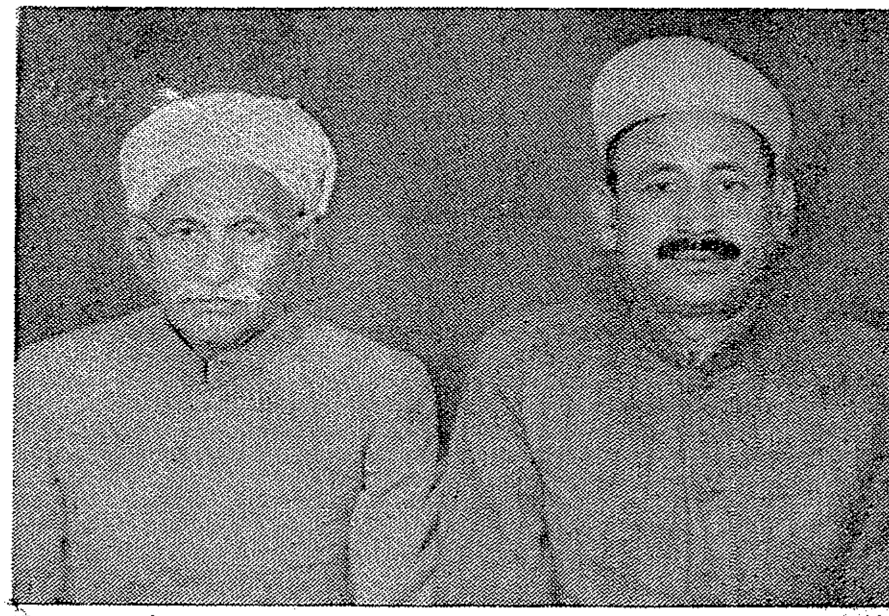
श्री विश्वनाथजी के भ्राता श्री गौरीदत्तजी, रामप्रतापजी, मोहनलालजी, पुस्करदत्तजी बहुत समझदार एवं वैदिक विचार के स्वामी दयानन्द के परम उपासक हैं। सीधे सादे मिननसार एवं निर्भिमानी महानुभाव हैं। विश्वनाथ के सुपुत्र श्री सत्यनारायणजी नलवेवाले अपनी फर्म को उद्योगबल से उन्नतिशील बनाने वाले परिश्रमी महानुभाव हैं। कलकत्ता के व्यवसाई वर्ग में श्री सत्यनारायणजी की जानकारी प्रशंसनीय हैं। इतनी छोटी आयु में इस प्रकार व्यापार निपुण होना इनको प्रतिभावान प्रकट करता है। इनके छोटे भाई रामबिलास श्यामलाल मुरारीलाल शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

श्री निरंजनलालजी दादरी वाले

श्री बनारसीदासजी डालमियां के जो बड़े प्रभावशाली व्यापारिक एवं सभ्य समाज में सम्मानित व्यक्ति हैं उनके सुपुत्र हैं। और बड़े सौम्य स्वभाव के समाज और व्यापारिक क्षेत्र में छोटी ही आयु में इतने प्रतिभा सम्पन्न साबित हुए हैं जिन्होंने कलकत्ता में श्री निरंजनलाल बनवारीलाल फर्म का स्थापन कर व्यापार और अधिकारी वर्ग में प्रतिष्ठा के साथ २ फर्म को वैभवशाली भी बनाया है। बम्बई में श्री निरंजनलाल डालमिया दूसरी फर्म बन्शीलाल मूलजी के नाम से कारोबार को इतना उन्नत बनाया है, जो किराना मार्केट तथा डिष्पोजल आदि के महान कार्यों में पूर्ण सफलता तथा गौरव प्राप्त किये हुए हैं। वैसे आप गवर्नमेंट कन्ट्राक्टर भी हैं। सरल स्वभाव



श्री गजानन्द जी श्री रामरिक्षपाल जी बुवानीवाले



श्री विश्वनाथ जी नलवेवाले

के उदार प्रकृति के व्यापार कुशलता प्राप्त परिश्रमी उद्योगी परिवार में भाग्यशाली महानुभाव हैं। आपके चि० शिवकुमार सुरेन्द्रमोहन, बुली आदि शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

श्री बन्शीलालजी सेवाराम के

आप शहर के प्रतिष्ठत परिवार में से हैं आप बन्शीलाल मूलजी बम्बई फर्म का बड़ी योग्यता और व्यापारिक निपुणता से संचालन कर रहे हैं। बड़े प्रेमी तथा मिलनसार उत्तम व सरल स्वभाव के व्यक्ति हैं। आपके चि० जमुनाप्रसाद सहयोग में कार्य करते हैं विशनस्वरूप, शिवकुमार शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

श्री प्रहलादराय जी डालमिया



आप कानपुरके बहुत बड़े प्रतिष्ठित व्यापारियों में सन्मान प्राप्त व्यक्ति हैं आप की प्रहलादराय सत्यनारायण फर्म पर बहुत उच्च पैमाने से अनाज तथा आढ़त का काम होता है।

आपकी फर्में हापुड़ तथा भिवानी में सफलता पूर्वक व्यापार कर आपके समृद्धिशाली होने का प्रमाण दे रही है।

कानपुर में आपका सम्मान आपके विशुद्ध प्रेम, कार्य कुशलता तथा सौजन्यता के कारण सर्वत्र है। आपके, चि० विजयकुमार, जयकुमार आदि २ सुयोग्य हैं।

श्री महावीरप्रसादजी कटक

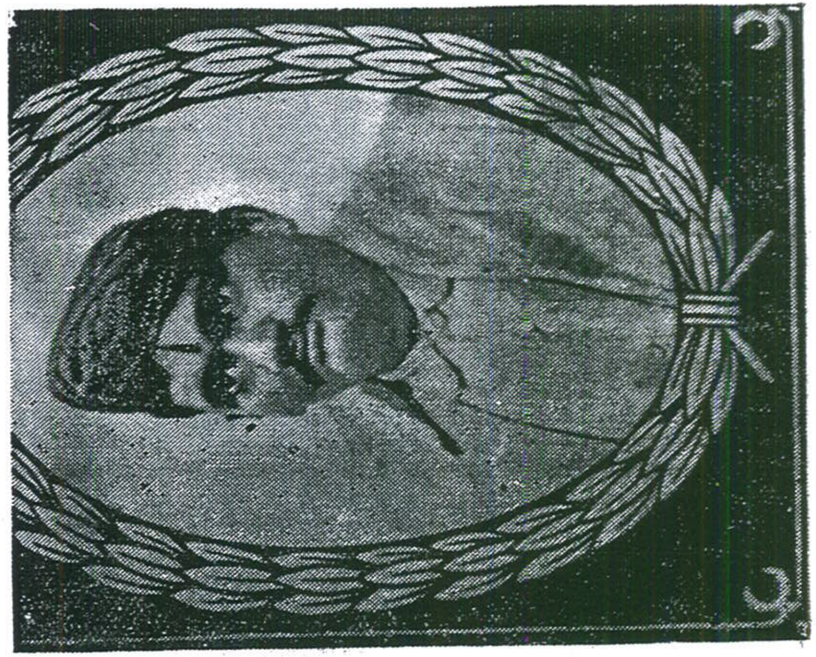
आप दाताराम जगन्नाथ फर्म के प्रोप्राइटर हैं। आपका जन्म १९६८ विक्रमी मार्ग कृष्णा ३ को हुआ। कटक व्यापारी

समाज में आपकी बहुत मान प्रतिष्ठा है। आपके यहां सोना चांदी, कपड़ा एवं किराना का कार्य होता है

आप व्यापार कुशल, बुद्धिमान तथा कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति हैं। आपने अपने उद्योग से अपनी फर्म को कटक में काफी ख्यातिवान एवं समृद्धिशाली बनाया हैं। मिलनसार विनम्रता तथा सद् व्यवहार आपका विशेष गुण है। कटक गोशाला के आप सम्माननीय सदस्य हैं। और भी अनेकों सार्वजनिक संस्थाओं के सहयोगी व धार्मिक विचारधारा के व्यक्ति हैं। आपके चि० श्री बैजनाथजी, श्री सीतारामजी देवकीनन्दन आदि २ सुयोग्य कार्यकुशल महानुभाव हैं।

श्री बृद्धिचन्दजी मौड़ा

आप श्री बद्रीदासजी मोड़ा जो कि कटक में एक प्रतिष्ठाशाली व्यापार निपुण मौडा कुल के वयोवृद्ध हैं उनके प्रतिभाशाली सुपुत्र हैं। कटक व्यापारी समाज में आपकी इच्छाराम बद्रीदास फर्म बहुत ख्याति प्राप्त फर्म हैं और यहां उच्च पैमाने पर व्यापार होता है। आपने अपने उद्योग तथा परिश्रम से अपनी फर्म को उन्नतिशील केवल कटक में ही नहीं बल्कि उड़िसा प्रान्त में अपनी सौजन्यता नेक नीति तथा विनम्रता के कारण बनाया है। आप मिलनसार धार्मिक भावना के सौभाग्यशाली व्यक्ति हैं आपकी फर्म द्वारा कटक में एक सदाव्रत भूलेश्वर में कूप ऋषिकेश में धर्मशाला विद्यमान है जो कि आपके धार्मिक होने का प्रमाण प्रगट करती है। आपके चि० श्री हरीकेशजी रामकिशनजी दीनदयालजी सुयोग्य व्यापार निपुण हैं।



श्री बैजनाथ जी मौड़ा
(मनीराम किरोड़ीमल कटक)



श्री बद्रीप्रसाद जी मौड़ा

चांगिया परिवार



श्री रामप्रकाश चांगिया

चांगिया परिवार में श्री भिक्षालाल जी रामकुमार जी बहुत सुयोग्य व्यक्ति है और भिवानी में ही निवास करते हैं। श्री रामप्रकाशजी चांगिया कलकत्ते में स्वतन्त्र व्यापार कर अपनी व्यवसाय कुशलता का परिचय दे रहे हैं।

आप मिलनसार उत्साह सम्पन्न कार्य निपुण व्यक्ति है आप मित्रों के सच्चे मित्र उदार हृदय के कर्तव्य निष्ट महानुभाव हैं और व्यापार में बहुत सफलता प्राप्त किये हुये हैं

कोकड़ा परिवार

इस परिवार में पहले बहुत ख्यातिवान एवं धर्मात्मा व्यक्ति हो चुके हैं। अब श्री केदारनाथ जी कोकड़ा कानपुर में बारदाने का कामकरते हैं श्रीललताप्रसाद पीलीभीत, कलकत्तामें बारदाने का कार्य बहुत बड़े पैमाने पर कर व्यापारी समाज में पूर्ण प्रतिष्ठा बनाये हुए हैं। डा० तुलसीराम जी कोकड़ा अन्यत्र भारतीय चिकित्सालय (स्वास्थयकेन्द्र) में डाक्टरी कर भिवानी में सम्मान प्राप्त किये हुए हैं।

आप सिद्ध हस्त उच्च कोटि के डाक्टर तथा समझदार महानुभाव हैं सबसे बड़ी विशेषता आपमें यह है कि आपने असाध्य रोगियोंको ठीक किया है जो जीवन से निराश हो चुके थे उनको प्राण दान देकर अपनी महानता का परिचय दिया हैं आपके चि० सत्यनरायण, यादवकृष्ण, उच्च शिक्षा प्राप्त

कर रहे हैं। बाकी चन्द्रमोहन, सूर्यमोहन, हरिनोहन, आदि भी पढ रहे हैं। आप सज्जन व मिलनसार व्यक्ति हैं। आप की धर्म पत्नी के नाम से एक औषधालय पीली भीत में काफी समय सेवा कर रहा है।

श्री बनारसीदास जी कोकड़ा

आप काफी समय से तुल्लापट्टी में हैसियन बोरा सुतली आदि की दुकान करते हैं। बड़े ईमानदार ईश्वर भक्त सज्जन और उदार स्वभाव के महान व्यक्ति है।

जल्दाद वंश

यह पहले बहुत समृद्धिशाली व व्यापारिक वर्ग में अपना स्थान रखते थे। अब रामस्वरूप गुप्ता देहली में अपना स्वतन्त्र कारोबार करते हैं। बहुत योग्य और मिलनसार व्यक्ति है।

प्यारीवाला वंश

इनके रहने के मकान चुहड़ों की बजारी में है। इसमें रामचन्द्र जी कलकत्ते में हैसियन बोरे की दलाली का कार्य करते हैं। योग्य कुशल दलालहैं।

सांवड़िया परिवार

इस वंश का बांसल गौत्र है। इस परिवार में बड़े बड़े धर्मप्रिय और ब्यापारकुशल महानुभाव श्री नोरंगराय जी, मोहकमलाल जी, श्री रामशरणदास जी होचुके हैं। अब श्री हजारी मल जी जो शहरके सार्वजनिक कार्य कर्ता मिलनसार महानुभाव हैं तथा दूसरे श्री रामकिशोर जी, श्री तुलसीराम जी आदि आदि हैं जो अपना कारोबार स्वतन्त्रता पूर्वक कर रहें हैं। और भी अनेक योग्य व्यक्ति हैं जो कलकत्ते देहली आदि में गोटे का अच्छे रूप में काम काज करते हैं।

मढोली वाला

यह परिवार लोहे का कम करता है। स्व० केशोराम जी जैसे इस परिवार में अनेकों व्यक्ति होचुके हैं अब मदनलाल जी हैं जो कपड़े की दुकान करते हैं।

नहाड़िया वंश

इनका गौत्र ऐरण है। बागकोठी में इनके मकान है। श्रीमुन्शीरामजो नहाड़िया एक योग्य और समझदार महानुभाव हैं। इनके लड़के श्री दीनानाथ जी प्रेस के काम में निपुण एवं शिक्षित हैं। इस परिवार में श्री गंगाराम जी जैसे अनेक योग्य व्यक्ति हैं। श्री विश्वेश्वरलाल जी नहाड़िया देशभक्त पवित्रात्मा व्यक्ति हैं।

श्री अजुध्याप्रसाद जी सिवानी वाले।

यह परिवार भिवानी का प्रसिद्ध परिवार है। इस परि–वार में अच्छे २ महानुभाव होचुके है। श्री अजुध्याप्रसाद जी–आस्तिक विचारों के सभा सोसाइटियों में भाग लेनेवाले उत्तम विचारों के सुयोग्य व्यक्ति हैं और अपना स्वतन्त्र कारोबार करते हैं।

चहड़िया

इसमें स्व० जुगलकिशोर जी चहड़िया प्रसिद्ध व्यक्ति होचुके हैं अब इनके लड़के भगवानदास जी कलकत्ते में अपना कारोबार करते हैं। कुंजलाल आदि अनेकों व्यक्ति भिन्न २ स्थानों पर कार्य कर रहें हैं।

सारली वाला वंश

अब यह लोग अधिकतर देहली में ही अपना कारोबार

करते हैं वैसे इनका एक बाग भी है। प्रभु कृपा से यह परिवार बहुत विस्तृत है और सब व्यक्ति योग्यता पूर्वक कार्य करते हैं।

लील्हा परिवार

इस परिवार ने रंगून जाकर अच्छी ख्याति प्राप्त की है और धनोंपार्जन के साथ २ जायदाद भी बनवाई है। रंगून के सभ्य समाज में इनकी फर्म जीवनराम सन्तलाल के नामसे प्रसिद्ध है। इनमें स्व० सन्तलाल जी बड़े थे, दूसरे श्री रामप्रताप जी जो बहुत सुयोग्य विनम्र स्वभाव के सीधे सादे व्यापार कुशल महानुभाव हैं। तीसरे श्री रामकुमार जी बड़े आस्तिक, विचारों के प्रभुभक्त, मिलनसार, सुयोग्य व्यक्ति हैं। आपका वहां पर कपड़े आदि का महानतम व्यापार है। आप तीनों भाइयों के सभ्य सन्ताने हैं जो बड़े पैमाने पर अपनी फर्मों की उन्नति में सावधानी के साथ कार्य करते हैं।

कैरू वाला वंश

इनके रहने के स्थान हालुबाजार बजारी में है। इस परिवार में पहिले अच्छे २ योग्य व्यक्ति हो चुके हैं। अब अयुध्याप्रसाद जी अपना कारोबार करते हैं। मिलनसार योग्य महानुभाव हैं।

डोहका परिवार

इस परिवार का आदि निवास स्थान डोहका ग्राम होने के कारण इन्हें डोहका कहा जाता है। स्व० श्री रामजी के सुपुत्र श्री पन्नालाल जी बड़े मिलनसार, व्यवहार कुशल और गम्भीर स्वभाव के व्यक्ति हैं। दूसरे कुंजलाल जी कुशलव्यापारी और समझदार सुयोग्य व्यक्ति हैं आप अहमदाबाद में कपड़े

आदि का थोक रूप में व्यापार करते है। वहां पर इस फर्म की बहुत प्रतिष्ठा है समृद्धिशाली फर्मों में यह फर्म सम्मानित है।

चन्दूका परिवार

इस परिवार में स्व० ला० बुद्धराम जी हुए जिनकी यह प्रायः सन्ताने हैं। इस समय श्री ला० हरनामदास जी विद्यमान है जो पुराने जमाने के ख्याल के सुयोग्य सज्जन है। दूसरे ला० शिवलाल जी वृजलाल जी सूरजभान जी गोबिन्दराम जी रामकुमार जी आदि सब अपना कार्य भिन्न २ नगरों में करते हैं। इसी परिवार में श्री ला० मनोहरलाल जी जैन है। जो स्व० ला० बालमुकुन्द जी के सुपुत्र है। आपकी फर्मों का कारोबार बम्बई, अमृतसर, देहली में कमीशन ऐजेन्ट का काम होता है। आपके सुपुत्र रामस्वरूपदास, जयरामदास मदनलाल, बैजनाथ बी० ए० रामप्रसाद यह सब अपनी फर्मों में सुयोग्यता पूर्वक कार्य करते हैं। सबसे छोटा गणपतराय शिक्षा प्राप्त कर रहा है। ला० हरनामदास जी के तीन पुत्र-बिलासराय जी, फूलचन्द जी, रामजीलाल जी आदि अपना कार्य अलग २ कर रहें हैं।

श्री रामचन्द्र जी सिंगल

हालुबाजार में आपका निवास स्थान है आप पहले मुख्त्यारी का काम करते थे और अब भी करते हैं। मिलनसार, उत्साही व्यक्ति हैं आपका पुत्र घनश्यामदास योग्य है।

श्री घन्सीराम जी वैद्य

आपका गौत्र सिंगल है आप बहुत पहले से आयुर्वेदीय चिकित्सा करते हैं। देहली में प्रेस तथा और काम भी आप

करते रहे हैं। आजकल भिवानी में तपेदिक हस्पताल का संचालन कर रहे हैं।

श्री गोकलचन्द जी आर्य

आप शहर के एक प्रकार से नेता व ऐतिहासज्ञ, समझदार पुरुष हैं। आप सुधारवादी एवं आर्य समाज के नियमों पर विशेष विचार रखते हैं। वैसे आप एक सर्वप्रिय कुशलकार्य कर्ता, मिलनसार, प्रतिष्ठा सम्पन्न, व्यक्ति हैं। आपके ओम प्रकाश आर्य ने शहर में रेडियो की दुकान कर रक्खी है।

ला० नूनकरण जी शोरेवाले

आपके विचार सुधारवादी है। आप पहले और अब भी रामपुरा आश्रम में आत्मकल्याण की भावना से रहचुके हैं और रहते हैं। आप कांग्रेस के आन्दोलनों में जेल यात्रा भी कर चुके हैं। आप से छोटे बृद्धिचन्द जी बदरीप्रसाद जी, बनारसी दासजी, परमेश्वरीदास जी, रामकुमार जी आदि २ सभी समयानुसार व्यापारिक क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं।

ला० ओंकारमल जी गोटेवाले

आप सेठ किरोड़ीमल जी के भानजे हैं। बचपन से ही कांग्रेसी ख्यालात रखते हैं। भिवानी कांग्रेस के प्रेजीडेन्ट भी रह चुके हैं। अच्छे मिलनसार प्रेमी सज्जन है। आपके सुपुत्र चि० नन्दकिशोर गुप्त प्रभाकर बी० ए० में पढते हैं। हिन्दी अंग्रेजी दोनों शार्टहैंड व टाइप के ज्ञाता हैं।

श्री बनवारीलाल जी अकाउन्टेंट

आप स्वभाव से बड़े विनम्र और मिलनसार व्यक्ति हैं। वैसे कार्यकुशल और समझदार कर्मशील सज्जन हैं। आजकल

आप म्युनिस्पिल कमेटी में अकाऊन्टेन्ट पोष्ट पर सुचारु रूप से कार्य करते हैं।

मास्टर रामरिछपाल जी

मास्टर रामरिछपाल जी सुमित्रा प्रेस के मालिक हैं आप ने महाजनी की पुस्तकें भी लिखी है सर्वप्रिय व्यक्ति हैं।

बनारसीदास गुप्ता

यह सोशलिस्ट विचारों के व्यक्ति हैं। पहिले कांग्रेसी विचारों के थे। इलैक्शन के समय यह मैम्बरी में खड़े भी हुए थे पर सफल न हो सके 'अपना देश शाप्ताहिक' पत्र इन के सम्पादकत्व में प्रकाशित होता है।

श्री रामकुमार जी गुप्ता

आप वैसे मिलनसार, कार्यकुसल व्यक्ति हैं। बिजली आदि का सभी कार्य आपकी फर्म से होता है, हालु तथा बिचला बाजार में आपकी दुकानें हैं। आप अच्छे स्वभाव के व्यक्ति हैं बजरंगलाल तथा ओमप्रकाश आपके सहयोग में कार्य करते हैं। और छोटे पढ रहे हैं।

श्री मामनचन्द जी फोटोग्राफर

इनकी दुकान बिचला बाजार श्री रंगनाथ प्रेस की बगल में हैं यहां घड़ियों की मरम्मत तथा फोटोग्राफी भी होती है।

श्री श्यामलाल खजांची

आप स्व० कुन्दनलालजी जो ३५ वर्ष तक भिवानी खजाने के खजांची रहे उन्ही के पौत्र हैं। सरसा में इस समय दुकान कर रहे हैं बहुत सुयोग्य वेदिक विचारोंके मिलनसार महानुभाव

हैं आपके मकान जमीन जायदाद भादरा सरसा भिवानी आदि में काफी हैं आपके भाई श्री गोबिन्दराम आप के सहयोग में कार्य कर रहे हैं। श्री सत्यनारायणजी नलवेवाले आपके अभिन्न मित्रों में से हैं।

श्री फतेहचन्द जी गुप्ता

आपका मकान हालूबाजार में है आपने 'मारवाड़ी गौरव' नाम से एक पुस्तक भी लिखी है। आप हिन्दी के एक अच्छे लेखक भी हैं।

श्री गंगाराम जी आर्य

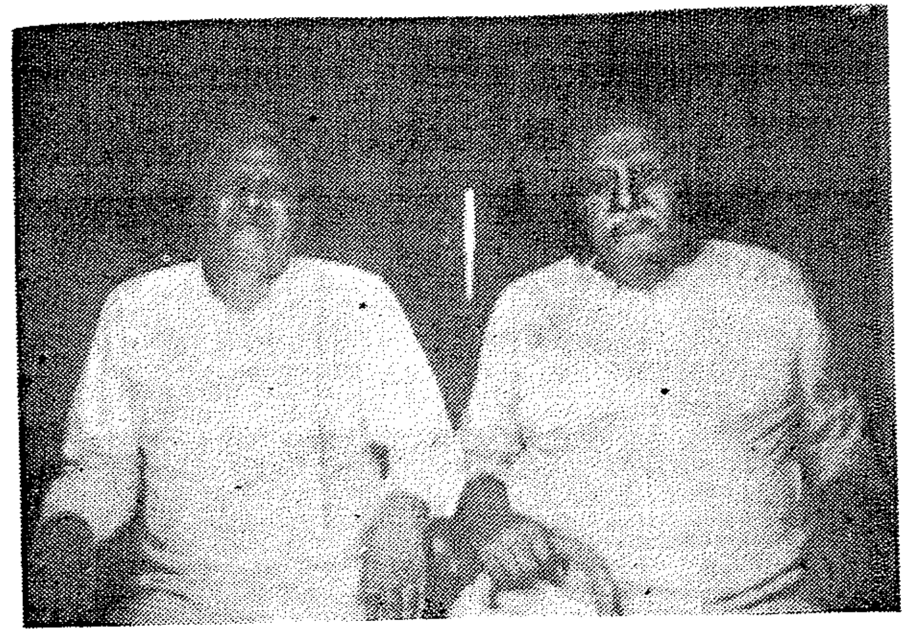
पहले आप खद्दर भन्डार में योग्यता पूर्वक कार्य करते थे कांग्रेस आन्दोलन में जेल यात्री भी होचुके हैं कांग्रेसी विचारों के व्यक्ति हैं। अब अपना स्वतन्त्र व्यापार करते हैं।

मोहनलाल सर्राफ

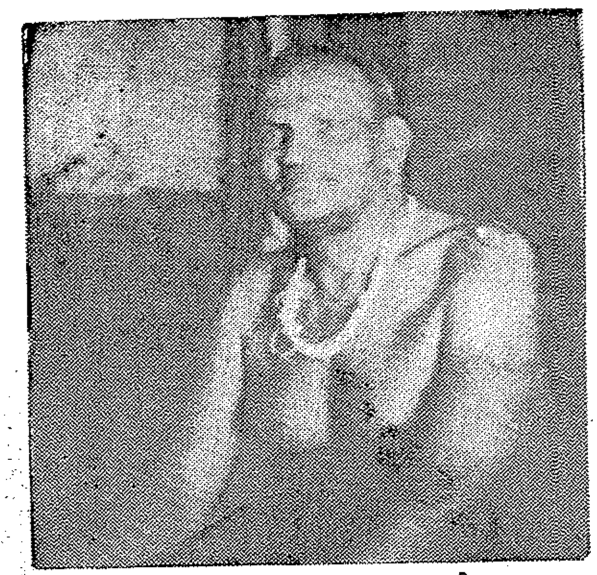
आप बहुत पुराने समय से सर्राफे का कार्य करते हैं आपके महाबीरप्रसाद तथा छोटे दुकानदारी करते हैं।

जीन्दिया परिवार

पहले जीन्दिया परिवाप में बहुत धर्मातमा सत्यनिष्ठ व्यापार कुशल महानुभाव होचुके हैं। अब श्री दीनदयाल जी फूलचन्द जी आदि प्रसिद्ध व्यक्ति हैं। और रौहतक मण्डी में कपड़े का व्यापार करते हैं। यह रोहतक में बहुत मान प्रतिष्ठा युक्त और सभ्य समाज में आदरकी दृष्टि से देखे जाते हैं। श्री हरचन्दराय जी जिन्दिया—आप भिवानी में ठेकेदारी का काम करते है। बहुत मिलनसार, कार्यकुशल एवं एवं मित्रों के सच्चे मित्र हैं। भिवानी में आपको काफी नान प्रतिष्ठा है।


श्री श्यामलाल जी फूलचन्द जी जींदिये


श्री सुवालाल जी जैन


श्री गोकुलचन्द जी आर्य

केडिये

भगवानदासजी प्रहलादरायजी आप दोनों भाई बड़े योग्य मिलनसार व्यापार कुशल व्यक्ति हैं बम्बई में कारोबार करतेहैं

श्री दीनानाथ जी

आप बड़े ही मिलनसार प्रभावशाली कार्यकुशल महानुभाव हैं रायगढ में आपने अपना निजी भवन तैयार करवाया है दानवीर सेठ किरोड़ीमल लुहारी वाले के आप स्नेही व शुभ-चिन्तक हैं विशेष कर कलकत्ते में ही हैसियन बोरे आदि का कार्य बहुत योग्यता और सम्मान पूर्वक करते हैं, भिवानी में आपका निवास भवन हालु बाजार में है, आप बड़े अच्छे व उच्च विचारों के मित्रों के मित्र प्रेमी सज्जन हैं।

आपके चि० राधाकृष्ण शिक्षा प्राप्त कर रहें हैं आपसे छोटे भ्राता बनारसीदास जी बड़े विनम्र स्वभाव के योग्य व्यक्ति हैं।

श्री ताराचन्द जी लुहारीवाले

आप बड़े उदार स्वभाव के मिलनसार सुयोग्य व्यक्ति हैं और यहांपर श्रीगणपतराय उमरावसिंहजी भवानी फर्म का सभी कार्य बड़ी उत्तमतासे कर रहे हैं आपका जीवन उच्चतम जीवन है।

श्री हनुमानदास जी दीनोदिया

आपके पिता श्री शिवसहायमलजी बड़े आस्तिक विचारों के श्री रामानुजसम्प्रदाय के व्यापार कुशल व्यक्ति थे दीनोद ग्राम में आप अच्छे जमीदार और ख्यातिप्राप्त व्यक्ति हैं आप यहां भिवानी तथा दीनोद में जमीदारी एवं आढत आदि का कार्य करते हैं।

श्री दीनानाथ जी लुहारीवाले

आप कलकत्ते में हैसियन बोरे की दलाली बड़ी योग्यता और नेकनीयति के साथ करते हैं बड़े मिलनसार और शान्त स्वभाव के व्यक्ति हैं आपके पुत्र मोतीलाल अपना कार्य अलग करते हैं छोटे पढते हैं।

श्री सागरमल जी तुलस्यान

आप पहले गोटे का काम करते थे आपके पुत्र आत्माराम तुलस्यान इन्सोरेन्स का कार्य करते हैं भिवानी शान्ती परिषद् के मन्त्री हैं।

श्री रामशरणदास जी जैन बी. ए. एल. एल. बी.

आप शहर के एक प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं वकालत के साथ साथ सार्वजनिक जीवन भी बना हुआ है। आपकी अधिकतर प्रैक्टिस इन्कम टैक्स की ही करते है आप राजपूताना बीकानेर शहर में भी अपनी प्रैक्टिस करते हैं। ख्यातिप्राप्त महानुभाव हैं।

श्री अमीरचन्द जी जैन

आपका गौत्र मित्तल है आप आदिवासी हांसी तहसील में जमालपुर के हैं आपके पिता स्व० रणजीतसिंह जी भिवानी आये और तहसील में दीवान पद पर १९१६ में काम संभाला और १९४५ तक बहुत योग्यता एवं सावधानी के साथ कार्य करते रहे। आपके ५ पुत्र हैं जो यू० पी० में अपना कार्य कर रहे हैं।

श्री गोपीराम मास्टर

आप नोपाराम वंश के एक प्रमु भक्त कीर्तन प्रेमी तथा भिवानी कांग्रेस कमेटी के कोषाध्यक्ष हैं स्वभाव से विनम्र मिलनसार वैश्य विद्यालय में अध्यापक हैं।

श्री प्रहलादराय जी खेमका

आप एक प्रतिष्ठित एवं समझदार व्यक्ति हैं आप के भ्राता श्री मातुराम जी बड़े सरल तथा साधु स्वभाव के महानुभाव हैं। आपका निवास भवन हालुबाजार ख्यालीकों की गली में भव्य व विशाल है।

श्री जगदीशप्रसाद गुप्ता

आप तोषाम ग्राम के आदिवासी हैं। परन्तु बहुत वर्षों से आप भिवानी में ही निवास करते हैं पंजाब क्लोथ मिल के अधिकारी वर्ग ने आपको कार्यदक्ष एवं परिश्रम और उद्योग को निगाह में रखते हुए अपना पूर्ण विश्वास पात्र व हितैषी समझ मिल का असिस्टेन्ट मैनेजर नियुक्त किया हुआ है।

वैसे आप एक बहुत होशियार व्यवसाय निपुण अच्छे व्यक्तित्व के कारण इस वर्ष भिवानी कमेटी के मेंबर भी चुने गये है आप के विचार हिन्दु संस्कृति के है आप के सुपुत्र श्री कृष्णदास भिवानी में ही इन्कमटैक्स की प्रैक्टिस करते हैं। आपके भाई श्री ओमप्रकाश जी गुप्ता मिल में ही अच्छे पद पर बहुत योग्यता पूर्वक काम करते हैं मिलनसार और सज्जन व्यक्ति हैं।

काशीराम जी

आप बड़े शिक्षा प्रेमी और अच्छे समझदार एवं कार्य कुशल व्यक्ति हैं पहले आप भिवानी की प्रसिद्ध शिक्षा संस्था में वैश्य विद्यालय के प्रधानाध्यापक थे और आपकी शिक्षा शैली बहुत उत्तम थी फलस्वरूप आपके अध्यापन समय के छात्र आज अच्छी सख्या में और सफल जीवन में हैं।

श्री धनराज गुप्ता

आपके पिता बड़े प्रभु भक्त एवं भजनानन्दी थे आप आजकल अपना स्वतन्त्र ब्यापार करते हैं, बड़े सुयोग्य मिलनसार परिश्रमी एवं ख्यातिप्राप्त व्यक्ति हैं। आपका चि० गौरीशंकर आपके ही सहयोग में कार्य करता है जो बहुत ही सौम्य ईश्वर भक्त है।

श्री घनश्यामदास जी दादरी वाले

आपका गौत्र मित्तल है और स्व० श्री सागरमल जी के सुयोग्य सुपुत्र हैं। आपका जन्म १९७४ में हुआ आप बड़े कार्यकुशल, समझदार, उदार स्वभाव के व्यक्ति हैं। आपने अपनी योग्यता द्वारा गाजियाबाद (घनश्यामदास रामकुमार) फर्मपर बारदाना आदिका अच्छे पैमाने पर कार्यहोता है। मण्डो में इस फर्म की बहुत प्रतिष्ठा है। कानपुर में 'राधेश्याम कम्पनी' के नाम कारोबार होता है। व्यापारिक क्षेत्र में आप का महान सम्मान है। भटिण्डा गणेशट्रेडिंग कम्पनी के नाम से व्यापार होता है।

वैसे आप बड़े ख्यातिबान भाग्यशाली महानुभाव हैं। आपके चि० राधेश्याम, श्यामसुन्दर, रोशनलाल उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। आपके लघुभ्राता श्री रामकुमार जी आपके सहयोग में ही अपनी फर्मों में योग्यता पूर्वक कार्य करते हैं। आपके पूज्य श्री जगन्नाथ जी प्रभुभक्त साधु स्वभावके सज्जन महानुभाव है, अधिकतर शान्ति का जीवन बिता रहे हैं।

मास्टर परिवार

स्व० सूरतराम जी मास्टर भिवानी में बहुत दिनों तक गवर्नमेंट हाईस्कूल में हैड मास्टर रहे इस से वह बहुत प्रसिद्धि प्राप्त व्यक्ति थे उन्ही के वंश में श्री शिवनारायण जी बड़े सौम्य समझदार व्यक्ति हैं इनके सुयोग्य सुपुत्र श्री अमरेश नारायण जी B. A., LL. B. वकील हैं जो बड़े सज्जन मिलनसार उद्योगी एवं परिश्रमी हैं। आप भलाड़ा म्युनिस्पिल कमेटी के योग्य सम्मानित सेक्रेट्री हैं। आपने कुछ समय भिवानी में प्रैक्टिस की पर वहां की जनता ने आप से प्रेम किया फलस्वरूप आप अपने गुरुत्तर भार को सम्भाले हुए हैं और जनता की सेवा कर अपना जीवन सफल बना रहे हैं।

श्री सेढमल जी बी० ए०

आप बड़े योग्य मिलनसार शहर के पुराने परिवार से सम्बन्ध रखते हैं पहले आप भिवानी कमेटी में सेक्रेटरी पद पर योग्यता पूर्वक कार्य करते रहे हैं। बाद में कैथल पंजाब कमेटी के सेक्रेटरी पोस्ट पर चले गये, बहुत समय से सम्मान पूर्वक वहीं पर कमेटी में सेक्रेटरी पद पर कार्य कर अपनी सुयोग्यता का परिचय दे चुके हैं। विचारवान सहृदयता आदि कारणों को लेकर प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में स्थान बनाए हुए हैं।

श्री मीरामल जी

आप कलकत्ते में बहुत दिनों से दलाली का कार्य करते हैं आपका चि० गौरीशंकर शिक्षा प्राप्त कर रहा है।

श्री नारायणदास जी हरलाल का

आप भक्त प्रवर स्व० श्री देवकीनन्दन जी जो भगवान श्री रामानुज सम्प्रदाय के कट्टर श्री वैष्णव दास थे चन्दन (पासे) तथा श्री चूर्ण की सेवा करते थे। आप भी अपने पिता के तुल्य ही प्रभु भक्त और सज्जन सन्तोषात्मा के व्यक्ति हैं।

श्री धनराज जी गुप्ता

आप एक बिना सार्टीफिकट व बिना किसी लायसेन्स के बैरिस्टर सम महोदय हैं आपके मस्तिष्क में नई नई योजना नये २ उद्योग तरह २ की व्यापारिक बिजनिस की बातें उपजती हैं। महान उद्योगी प्रोत्साही सार्वजनिक कार्य कर्ता होशियार व्यक्ति हैं, आजकल आप बाहर ही कारोबार करते हैं।

श्री फूलचन्द जी आर्य

आप दीनोद ग्राम के रहने वाले हैं प्राकृतिक इलाज करते हैं। यहां पर आपने एक यथार्थ चिकित्सालय खोल रक्खा है आपके विचार आर्य समाजी हैं वैसे आप कार्यकुशल व्यक्ति हैं

गीगराज जी बांवलिया

आप श्री सम्प्रदाय के अनुयायी और उदार विचारों के व्यक्ति हैं प्रथम दिन से ही आप विशेष कर कपड़े का ही कार्य करते हैं शहर के ख्याति प्राप्त प्रतिष्ठित मिलनसार व्यक्ति हैं आज कल आप टी० आई० टी० (बिड़ला मिल) में रूई आदि

के खरीद विभाग के एक सम्मानित कार्य कर्ता है आपके अमीचन्द पुत्र है जो कपड़े की दुकान का कार्य करता।

ला० द्वारकादास जी वैद्य

आपने ग्रन्थों के आधार एवं ग्रन्थों को मनन कर काफी अनुभव प्राप्त किया है। आपके निजी नुस्खे बहु मूल्य युक्त होते हैं। और आप अपने स्वतन्त्र आयुर्वेद द्वारा हकीमत करते हैं। आप के छोटे भाई श्री बालुराम जी व्यापारिक क्षेत्र में सम्मान पूर्वक कार्य करते है और आजकल देहली में दलाल वर्ग के प्रेजीडेन्ट नियुक्त है।

श्री हुन्नामल जी

आपका गौत्र बांसल हैं और आप बावलों की गली में अपने निजी भवन में निवास करते हैं बम्बई में आपका कारोबार है बड़े मिलनसार अच्छे स्वभाव के व्यक्ति हैं। आपका चि० सत्यनारायण शिक्षा प्राप्त कररहा है।

श्री गंगाराम जी आपके बड़े भ्राता बम्बई में कपड़े की दुकान करते हैं। ख्यातिप्राप्त व्यक्ति हैं चि० श्यामसुन्दर बजरंगलाल सुभाषकुमार पढ रहे हैं। मुनशीराम रामनिवास बम्बई में ही कपड़े का कार्य करते हैं। राजेन्द्र पढ रहा है।

श्री रूड़मल जी

आप शहर के एक कार्यकर्ता साहित्य प्रेमी तथा एकता पत्र के सम्पादन विभाग में कार्य कर चुके हैं आजकल व्यापार करते हैं।

श्री निरंजनलाल जी खेमका

आप बड़े सरल स्वभाव के मिलनसार व्यापार कुशल

महानुभाव हैं कलकत्ते में आप बड़े थोक में इमारती लकड़ीका कार्य करते हैं मारवाड़ी समाजमें आपको बहुत बड़ी प्रतिष्ठा व इज्जत है विशेष कर कलकत्ते में ही रहते हैं उदार और धर्म प्रिय व्यक्ति हैं !

श्री किरोड़ीमल जी

आपके यहां जयन्ति कम्पनीमें अंग्रेजी दवाइयोंकी बिक्री होती है जयन्तिप्रसाद मिलनसार समाज में प्रतिष्ठित सुयोग्य महानुभाव हैं । मदनलाल हरचन्दजी फर्म में ही कार्य करते हैं

श्री सूरजभान जी नलवेवाले

आप बड़े सीधे सादे विनम्र स्वभाव के विचारवान महा-नुभाव हैं विशेषकर आप श्री सेठ किरोड़ीमलजी के ही सम्पर्क में रहते है और सदा प्रसन्नचित्त उपकार भावना को लिये हर व्यक्ति के कार्य में अपनी उचित राय देते हैं आपके पवित्र हृदय में उदारता एवं दया और दूसरे के दुःख को समझने की भावना व शक्ति है आप बड़े निर्भिमानी आस्तिक विचारों के सभ्य महानुभाव हैं । व्यापारिक समाज में आपकी प्रतिष्ठा व मान है इस समय आपका पवित्र जीवन साधुवत और शान्त एवं महान पुरुषों के समान है आपके निश्वार्थ प्रेम तथा सत्य मैत्री के कारण सेठ जी के विशाल शुद्ध हृदयमें आपका महत्व प्रद स्थान है आपके चि० दुर्गादत्त जी व्यापारिक वर्ग में व्यापार कुशलता के कारण सम्मान प्राप्त व्यक्ति हैं । आपके छोटे भाई सन्तलाल जी शिबलाल जी तथा इनके पुत्र जानकी दास जी सभी सभ्य समाज मेंप्रसिद्धि प्राप्त महानुभाव हैं ।

श्री सागरमल जी सिंघी भिवानी वाला

आपके वन्दनीय पूर्व पुरूष स्व० श्री जीवनराम जी सिंघी जयपुर राज्यान्तरगत बबाई गांव से भिवानी आकर आबाद हुए और यहां आपने सत्यनिष्ट व्यवहार के कारण भिवानी के प्रसिद्ध व्यक्तियों में अपना विशिष्ठ स्थान प्राप्त किया ।

स्व० श्री जीवनराम जी के तीन पुत्र–श्री गणपतराय जी, श्री डूंगरमल जी, श्री परमानन्द जी । आप श्री डूंगरमल जी के प्रतिभाशाली सुयोग्य सुपुत्र हैं । आपके पिता जी का अल्पायु में ही स्वर्गवास होजाने के कारण आपने अपने पांवों पर खड़ा होने की आवश्यकता प्रतीत हुई फलस्वरूप आप देहली चले गए वहां शिक्षा आदि प्राप्त करने के पश्चात आप व्यापारी क्षेत्र में प्रविष्ट हुए ।

आपने अपने उद्योग एवं परिश्रम तथा बुद्धिमत्ता के बल पर बम्बई पोद्दार मिल में एक साधारण कर्मचारी के रुप में प्रवेश किया, यहां आपने अपने सौम्य स्वभाव, सत्यप्रिय सद्व्यवहार तथा विवेक युक्त आचरण से उद्योगपति धन-कुवेर स्व श्री आनन्दीलाल जी पोद्दार के सुपरिवार में बहुत बड़े विश्वास पात्र एवं उन के सच्चे हित चिंतक समझे जाने लगे । इसी कारण आज आप बम्बई पोद्दार मिल के सुयोग्य कर्मशील मैनेजर बनकर अपनी तेजस्विता का परि

चय देरहे हैं। इस परिवार में आपका बहुत बड़ा सम्मान व उनके विशाल हृदय में आपके प्रति महान् श्रद्धा व प्रेम है। यह सभी आपकी सौजन्यता क्रियाशील व्यापार कुशलता एवं उच्च विचारों का ही सर्व फल है। वैसे श्रीमानजी मधुरभाषी बम्बई के व्यापारी समाज में सम्मानित एवं अपनी जन्मभूमि भिवानी के गौरव रूप आदरणीय महानुभाव हैं। आज बम्बई में आपकी महान प्रतिष्ठा का कारण आपकी सार्वजनिक सेवाएं, उदारता पूर्वक दान देने की शक्ति शिष्टता पूर्ण व्यवहारका हो परिणाम है, जो आप वैश्यजाति में वह नर रत्न है जिन्हों ने अपनी प्रतिभा साहस के बल पर बम्बई के व्यापारी समाज में ही नहीं बल्कि समस्त भारत के मारवाड़ी वर्ग में आपको महान प्रतिष्ठा व गौरव है। इसी कारण आज आप न केवल पोद्दार मिल के ही मैंनेजर हैं। बल्कि जयपुर स्पिनिंग एण्ड विविंग मिल्स जयपुरके डायरेक्टर इन्चार्ज बीकानेर इन्डस्ट्रीयल कारपोरेशन एवं श्री गंगानगर राजपूताना कारपोरेशन तथा श्री लक्ष्मी ट्रेडर्स लि० पौद्दार बापना के आप डायरेक्टर एवं इन्चार्ज आदि २ भी हैं।

वैसे आप प्रसन्नचित्त निर्भिमानी मिलनसार स्पष्टवादी सच्चरित्र वैश्य जाति में एक अमूल्य निधि हैं। आपने अपना और अपनी जन्म भूमि भिवानी का यश प्रसारित कर अपने पूर्वजों के नामको बढ़ाया हैं। आपका सरल व सौम्य स्वभाव निर्मल और पवित्र जीवन लोकोपयोगी सफल और सार्थक है।

श्री रामेश्वरलाल चिड़ीमार

आप स्व० रायसाहेब जयलाल जी के पौत्र तथा श्री–प्रहलादराय जी चिड़ीमार के ज्येष्ट सुपुत्र हैं। आपकी फर्म—(रामेश्वरलाल एण्ड ब्रादर्स) के नाम से शेयर आदि का काम होता है। वैसे आप बड़े सरल स्वभाव के मिलनसार ख्याति प्राप्त महानुभाव हैं। व्यापारिक वर्ग में आपकी महान प्रतिष्ठा व इज्जत है। आप उदार स्वभाव के उच्च विचार युक्त व्यक्ति हैं।

आपसे छोटे मुकुन्दलाल, मुरारीलाल, श्यामलाल, वसन्त लाल सभी योग्यता पूर्वक अपने २ कार्य में संलग्न हैं। आपके चि० केशवदेव, किशनलाल W आदि शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

श्री नोरंगलाल जी बड़वे वाले

आप स्व० खूबराम जी बड़वेवालेजो प्रभु भक्त और कवि भी थे उनके सुयोग्यसुपुत्र हैं। यहां आपकी फर्म वस्त्रोस्टोर भिवानी पर कपड़े आदि का बड़े पैमाने पर कारोबार होता है, जो जवाहर चौक में बहुत दिनों से स्थापित है। आप बड़े सुविचारों के सभ्य और मिलनसार आस्तिक सनातनधर्म के परमोपासक उदार स्वभाव के महानुभाव हैं।

आपकी फर्म नेक नीयत से व्यापार करने के कारण प्रतिष्ठा प्राप्त किये हुए हैं। आपके रहने के भव्य भवन, तथा नौहरे आदि मस्तों की गली के पास है। आपके भाई सभी योग्यता पूर्वक कार्य कर रहे हैं।

श्री किशनलाल जी बूबना

आप यहां के एक सनातनधर्मी तथा कार्यकुशल महानुभाव हैं। जिनकी शहर में प्रतिष्ठा व मान है। सोने चान्दी की सुधराई का कार्य आपके यहां होता है।

श्री मुन्नालाल जी

आप बड़े सीधे सादे स्वभाव के मिलनसार व्यक्ति हैं। बम्बई में कपड़े की दलाली आदि का कार्य करते हैं। देहली भिवानी आदि में आपके विशाल भवन हैं। आपके—चि० फकीरचन्द देवीप्रसाद और ओमप्रकाश सभी बड़े भाग्य-शाली परिश्रमी सुयोग्य हैं। आपकी फर्म—देवीप्रसाद मुन्नालाल बम्बई में प्रसिद्ध है।

श्री कन्हैयालाल जी घड़ीसाज

आप भिवानी के एक घड़ीसाज हैं। घड़ियों की मुरम्मत के साथ २ होलडर तथा तसवीरों का काय भी करते हैं।

स्मरण रक्खे—

विश्व प्रसिद्ध अग्रवाल परिवार आज के इस युग में बहुत यश शाली बड़ा परिवार है जिसके आदि महापुरुष श्री वैष्णव सम्प्रदाय के अनुयायी परम भागवत—श्री वैष्णव श्रीमान् अग्रसैनजी थे। आज उनकी बंशावली समस्त वैभवों से पूर्ण जिसमें भामासाह जैसे दानीवीर परोपकारी धर्म प्राण—देश जाति गौ—ब्राह्मण भक्त हो चुके और विद्यमान है। उनकी बाबत लेखनी वृहद् और पवित्र लोकोपयोगी जीवन को क्या लिख सक्ति है। फिर भी कुछ साहस कर बहुत संक्षिप्त में यह वैश्य वर्ग लिखा गया है कमियों का रह जाना मानव धर्म का एक अंग है आशा है उदार मना महानुभाव त्रुटियों की तरफ ध्यान न दें तृतीयखण्ड जिसका प्रकाशन शुरु हो गया है। शीघ्रातिशीघ्र-अपना जीवन फोटू भेजें ताकि जो कमीं रह गई हैं। वह सन्मान पूर्वक पूर्ण कीजाये। "तिलक"

विविध वर्गः—

श्री चौधरी हरद्वारीलालजी प्रिन्सिपल वैश्य कालेज

आप पहले भिवानी के सम्माननीय रेजिडेन्ट मजिस्ट्रेट भी रह चुके हैं। आपके शासनकाल में शहर के बहुत से सार्वजनिक कार्य सफल हुए। भिवानी म्युनिसिपल कमेटी के आप प्रेजिडेन्ट रहे। १०० नल शहर में जो नये लगे, यह योजना आपकी ही थी और उस योजना के बल पर ही वाटर वर्क्स का जीवन बढ़ेगा, शहर में और भी काफी नल जिससे मिल सकेंगे। किरोड़ीमल पार्क, किरोड़ीमल क्लब, किरोड़ीमल लायब्रेरी तथा किरोड़ीमल हाई स्कूल आदि २ लोकोपयोगी संस्थाएं आपके परामर्श तथा आपके ही शासनकाल में सम्पन्न हुईं। जिनका विशेष श्रेय चौधरी साहेब को ही है। आजकल आप वैश्य कालेज जिसके संचालक या यूं ही कहिये सर्वो सर्वा सेठ किरोड़ीमल जी ही हैं उसके आप प्रिन्सिपल महोदय है। जब से कालिज आपके अधिकार में आया है बहुत कुछ उन्नति हुई है और भविष्य में और भी इसको विस्तृत करने की योजना बन रही है। आप जैसे क्रियाशील उच्च विचारों के प्रभावशाली महान व्यक्तियों से जनता का हर प्रकार सेहित होता है।

आप न्याय पसन्द, दृढ संकल्प, मित्रों के सच्चे मित्र धर्म को पूर्ण निभाने वाले उदार त्यागी और खरे स्वभाव के सिद्ध हुए हैं।

श्री बाबू दयाकृष्ण जी एडवोकेट

आपका जन्म ८-३-९६ सन् में हुआ, आप पहले ही समय से बड़े हुशियार होनहार थे। फलस्वरूप १९१८ से आपने वकालत शुरु की और आप भिवानी के सर्व श्रेष्ठ वकील साबित हुए। कई वर्षों आप कमेटी के मेम्बर तथा सरकारी प्रेसीडेन्ट और संस्थाओं के सम्मानित सदस्य रह चुके हैं। धर्म सम्बन्धि ग्रन्थों का आपने बहुत कुछ अध्ययन व मनन किया है। अध्यात्मवादी विचार व शास्त्रों के अच्छे ज्ञाता हैं तथा शहर में ही नहीं इस इलाके में आपका नाम प्रसिद्ध है। शहर के एक माने हुए प्रतिष्ठा सम्पन्न व्यक्ति हैं। आपके भव्य भवन रेल्वे रोड पर हैं। जो आपके यश और वैभवता का परिचय दे रहे हैं। आपके सुपुत्र श्री सुरेषचन्द्र भटनागर बड़ी योग्यता और बुद्धिमता परिश्रम के साथ प्रेक्टिस करते हैं। बहुत मिलनसार सरल स्वभाव गौरवशाली व्यक्ति हैं।

श्री रामकुमारजी गुप्ता

आप हलवासिया थियेटर जो अभी हाल में ही श्री गणेश दास रामगोपाल फर्म द्वारा निर्माणित हुआ है जो बहुत मजबूत एवं विशाल और सर्व प्रकार के आधुनिक साधनों से सम्पन्न देखने में सुन्दर कीमती तथा नया सामान फर्निचर आदि नई मशीन नये ढंग का सभी साज बाज सहित आमोद प्रमोद युक्त हलवासिया थियेटर लिबर्टी नाम से प्रचलित है उसके आप संचालक हैं। वैसे आप मृदुल स्वभाव के कार्यशील उद्योगी परिश्रमी महानुभाव हैं।

श्री बाबूरामदेव जी एम. ए. सक्सेना

आप स्व० डा० मुरारीलालजी के सुयोग्य सुपुत्र हैं। मुरारी थियेटर सन १९३५ से आपके द्वारा संचालित है। आपने सिनेमा लाइन में अपना काफी अनुभव बढाया है और आपने मुरारी थियेटर की सर्व प्रकार से उन्नति की है आप मित्रों के मित्र और मिलनसार व्यक्ति हैं। और भिवानी कमेटी के मेम्बर रह चुके हैं। शहर में आपका मान और प्रतिष्ठा है।

श्री चन्दूलाल जी वर्मा

चन्दूलाल जी सोने चान्दी आदि के औजारों की दुकान करते हैं। वैसे हिन्दी के लेखक भी हैं। सार्वजनिक कार्यकर्ता और इसी वर्ष कमेटी के मेम्बर भी निर्वाचित हुए हैं।

श्री मनोहरलालजी सहदेव

आप स्वयं दांतों के लगाने का कार्य करते हैं और वैसे शहर में अच्छा रसूक है। दांतों के काम में अच्छी तरक्की की है।

श्रीमहादेवप्रसाद स्वर्णकार

आप शहर के अच्छे २ घरों में काम करते हैं और बहुत अच्छा जेवर योग्यता व इमानदारी के साथ बनाते हैं। इनका कारोबार पहले ही दिन से अच्छा रहा है। इनके और भाई श्रीराम आदि अच्छे दस्तकार हैं। स्नेहीराम जो जड़िया अच्छे कारीगर हैं।

श्री कुन्दनलाल जी

आप बहुत समझदार व हाथ के अच्छे दस्तकार हैं। इनका सुविशाल भवन अच्छे मौके पर है। यह परिवार धनिक वर्ग के परिवार में स है।

स्व. चन्दूलाल जड़िया-जो 'उस्ताद' के नाम से प्रसिद्ध थे उनके लड़के अच्छा काम करते हैं

श्री शिशपालसिंह जी-सच्चे कांग्रेसी भक्त, जो कई बार राष्ट्र सेवा हित जेल यात्री रह चुके हैं स्वर्णकारी के काम में शहर में दस्तकार साबित हो चुके हैं। और अच्छा काम करते हैं।

श्री राधाकृष्णजी वकील

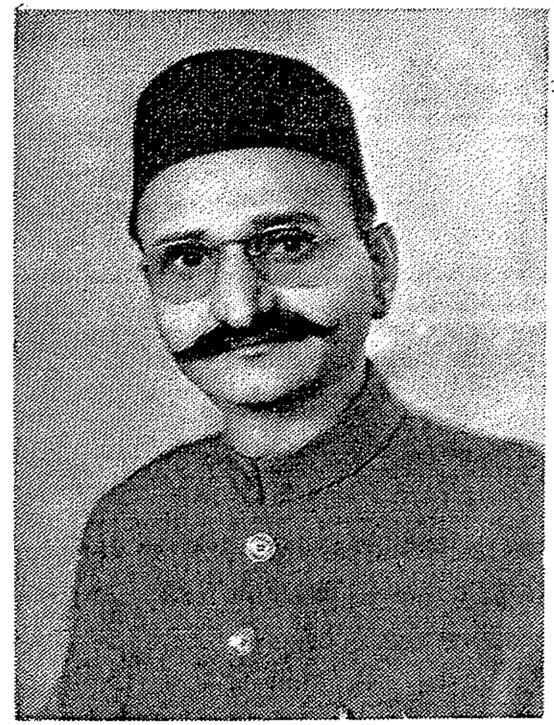
आप अच्छे मेहनती सुयोग्य वकील है। बहुत समय से वकालत का ही कार्य करते हैं। बड़े मिलनसार हर व्यक्ति के साथ आपकी हमदर्दी है। समाज में आपकी अच्छी प्रतिष्ठा व इज्जत है। आपका चि० पुत्र शिक्षा प्राप्त कर रहा है।

श्री नानूराम जी स्वर्णकार

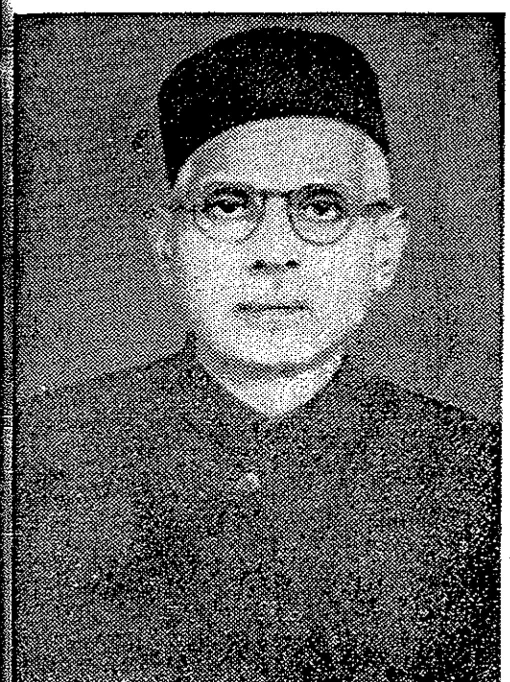
आपका जन्म वि०१९६९ भिवानी का है और सीगड ोत्र है आपकी सुप्रतिष्ठित फर्म हालू बाजार में वैदों की दूकान के पास नानूराम श्रीराम नाम से प्रसिद्ध है। यहां पर स्वर्ण के सुन्दर आभूषणों के अलावा मीनाकारी, जवाहरात, जड़ाई एवं ीरे पन्ने आदि का काफी कार्य होता है। यह फर्म शहर की तिष्ठित फर्म है और लाखों ही रुपयों का यहां प्रतिवर्ष कार्य ोता है। श्री नानूरामजी स्वर्ण निर्माण में कुशल हस्त उच्च-र्णी के महान कलाकार हैं आज भिवानी के स्वर्ण समाज में ी नहीं बल्कि समस्त सभ्य समाज में इनकी सुप्रतिष्ठा है। आप मिलनसार धार्मिक विचारों के देखने में प्रतिभावान एवं ुडौल व्यक्ति हैं। भिवानी स्वर्णकार मण्डल के आप सेक्रेटरी ्व गौपाल गौरस गौशाला के आप भू० पू० सेक्रेट्री हैं। आपके चि० पुत्र सोहनलाल आपके सहयोग से ही योग्यता ूर्वक कार्य कर रहे हैं।

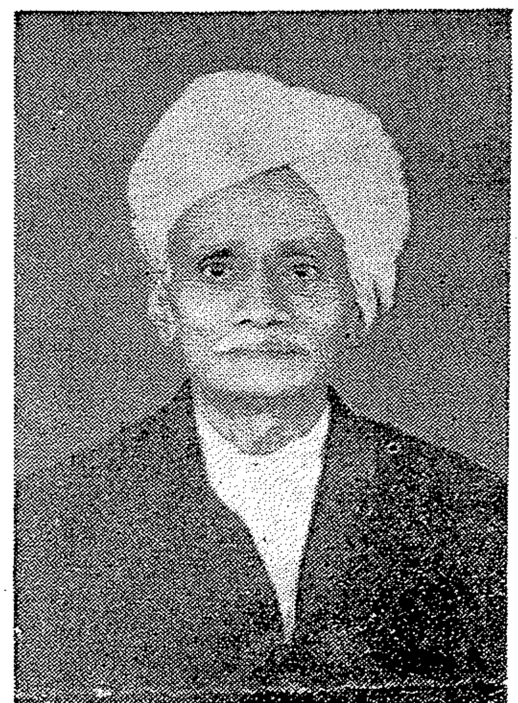


श्रीरामजी स्वर्णकार



श्री नानूराम जी स्वर्णकार





अमरचन्द श्रीराम भिवानी

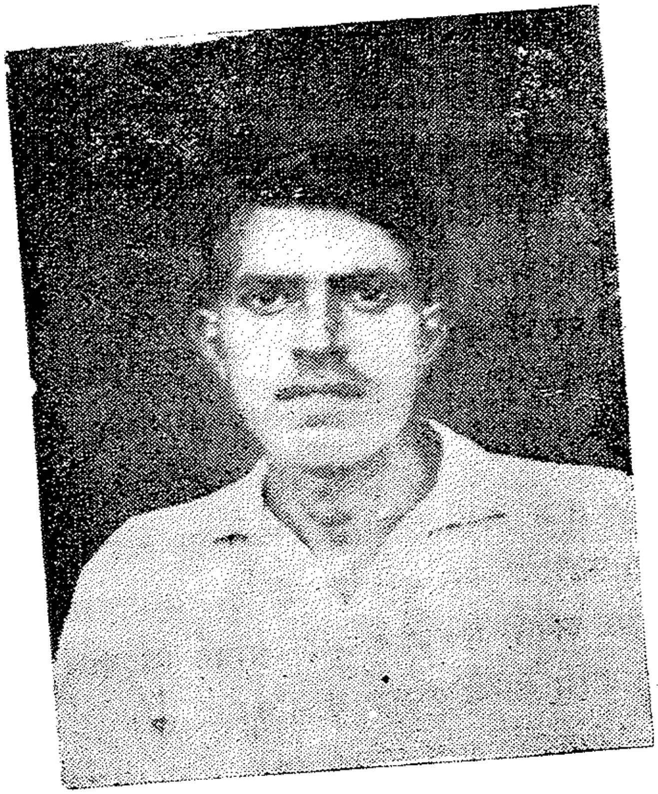
इस फार्म के श्रीरामजी स्वर्णकार प्रोप्राईटर है, और यह हालु बाजार बैदों की गली में स्थित है। श्रीराम जी भिवानी स्वर्णकारों में वैभवशाली प्रतिष्ठा सम्पन्न व्यक्ति है। स्वर्ण निर्माण कला में आज श्रीरामजी की प्रसिद्धि भिवानी ही में नहीं दूसरे स्थानों पर भी काफी है। मीना एवं कटाई का काम यहां का वास्तव में एक महान कला से सम्बन्ध रखता है। उपरोक्त फर्म इतनी विश्वस्त फर्म है जिस पर लोगों का सोना निर्माण लिए बहु संख्या में पड़ा रहता है, विशेषता यह है कि बिना किसी लिखा पढी के लोग यहां पर यों ही सोना रख जाते हैं। इस दुकान पर अपनी स्त्रियों से भी अधिक विश्वास करते हैं इसको उन्नत करने का श्रेय श्रीराम जीको ही है।

आप उदार स्वभाव सुडोल व सुन्दर शरीर के गम्भीर व्यक्ति हैं आपके चि० सत्यनरायण ओमप्रकाश विजयकुमार आदि पढ़ रहे हैं।

श्री मातुरामजी (भाडी

आपजैसा शहर में ही नहीं बल्कि पंजाब में कपड़े-कैटिंग का दस्तकार मिलना मुश्किल है। आपके स्वंय हाथों से सिले कोट पतलून आदि पहिन कलकत्ता बम्बई के अमीरों ने आपको धन्यवाद दिया है।

भिवानी के नाम को आपके द्वारा सिलाई के काम में वाह वाह प्राप्त हुई है।



श्री रामचन्द्र जी—

आप बहुत मिलनसार सरल स्वभाव के बड़े उद्योगी परिश्रमी काष्ठ काम के माने हुए शहर में एक प्रसिद्ध दस्तकार हैं जोड़ी मेज कुरसी आदि २ सभी कामों के आप कारीगर हैं। और लोह रंग आदि के पूरे जानकार कुशल कार्य करताहै इसके अलावा हर प्रकार की दस्तकारी के लिये आपकी अनोखी सूझ के साथ २ कोई भी कार्य आप से छिपा नहीं है। बड़े ईमानदार हर व्यक्ति के साथ सुन्दर व्यवहार रखने वाले उदार एवं पवित्र आत्मा के सच्चे दिलके सुयोग्य व्यक्ति हैं, इतिहास के कार्य में आप ने बहुत काम किया है।

श्री किशनलाल जी पैन्टर



आप बिल्डिङ्ग बनाने के प्रत्येक काम के अच्छे जानकार, ड्राफ्समैन पैंटर, फोटोग्रफर तथा इस इलाके के सुप्रसिद्ध चित्रकार हैं। आपके बनाये चित्र प्रदर्शनियों में जाते रहे हैं।

सुयोग्य कलाकार और हर व्यक्ति में प्रेम तथा सेवा भाव की भावना आपके दिल में होने से इसी वर्ष भिवानी कमेटी के मेम्बर भी चुने गये हैं।

श्री कर्णसिंह जी मागोठिया



आप नक्सों का काम बहुत हुशियारी व चतुरता पूर्वक करते हैं वैसे इमारत बनाने के स्वयं ठेके भी लेते हैं। बड़े महेनती परिश्रमी मिलनसार व्यक्ति हैं भिवानी का वैश्य हाई स्कूल आपकी ही देख रेख में तथा आपकी सूझ से नक्सा तैयार होकर इस भव्य व विशाल बिल्डिंग का निर्माण हुआ है शहर में आपकी इज्जत है।

श्री रामानन्द जी

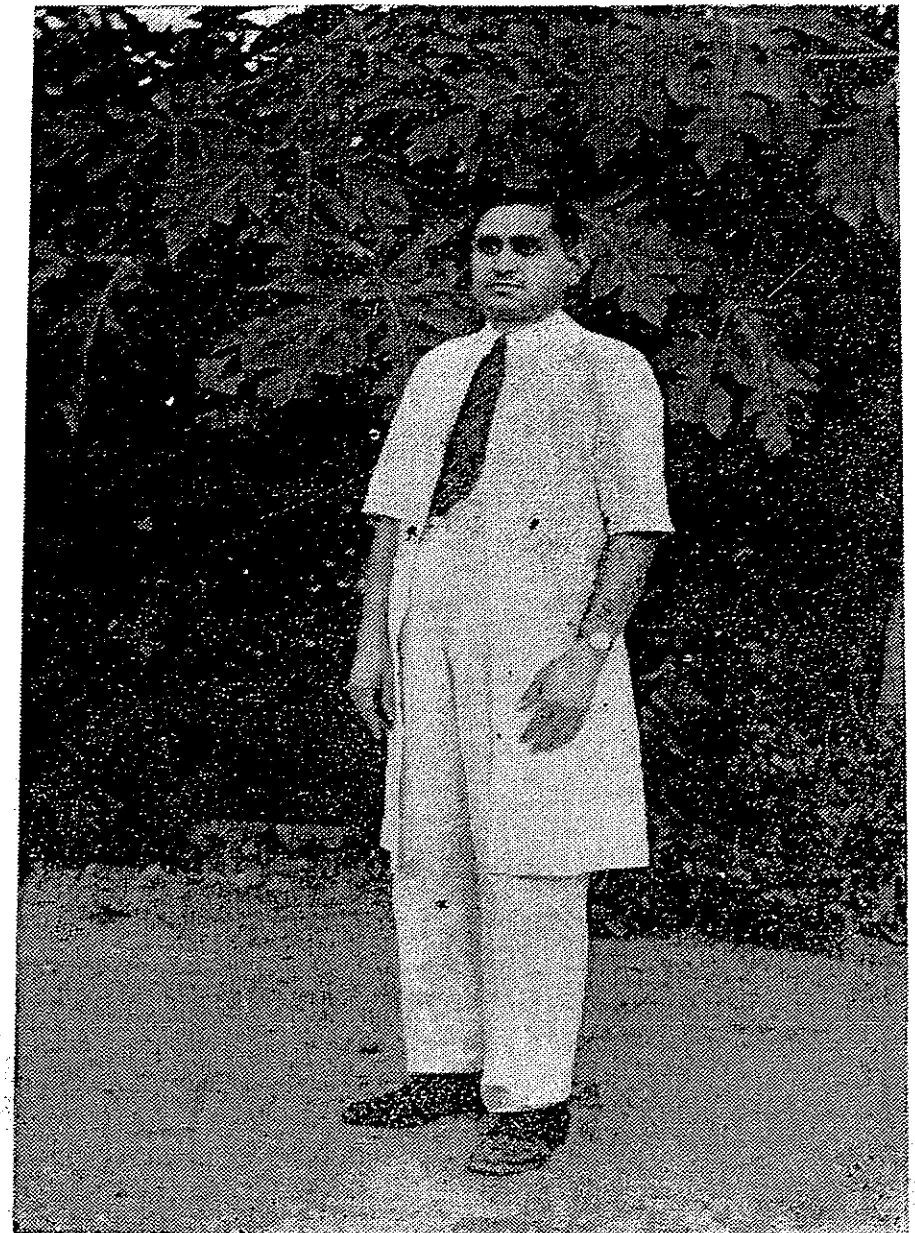
आप सब से पहिले शहर में वोविन फैक्ट्री के लगाने वाले हैं। बहुत समझदार परिश्रम और उद्योगी मित्रों के सच्चे मित्र हैं सचाई और मेहनत का फल प्रत्यक्ष है भिवानी की वाविन फैकट्रियां प्राय बन्द है पर आपके कारखाने कीबनीहुई वाविन कलकत्ता बम्बई देहली, कानपुर अहमदाबाद आदि में जारही है और अच्छी साबित हुई है। सौभाग्य वश आपको श्रीमान् पं० केशवदेव जी शर्म्मा का सहयोग व साथ मिल गया इससे और भी कारखाने को लाभ है। दूसरे आपके घासीराम लघु भ्राता बड़ा हुसियार कार्य कुशलता के कारण सर्व प्रियता और सफलता प्राप्त किए हुए हैं।

श्री डा० प्यारेलाल जी

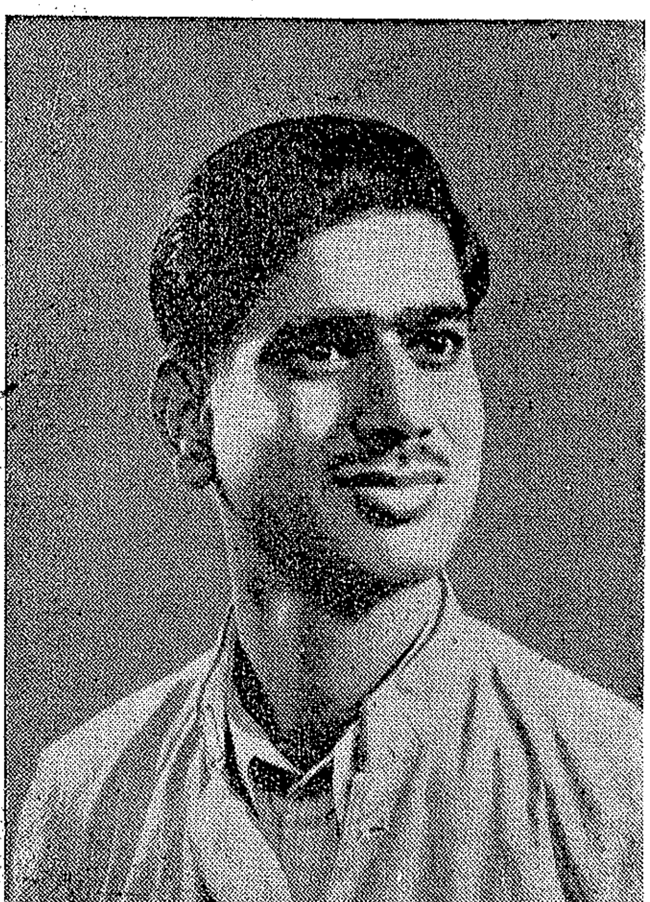


आपने यहां आकर काफी तरक्की की है। आपका जीवन सार्वजनिक जीवन है। हिन्दू—मुस्लिम दंगे में आपने जो काम किया है वह स्मरणीय है इससमय आप डाक्टरी की चिकित्सा करते हैं। वैसे आप मिलनसार सज्जन उदार—स्वभाव के व्यक्ति हैं।

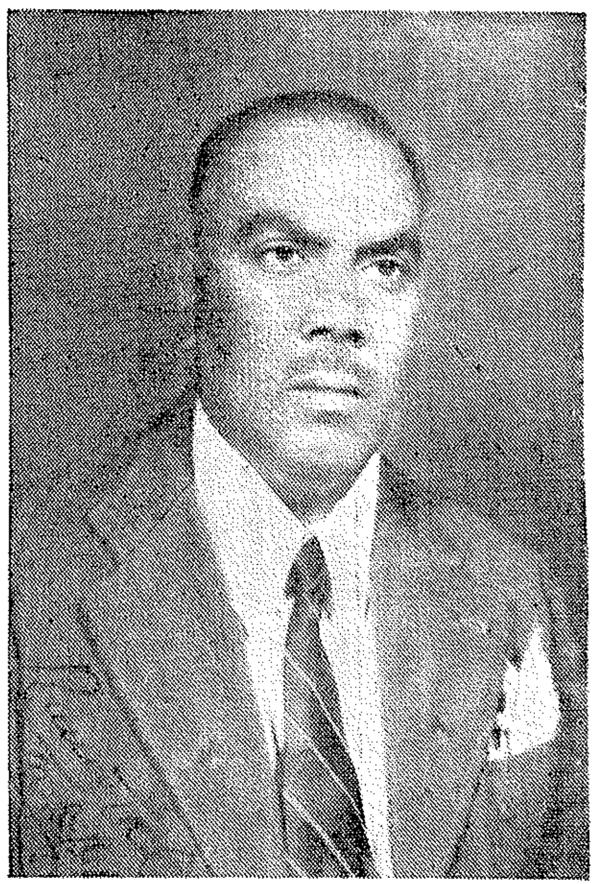
—❀—



डा० पुरुषोत्तम दत्त जी 'गिरधर'
ईन्चार्ज किशनलाल जालाण फ्रीआइ, हस्पताल भिवानी।



श्री बजरंगलाल जी वैद्य



डा० रामदयाल जी एम. बी. बी. एस.

श्री डा० पुरुषोत्तमदत्त जी गिरधर

आप मुलतान शहर के आदि वासी हैं। महान उद्योग और बुद्धिमत्ता के कारण आपने अपने व्यक्तित्व को दिनों दिन उच्च स्तर पर पहुँचाया है।

उरोक्त गुणों का प्रमाण—आज आप भारत प्रसिद्ध इस प्रान्त की सर्व श्रेष्ठ संस्था श्री किशनलाल जालान फ्री आई हस्पताल के प्रधान चिकित्सक-पद पर आरूढ़ हैं। आप की नेत्र-चिकित्सा की कौशलता बड़े-बड़े डाक्टरों के लिए आकर्षक तथा आश्चर्य जनक बनी हुई है। आपके कुशल कारों द्वारा प्रति वर्ष हजारों नेत्रहीन निराश मानव; फिर से देश एवं कुटुम्ब दर्शन कर अपने जीवन को सुखी बना रहे हैं। इसी कारण आप इस इलाके में जितना मान प्राप्त किए हुवे है वह लेखनी के संतुलन से बाहर है।

आपके परिश्रम के कारण यह संस्था पंजाब राजस्थान के अलावा कलकत्ता, बम्बई, अहमदाबाद आदि चारों तरफ के नेत्र-हीन लोगो के लिए कल्पवृक्ष बनी हुइ है। भिवानी का यश फैलाने में श्री गिरधर जी का नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखने योग्य है।

आपके अनेकों शिष्य प्रशिष्य भारत के कोने-कोने में जनता को नेत्र दान देने के साथ ही साथ अपना जीवन सफस बना रहे हैं।

आप की नस नस में गरीबों के प्रति सेवा भाव कूट-कूट कर भरा हुआ है। आप प्रेम प्रदर्शन, की अपेक्षा, प्रकटता को अधिक महत्व देते हैं, आपसे दिखावा कोसों दूर रहता है और वास्तविकता आपकी सहचारिणी है।

प्रत्येक व्यक्ति से हंस-हंस कर बाते करना आपकी सौजन्यता

और विनोद शीलता का परिचारक तथा निर्भिमान ी, सर्व ग्राह्य व्यवहार का प्रतीक है।

आपने इस प्रान्त में अपनी कुशल चिकित्सा तथा कठोर परिश्रम द्वारा जिस प्रकार लोगों के हृदय में स्थान प्राप्त किया है। ठीक उसी तरह दूसरे प्रान्तों में भी जन सेवा भाव को लेकर कैम्प लगाए हैं और उन प्रान्तों के बड़े-बड़े मनिष्टर आपकी चिकित्सा क्रिया को देख प्रभावित हुए और आपका महान सम्मान किया है।

श्री पुरुषोत्तमदत्त जी गिरधर बहुत ही सुयोग्य, प्रतिभावान, कार्य कुशल, नीति निपुण, मित्र हृदय के महान् जन हितैषी है आपके छोटे भ्राता :—

श्री डा० नरायणदास जी गिरधर

आप भी अपने भाई की तरह हस्पताल का कार्य बहुत योग्यता पूर्वक कर रहे हैं। इनका नेत्र सम्बन्धि विशाल ज्ञान जहाँ पूर्ण माना जाता है वहाँ आप की शारीरिक सम्बन्धि प्रत्येक चिकित्सा भी सफल है। आप सिद्ध हस्थ व्यवहार निपुण कुशाग्रबुद्धि के सुयोग्य व्यक्ति है। आपने नेत्र परीक्षण द्वारा कई एक नवीन आविष्कार किए है, जिनकी प्रशंसा भारत एवं विदेशियों ने की है। डा० पुरुषोत्तमदत्त जी गिरधर के बड़े सुपुत्र चितरंजनदास बहुत समझदार अपने कार्य में दक्ष, सौम्य प्रकृति के उत्साही यूवक है और ठीक अपने पिता के अनूरूप विनम्र स्वभाव वाले।

श्री डा० भीष्मचन्द्र जी M. B. B. S.

आप उच्च कुल से सम्बन्धित हैं। डाक्टरी पास करते ही भिवानी आकर स्वतन्त्रता पूर्वक प्रेक्टिश करने लगे, बहुत मनन-

शील और भिवानी के सर्व श्रेष्ठ डाक्टर माने जाते हैं। शान्ति पूर्वक इलाज करना और मरीजों का हर तरह हित चिन्तन कर उसे रोग मुक्त करना ही आपका विशेष गुण है। डा० भीष्म-चन्द्र जी द्वारा ऐसे-ऐसे निराश रोगी रोगमुक्त हुये हैं जिन्हें चारों ओर से जवाब मिल चुका था। हालु बाजार में आपकी डिस्पेन्सरी है। योग्य चिकित्सक के नाते भिवानी वाले आपका हृदय से सन्मान करते हैं।

डा० भण्डारी जी M. B. B. S.

भिवानी में आप १९४७ के बाद से चिकित्सा करते हैं। मिलनसार प्रकृति और उत्साह सम्पन्न तथा बुद्धिमान चिकित्सक हैं। हालु बाजार में डा० भीष्मचन्द्र जी के सामने विराजते है। आपका भी शहर में काफी प्रभाव है।

डा० रामदयाल जी M. B. B. S.

आप आदि वासी लाहौर के हैं। देश विभाजन के पश्चात् आप भिवानी बिचला बाजार में डाक्टरी करने लगे, हस्थकुशलता के कारण काफी प्रसिद्धि प्राप्त की। आपकी चिकित्सा-प्रणाली की प्रशंसा वैद्य एवं डाक्टर दोनों ही करते हैं। आप बहुत अच्छे विचारों के प्रभुभक्त मिलनसार विशाल काय डाक्टर हैं।

श्री डा० रामजीदास जी होम्यो पैथिक

आप बड़े उदार एवं सफल चिकित्सक हैं, पाकिस्तान में जब आप डाक्टरी करते थे आपका बड़ा मान व ख्याती थी अब बिचले बाजार में प्रेक्टिश करते हैं आयुर्वेद का भी आपको ज्ञान है।

श्री धर्मचन्द्र जी सूगला

आप केशोराम कॉटन मील कलकत्ता के कोषाध्यक्ष हैं। आप अपनी योग्यता एवं विनम्रता के कारण मील में बहुत अच्छी प्रतिष्ठा बनाए हुए हैं आपके पिता श्री दौलतराम जी बड़े प्रतापी व कार्य कुशल व्यक्ति थे। आप सादगी पसन्द निर्भिमानी उच्च चरित्र युक्त सुयोग्य महानुभाव हैं।

श्री शिव कुमार !—आप त्रिपुरा वायुयान विभाग में उच्च पद पर कार्य कर अपने को ख्यातिवान बनाए हुए हैं। भिवानी में हिन्दुत्व विचारधारा द्वारा जन जागरण में आपका बहुत बडा हाथ है आप बहुत निर्भीक प्रकृति के सुयोग्य व्यक्ति हैं।

श्री परमेश्वरीदास जी सूगला भारतीय विचारधारा के सीस भिवानी में वारदाने का कार्य करते हैं भारतीय जन संघ के प्रधान व उत्साही कवि तथा कर्तव्य निष्ट व्यक्ति हैं।

श्री गौरीशंकर जी शर्मा कौशिक

आप स्वर्गीय श्री खूबीराम जी जो नगर प्रसिद्धि आलमाल कुल के पुरोहित एवं कर्मनिष्ठ ब्राह्मण थे, उनके सुपुत्र हैं। बाल्य काल में ही पितृ वियोग होजाने के कारण आपने अपने पाँवों पर शीघ्र ही खड़ा हो जाना पड़ा, फलस्वरूप व्यपारिक क्षेत्र में एक सुयोग्य और सफल व्यक्ति बने।

आजकल आप कटक में "रामधनदास रामकिशन" फर्म से उच्च पद पर सम्मान पूर्वक कार्य कर अपने जीवन को सफल बना रहे हैं। आप मिलनसार सुयोग्य एवं विनम्र स्वभाव कुशल व्यक्ति हैं।

श्री विश्वेश्वरलालजी शर्मा

आप श्री पं० उदमीरामजी के सुयोग्य सुपुत्र हैं। आपके निवास स्थान ढानी महताब में हैं। आपने अपने उद्योग एवं परिश्रम से अपने जीवन को उन्नत बना कर व्यापारी समाज में प्रवेश किया, फलस्वरूप आप विनम्रता सौजन्यता के कारण दिनोदिन उन्नत होते गए। आज कटक में उड़ीसा की सुप्रसिद्ध जौहरीमल गजानन्द फर्म पर कुशलता पूर्वक कार्य कर पूर्ण सम्मान युक्त बने हुवे हैं।

आप प्रतिभावान गम्भीर प्रकृति के सुयोग्य व्यक्ति हैं। आपने अपने परिश्रम से अपना, अपने परिवार का महत्व प्रद स्थान स्थापित किया है। आपके भ्राता श्री गूनराम आपके सहयोग में योग्यता पूर्वक कार्य करते हैं।

श्री दीपचन्द जयरामदास स्वर्णकार

इस फर्म के प्रोप्राईटर श्री रुघनाथराम जी हैं यह बहुत कुशल स्वर्णकार शहर में प्रतिष्ठा प्राप्त तथा उच्च विचारो के समझदार महानुभाव हैं। इनकी कारीगरी की प्रशंसा ही इनकी सब से बड़ी इज्जत है आपके पुत्र श्री गोपीराम आपके ही सहयोग से फर्म में कार्य कर रहे हैं। आपके भ्राता—श्री नरसिंहदास जी किशोरीलाल जो भी बहुत सुयोग्य कार्य निपुण चतुर व्यक्ति हैं आप लोगों का प्रेम बहुत ही प्रशंसनीय है नरसिह दासजी के पुत्र मामनचन्द नोरंगराय भगवानदास श्री किशोरीलाल के पुत्र रामजीलाल आदि अपना-अपना कार्य करते हैं।

श्री चौधरी प्रभुलाल जी वकील

आप यहाँ के रईस परिवार से सम्बन्धित हैं। आपके पिता

श्री चौ० माणकलाल जी बहुत समझदार व्यापर कुशल तथा शहर के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। आप पहले म्यु० कमेटी के सैक्रेटरी तथा एग्जेक्टिव आफिसर व कमेटी के मेम्बर भी रह चुके हैं। बड़े मिलनसार, प्रेमी मित्रों के मित्र प्रभावशाली शहर के वकील हैं। आपके छोटे भाई दुलीचन्द जी घर का कार्य करते हैं। आपके भ्रातृज-रणजीतसिंह जी भिवानी मार्केट कमेटी के प्रेसीडेण्ट हैं।



जो एक प्रभावशाली मिलनसार सर्वप्रिय कांग्रेस प्रेमी उत्साही युवक हैं।

श्री रामकिशन जी गुप्त

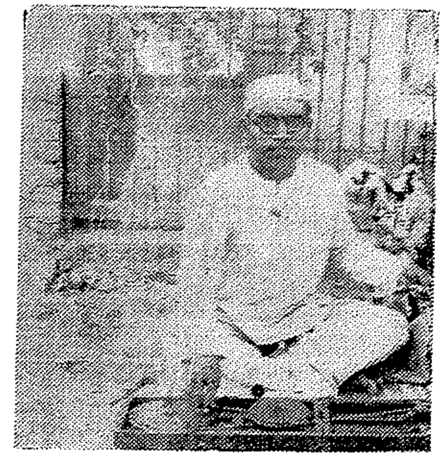
आप सुयोग्य और मिलनसार व्यक्ति हैं। देहली में ही सपरिवार निवास करते हैं। वर्तमान में दैनिक जनसत्ता पत्र के किसी विभाग में योग्यता पूर्वक कार्य कर रहे हैं।

श्री माणकचन्द जी

आप हिन्दी साहित्य के ज्ञाता तथा विचारवान् और राजनीतिज्ञ, सुधारवादी मिलनसार व्यक्ति है। विशेषकर कलकत्ते में ही हैसियन बोरों आदि का कार्य करते हैं। आपके लघु-भ्राता श्री प्रहलादराय बड़े योग्य व्यापारिक वर्ग में प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। बड़े भ्राता श्री मोहनलाल जी बहुत कुशल कार्य कर्ता समझदार तथा सज्जन प्रकृति के महानुभाव हैं। आपका परिवार भिवानी के प्रसिद्ध परिवारों में से हैं।

श्री राधाकृष्ण जी वर्मा

आप भिवानी काँग्रेस के प्रधान तथा सर्वप्रिय महानुभाव हैं गत: काँग्रेस आन्दोलनों में आपने पूर्ण सहयोग दिया और कई बार जेल यात्रा भी की वैसे आप गम्भीर प्राकृति के समझदार और सुयोग्य व्यक्ति है शहर के प्रत्येक सार्वजनिक कार्य में पूर्ण रूप से भाग लेते हैं।



श्री गोरासिंह पहलवान

आप १९४७ के बाद पाकिस्तान से भिवानी आये और अब स्थाई रूप में भिवानी ही रहते हैं आपने भारत के पहलवानों को कुश्ती के लिये कई बार ललकारा है। भारत विख्यात पहलवानों में आपका नाम है ब्राह्मणों में और बुजर्गों में बहुत श्रद्धा रखते है।

श्री ठाकुरदास जी फोटोग्राफर

आप का आदि निवास स्थान मुलतान शहर है। १९४७ के पश्चात् आप भिवानी पधारे, और फोटोग्राफी आरम्भ की, किन्तु उस समय शहर इस कला से कोई खास दिलचस्पी नहीं रखता था, जब आपने अपनी महान कला का दिग्दर्शन करवाया और मित्र भाव का परिचय दिया, तब जनता इधर आकर्षित होने

लगी और यह शहर जो चित्र कला की दृष्टि से पिछड़ा हुआ था, आज इस कमी को आपके सहयोग से पूरा करता दिखाई देरहा है। वास्तव में आप एक बहुत ही कुशल चित्रकार तथा इस कला के पूर्ण पण्डित हैं। आप गम्भीर प्रकृति के विचारशील सुलझे हुए महानुभाव है।

आपके बड़े भ्राता श्री भगवानदास जी बहुत विनम्र सहनशील, कार्य कुशल सरल प्रकृति के सुयोग्य व्यक्ति हैं। ठाकुरदास जी का भिवानी इतिहास में चित्र सम्बन्धि सहयोग सदैव स्मरणीय एवं पूर्ण कृतज्ञ रखने वाला है।

श्री हरदयाल जी

आप शहर के प्रतिष्ठित व्यक्ति हो चुके हैं। पहिले सरकारी विभाग में कार्य करते थे। आपके सुयोग्य सुपुत्र तथा पौत्र सर्विस करते है।

ब्रह्म-भट्ट

पहिले रमेश जी ब्रह्म भट्टों में अच्छे कवि हो चुके हैं। अब पं० जुवाहर जी श्री पं० रोशनलाल जी रेलवे विभाग में बहुत समय से कार्य करते हैं। बड़े मिलनसार व्यक्ति हैं। श्री रामप्रसाद जी, कॉंग्रेस आन्दोलन में जेल-यात्रा भी कर चुके हैं।

व्यास

यह लोग उच्च वर्ग के महानुभाव हैं। पवित्रदान लेते हैं। अब इस वर्ग में काफी शिक्षित युवक हैं। और कविता भी बहुत सुन्दर एवं आकर्षक बनाते हैं।

सिख-वर्ग

सरदार मोती सिंह जी वेदी

यहां पर सर्व प्रथम श्री मोती सिंह जी वेदी जो बिजली के

काम करने वालों में वेदी एण्ड कं० के प्रोप्राइटर हैं। इन्होंने अपने परिश्रम एवं उद्योग और प्रेम की वजह से श्री गुरु द्वारा की स्थापना अपने कई एक सहयोगियों के सहयोग से की।



आप बड़े ही मिलनसार प्रेमी और बड़े उदार एवं ईमानदार महानुभाव हैं। सौभाग्य वश आपको श्री दिलीप सिंह जी वीर बहादुर कार्य कर्त्ता साथी मिले जिन्होंने वेदी एण्ड कम्पनी को शहर में ही नहीं, इस प्रान्त में रोशन कर दिया। आप बड़े ही प्रेमी तथा हंसमुख हुशियार और दानी भी हैं।

भिवानी गुरुद्वारा का निर्माण आपने जिन कष्टों के साथ किया है उनका अन्दाजा नहीं लगाया जा सकता। आपके ही साथी कोडूराम भी कुशल दस्तकार बिजली के काम को पूरी तौर पर करने वाले हैं।

आज आप अपने प्रेम व ईमानदारी के कारण वेदी एण्ड कम्पनी को शहर की सर्वप्रिय कम्पनी बनाए हुए हैं। इस समय शहर में बिजली की यह सब से बड़ी दुकान है। जो विचला बाजार में स्थित है।

(ना)ई-वर्ग

श्री रामस्वरूप जी

आप रेलवे विभाग में कार्य करते हैं अच्छे मिलनसार व्यक्ति (हैं)। शहर में नाई वर्ग के चारों तरफ मकान हैं। इनका सम्बन्ध (इ)स परिवार से है शिवनारायण, अमरसिंह, मोहनलाल, टैणीसिंह, (र)ामकुमार, शम्भूदयाल, मदनलाल, पूर्णचन्द, राधेश्याम, लालाराम आदि २ माने हुए क्षौर कर्म के कार्य कर्ता हैं।

परमानन्द टी० आई० टी० में किसी खास विभाग में कार्य करता है। बहुत योग्य मिलनासार व्यक्ति हैं। बहुत से दुकान तथा अपनी निजी दस्तकारी करते हैं।

श्री लीलाधर जी

आप शहर के मित्र वर्ग में एक माने हुए व्यक्ति हैं। आजकल आप इन्दौर में फैन्सीस्टोर का स्थापन कर वहाँ पर बहुत (सम्)मान प्रतिष्ठा का जीवन बनाए हुए हैं। वैसे बड़े होशियार मिलन(सार) और प्रेमी सज्जन हैं। आपने वहाँ के व्यापारिक वर्ग में अपने स्टोर की काफी प्रतिष्ठा बढ़ाई हुई हैं। आपका जीवन उदार एवं प्रेमी है।

लीलूराम जी

आप छपाई का काम करते हैं। वैसे यहाँ बहुत से घर हैं। जो कृषी और विशेष कर कपड़ा छपाई करते हैं।

श्री भादरमल मालाकार

यह लोग विशेषकर बागों में काम करते हैं। बड़े परिश्रमी और उद्योगी, मिलनसार व्यक्ति होते हैं। भादरमालाकार सनातन विचारों के अंतः करण से कार्य कर्ता महानुभाव है। अपनी धुन के पक्के हैं। बदरी प्रसाद घड़सीराम आदि २ अनेक व्यक्ति हैं।

श्री बनारसीदास जी जांगीड़

आप की दुकान बिचला बाजार में है आपने नानड़ा एण्ड कम्पनी नाम से सानी काटने की मशीन की एजेन्सी लेकर बहुत बड़ी उन्नति प्राप्त की है तहसील भिवानी में प्रायः आपकी मशीनें ही विशेष तौर पर जमींदारों में पसन्द की जाती हैं वैसे आपकी मशीनें दूर-दूर तक प्रसिद्धि प्राप्त किये हुए हैं।

आप मिलनसार निर्भिमानी महान् उद्योगी तथा समझदार महानुभाव हैं समाज में आपकी प्रसिद्धि है।

गंगादतिया पहलवान

यह लोग लोहड़ बाजार में ज्यादहतर रहते हैं। इस जाति के बहुत से घर हैं, विशेषकर जमींदारी का कार्य करते हैं।

श्री रामचन्द्र जी यादव

आप मिलनसार हंसमुख प्रकृति के सुयोग्य महानुभाव हैं। अपनी सार्वजनिक प्रियता के कारण इस बार आप भिवानी म्यूनिसिपल कमेटी के मैम्बर निर्वाचित किये गए। आप टी० आई० टी० मिल्स में उच्च पद पर कार्य कर अपनी कुशलता का परिचय दे रहे हैं। शहर में आपने अपने व्यक्तित्व के कारण



अच्छा सम्मान प्राप्त किया है निर्भिमानिता मिलनसारिता ही आपका गुण है। आप अपने अभिन्न मित्र श्री अंगूरीलाल जी के साथ चित्र में सुशोभित हैं।



श्री मामराज एम० एल० ए०

आप पहले ही दिन से कांग्रेस विचारों के महानुभाव हैं। और ठेकेदारी आदि का काम भी करते रहे हैं इस चुनाव में आप हरिजन सीट से पंजाब के मैम्बर नियुक्त हुए हैं। बड़े अच्छे विचारों के मिलनसार व्यक्ति है। चुनीलाल गणपतराय आदि सभी लोग दस्तकारी एवं सार्वजनिक कार्य कर्ता व्यक्ति हैं।

श्री बनवारी लाल जी

आपके मकान मस्तों की गली में हैं, टी० आई० टी० वर्कसाप में कार्य करते हैं।

श्री चन्दनलाल जो जैनजो पंजाब मिल वर्कसाप में कार्य करते हैं, बहुत योग्य एवं बुद्धिमान् और मशीन के काम के पूर्ण जानकार, मिलन सार, धार्मिक व्यक्ति हैं।

चेजारा-वर्ग

पहिले इस जाति में अच्छे-अच्छे कारीगर हो चुके है। अब वर्तमान में :—

इश्वरदास जी—जो ठेके पर कार्य करते हैं, और जन सेवा में रूचि भी रखते हैं।

जमनादास जी—आप आधुनिक इमारत निर्माण के महान् कालाकार हैं।

जागन्नाथ जी—आपकी पत्थर गढ़ाई एक देखने योग्य कला है।

स्योनरायण जी—धार्मिक स्थान का निर्माण आप बड़ी श्रद्धा व प्रेम के साथ करते हैं।

सूरजमान जी—आपकी चित्र-कला में आकर्षण शक्ति नीहित है।

तोलाराम जी—आप अपने तजर्बे व मिलन सारिता के कारण सर्व प्रिय बने हुवे हैं।

साहनलाल जी—आप महान् आस्तिक, बिल्डिग निर्माण के अद्वितीय कलाकार हैं।

उपरोक्त महानुभावों के अलावा और भी कुरडामल, बलदेव दास पैन्टर, जानकी प्रसाद मूलचन्द आदि योग्य व्यक्ति हैं। शहर में इन लोगों का काफी मेल जोल है। बड़े इमानदार व्यक्ति इस जाति में है और काफी दूर-दूर तक यह लोग अपनी कला के कारण माने जाते हैं।

इनकी ढ़ाणी लौहड़ बाजार में स्थित है।

श्री गणपतराम जी पैन्टर

इनके मकान बिचला बाजार में हैं। यह रायपैन्टर के नाम से प्रसिद्ध हो चुके हैं। मिलन सार हन्समुख अच्छे विचारों के युवक हैं। साइनबोर्ड हाथ की तसवीर में आप एक विशेष अकर्षण भर देते हैं। आपकी दुकान गौरीशंकर मन्दिर के ठीक सामने हैं।

किशनलाल जोगी

यहां पर इन लोगों के काफी मकान हैं। विशेषकर यह लोहड़ [...]नार में ही निवास करते हैं। इनमें अच्छे-अच्छे गायक भी [...] शहर के साथ इनका बहुत बड़ा सहयोग है। अब कुछ लोग [...]कारी भी करने लग गए हैं।

ठठेरा वर्ग

यह लोग बहुत दस्तकारी का कार्य करते हैं। इन लोगों के [...]ए बर्तन दूर-दूर तक जाते हैं। जिससे शहर का नाम रोशन [...] है। मनोहर लाल, गोपीराम, श्री नत्थुराम, अर्जुन दत्त, [...]लकिशोर आदि-आदि अच्छे-अच्छे काम करने वाले हैं।

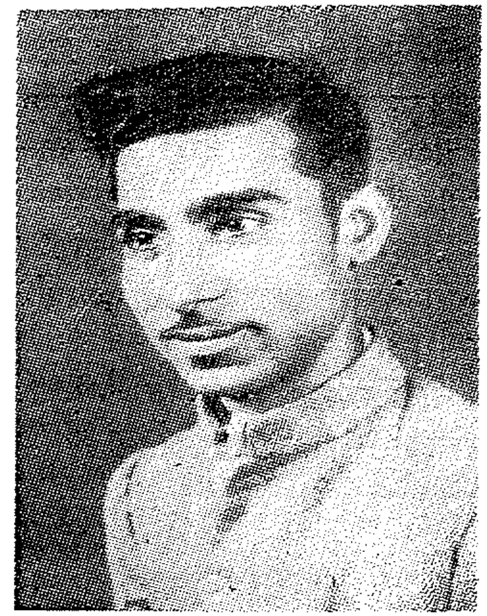
श्री सूरजनसिंह जी भूषण (हरिजन)

आप शिक्षित तथा सार्थक कार्यकर्ता हैं, और समझदार व्यक्ति [...]गल चन्द आदि भी इसी वर्ण में काम करने वाले हैं। यह [...]ार शहर का बहुत बड़ा परिवार है।

श्री विश्वम्भरदयाल (हरिजन)

[...]इस वर्ग की बाबत क्या लिखा जा सकता है। इनका हर घर [...]थ अपने परिवार सा व्यवहार है। और सच्च पूछा जाए तो [...] बड़ी जनता की सेवा यही वर्ण करता है। शहर की सबसे [...] हितैषी यही जाति है। जो सच्चे महात्मा गांधी जी की [...] है। विश्वम्भरदयाल अच्छे तथा विनम्र अपने वर्ग के [...]ठत व्यक्ति हैं।

श्री मुंशीराम जी विद्यावाचस्पती



आप रोहतक जिले के मोखरा ग्राम के निवासी हैं। अब भिवानी में ही निवास करते हैं बहुत उच्च विचारों के, हरिजन जाति का उत्थान करने में ही अपना विशेष समय लगाते हैं आप भिवानी म्युनिस्पल कमेटी के मैम्बर भी रह चुके हैं। बहुत योग्य मिलनसार कार्य कुशल व्यक्ति हैं। T. I. T. में आप सन्मान पूर्वक उच्च पद पर कार्य करते हैं।

कोली

यह लोग खाडी पर रहते हैं। और कई प्रकार के काम करते हैं। इनके भी काफी घर यहां पर स्थापित हैं।

चमरुवे ब्राह्मण

यह लोग काफी संख्या में निवास करते हैं। कुछ हरिजनों द्वारा स्थापित मन्दिरों में पूजा पाठ भी करते हैं।

श्री बनवारी लाल बैण्ड मास्टर



आप देहली बैण्ड बजाने वालों में सबसे श्रेष्ठ माने जाते हैं जो नई धुन सिनेमा में निकलती है सब से पहले आप के द्वारा ही देहली में सुनाई जाती है बड़े-बड़े समारोह महोत्सवों पर आप ही को निमन्त्रित किया जाता है और कई बार तो आपकी सुमधुर धुनी सुनकर आपको १०-१० रुपयों के नोटों के हार पहना कर जनता द्वारा सम्नान किया जाता है

जुलाहे

यह लोग भी काफी संख्या में निवास करते हैं। हाथ से मोटा कपड़ा बुनने का काम बहुत सुन्दरता पूर्वक करते हैं। कुछ लोग बैण्ड बजाने का कार्य भी करते हैं।

खटीक-वर्ग

इनके भी शहर में काफी घर हैं। यह लोग शहर से विसात खाने का सामान लेकर आसपास को देहातों में उसे फरोक्त कर अपनी जीविका चलाते हैं। और अधिक रूप से यह लोग ऊन का व्यापार करते हैं। डूँगरमल दस्तकारी का काम करते हैं। प्रहलादराय कपड़े की सिलाई में अच्छे मास्टर सावित हो चुके हैं। इस जाति में शिक्षा का अभाव सा-ही दीखता है।

सेढ़मल बूटीकार



भिवानी के प्रायः सभी वैद्य सेढ़मल की बूटियों का ही अधिक प्रयोग करते हैं यह बूटियों की जानकारी में एक विशेष अहमियत रखता है साल भर में एक बार स्नान करना और दिन भर बूटियों के संग्रह में लगे रहना ही विशेष गुण हैं।

इसाई वर्ग

इनका सम्बन्ध मिशन से है। इन लोगों में बहुत अच्छे-अच्छे दस्तकार हैं। उपदेशक व प्रचारकों की भी इनमें कमी नहीं। पहिले मोटे पादरी साहेब यहाँ पर काफी प्रतिष्ठा प्राप्त कर चुके हैं। ,अब भी इस वर्ग में शिक्षित व्यक्तियों की कमी नहीं दीखती।

चौ० उदमीराम जी

आप शहर के अच्छे दुकानदारों में माने जाते हैं। गणेश रेस्टूरेन्ट के आप सर्वसर्वा हैं। वैसे कुशल व्यापारी, गम्भीर प्रकृति तथा सबमें स्नेह रखने वाले आस्तिक विचारों के निर्भीक व्यक्ति हैं। दूसरे शहरों में भी आपकी शाखाएं हैं।

आचार्य-परिवार

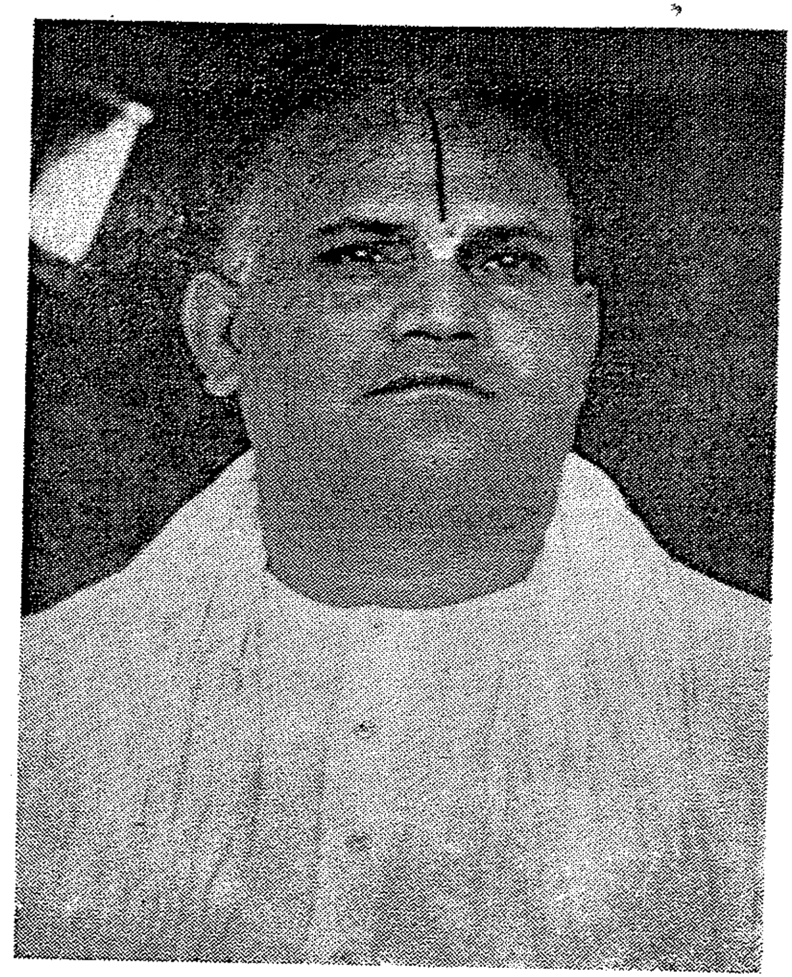
यह परिवार-भिवानी नगर का एक आदरणीय परिवार है। पहिले इस परिवार में बड़े-बड़े दिग्गज विद्वान् शास्त्रार्थ महारथी, तथा राजा, महाराजओं से सदा सम्मानित एवं युग पुरुष हो चुके हैं। इस नगर का यह गुरु-परिवार इस लिए माना जाता है कि यहाँ के—हालुवासिये, बलियाली वाले, बुवानी वाले, वैद सर्राफ, तथा भूत आदि अनेकों श्रेष्ठ परिवार इस आचार्य वंश के शिष्य प्रशिष्य है। भिवानी के अलावा इस इलाके के बड़े-बड़े देहातों में भी गुरु होने के नाते इस परिवार को देव तुल्य माना जाता है।

पहले प्रातः स्मरणीय श्री स्वामी घनश्यामदास जी महाराज एक ऐसे महापुरुष हो चुके हैं जिनकी भगवद् निष्ठा आज भी अन्य जनों के सामने उदाहरण उपस्थित करती हैं। इन्हीं के सुपुत्र :—

श्री स्वामी आत्माराम जी महाराज, स्वामी मनीराम जी महाराज, स्वामी माधोराम जी महाराज, तथा स्वामी जनार्दन जी महाराज बहुत प्रभु भक्त, और भगवद् भागवत् परायण महापुरुष हो चुके हैं। लेखक के पिता की स्वामी [illegible]धोराम जी आचार्य बहुत सीधे साधे प्रभु भक्त तथा इस यु[illegible] देवता पुरुष थे। जिनका अभी बैकुण्ठ वास हुआ है। अब इस वंश में भिवानी इतिहास के लेख :—

श्री स्वामी मुरलीधर जी आचार्य "तिलक"

यह एक ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने भिवानी इतिहास लिखकर अपना ही नाम यशस्वी नहीं बनाया, बल्कि भिवानी के प्रायः समस्त परिवार और नगर के अच्छे-अच्छे व्यक्तियों को अमर



श्री स्वामी मुरलीधर जी आचार्य 'तिलक'
लेखक—
भिवानी—इतिहास वर्तमान खण्ड

एवं यशस्वी बना दिया। आगे आने वाली सन्तान वास्त में स्वामी जी के प्रति महान् उपकार बुद्धि रखती हुई इन्हें आदर की दृष्टि से देखेगी और सदैव कृतज्ञ रहेगी।

यद्यपि स्वामी मुरलीधर जी आचार्य वंश परम्परा के कारण भारत वर्ष के बड़े-बड़े सन्त महन्तों में सम्मान युक्त एवं एक बहुत बड़े गद्यस्त भी हैं, किन्तु यह आडम्बर से बिलकुल दूर और इस युग के सच्चे आचार्य चरण तथा युग-धर्म के महान् उपासक होने के कारण श्री सम्प्रदाय के भूषण मानें जाते हैं। कलकत्ता, वृन्दावन, और भिवानी मन्दिरों के आप महन्त हैं।

आपने साहित्य-सेवा के उद्देश्य को लेकर भिवानी में श्री रंगनाथ प्रेस की स्थापना कर, इस नगर की १० वर्ष तक 'श्री रंगनाथ' पत्र द्वारा महान् सेवा की है। यद्यपि भिवानी के इतिहास में १० वर्ष तक कोई भी पत्र नहीं चल सका है। भारी घाटा होने पर भी सेवा करने की भावना से इनका समयानुसार पत्र चलाना प्रशंशा की बात है।

आप जितने सफल लेखक हैं उतने ही बड़े सुवक्ता भी हैं। आपकी विशाल गर्जना और युक्ति-युक्त भाषण की आकर्षणता श्रोताओं पर अच्छा प्रभाव डालने के साथ ही साथ उनके हृदय पलटने में पूर्ण सफलता प्राप्त करती हैं।

आप भिवानी की अनेकों संस्थाओं के सदस्य, मन्त्री तथा सभापति भी हैं।

श्री करपात्री जी के शतमुख कोटि होमात्मक देहली तथा कानपुर यज्ञ में आप प्रमुख कार्यकर्ता होने के कारण बहुत लोकप्रियता प्राप्त कर चुके हैं। वैसे आपके प्रयत्न से सर्व प्रथम कलकत्ता में विश्व-कल्याण महारुद्र यज्ञ हुआ था। स्वामी कल्याण देव जी द्वारा संसार शान्ति के लिए जो भी यज्ञ हुए उनके

आदि संचलक श्री तिलक जी ही थे।

महाराज पाट जो वास्तव में इस इलाके के एक आदर्श व्यक्ति हैं उनको जगद्गुरु श्री स्वामी शंकराचार्य ब्रह्मानन्द जी सरस्वती द्वारा राजर्षि की भारत विख्यात आदरणीय पदवी आपने ही अपने सद् प्रयत्नों से दिलावाई, जिसका आभार महाराज पाटन ने ही नहीं बल्कि उनकी धर्म-प्रिय जनता ने भी माना है।

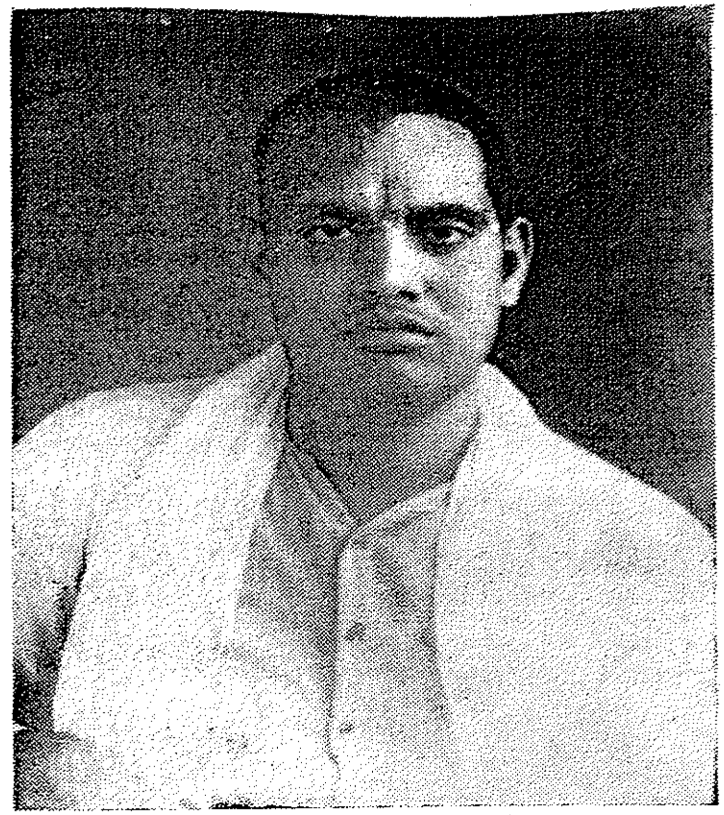
अखिल भारतवर्षीय ब्राह्मण सभा के प्रयाग स्थित विशाल पण्डाल में जब विधवा विवाह का प्रस्ताव पास किया जा रहा था उस समय आपकी सिंह गर्जना ने उस प्रस्ताव के समर्थकों को परास्त कर प्रस्ताव का मूलोच्छेदन कर दिया था।

विशेष क्या आप विशाल हृदय के मित्रों के सच्चे मित्र सब का हित चाहने वाले ईश्वर परायण इस नगर के महान पुरुष हैं।

आपने इस नगर का विशाल इतिहास दो खण्डों में लिख जो उपकार किया है मेरी कलम उसके बदले कृतज्ञता प्रकट करने में और आपके महान उपकार का आदर मानने में बार-बार नत मस्तक होती हैं। आपके लिए मैं इतना ही लिख सकता हूँ कि आप इस भिवानी नगर को अमर करने वाले वीर भूदेव, और आदर्श आचार्य चरण हैं। आपके बड़े सुपुत्र

श्री बलदेव शर्मा आचार्य

आप उच्च विचारवान् लेखक व सुवक्ता हैं। स्वामी मुरलीधर जी आचार्य के प्रत्येक कार्य में आपका पूर्ण सहयोग रहा है भिवानी-इतिहास के प्रकाशन का सारा श्रेय आप ही को है आप कुशल कार्य कर्ता महान् उत्साही उदार हृदय के सर्वप्रिय प्रतिभावान महानुभाव है। दैनिक श्री रंगनाथ एवं सप्ताहिक रंगनाथ पत्र के आप कुशल सम्पादक एवं अनेकों ग्रन्थों के लेखक हैं। श्री स्वामी मुरलीधर जी के द्वितीय सुपुत्र:—



पं० बलदेव शर्मा आचार्य
संग्रहकर्ता—
भिवानी—इतिहास वर्तमान खण्ड

श्री आचार्य हरीश शर्माप्रभाकर

आप पंजाब यूनिवर्सिटी की उच्च प्रभाकर तथा हिन्दी साहित्य के अच्छे विद्वान और कुशल कवि भी हैं। श्री रंगनाथ प्रेस के संचालन में पूर्ण योग्यता पूर्वक परिश्रम कर प्रेस तथा सप्ताहिक रंगनाथ पत्र का सम्पादन कर पत्र को लोकप्रिय बना रहे हैं। आप उच्च विचारों के गुरुजनों में श्रद्धा रखने वाले सुयोग्य युवक हैं और अपने वंश परम्परा के अनुसार आचरण करते हुए शहर में पूर्ण प्रतिष्ठा प्राप्त किये हुए हैं भिवानी इतिहास के प्रकाशन में आपका परिश्रम बहुत प्रशंसनीय और चिर स्मरणीय है।

—वेदनिधि हरिचरण आयुर्वेदाचार्य

समाप्त

क्षमा प्रार्थना

अनेकों कठिनाइयों के बाद चार वर्ष तक निरन्तर परिश्रम करने पर भिवानी इतिहास का यह वर्तमान खण्ड आपके हाथों में है, इसका अवलोकनकर आपने परिश्रम तथा व्यय का अनुमान कर लिया होगा।

इस ग्रन्थ के संकलन में चित्र आदियों की जो त्रुटियें रह गई हैं, इसकी जिम्मेदारी उन महानुभावों पर है जिनके पास जवाबी पत्र, तार और स्वयं संग्रहकर्ता के पहुँचने पर भी चित्र नहीं पहुँचा सके।

पाठक महोदय उदारता के नाते इस ग्रन्थ में जो त्रुटियें रह गई हैं उन्हें क्षमा करते हुए हमें सूचित करें ताकि हम परिवर्द्धित अंक में दूर कर सकें।

यह भिवानी इतिहास ग्रन्थ आपकी जन्मभूमि भिवानी का है जिनकी गोद में आप हम खेल कूद कर बड़े हुए हैं। आशा है इसमें रही त्रुटियों को या हमारी भूल को आप क्षमा करेंगे।

भिवानी इतिहास वर्तमान खण्ड का खर्चा

इतिहास छपाई	२१००)
कागज टाइटिल व आर्ट	१२००)
ब्लाक बनवाई	१८३३)
बाइडिंग	४००)
फोटो आदि	२००)
संग्रहार्थ भ्रमण	८००)
मैनेजरी प्रूफ संशोधक आदि	३००)
पोस्टेज खर्च	२००)
कुल	७०३३)

॥ समाप्त ॥